No ६५२४

सम सरन तिन ग्राम एकईस मरछना गुणी जन
सन मान ज्ञान पाईये परसाईये । पेय पेख्य पेय
पेख्य या यिन लांग ना यियि झक्क झेझे यि किटि
न एनन ठुंठु मठु मठंग मिलाईये । परन प्रति
प्रति पयति मन उद्धति यडगाइये । पटन ताना
पराक्रम प्रेम रंग रेवट सनाईये । इति चनरंगः ॥

133

विलावल। रागनी ककुभ ताल   मदव छबि दि
षि हो नेद चरन ॥ इति अस्थाई ॥ मरद निस।
कौ प्रेम प्रेगनि हेड आभा हरन ॥ इति प्रेतरा ॥
ललित श्रीगोपाल लोचन लोल प्रेम हरन
मनो वारिज विलषि विभ्रम परे भ्रम बसपरन

सू·
रा·कु·

कनक मन मय मकर कुंडल जोत जगमगाक
रन। मित्र मोचन मनो आए तरल गति द्वैत
रन। कुटिल कुंतल मधुप मिलि मनु कियो चा
हत हरन। बदन कांति विलोक सोभा कहत
सूर नि बरनि।। राग सारंग। रागनी कुकुभ ता·

हल धरिसौ कहि ग्वाल सुनायौ ॥ इति प्रसंग ॥ ई ॥

आत हि ते नेरे लखु भैया जमुमति झघल बांध

लगायौ ॥ इति प्रसंग ॥ कान्ह के लरकाहि हरि

मारेहौ भोरवि आनि हमैं गुहरायौ । हम वरजे

रह्यौ नहि मानत सुनत हि व आनंद है आयौ ।

सू॰
रा॰ऊ॰

सूरस्याम बैठि उघ ललगि मानउवन घ्रन निहौ
नरमायौ ॥ रागसारंग ॥ रागनी ऊऊभ ताल
पय सुनकै हल धर नहा थाप ॥ इतिश्रस्याई ॥ दे
षि स्याम ऊषल मों बांधे नबंही दोऊ लोचन भरि
आप ॥ इतिश्रंतरा ॥ मै बरजौ कई वैर कन्हैयाव

लीकरी दोऊ हाथ बेधाए। ग्रनझे ब्धाडेगी लेगए

इ दोऊ कर जननि पै ग्राए। स्यामहि छोर मोहि

बरबांधो निकसत भले सगुन नहि पाए। मेरो

प्रानजीवन धन मोहन तिनके भुज मोहि बंधे

दिषाए। माता मौं कहा करो ढिठाई सेष रूप

सू॰
रा॰ऊ॰

कहि नाम सुनाए। सुरदास नव कहत नमोदादो
ऊ भया सम एक मत पाए॥ राग सारंग। रागनी
ऊऊम ताल सुनो बात मेरी बलराम। इनिस्या
ई। कवन देऊ मोहि इनकी पूजा चोरी प्रगट तना
म। इति श्रेतरा। तुम ही कहो कमी काहेकी नव

6

९

निधि मेरो धाम। मै बरजिति हुत जाइ कहै तिन

कहि हारी निमनाम। तुमहि महि अपराध लगा

यो माखन प्यारे स्याम। सुनि मैया उनहि छाडिक

हों के हिराषो मेरे नाम। तेरे सौ उरहनले आवति।

झूठे ब्रजकी बाम। सूरस्याम अतिहे अकुलानेक

सू॰ ग॰ ऊ॰

वकेबाँधेदाम॥ रागमारंग। रागनीकुकुभ ताल

कहाकरौंहरिबहुतषिजाई॥ इतिश्रस्थाई॥ स

हिनसकीरिसहीभरिगईमैबहुतैढीठकन्हा

ई॥ इतिअंतरा॥ मेरीकह्यौंनेकुनहीमाननक

रतआपुनीटेक। भोरहोनउरहनलैआवतिब्र

जकीवधूअनेक। कालउरनजोकेउरभारीस

रनर सुरसुर जिलेक। सूरस्याम त्रिभुवन कोकर
ता मान कहति जन एक॥ राग रामकली। रागि
नी कुकुभ ताल। जसोदा ऊषल बांधे स्याम॥ म
न मोहन मै बाहर ठाढे आपु ग्रहकाम। दहीं
मथत मुषते कछु डे करत गारी देदे नाम। घर
घर डोलत माषन चोरत षटरस मेरे धाम। ब

स्व· रा·ऊ·

नके लरकन मार भजत है जाइ ह्रमहूं बलराम। स्व
स्याम ऊषल सौं बांधे निरषति ब्रज की बाम॥९॥

राग गौरी। रागिनी ककुभ ताल । निरष स्याम ह
लधर सम कानैं। को बांधे छोरै को इन कौं यह म
हिमा एई पै जानैं। उतपत प्रलय करत हैं एई मे
समह समघ सजम बषानैं। जमला अर्जुन तोरि

8

उदारन कारन सबै मन मानैं। असुर मेघारनम

कन तारन पावन पतित कहावन बानैं। सूरदा

स प्रभु भक्त के भाव प्रति हित जसुमति हाथ बि

कानैं॥ राग सोरठ। रागनी ककुभ ताल काहू

को पतो हरि जास्यो। सुनरी मैया मेरी भैया के

तक गोरस नास्यो। जबरज मों कर गाढ़ैं बांध्यो

ह॰
रा॰ऊ॰

खुरि खुरि मारी मोटी। हने छर बाबानंद नाही।
प्रेम करि हरि जारी। और नेक जो छुवै स्यामकौं
ताकौं करौं निपात। जोई जोई करै सोई सोई सो
वी कहो करौं नहि मात। गाढे बदन बात सब
हलधर माषन प्यारौ तोहि। ब्रज प्यारो जाको म
हि गारो छोवन काहे न जोहि। काके ब्रज माषन

१

५

दथि किहि को बोधे पकरि बनाई। सुनत सु
र हलधरके बानी जननी मैन बनाई॥ राग गू
जरी। रागनी ककुभ ताल । जसुदा कान्ह तेद
धि प्यारो। डारि देहु कर मथित मथानी तरस
त नंद दुलारो। दूध दही माषन लै वारौ जाहि
करत निंगारो। कमला नो मुष चंद दे षि छवि

सू० काहे नैनक निहारो। बलि मनक सिवध्यान नि
रा० ऊ० पावति सो ब्रजगै पनिचारो। सूरस्याम परबल-
बलयै जे जीवन प्रान हमारो॥ राग गूजरी। रा
गनी ककुभ ताल । जसुमति कहि यह सीष
दई। सुनहि बोध तुमथि न मथानी प्रेमी निठु
रठई। हैरै बोलि ग्वनितुकों लीनों तुम सवत
१०
१०

हन नई। लरकहि त्रास दिषावति रहियै कतम
रजाइ गई। मोरे प्रान जीवन धन मोहन बांधेबे
र भई। सूरस्याम को त्रास दिषावत तुमका क
हति दई॥ रागनी ककुभ ताल । हरिचित
ये जमला र्जुन तन। अबही आज इनैं उद्धारौं।
एई हैं मेरे निज जन। इहिं के हित लगि भुजा

सू· रा·ऊ·

बेधाई सब बिलंब नहीं लाऊं। पारस करौं तन
तरु हि गिराऊं सुनिवर साप मिटाऊं। इहि स
कुमार बहुत दुख पायौ सुत कुबेर के तारौं। सूर
दास प्रभु कहत मन हि कर बंधन निवारौं॥ ॥
राग धनासिरी। रागनी ककुभ ताल । इहै जा
न गोपाल बंधाये। आपदरयहै सुत कुबेर के।

११

आनि भए तक उगल सुहाये। व्याज रुदन लोच

न जलधारनि छुषल दाम सहित चलि आये। बै

चनाहि जमला अर्जुन तोरे करि अस्तुत गोबिंद

रिझाये। तुम बिन कौन दीन षलता रो निरगु

न सगुन रूप धरि आये। सूरजदास स्याम गुन

गावत हरष बेत निज भवन सिधाये॥ रागनी

सू॰ ऊ॰ऊभ ताल । तबहिं स्याम एक बुधि उपाई।
रा॰ऊ॰ जननी गई चरन सब अपने गेह काज जननी अ

टकाई। आप गई जमलाअर्जुन तन परसत पा

न उठे छह गई। दिए गिराई धरनि दोउ तरु सु

त कुबेर के प्रकटे आई। दोउ कर जोर करत दोउ

अस्तुति चारभुजा पर प्रगट दिखाई। सूर स्याम

१२

जनम लियौ ब्रज हरि धरनी की आपदा नसाई ॥ ॥

राग कानडा । रागनी ऊऊभ ताल । धन्य धन्य

रिष आप हमारे । आदि अनादि निगम नहि जान

त तिहि हरि प्रगट देहि ब्रज धारे । धन्य नंद धन्य

मात जसोदा धन्य आगन खेलत भये बारे । धन्य

स्याम धन्य दाम बंधाये धनि ऊषल धन्य माषन

सू॰ पारे। दीनबंधु करुणानिधि हो अवगुण षिले हरम
रा॰ क्र॰ सरन तुमारे॥ राग बिलावल। रागनी ककभना
ल। धन्य गोकल जहां गोबिंद आए। धन्य ध
न्य बालकेल जमुना नेंद धन्य निसवासर धन्य
जसुमति जिन गोद षिलाये। धन्य धन्य बालके
जमुनातट धन्य बन सुरभी बृंद चराये। धन्य।

यह समय धन्य ब्रजवासी धनि धनि वेनु मधुर-

सुरगाय। धन्य सूर कुँचलनर गोविंद हम हैं धन

जिन भजा वेपाय। धनि स्रवन षान उर हनो धनि

धनि धन माषन जो गोविंद षाय॥ राग रामक

ली। रागनी ककुभ ताल । नक दोऊ धरनिगि

रे फहराइ॥ जव महित स्रवराईके स्राग्रानशब्द

स्व॰
रा॰ऊ॰

सुनाइ। भए चकित लोक ब्रजके सकुच रहे उराइ॰
कोउ तौ आकाश देषत कोउ कहि सिरनाइ। परि
कलौं सब रहे जकसे देहगति बिसराइ। निरषत
सुमति अजर देषे तहीं बैये कन्हाइ। बृछ परि॰
दोउ परे देषे महत करी प्रकार। अबहीं आंगन
छांडि आए कछो तरुकी डार। मैं अभागनि बी

१५

पिराषि नेद घान ग्रथारि । हरसत नेद द्वार ग्रायेवि

कल गोपी ग्वारि । देषि नद मन ग्रति उराने है बडे

विस्तार । ढुढनि नद बिच स्याम बैठे रहे ऊषलभार

भुजा छोर उछाइ लीने चोट निज कड़े लागि । क

बड़े बोयति कडे मारत महर बडी ग्रभागि । नैन

जल भरे धारि जसमति सुतहि कंठ लगाइ । जो

सू॰
ग॰ऊं॰

रमन जिन तुमै बांध्यौ लगै मोहि बलाइ। नंद सुवनि
हे कहा करिहै देषि तन दोउ आइ। मैं मरौं तुमकु
शाल सौं यौं रहौ दोउ भाई। आइ जु घर नंद देषे त
ह गिरे दोउ द्वार। बोधि राषि ति सुतनहि मेरे देत म
हरि हि गार। तात कहित ब स्याम याठ महर ल
पटेक वार। कैसें उवदे बूझ नर तैं सूरगण बलि

हार॥राग जैतसिरी।रानी ऊऊम नाल ।मोहन

हों नमठ परवारी।केठ लगाइ कियो मनव त्रेवन

मेंदव स्याम मरारी।काहे दाम ऊषल सौं बांधे कैसी

मै महतारी।प्रतिहि उतेग वयारन लागी हठे कैं

ड्रम भारी।वारंबार विचारति जसुदा यह लीला

प्रबतारी।सूरदास स्वामी के महिमा कैसे जात वि

सू·
रा·ऊ·

वारी॥राग सारंग।रागनी ककुभ ताल ।अब तु
म काहू के जिन जाहु॥ तुमरे आज कमी काहे की।
कत तुम अनत नहि षाउ।बैरै जे बरी जिन तुम बांये
बैरै हाथ भरि आई।नंद मोह अति आसत हैं तें बां
ये ऊबर कन्हाई।रोग जो हि मेरे हलधर के छोहन
है तब स्याम।सूरदास प्रभु षान फिरे जिन माषन

२९/६

१८

अथ रागाकली रागिनी संगीत कल्पद्रुम परिच्छेद

माह ताल॥४॥ राग मल्लार॥ जाचटकी उनहा

रहे जेसी इना घट वेननने सोई टीमे। हाथीकी

देहमें हाथीसो मानन चैंटीकी देहमें चेटीकीसीमे-

सिंघकी देहमें सिंघसो माननकीसकी देहमें मा

ननकीमे। जेसे उपाधि भई जहा मंदर सोई होइर

रा·ग्र·
कल्प·

ह्योनरवेसीसे॥ रागिनी गुणकली सेयीनकलपडु

म नाल॥४॥ जेसैंही पावक काठके जोयनै का

ठसौं होइ रह्यो इकठोरा। दीरघ काठमैं दीरघ ला

गत चौरेहे काठमैं लागत चौरा। आपनो रूपअ

कासकरे जब जारि करे नव औरको औरा। तेसो

ई सेदर चेतन आपस्ह आपको नाहिन जानत बौरा·

रागिनी गुणकली नाल ॥४॥ अथ मनहर

छंद । आपही के आपु भूलि गयो सोतो काहे ते·

अजर अमर अविनाशी अजस्र प्रकाश करहत

सकल जन जानि अवगाहैते । निरगुण निर्मल

अति सुद्ध निरबंध नित ऐसोउ करहत औरं ग्रंथ

निके पाहैं ते । व्यापक अखंड एकरस परि

रा॰मु॰
कल॰

हराणैहे संदर सकल रमि रह्यौ अकलनारेहैं। सहज
सदाउदोत याही तें। अचंभौ होत आपही कौ आप
भूलि गायो सोलो का रे हैं॥ रागिनी गुणकली ता
ल॥४॥ आपही कौ आप भूलि गयौ हाव वाहे तें॥
जैसें मीन मांसको नि गलि जात लोभलगि लोह
कौ कंटक नहि जानत उमाहे तें। जैसें कपि गाग

रिसै मट बाधि राखे मट छोडनही देत मनो स्वाद
हीके वाहैंनें । जैसे बक नारियल वेवमारि लटक
न संदर सहन डाव देवि याहि लाहैंने । देहकौ मे
नोगाइ इंद्रिनिके वस परयो आपहीकों आइ भूलि
गयो साल वाहैंनें ॥ रागिनी श्रणाकली नाल ४
इंद्रवंबंद ॥ देवदै ननके सो ॥ जैसें कोउ म

रा॰ गु॰ कल॰

घोरिवे प्रति व्याकल तोहि कछु सपर भ्रम ऐसो
ज्यो कोउ खोय रहे दग मारि हिजाने नहीं कछु का
रण तैसो । ज्यो कोउ बालक संकउ पावत केपउं
है अरु जानत भैसो । तैसो ही सुंदर आपको भूलि
रहे देखेहू वैनन मानत कैसो । रागिनी गुणाकली
ताल । ४ ॥ भूलि गयो भ्रम तें भ्रम आपे ॥ ज्यौं को

३

उकठ्यो है मकरौं कि पलाशन वैसी ही भाँति सो रू
प पलाँपै । जो जल हालत है लगि पौन करे भ्रम
है अति विवरो काँपै । देह के नाते के जे मन के हात
मानत है सब मोरी को आँपै । सुंदर पेख पर्यौ अतिस
य करि भूलि गयौ भ्रम ते भ्रम आँपै । रागिनी राग
कली माल ॥ ४ ॥ ज्यौं द्विज को उकताइ मराम

रा॰ग्र॰
कल्प॰

नि सहृद भयो करि आपकौं मान्यो। ज्यौ कोउ भूपति
सोवत सेज रंक भयो सपने महि जान्यो। ज्यो कोउ
रूपकी रास अत्यन्त कुरूपके भ्रम भेषक आन्यो। तेसे
ही संदर देह मोह्कै करिया भ्रम आपही आउ भुला
यो॥ रागिनी आसाकली ताला ७॥ कपई व्यापक
वस्तु निरन्तर विश्व नहीं यह ब्रह्म विलासे। ज्योन

रंगेउनिसौं द्रग बांधत है कछु औरही और ई भासे ॥
ज्यौं रजनी महि जोति परै नही जौ लगि सूरज नांहि प्रकाशै
कासे । त्यौं यह आपन आपन जानत संदयके रसो से
दरदासे ॥ रागिनी गुणकली ताल ।५॥ मनहरछंद
भूतनिमै मन मिलि भूत होई रह्यौ है । इंद्रिनिकौं प्रेरि
घु इंद्रिनीके पीछे परो आपनी अविद्या करि आपमन

क॰
ग्र॰न॰

गह्योहे जोई जोई देहकौ संकट कछुपरे आई सोई सो
ई माने आपुयाते डाव भयोहे । भ्रमत भ्रमत कई भ्र
मकौन आवे योस विरेकाल वीतोपे स्वरूपकोनल
ह्योहे । सुंदर कहत देखो भ्रमकी प्रवल नाई भूत
निमे भूत मिलि भूतकै रह्योहे ॥ रागिनी गणक
ली ताल ॥ ५ ॥ मनहर छंद ॥ आपही कौं भूलिक

5

रि आपही बंधायो है। जैसे सुक नलिनीन छोडिदे

नंवगलते जाने काहू और मोही बांधि लटकायो है।

जैसे कपि गजनि कौफेरि करि माने आगि आगेय

रि नाये कछु सीतन मायो है। जैसे कोउ दिसा भू

लि जानऊतो पूरव कोउलटि पउहो फेरी पश्चिम

कोपायो है। तैसेही संदर सव आपही को भ्रम भ

कं
ग० न०

यो आपही को भक्ति करि आपही बंधायो है ॥ तति
नौ गुण कलौ नाल ॥ ४ ॥ ऐसो भ्रम आपही को आ
प्रकरि लयो है । जैसें कोउ कामिनी के हिये परि उसे
वाल स्वपने में करे मेरो पुत्र काहू हरयो है ॥ जैसे कोउ
पुरुष के कंठ विषे इलौ मनि फेढून फिरत कछु ये
सो भ्रम भयो है । जैसे कोउ बाण करि बावरो बकत

6

६५

डोले औरहीकी औरकरे सुधि भूलि गयोहै ॥ ते
मेरी सुंदर निज रूपकौं बिसारी देत ऐसो भ्रम
आपही कौं आप करि लयोहै । जन ॥ भूलिकें स
रूपकौं अनाथ सो करतहै । दीन हीन छीन कै
मान छिन छिन मांहि देहके संजोग पराधीन
सो रहतहै । सीन लगै घाम लगै भूख लगै प्यास

कै. रा. त्रै.

लगै लोक मोह मानि श्रुति वेदकौं लहत है ॥ स्व
प्न भयो पंग भयो मूकहू बधिर भयो ऐसो मानि
मानि भ्रम दीसै वहत है ॥ सुंदर अधिक मोहछिया
हीनै अंधभो आदि भूलिकै स्वरूपकौं अनाथसो
करत है ॥ रागिनी गुणकली ताल जत ॥ जैसे
कोउ सपनेमे कहेमे तो ऊंटभयो जागि करिदेखे

उहै मनुष स्वरूप है। जैसे कोउ राजा धनि सोइ कै भि
खारी होइ ग्रंथि उपरै तें महा भूपनि कौ भूप है। जै
से कोउ सेवक सों कहै मेरो सिर कहौ सेवक राप तें जा
नै सिर सोत तु पै है। तैसे ही संदर्य हू सम कौ सल
गाए आश्रम के गाए तें आप आत्मा स्वरूप है। जैसे को
उपो सती को पागपरी सभी परस्त्र लेकै कहै एक

क॰
ग॰ग्र॰

पाया मैंने पाई है। जैसें मैंने विली ह मनोरथ के कि
यो घर कहे मेरो घर गयो गागरी गिरावै है। जैसें का
ऊ भूत लग्यो बकतु है आव बाव हाथ सब डारि भई
औरै मति आई है॥ तैसें ही सुंदर यह भ्रम करि भू
ल्यो आप भ्रम के गए तें यह आत्मा सदाई है॥ गागी
नी ग्रागकली तालजन ॥ आपही चेतन्य यह है

8

ड्रियनि चैतन्य करि आपही मगन होइ आनंद वधा
योहै । जैसें नर सीन काल सोवत निहाली वोप्ड आ
पही नपकरि आप स्वाद पायोहै । जैसे वाल लकडी
को घोरा करि ऐक चढ आप असवार होइ आपही कू
दायोहै । जैसें हो संदर परू जडकौ संजोग पाइ आ
पस्वाद मानि मानि आपही भुलायोहै ।। रागिनी

क·
ग्र·नं

गणकली नाल जत ॥ कहूं भलो कामरत कहूं
भलो गेहमध्य कहूं वनवासी है। कहूं भलो जीव
जानि कहूं भलो अभिमानी कहूं भलो मोह बाधिक
ऐसो उदासी है। कहूं भलो मौन धरि कहूं बकवाद
करि कहूं भलो मक्के जाइ कहूं भलो काशी है। खे
द करहत खहे काम हीते भलो आप एक आवै रोज

१

५:

अक हजी वडी हो सी है ॥ रागिनी रागा कली नाल

जन ॥ मैं वड्डन हावे पाये मैं वड्डन डावे पाये मैं

अनंत द्रव्य कीये मेरे पोते पाप है । मैं कुलीन विद्या

वंत पंडित प्रवीन मरा मैं नो मूढ अकुलीन हीन

मेरे वाप है । मैं हों राजा मेरी आन फिरे वड़े चक्र

वोहि मैं नो रेक द्रव्य हीन मोहि तैनो मे ना पहै । संदर

५

कं
गु-नं

कहत श्रहंकार ही तै जीव भयौ श्रहंकार गये पर

एक अल आपहै ॥ रागिनी गुणकली ताल जत ॥

देहई पुरुष लगे देहई कुवरी लगे देहही कौ मीन लगे

देहही कौं नाव है। देही सरूप लगे देहही करूपत

है। देहही जोवन लगी देह वृद्धपण। देहही कौं नी

वल है देह कौ नपक लगे देह कौ कृपान लगे देहही

10

१०

कैं बावरी। देहही मैं बांध्यो हेत आप विषै मानले न खेद करहंनै ऐसो बुद्धि हीन बावरौ ॥ रागिनी गुन कली नाल। ४॥ इंदव छंद ॥ आपही चेतन्य अलख चिदित सौ भ्रमनैं कछु आन परे हैं। ढूंढत नाहि फिरे जितहीं तित साधन जोग बनावन भेवे। और जु कष्ट करैं अति मय करि पावन आनंद गनपावे

कं॰ ग्रु॰ नं॰

सुंदर भूलि गयो निज रूपहीं है कर कंकण दर्पण दे
खे॥ रागिनी गुणकली ताल॥ ४॥ सूत्र गरे महि मे
लि भयो द्विज ब्राह्मण होइ करि ब्रह्म न जान्यौ। छत्र
य होइ करि छत्र यहै सिर हय पै दल सौं मन मान्यौ॰
वैश्य भयो वणकी वय देखत सुंदर प्रपंच वनिज ही ठा
न्यौ। शूद्र भयो मिलि सूद्र पांरी रही सुंदर आपन ही

11

पहिचानौ ॥ रागिनी गुणकली ताल ॥ ४ ॥ ज्यौं रवि ।
कौं रवि फुलन है कडे तम मिले तन मीन गवाऊं । ज्यौं
ससि कौं ससि वारह न है उनि मीन लना करि तम उलाऊं ।
ज्यौं कोऊ सांझ भये नर देखन है घर मैं अपने घर जाऊं ॥
सौं यह संदर भूलि सरूपहिं जल करे कब जलहिं पाऊं ।
रागिनी गुणकली ताल ॥ ५ ॥ आपन देखन है अपनौ

कं
गु.न.

मुख दरपन काठ लगया अति भूला। जो दग देखन ही र

वि जान भयो नवही पुतरी पर फूला। काय अज्ञान दसौं

अभि अंतर जानि सके नही आतम मूला। सेंदर यौं उपज्यो

मन के मल ज्ञान विना निज रूप हिं भूला॥ रागिनी गु

णकली नाल॥ ७॥ देह स्वरूप भयो सुख बौले दीन भ

यो विललात फिरे नित रे छिनि केवल क्षोल कल्लोले-

१४

सिंहनही अपनौ वल जानत जंबुक ज्यौं जिनहीं तित

डोले । चेतनता विसराइ निरंतर लै जड ताश्रम गो

हन खोले । सुंदर भूलि गयौ निज रूपहिं देह स्वरू

प भयौ सव वोलै ।। रागिनी गुणकली ताल ।। ४।।

देह स्वरूप भयौ अभिमानी । मैं सुखिया सुख सेज

सुखो सन हय गय भूमि महा रजधानी । मैं दुखिया

क
ग्र-न-

दिन रैन भयौं उराव मोहि विपति परी नही जानी ॥३॥
पुनि उन म जात बडो कल है पुनि नीच किया कल
ज्ञानी । संदर चेतन संभारत देह स्वरूप भयो अभि
मानी ॥ रागिनी रामकली ताल ॥ ४ ॥ गर्भ विषै
उत्पत्ति भई पुनि जन्म लियो सिसु रुदन जानी । बाल
कुमार किसोर जुवा दिक वृद्ध भयौं पुनि वृदिन मानी ·

13

जैसीही भांति भई वपुकी गतिनै सोही होइ रह्यौ यह
प्रानी। सुंदर वेनन नाम संभारत देह स्वरूप भयौ अ
भिमानी॥ रागिनी गुणकली नाम।४। ज्यौं कोऊ मा
गकैरै अपनो घर वाहर के जाइ भेष बनावै। मूंड मुंडा
इके कान फराइ विभूति लगाइ जटाऊ बनावै। जैसो
इ स्वांग करै वपु को गतिनै सोही भावन सोऊ जावै।

क॰
ग्र॰न॰

सोंघट् संदर आछत जानत भूलि सरूपहिं ओर करावे । रागिनी राग कली सातो जान को अंग मन हरबंद ॥ ताल ॥४॥ छितजल पावक पवन नभ मिलि करि स बद और रस पर सरूप रस गंध जु । श्रोत्र त्वक चक्षु घ्रा न रस ना रस को जान वाक पाणि पाद पायु उपस्था वे धजु । मन बुधि चित अहंकार पचीसो मन तत्व पंच बीस

१८

जीवनन करनेहै धंधजू । षट बीसवोहै ब्रह्म सदास

निहकाम व्यापक सर्वेद एक रस निरम संधजू । नामि

की गगा कली नाल ॥७॥ श्रोव दिकन कवाय लोव

न प्रकासैव विनासिका अम्बनी जिह्वा बरनाव बखा

निये । वाक अग्नि हस्त इंद्र चरन उपेंद्र बल मेढ प्रजा

पति गुदा मित्र हूको जानिये । मन वेद ब्रह्म विधि

क
गु.न.

चित वासुदेव आदि अहंकार तत्त्वको प्रभाव कारिमा
निये । याको सत्त पाई सब देवता प्रकासत हैं सेदर
स्व आत्माही मायाही करि जानिये ॥ रागिनी गुणाक
ली ताल । ४ ॥ श्रोत्र सुनै दृग देखत है रसना रस ग्रा
ण सुगंध पियारो । कोमल मानक जानत है पुनि बो
लत है सब शब्द उचारो । पानि गहै पद गौन करै

15

मल मूत्र तजे उभउ सुखद्वारो । जाके प्रकाश प्रकाश
नहै सब सुंदर सोई रहे खटन्यारो । रागिनी गुणकली
ताल ॥ ४ ॥ बुद्धि भ्रमे मन चित भ्रमे अहंकार भ्रमे क
हा जानत नांहि । श्रोत्र भ्रमे नक घ्राण भ्रमे रसनाद
ग देखिद सौ दिस जांही । वाक भ्रमे कर पाद भ्रमे गु
द द्वार उपस्थ भ्रमे कहै कोरी । नेरे भ्रमाये भ्रमे सब

कं
गु॰नं

ही गुण सुंदर नकौं भमे रन मांही ।। रागिनी गुणकली
माल ।। ४ ।। बुद्धिको बुद्धि ग्रह चित्तकौ चित्त अहंकोय
हे मनको मनसोई । नैनको नैनहै बैनको बैनहै कान
न कान कानन करन जोई । घ्रानकौ घ्रानरसी जीभको
जीभहै हाथको हाथपगोपग ताहोई । सीसको सीसहै
प्राणको प्राणहे जीवको जीवहै सुंदर सोई । रागिनी

16

ग्रा। कली सब गाई भ्रम। ताल ॥४॥ कैसे कै जगत

यह रच्यो है जगत गुरु मोसों कहौ प्रथम ही कौन तनै

कीन्हो है। प्रकृति कि पुरुष कि महतत्व अहंकारकी

यों उपजाये सत रज तम तीनों है। कीयों ब्योम बायु ते

ज आपकि अवनि कौन कीयों पंच विषय पसारि क

रि लीन्हो है। कीयों दस इंद्री को अंतर करण कौन सं

कं॰ गुन

दूर करन की यों सकल विधी नीको है ॥ रागिनी गुण
कली ताला ४ ॥ उत्तर ॥ ब्रह्मतें पुरुष पुरुष प्रकृति
प्रगट भई भई प्रकृतितें महततत पुनि अहंकार है ॥
अहंकारहूतें तीन गुन सत रजतम भए सतहूतें सताधु
न विषय पसारवे है । रजहूतें इंद्री दस प्रथक प्रथक
भई मनीहूतें मन आदि देवता विचारवे है । ऐसे अनु

17

क्रम करि शिष्य सों कहत गुरु सुंदर सकलं यह मि

थ्या भ्रम जात है ॥ रागिनी गुणकली ताल । ३ । ब्रह्म

मेरो रूप इंद्री है कि अंतःकरण है कि देहो है कि

मौन है । मेरो रूप त्रिगुण कि अहंकार महत्तत्व प्रकृ

ति पुरुष कि यौं बोलै है कि मौन है । मेरो रूप स्थूल

है कि सूक्ष्म आहि मेरो रूप सुंदर स्वछंद गुरु मेरो रू

क
ग न

पकोनदे ॥ रागिनी गुणकली ताल ४ । उत्तर ॥ तु

तो ककुभूमि नो हि आपतेज वायु नाहि योम पव

विषय नो हि सो तो ग्रम रूपदे । ततो कछु देही शक

अन्तःकरण नो हि तीन गुण रूतु नो हि सो अकोर ह

रूपदे । ततो अहंकार नो हि प्रति महतत नो हि प्र

कृति पुरुष नो हि ततो सो अनूपदे । सुंदर विचार से

18

८

जै सिष्यसों कहत गुरु नाहि नाहि करते रहे सोई ते
रो रूप है ॥ रागिनी गुणकली ताल ॥४॥ तेरो तो
स्वरूप है अनूप चिदानंद घन देह तो मलीन जड़ यों
विवेक किजिये । तेतो निःसंग निराकार अविना
शी अज देह तो विनाश वंत नाहि नही यों जिये ॥
तेतो घट उपाधि छिन मरण एक रस देह के विकार स

क॰
ग्र॰ नं॰

व देह सिर दीजिये । सुंदर कहत यौं विचार आपुमि
न्न जानि पर की उपाधि कहा आप पैं विकाजिये ॥
रागिनी गुणकली ताल ४ ॥ देह ई नरक रूप दुःख
कौन वार पार देह ई स्वर्ग रूप छूटै सुख मांयो है ।
देह ई कौं बंध मोक्ष देह ई अमोक्ष मोक्ष देह ई क्रिया
कर्म शुभाशुभ ठायो है । देह ई मैं और देस सबौं के

17

विलास करै नाही कौं समझि विन आत्मा वखा
न्यो है । दोऊ देहनें अतीत दोउ को प्रकाश करै है से ।
दह चैतन्य रूप न्यारो करि जान्यो है । तातिनी गुणक
लीनाल । ५ ।। देहहले देहवले देहही सोंदेह मि
ले देह खाइ देह पीवै देहही भरतु है । देहहीहि
वागे देहही पावक जो देहवन मोजन्हके देहई

क· ग्र·न·

परतहै। देहई अनक भांति विविधि करम करे त्रु
बककी सभा पार लोह ज्यौं फिरतहै। आत्मा चैतन्य
रूप आपक साली अनूप संदरकरन सोतो जम्मेनम
रतहै॥ रागिनी गुणकली ताल॥४॥ देहकीन दे
ह कछू देहकोमम मन छोड देहजो दसा माहिये देहा
देह जानतहै। घटनो घटनघरी घटनास होनघटके

१०

गापनै घटकीन फेरिवानहै। पिंड पिंड मांहि पिंड पिंड
को उपावनहै ॥ पिंड पिंड खोन भनि पिंड ही को पानहै ॥
सुदरन होहजासों सुंदर कहत जग सुंदर चैतन्य रूप सु
दर विखानहै ॥ रागिनी गणकली ताल। धाप्रमान
३॥ देह यह किन कोहै देह पंच भूतनि को पंच भूत
कोनतैंहें ॥ तामस अहंकारतें अहंकारकोनतेहै ॥

कं
ग्रं·नं

जासौं कहैं सह तनि तनि कौनने है प्रकृति मंजारने ॥
प्रकृतिरू कौननेहै पुरुष है जाके नाम पुरुषसो कौ
ननेहै ब्रह्म लिरा यारने । ब्रह्म अब जान्यौ हम जान्यौ है
नो निश्चय करि निश्चय हम कीयो है नो रूप सब ठाव
ने ॥ रागिनी रामकली माल ॥ ४ ॥ एक घट मोहि स
गंय जल भरि राख्यौ एक घट मोहि नो डारे गंय जल भ

र्‌यौ है । एक घट मांही इनि गंगो दक राख्यौ आनि ए
क घट मांही आनि मदराउ कर्‌यौ है । एक वृक्ष एक ने
ल एक मांहि लत्र नीत नवड़ीमें नविना कौ घनि विव
पर्‌यौ है । तैसैं ही मंदर उंच नीच मध्य एक ब्रह्म देहमे
द देखि भिन्न भिन्न नाम धर्‌यौ है ।। रागिनी गुणकली
नाल ।। ५ ।। भूमि परे मार आपड़के परे पाव कदै पाव

का·
गु·नं·

ककै परे अगनि वायुकू वहन्नतै हे। वायुपरें व्योम व्योमकू
कै परैं इंद्री दस इंद्रिन कपरे अंतह करन वहन्नतै हे। अंत
ह करन परैं तीन गुण अहंकार अहंकार परे महतत्तकों
लहन्नतै हे। महतत्त परे मूल माया माया परे आत्मा हीतें
परात्पर स्वेदव कहन्नतै हे॥ रागिनी गुणकली ताल ४
भूमिनो विलीन गंध गंधकू विलीन आप आपकू वि

72

लीन रस रस तेज खोता है। तेज रूप रूप वायु वायु स्प
र्श लीन सो स्पर्श व्योम सब्द मही विलाता है। इंद्रिय
दस जन मन देवता विलीन सत लीन गुण अहं महतत्व
मिल जाता है। महतत्व प्रकृति प्रकृति ढंढ पुरुष लीन
हेदर पुरुष नाद ब्रह्म में समाता है॥ रागिनी रामकली
ताल॥४॥ आत्मा प्रबल हड एक रस रहे सदा देह व

क॰
ग॰नं

वहारनमैं देहहीसो जानिये। जैसैं ससि मंडल अभंग
नही भंगहोइ कला आवैजाइ वट वधि सोवखानिये॰
जैसैं द्रुम तिर चलनदीके तट देखि यतनदीके प्रवाह
मांहि चलतो सोमानिये। तैसैं आत्मा अतीन देहकौं
प्रकासतहै। संदर कहतयौं विचार भ्रम भानिये॥
रागिनी गुणकली ताल। ४॥ आत्मा शरीर दोउ एक

२३

मेक देखियत जवलगि अंतस्करणमें अज्ञानहै । जै
सें अंधियारी रैनचरमें अंधेरो होइ औरवन कोनिजज्यों
कोत्योंही विद्यमानहै । जदपि अंधेरे मांहि नैन कौंन
सूझे कछू तदपि अंधेरेसो अलिमही बखानहै । सुंद
र कहतहैं तो एकमेक जाननहै जो लो नहि प्रगट
प्रकास ज्ञान भानहै ॥ रागिनी उमाकली ताल ४

क॰
ग॰न॰

देह जड देवलमैं आत्मा चैतन्य देव याही कौं समझि क
रयासौं मन लाइये। देवल कौं बिन सनवारनहि लागे
कछु देवनो सेव्या अभंग देवल सौ पाइये। देवकी स
कति कर देवल की पूजा होइ भोजन विविधि भांति सो
गाइल गाइये। देवलनैं न्यारा देव देवलमैं देखियत से
दर विराजमान और कहां जाइये। रागिनी रामकली

25

नाला ॥४॥ प्रीति सीन पानीकोउ प्रेमसोन फूल श्रौर
खिन सोनन चंदन सनेहूसोनसेहरा । हृदय सोन श्रा
सन सहजसोन सिंहासन भावसीन सोज श्रौर श्रमसो
नसेहरा । सील सोरघ्रानु नांहि ध्यान सीन धूप ज्ञान
ज्ञान सोन दीपक श्रज्ञान नसके हरा । मन सोन मा
ला कोउ सोहे सोन जाप श्रौर श्रात्मासो देव नांही दूर

कं
गु·नं

मोनदेहरा ॥ रागिनी गुणकली ताल ४ ॥ आपको
भजन मोनो आपही करतहै । स्वामो स्वामो रागिनि दि
नसोहे सोहे होइ जाप याही माला बारबार हफकेथ
रतहै । देह पैं इडो पैं अंगस्करण पैं एकही आवे
उस्माप नापको रवतहै । काठको रुद्राक्षको औरस
रद्दीको माला अनि इनके फिराथे कोन काजमर

25

त है । सेवा करत नातैं आत्मा चेतन्य रूप आपको भज
न सो तो आपुही करत हैं ।। साषी नीर गंगा कली माल ४
क्षीर नीर मिलि दोउ एकटै होइ रहे नीर छांडि हंस ज
सैं क्षीर को गहत है । कंचन मैं और धातु मिलि करि
दोन परे सो शुद्ध करि कंचन सुनार ज्यौं लहत है । पाव
क ऊ दाह मध्य डारत ही सो होइ रह्यो मथि करि काढै

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

क॰
उ॰नि॰

बाहीरहकको दरसतै है । तैसेही सुंदर मिलैया आत्मा अना
त्मा सूं भिन्न भिन्न कारणमको सोध्यैयौं करसतै है । तागि
नी गुणकली नाला । ४ । । अन्न मयकोसस्थूलो पिंड है
प्रगट यह प्रान मयकोस पंच वायुरूह वखानिये । मनो
मयकोस पंच इंद्रीहै उसिद्ध पंच ज्ञान इंद्री विज्ञानको
स जानिये । जाग्रत स्वपन विषै कहिये बनारकोसस

76

षोपतिऊ मोरिकोस आनंद मय मानियें। पंचको
स आनम को जीवनाम करियेहैं संदर सेकरभास
सां व्यवह आनिये। रागिनी रागकली ॥ ५॥ जाग
त अवस्था जैसें मदनसें वैठिघन नरीं कछु हेरि ना
हि भली भांति देखिये। स्वप्न अवस्था जैसें वोवरेमें
वैठे नाइरहे रहे उरोंऊकी वस्तु सब लेखिये। सुषु

का॰
गु॰नं॰

पनिश्रौं हरै भै वैढे नेन स्हरू परै मह्रो ग्रेथ वोरतमक
कु वनपेपरिवि। व्योम पवन स्हत चर वोवरे भौं हरे
मांहि मंदर मानी स्वरूप नरिया विसेगविषे। तागि
नी गुणाकली नाल।४। जाग्रतके विषे जीव नैंन
निमे देखियत विविधि व्योहार सब देखी निवाहत
है। स्वपनडं माहि उनि वैसै सो व्योहार होत नैंन

२८

२८

नितै आरकरि कंठमें रहतहै। सुषुपति हृदयमें वि
लीन होइ जात जब जाग्रत स्वपन कीनो सुषपनल ह
तहै। तीनहू अवस्थाकौ साखी जबजानै आपनरि
या स्वरूप वह सुंदर कहतहै। रागिनी रामकली
ताल।४। देसारीजन। जाग्रत रूपलिये सब तव
नि इंद्रियद्वारकै व्यवहारो। स्वप्नशरीर भ्रमेनव

कं
ग्रं

तत्वकौ मानतहै सात ऊंरव अपारो । तीन सबै गुणमैं
३ सबको पनि जानै नही कछु चोर पेयारो । तीनकौ सा
षी रहै तुरिया तब संदर सोई स्वरूप हमारो ॥ जन ॥ सू
षिते सूक्षम आपकौं जानहु आपते सूक्षम तेजको पे
गा । तेजते सूक्षम वायु बहै तिन वायुते सूक्षम व्योम
उनेगा । व्योमते सूक्षम है गुण तीनहु तातें भई महत

28

व असंगा । नाहीं तैं सूक्षम स्थूल प्रकृति जो स्थूल ते सूक्षम

ब्रह्म अभंगा जन ॥ ब्रह्म निरंतर व्यापक अग्नि ब्रह्म ब्रह्म

अखंडित नैहै सब मांही । ईश्वर पावक राशि अखंडज्ञ संग

उपाधि लिप्त व्रतनाहीं । जीव अनेक मसाल चिराकसो

दीपपतंग अनेक दिखाहीं । स्वेदहैत उपाधि मिटे जब

व ईश्वर जीव जु टेक कु नाहीं । जन ॥ जैसे नर पावक लो

कं
ग्रं

इत पावक पावक लोह मिले मदि खोही । चोट घने
कपरे घन की सिर लोह बचे कछु पावक नाही । पाव
क लीन भयो अपने घर सीतल लोह भयो नव नाही ॥
त्यों यह आतम देह निरंतर भिन्न रहे मिलि मोही । जन ।
आतम चेतन सुद्ध निरंतर भिन्न रहे कछु लिप्त न होई ॥
है जड चेतन अंतर सकल राज सुद्ध असुद्ध लिख गन होई ः

देह अशुद्ध मलीन महा अति हालत चालत सबै पुनि कोई।
सुंदर तीन विभाग किये बिन भूलि परे भ्रमते सब कोई-
तालजत ॥ ब्रह्म अरूप अरूपी पावक प्रगट न दीस
त संग। देह दारु तें प्रगट दीखियत अंतर्करण अग्नि के
अंग। तेज प्रकाश कलपना तौ लगि जौ लगि रहे उपा
धि प्रसंग। जहां के तहां लीन पुनि होई सुंदर दोऊ स

क·
ग्र·न·

30

दा अंग ।। रागिनी गुणकली ताल ४ सबद याजन ।।
देह सराव तेल पुनि मारुत बाती अंतस्करण विचार।
प्रगट ज्योति यह चेतन दीसै जातैं भयौ सकल उजि
यार। व्यापक अग्नि मथन करि जोये दीपक वचन
भेदि विकार। सुंदर अंगन रचना जेरी नहीं एक अने
क प्रकारैं विहारी विस्तारा।। जन ।। तिल मैं तेल हय

३·

मैहूनहे दारु मांहि पावक परिवान । पहुप मांहिजैसें
प्रगट वासनाई लमांहि रसकहून वखान । पोस्तमा
हि अफीम निरंतर वनस्पतीमें सरहत प्रवान । सेंद्रसि
वमिलैयौ प्रतिदीसन देहू मांहियौं आनमजान ॥
नाल जन ॥ जाग्रत स्वप्न सुषोपति तीनो अंतःकर
ण अवस्था पावै । जागृ वले जाग्रत अहसपने सुष

क-
ग्र·न·

पनिमै प्रनि प्रहनिसथावै । प्रागमगपतेरहेन कोऊ स

कल देखवेने घाट विलावै । संदर प्रानम नम निरंजन सो

नमझै कझै जाइन प्रावै । नालग्यान ॥ पंडह नव स्थूल

ॐ भमैं सहलम लिंगा भयो जैयो नोइ । इसो जीव उसो

प्राभा दीसे ब्रह्म इड प्रति विंव दोइ । घट फूटेन लगयो

विलयकै अंतस्करण कहेनहि कोइ । नव प्रति विंव

3

३।

मिलेमसि विंवहि संदरजीवब्रलमयहोइ ॥ रागिनी
गुणकली तालजत ॥ मनहरछंद ॥ जैसेव्योमकुंभ
केबाहिर अरुभी तरऊकोऊ नरकुंभकौं हजारकोस
लैगयौ। ज्यौंहीव्योमइहांसोही उहांअतिरअवेर इ
हांन विछोहनको उहांमेलहैभयो। कुंभनोनयो अरु
नोहोइकैं विनसजाइव्योमनेनकै अरुनेवनैकछु

का॰
ग॰न॰

कैनयो। तेसैंही संदरदेह आवे वरहे नास होइ आत्माअ
चल अविनाशी है अनामयो॥ नाल जन॥ देहके सं
जोगाहीतें सीतलगै घामलगै देहके संजोगाहीतें। ल
भालघा पीनकों देहके संजोग करे मावतें। अनेक
नान देहके संजोगाही पकरि रहे मौनकौं देहके संजो
गाहीतें। कटुक मधुर स्वादेहके संजोग करे खाटोखा

ये लोनकों देहके संजोगाहीतें। सुखमाने दुखमाने देह
के संजोग गए सुखदुखकोनकों॥ नालजत॥ आप
कीप्रसंसा सुनि आपही खुसाल होइ आपही निंदा सुनि
आपसुं रुसायहे। आपहीकों सुखमानि आपसुख
पावनहे आपहीको दुखमानि आपदुख पायहे। आ
पहीकी रक्षाकरि आपहीकी घातकरे आपहीहन्या

क· ग्र·नं

गै हैरगंगा जाय न्हायहे। हैदरकरन ऐसैं देहहीकों आ

भमानिनिज रूप भलिकैकरन हाय हायहे ॥ रागिनी

गुणकली विचारकोअंग मनहरछंद ताल ॥ ४ ॥ राग

णीचवणीटेकवैं ॥ प्रथम श्रवन करि चित एकाग्र अवि

33

गुरु सेन आगम कहै सोई धारिये । उनीय मनन बाखा

रहौ विचार देखे जोई कछु सनै माहौ फेरिके संभारिये·

त्नीय नाही प्रकारनि दध्यामनी के करि निद्रसंग विव
रिकैं ग्रहन पोनारिये । मात्रान कावधाड़ी साधन करन
होइ संदर करन हेत उद्धियें निवारिये ।। रागिनी गुण
कली नाल ।।४।। देखनो विचार करि सुननो विचार
करि बोलनो विचार करि करनो विचार रहे । खाइनो
विचार करि पीवनो विचार करि सोवनो विचार करि

क॰
ग॰न॰

सोइनो विचारहै। बैठेनो विचार करि उठेनो विचार
करि चलीनो विचार करि सोई मति सावहै॥ याथिनी
ग्यानकली नाल॥७॥ एकही विचार करि खावेड
वे समझाने एकही विचार करि मल सब धोएहै। एक
ही विचार करि संसार सउदलने एकही विचार करि
पावैगति होएहै। एकही विचार करि वडिनानाभाव

३५

नजे एकसी विचार करि हमसेन कोइहे। एकही विका
र करि संदर संदेह मिटे एकसी विचार करि एक ब्रह्म
जोइहे।। रागिनी गुणकली ताल ४ इदंबछंद।।
रूपकोन सभयो कछू देखिये रूपको रूपहि मांहि
समावे। रूपको मध्य स्वरूप प्रबेदिन सोनो कछू
कहेनजाइन आवेवीच अज्ञान भयो नव नतकोवेद

क॰
ग्रं॰न॰

ज्ञान सबै कोऊ गावै। सोऊ विचार करै जब सुंदर सोधत
नांहि कछू नहि पावै॥ रागिनी उमा कली नाल॥४॥
भूमि ह्वतो नहि गंध का कोउ न नीर ह्वतो रस जै नहि स्या
वै। तेज ह्वतो मिलि रूप रह्यो श्रुनि वायु सपर्श सदा ह्वपि
यारो। व्योम हु शब्द ज्रदी नसी होन हु ऐसे ही श्रेन स्कयगा
विचारे। येन व तत्व मिले श्रुनि तनवनि सुंदर भिन्न स्वरूप

35

रु मानै ॥ रागिनी गुणकली ॥ ४ ॥ ताल ॥ तीन सरूप
शरीर कौ धर्मज तीन रहू उतपति जरा म्रत्यु हानै । भूख तृषा
गुण प्राणकौं व्यापत सोक रु मोह उभय मन आनै । बुद्धि
विचार करै निसि बासर चित चितै सु अहं अभिमानै ॥
सर्व कौ भेदिक सर्व कै साखी सुंदर आपकौं न्यारो ही जा
नै ॥ रागिनी गुणकली ताल ॥ ४ ॥ एक ही रूप के

कां
ग्र.नं.

नीर नैं सींचत इत अफीमहि मेव अनारा। होत उहेज

ल स्वाद अनेक निमिष कटुक खट्टा महावारा। मैं

ही उपाधि हेदर अरु स्वरूप है न्यारा॥ रागिनी गुणा

कली ताल॥४॥ रूप परा कौन जानि परे कबहू

टन है जिहिं मूल नैं छोनी। नाभि विषय मिलि सम

स्वरनि मैं प्रकट संजोग पशंपति वखानी। नाद से

36

जोग हृदय पुनि कंठज मध्य माया ही विचारतैं जानी

अंतरभेद लिये मध्य द्वारस बोलन्त खेदर वैखरी बा

नी ॥ रागिनी गुणकली नाल ॥ ४ ॥ ज्यौं कोउ रोग

भयो नरको घट वैदकहै यह वाउ विकार । कोउ

कहै ग्रह आइ लगो सब भ्रम किये कछु होइ उवा

र । कोई कहै यह छूक पडी कछु देवनि दोष कि

क॰
ग्र॰ नं॰

धो निज यारा। तैसैंही सुंदर सेवनिके मन भिन्नहिं भिन्न
कहेउ विचारा॥ रागिनी गणकली ताल॥४॥ जे विष
यीतम छूटि रहे तिन कौ रजनी महिं वादर छायौ। कोउ अ
मृता किये गुरुदेव तिन्है भय तक्षक शाह सुनायौ। वाद
र उरि भये उनके धनिता रवनि सौं सेज मर्यादि बुखायौ। सुंदर
सुर प्रकाश मन हीं भ्रम हरि भयौ सूज कौ रज पायौ॥ रागि

३७

नी गुणकली नाल । ५ ॥ कर्म सुभा सुभ की रजनी छवि

छटन को मय सुह उजारी । भक्ति सनो यह है सुकलोद

य अंत नि साहिन संध्य विचारी । ज्ञान सुभान सदोदित

वासर वेद पुरान कहै जयकारी । सुंदर मीन सुभाव व

खानन यौं निसचव सुमझौ विधि सारी ॥ रागिनी गुण

कली नाल । ५ ॥ मनहर छंद ॥ देहई को आपमोनदे

क.
गु.त.

रई सोहोइ रह्यो जडता अज्ञाननतम सु इसोई जानिये। ऐहि
निके व्यापारति अन्येन निधन बुद्धिन मोरजदइं कारिबे
थपड प्रमानिये। अंतस्करण मोहि अहंकार बुद्धि जाकैं
रज गुण हद्दि जानि तनिय परि जानिये। सत्व गुण
बुद्धि एक आत्मा विचार जाकै अंदर करहन वह ख्याल
ण वखानिये॥ रागिनी गुणकली नाल॥४॥ आत्मा

के विषै देख आइकरि नास होइ आत्मा अखंड सदाएक
ईरस रहत है। जैसे सांपकेंचुकी कौं लीये रहे कोउ दि
न जीरण उतारि करि नौतन न गहत है। जैसे द्रुम रूंखके प
त्र फूल फल आर होत नाहि के गए ते पुनि और उलट
त है॥ जैसे व्योम मांहि अभ्र होइ के बिलाइ जात ऐसे सो
सो विचार कछु संदेह करत है॥ रागिनी गुणकली

कं
ग्रं नं

नाल । ४१ । खेतीको उरीसौं प्रेकलिखेकैं विचारि यवलि
खेन लिखत वरउगी विधि जानतहै । जैसे हमको हेज
घा मथतहि परीहै नवजोरई कळू मरी भयो सोई हरवान
है । दाहहीसौं दाह मथ्य पावक प्रगट भयो वहे दाहना
रिकी पावक समानहै । तैसैंही सेंदर बुद्धि ग्रलको
विचार करि करत करत वर बुद्धि बिलतहै ॥ साधी

39

३९

नी गुणकली माल ॥४॥ आपकौं सबमहि देषि आपही
सकल मांहि आपही मैं सकल जगत देषियत है ॥ जे
सैं व्योम व्यापक अषंड पुनि पूरन है बादर अनेक नाना
रूप लेषियत है । जैसैं भूमि घट जल तरंग पावक
दीप वायु मैं बघूरो यौंही विश्व देषियत है । तैसैंही वि
चारे विचारऊ विलीन होइ सुंदर ई सुंदर रहत पेषि

यनहै ॥ रागिनी गगनकली नाल ॥ ४ ॥ देहकौ संजो
ग पाइ जीव ऐसो नाम पर्यौ घटके संजोग घटाकाश
ज्यौं कह्यौ है ॥ ईश्वरहू सकल विराटमैं विराजमान
मठके संजोग मठाकाश नाम पायौ है । महदाका
शमांहि घट मठ दीखियत बाहिर भीतर एकताग
न्योहै । समानैमें ही हृदय ब्रह्म ईश्वर अनेक जीव

त्रिविध उपाधि भेद ग्रथनिमें गायोहै ॥ प्रथम नाल ४

देह दुख पावै किधौं इंद्री दुख पावै किधौं प्राण दुःख

पावै जबलखैम शहारकौ। मनदुखपावै किधौं बु

द्धि दुख पावै किधौं चित्त दुखपावै किधौं दुख अहं

कारकौं। गुण दुखपावै किधौं स्वभाव दुखपावै किधौं

प्रकृति दुखपावै किधौं सुराध अपारकौं। सुंदर सकल

क॰
गु॰ नं॰

न वा कछू जानिन परत नातैं कौन दुःख पावै गुरु कहौ या
विचारकौं ॥ शिष्यकौ प्रश्नकौ तात्पर्य ॥ ४ ॥ उत्तर ॥ देह
कौसो दुःख नांहि देह पंच भूतनिकी इंद्रिनिकौं दुःख
नांहि प्राणकौ। मनहूकौ दुःख नांहि बुद्धिहूकौं दुःख
नांहि चित्तहूकौं। दुःख नांहि नांहि अभिमानकौं गुण
निकौ दुःख नांहि स्वरूपकौ। दुःख नांहि प्रकृतिकौ

४१

दुःखनाहिं दुःखन उमानकौ। स्वेद विचारि ऐसे सि
ध्यैसौं करत गुरु दुःख एक देखिवयन बीचके अग्यानकौं·
रागिनी गुणकली नाल॥४॥ प्रथवी भाजन अंगक
नककटक पुनि जलहू नंरंग दोऊ देखिकैं वखानिए·
कारण कारज येनौ प्रगट हैं स्थूल रूप जाहिरैं ते नजर
मांहिं देखिवकौ बखानिए। पावक पवन ओम येनो न

क॰
ग्र॰ न॰

रि देवि विघन दीपक वचन ग्रंथ ग्रन्थन प्रमानिये । स्या
न्या अरूप श्रुति सूतमैं सूतम है हेतर कारण नामैं
देह मैं न जानिये ॥ ताल जत ॥ जैन मत उर जिन ग
न कौंन भूलि जाइ दान तप सील सो विभाव तामैं न
रिये । मन वच काय सुद्ध सब सौं दयाल रहो दोष ढु
ढि हरि करि दया उर धरिये । बोध नाम नव जव मन

४२

कौ निरोध होइ बोधकौं विचार सोय आत्मा कौ कहिये।
संदर कहत ऐसें जीवनही मुक्ति होइ बंधे तें मुकति

कहैं तिन्हैं परहरिये॥ नालजत॥ देह और देहिविये

नो देह पंच भूतनिकी अला ओबकीट लगि देहई समा

नहै। प्राण और देहिवियेनो प्राण सबही को एकतथा

भूख तृषा दोउ व्यापत समानहैं। मनवोर देहिवियेनो

का·
ग्र·न

मनकौ स्वभाव एक संकल्प विकल्प करि रहाई अज्ञान है। आत्मा विचारि कीये आत्माई दीसे एक संदा करन कौ अहलस्थान आवें है॥ अंग बलनि कलंक अंग॥ मन रूरवंद ताल जन॥ एक को उदासा गार बासला कौ देन दान एक को उदयात्हीन मारन निशंक है॥ एक को उनपसी नपस्या मोहि सावधान एक कोउ का

43

४३

मीकोउ कामिनीके संकहै । एककौ उ रूपवंत ऋषि

व विप्र जान एककौ कोपकी कोउ बुवन करंकहै ॥

ग्रामसीमैं प्रति बिंब सब वस्तुकौ देखियत सुंदर करत नप

क ब्रह्म निःकलंक कहै ॥ तालजत ॥ रविके प्रकाशते

प्रकाश होत नेत्रनिकौ सब कोउ शुभा शुभ कर्मकौ

करत है ॥ कोउ जग्य दान जप तप जन नेम व्रत केउ

क·
गु·न·

ंड्डीतम करि ध्यानकौं धरत है। कोउ परब्रह्म परय
न कौं नकल जाइको उद्दिसा करिकै उदरकौं भरत है·
स्ंदर कसान ब्रह्म साखी रूप एकरस वाहीमैं उपजि
करि वाहीमैं मरत है ।। नालजन ।। जैसे जंतु जलही
मे उपजति हैं फिर सब जलहीमैं बिचरत जलके आधार है
जलहीमैं कीडत बिबिधि अवस्था होत काम सोय ले

भमोर जल मैं समाय है। जल कौन लागे कछु जीवन
को राग द्वेष उनको की क्रिया कर्म उनको कीना है।
तैसेही ब्रह्म यह ब्रह्म मैं जगत सब ब्रह्म कौन लागे
कछु जगत विकार है रागिनी गुणकली ताल ॥ २ ॥
स्वेदज जरायुज अंडज उद्भिज पुनि चारि खानि ति
नको चौरासी लाख जे है। जल वायु थल नभ मैं सब

क॰
गु॰ न॰

रभिन्न देह पंच भूतनिको उपजि खेंवत है। सीनचाम
पवन गगनमें चलत आइ गगान गलिम जामें मेघऊ
अनंत है। तैसेंही सुंदर यह सृष्टि एक ब्रह्म मांहि ब्रह्म
निष्कलंकसदा जानत मरेत है॥ ऐसा आत्मा अनुभव
ऐसा लावनी॥ हैदिलमें दिलदारसही अंखियां उल
टीकरिताहि चितैये। आवमें खोकमें वादमें आत्माजा

४५

८१

नैमैं सुंदर जान जनैये। नूरमै नूरहै तेजमै तेजहै ज्यो
तिहै ज्योतिमै मिलि मिलि जैये। क्या कहिये कहा ने
न बनै कछु जो कहिये कहनेही लजैये॥ रागिनी
गुणकली ताल॥२॥ जासौं कहूं सबमै वह एकतो
सो कैसो है श्रीगोविंदीवैये। जो कहूं रूप नरेख विनिसे क
हुतो सवकंहुके मानै कहिये। जो कहूं सुंदर नैननि

क·
ग·न·

मोजतौ नैंनह्वैंन गियेपुनि ग्रहैये। क्याकहियेक
हतेन बनै कछु जो कहिये करहते हील जैये। लावनि·
होत विनोद जितो अभिमेंनहि सो ह्लाव आपनो आ
पहीपैये। बाहिर कौं उमगो पुनि आवन केठैने ब
हर फेर पठैये। स्वादन वेरन वेसो न जाइ मनो गु
ड गंहगहि ज्यौं निन रैबिये। क्याकहिये करहतेन बनै

46

४६४

कछु जो कहिये कहने ही लजैये ॥ लावनि ॥ ब्योम

से भेोम्म अनेन अवेदिन आदिन अनहमध्य कहारे

को परिमाण करे पीर धरणाहैन अहेन कहून जहारे

कारण कारज भेद नही कछु आपुमें आपही आप

नहा है । सुंदर दीसत सुंदर मोहीसह सुंदर नाकेहै कौ

न उहारे ॥ अमोसर लावनि ॥ एक किदोयन एक

क॰
गु॰ न॰

नदोय उंहीकि इंहीन उंसीन इंसीहै। सून्यकि सून्यन सू
न्य न सून्य जहांकि तंही नजंही न नहींहै। मूलकि डा
ल न मूल न डाल वंहीकि मेंहीन वंही नमंहीहै ॥ जा
वकि अलन जीवन अल सोहै कि नहीं कछूहै कि
नहीं है ॥ लावनि ॥ एक कंहू नो अनेक सो दोसतन ए
क अनेक नहीं कछु ऐसो। आदि कंहू मोही अंतहू

47

८४

श्रावन आदिन श्रेतन मध्य सु कैसो । गोप कहूं तो सु
गोप कहा यह गोप अगोपन ऊभौन वैसो । जोई क
हूं मोई है न कहीं सुंदर है तो सही परि जैसे को तैसो ॥ मन
हरछंद ॥ लावनि ॥ एकज कहै कोऊ एक कहौ अका
सम है दोइ जो कहै कोऊ हम रोन दीखिये । अनेक जो
कहै कोऊ अनेक भासे नाहि कौ जैसो भावना को तैसो
जो

क॰
ग्र॰

ई विसेषिये। वचन विलास कोऊ कैसेही वखान
करैं। ग्राम मांहि विय कहूं कैसें करि लेषिये। ग्रन
भव कियेमें एकटोइन अनेक कछू संदर कहत ज्यौं
को त्यौंही नाहि पेषिये। लावनि। वचन ईवेद वि
धि वचन ईशास्त्र श्रुति वचन इस्मृत पुराण वचन प्रमा
नज। वचन ई औरगेय वचनई आकरन वचनईका

४८

या हनुमन्नाटक बखानतजू । वचन ई संस्कृत वचन
ई प्राकृत वचन ई भाषा सब जगत मै जानतजू । वच
नके परे है सु वचनमैं आवै नाहि ऐसे कहत वह
सब भव प्रमानतजू लावनि ॥ ऐसी नहीं जानिस
के स्वल्प ज्ञान ऐंद्रिनिको प्राणऊन जानसके स्वास
आवै जात है । मनऊन जानसके संकल्प विकल्प

कं
ग्र.न.

करउदिइन जानिसक स्वैयो सोवनाउहै । विन स्परे
कार शनिप् उनहिजानिसके शाह्इन जानिसके स्र
न मान पाइहै । संदरा करइन नाहिकोउ नहि जानि सकै
टीका करि देखिये स सैसी नही लाइहै ॥ इंद्रवज्रछंद ॥
लावति ॥ श्रोत्रन जानन चक्षनजानन जानन नोही
इहैवन जाने । नाहि स्पर्शन चान सके शनि जानन

४७

तोहिज जीभ बखाने । मन नहि जानत इहिन जानत
चित ग्रहे कहि कैसैं पहिचाने । शब्द के भेद जानि सकै
नही आत्मा आपकौं आपहि जाने ॥ लावनि ॥ सूरके
तेजतैं सूरज दीसत चंदके तेजतैं चंद उजासे । तारेकेते
जते तारे उदीसत बीजल तेजतैं बीज प्रकासे । दीपके
तेजतैं दीपक दीसत हीरेके तेजतैं हीरो उभासे । तैसेही

के॰
गु॰न॰

सुंदर आत्मा जानइ आपके तेजसैं आप प्रकासे ॥ ला
वनि। कोउ कहै यह स्हहि स्वभावैं तैं कोउ कहै यह क
र्मैं तैं स्रष्टी। कोउ कहै यह काल उपावन कोउ कहै य
ह ईश्वर निष्टी। कोउ कहै यह ऐसैं ही होत है कौंकरि
मानिये बात अनिष्टी। सुंदर एक किये भ्रम भव बिन
जानि सकै नही बाहिर दृष्टी ॥ लावनि ॥ कोउ तो मो

50

५०

त भकास बनावनकोउ नो मोतपनालके मोही। को
उनो मोत कहे पृथ्वी परकोउ करे कहीं ओर कहो ही॥
कोऊ बनावन मोत सिलापरकोउ करे मोतमिटे
परछोही। सुंदर आत्माके अनभव बिन ओरकडे
कोउ मोतहरी नोही॥ लावनि॥ मूर्खने मोत करें
सब पंडित मूर्खनें मोत करें भनिजेना। मूर्खने मो

क॰
गु॰ न॰

नकहै रिषिताप समृयेतें मोनकहै सिवसेना । मृषेने
मोन मलेछ कहैंते उयो विहीयो न्यो वाखानतवेना ।
संदर आत्माको भजन सोईजीवन मोन सदा सुखवे
ना ॥ लावनि ॥ जाग्रत तो नहि मेरे विषे कछु स्वप्नस
मो नहि मेरे विषै है । नाहि सुषोपति मेरे विषै उत्प
विश्वऊतेजस प्राज्ञ पषे है । मेरे विषै तरियानहि दी

51

सनकादीकें मेरो स्वरूप भयो है। हरिके हरिपदरेनेपरे

प्रति हृदयको उनमो हिल भयो है॥शिष्य लावनि॥को

उनो कहन ब्रह्म नाभिके कंवल मध्यकोउनो कहन

ब्रह्म हृदयमें प्रकासहै। कोउनो कहन कंठ नासिको

के अग्रभागकोउनो कहन ब्रह्म भृकुटीमें वासहै। को

उनो कहै ब्रह्म दसपद्वारेके वीचकोउनौ कहै भौरगुफा

के॰ ग॰ न॰

मैं निवास है। पिंड ने ब्रह्मंड ने निरंतर विराजे ब्रह्म संदर अखंड जैसे व्यापक प्रकास है॥ लावनि॥ आथरेन झाथी देखि उगरो मचायो है। पांव जिन गह्यो सो तो कहत ऊखर सो छुद्धि जिन गह्यो तिन ला सो ठनायो है॰ रोह जिन गह्यो तिन दगली को बोह कह्यो दांत जिन गह्यो तिन मूसर दिखायो है। कान जिन गह्यो तिन

S V

सूपसो वनायकसौ पीठि जिनगाही तिनविटोराव
नायौहै। जैसेहै सैनसौ नाहि हैदर सवेपाखा देखेंग्रो
ग्रेन हाथी देखजंगसौ मचायौहै। लावनि॥ न्याय
शास्त्र कहै प्रगट ईश्वरवादसौ मीमांसक शास्त्र महि क
र्मवादकह्यौहै। वैसेषक शास्त्र प्रतिकालवादहै प्र
सिद्ध पातंजल शास्त्र मांहि जोगवादलह्यौहै॥ सां

क॰
गु॰नं॰

त्यशास्त्र मांहिषति प्रकृति पुरुष वाद वेदांत शास्त्र म
हिं ब्रह्म वाद गह्योहै। सुंदर कहत षट्शास्त्र मांहि भयो
वाद जाकैं अनुभव ज्ञान सनो वाद मैं न वद्यो है। तावनि
प्रज्ञान मानंद ब्रह्म ऐसें रुग्येद कहै अहं ब्रह्मास्मीति ज
जुरवेद यौं कहै। तत्वमसीति साम वेद यों वषानत है
अयं आत्मा ब्रह्म वेद अथर्वन लहै। एक एक वचन मैं

तीन पद हैं प्रसिद्ध तिनकौ विचार करि ग्रंथनमैं कौंग
है। चारि भेद भिन्न भिन्न सबकौ सिद्धांत एक संदरमत
ऊि कर उपचाप कैंर हैं। ताबतें। ईश्वरिनिकौ भोमजब
वाहृ नव आउरहे नामवेन तोतैनतख्ता नेदयो मनायो है-
देवलोक ईश्वलोक विधिलोक शिवलोक वैकुंठके स
खलौंगनंतना नेदगायौ है। प्रलय प्रविउ एकरसपरि

कं
गु न

प्राणहै ताहीतें परानंद अनुभवतें पायोमैंहै। याही
के अंतर भूत आनंद जहांलौ और सुंदर समुद्र मांहि
सर्वजल आयोहै॥ रागिनी गुणकली ताल। ७। हम
री॥ एकतौ माया विलास जगत प्रपंच यह वारिवा
नभेद पाइहैंत भास रह्योहै। दूसरो विषय विलासहै
इंद्रिनिके विषयपंच शब्द स्पर्श रूपरस गंधगह्योहै।

5४

नीजो वाचक विलास सोतो सव वेद मांहि वरनिकै

जहां लगि ववननैं कह्यौहै। वोघ्यो ब्रह्मकौ विला

स तिनहूंकौ प्रभाव जहां संदर कहत वर ग्रन्थ भवनैं

ल ह्यैहै॥ ठुमरी॥ जीवनहीं देव लोक जीवनहीं इं

द्र लोक जीवनहीं जननप सत्य लोक छायोहै। जी

वनहीं विधिलोक जीवनहीं शिवलोक जीवनवै

क॰
उ॰न॰

ऊंट लोकसो अकंट गायौ है। जीवनही मोत मिलाजी

वनही भिस मांहि जीवनही निकट परम पद पायो है॰

आत्माकौ अज भवजिनकौ जीवन भयौ संदर कह

त तिन संसय मिटायौ है॥ टूसरी॥ इच्छाहीन प्रकृ

तिन महत्तत्व अहंकार विज्ञान व्योम आदि शद्वादि

न कोई है। श्रवनादिवचनादि देवता वम आदि हू

५५

त्तमन पलभुनिपकहा नेदीयहै। खेदजन ग्रेउजजरा
भुजन उद्यमि जपतहीन पतीहीन भुलषन जोयहै ॥
हेदर कहन खलज्यौं कोत्यौं ही देखियतन नतो कछुम
यो भ्रवङ्कन कछु होउहै। ठुंमरी ॥ दिनभ्रम जलभ्रम
भोम भ्रमतिनकौशरीर भ्रम मानिये। इद्री दसनेऊ
भ्रम ग्रेतसरग भ्रमतिनहूके देवता भ्रममै बखानि

ये। सतरजतम भ्रमगुनि ग्रहंकार भ्रम महत्तत्व प्रकृति

पुरुष भ्रम मानिये। जोईक ब्रह्म कहिये सुसंदर सकल

भ्रम भूमि ग्रन भोकिये ते एक ग्रात्माही जानिये। ठुमरी।

भूमिङ्ग विलीन होइ ग्रापङ्ग विलीन होइ तेजङ्ग विली

न होइ वायुजो बङ्गवहै। व्योमङ्ग विलीन होइ त्रिगुण

विलीन होइ प्राकृङ्ग विलीन होइ ग्रहंजो कहतहै ॥

क॰
गु॰ न॰

56

महतत्व लीन होइ प्रकृति विलीन होइ पुरुष विलीन
होइ देह जो गहत है। इंद्र सकल जो जो कहिये सो सो
लीन होइ आत्मा को अनुभव आत्मा रहत है॥ दूसरी
माया की अपेक्षा ब्रह्म रात्री की अपेक्षा दिन जड़ की अ
पेक्षा करि चेतन बखानिये। अज्ञान की अपेक्षा ज्ञान
वेष की अपेक्षा मीत हैन की अपेक्षा सतौ अहैन अथवा

क॰
ग्र॰नं॰

निये। उरवेकी अपेक्षा सावे पापकी अपेक्षा हर्णी स्तुढ
की अपेक्षा नाहि सत्य करि मानिये। सेदव सकल यह
वचन विलास भ्रम वचन अवचन रहित सोई जानिये।
ठुंमरी॥ आत्माकरहत गुरु सुद्ध निरवेध नित्य सम्यक
सिमाने सुनो शाह प्रमानहै। जैसें व्योम व्यापका य
विद पति प्रमाणहै। व्योम उपमान उपमानसों प्रमान

SX

५८ ५६

है। जाकी संज्ञा पाइ सब ग्रंथनि में दृष्टांत अलंकार होइ।

नऊ प्रमान है। अनुभव जाते नव सकल संदेह मिटै से

दृष्टांत कहत यह प्रत्यक्ष प्रमान है। १ छप्पै। एक अक्षर दोइ

अक्षरनि अक्षर चारि अक्षर पंच अक्षर जे सब छंदोक्षर पाइ है।

एक एक अक्षर के आधार एक एक अक्षर एक अक्षर निराधा

र आपही दिखावइ है। तिनो अक्षर साक्षी हूप अक्षर कौ मैं

क·
ग्र·न·

अनपताऊ चरमथ्यकोउ दिनठहराउ है। ताकेपरेसाक्षी
न अमाक्षीन संदरकछू वचना तीन कहे थाइहैन जा
इहै। इंमरी। एकतो अवन ज्ञान पावक जो देखियत
माया जलपरसनवेगि बुझ जातहै। एकहै मननज्ञान
विजलजो घननमें माया जल बरषत तामेंनबुझातहै
एक निदध्यास ज्ञान वड्वा अनल सम अगाद समुद्र मों

58

रि माया जल खानै है। आत्मानुभव ज्ञान प्रलय अ
गि जैसे खेद करत है न प्रपंच विलानै है॥ रागिनी ग
णकली नाल। ५। देशाक्षिकान्हरा॥ वकमकाछे
कैनेव भव कारहोत कछु ऐसो है श्रवण ज्ञान नवह्री
लै जानिये। कफ मन लागे जब प्रगटे पावक ज्ञान
मलगात जात न हमनन वखानिये। वर्द्धमान भये

कं
ग्र.न.

काठकर्म निजगावनहै वहै निदध्यास ज्ञान गेयनमैं गा
निये। सकल प्रपंच यह जानिकैं समाइ ज्ञान संदर
करहन वह गुरु भव प्रमानिये। रागिनी गुणकली
लाल॥४॥ भोजनकी बात सुनि मनमैं सुदिन हो
न सुखबैंन पैजैौ लौमै लियेन यासहै। सकल सा
मग्री सुनि पाककौं करन लाग्यो मनन करन कवजें

उपरत भासत है। पाकजब भयो तब भोजन करन ला
गयो सब वैसे मेलत जात उहै निदध्यास है। भोजन पर
न करि त्रपत भयो है तब सुंदर सावकार अनुभो उ
कासत है॥ राग नाल॥४॥ श्रवण करत जब सब सा
उदास है होइ चित एकाग्र आनि गुरु सबद सुनिये॥
वैठकै एकंत ठौर अंतस्करण मों मिमनन करत फे

रिवइस्नान उनिये। ब्रह्मकौं परोत्त जानि कहत है ब्रह्म
सोऽहं सोऽहं होइ सो निदध्यासन उनिये। इह अनुभव पद्रक
हिये सो ज्ञान कार संदर पलैते गलि पानी होइ सु उनिये।
जबही जिन्ना सहाइ विन एकटोर आनि सब जेपा मनन
नाद श्रवन सो कहिये। जैसे स्नान छूटे दूकौं बाल्कर ट
न उनि ऐसैं ही मन करे कब छेदन हिये। जैसे गविज्ञव

कोअखंडब्रह्मकौ ध्यानकरै ऐसैंजानि निदध्यासदढकरी

गहिये। स्रेदर मालान कारकी टजेसे स्रोत भेरगा उहेय

न्नमवव उहेस्रस्रतपराहिये। काह्नकों एकत्नरंकय

नकैसें पाईयन कानटैकें स्रवनन श्रवन सोई जानिये-

उनकस्यो यन रूम देखोहै फलानी ठौर मनन कारन

भयो कबचर श्रानीये। फेरी जबकह्यो यनगाङो

क॰
ग्रं॰

नेरे उरमांहि खोद हलगयो है तब निदध्यास ठानिये ॥
धननिकस्यो है जब दरिद्र गयो है तब सुंदर सादान
कार रूपानि वखानिये ॥ ज्ञानिको अंग मेच नाल ४
जाके हृदयमे ज्ञान प्रकाशत ताको सुभाव रहै नहि
छांनौ । नैंनमैं वैनमैं सैनमैं जानिये उठत वैठत हैनौ
ग्रलसामो सोकछु भक्ष किये उद्गारत कै सेज्ञाविस

61

कैन प्रवानै। सुंदरदास प्रसिद्ध दिखावन थानकौ खे
तपयारनै जानै। बोलन चालन उठन बैठन पीवन खा
तऊ संखवन खासै। उपरतौ व्यवहार करै सब भीतर स्व
पस मानसो भासै। लोकरि नीर पनालकौ सो पन मा
रत हे प्रति फेरि अनासै। सुंदर देह क्रिया सब देखन
कोउ नी पावन ज्ञानीकौ आसै। रागिनी गणकली ना

कं
ग्रं

बैठेतो बैठो चलेतो चले भजि पीछेतो पीछेही अगोतो
आगे। बोलतो बोलेन बोलेतो मोनही सोवेतो सोवे अ
रु जागेतो जागे। खोइतो खोइनही लेनही जगदहेतो
दहे अरु भागे। सुंदर ज्ञानी की ऐसी दसा यह जानेन
ही कछु राग विरागे॥ रागिनी गुणकली ताल॥ ४॥
कान्हरा॥ देखत है पै कछु नहि देखत बोलत है नही

बोत बखाने। सुवचन है नहि सुन ज्ञान सुने सब है न ख

ने यह माने। भत करे वह नाहि भखे कछू भेटन नसी

भेटन खाने लेन है देन ह देन न लेन है संदरजानी को

जानी ही जाने॥ रागिनी गुणकली नाल॥४॥ का

ज गुजा जभलो नवो कछु उत्तम मध्यम दक्षिन खावे-

कायक वाचक मानस कर्म स आप विषै न निर्दै वह

रा॰ क॰
ग॰ न॰

गावै । हौं करि हौं न कियौ न करौं सब यौं मन इंद्रिनि कौ व

रतावै । रीसत है व्यवहार विषै नित सुंदर ज्ञानी कौ कोउ

न पावै ॥ रागिनी रामकली नाल ॥ ४ ॥ देखत ब्रह्म

नै सुनि ब्रह्महि दोलत है सोउ ब्रह्महि बानी । भूमि रु नी

र रु तेज रु वायु रु ब्रह्म व्योम हु ब्रह्म जहां लगि प्रानी । आदि

रु अंतन मध्य रु ब्रह्महि है सब ब्रह्म यही मति ज्ञानी ॥

63

सेदर जेय ब्रह्मज्ञानकू ब्रह्मस ध्यानकू ब्रह्मलखी ज्ञानतज्ञानी

रागिनी गुणकली ताल ॥ ७ ॥ ऊठत केवल बैठत केव

ल बोलत केवल बात कहीहै । जागत केवल सोवत केव

ल जोवत केवल दृष्टि नहीहै । भूतऊ केवल भव्यऊ के

वल वर्तन केवल ब्रह्म सहीहै । है सबही पे पउरप केव

ल सेदर केवल ज्ञान उहीहै ॥ त्रिकुटी ॥ केवल ज्ञान

क.
गु न.

भयौं जिनके उरते अघ ओघ लोकन जाही । व्यापक ब
ह्म अखंड निरंतर वाचित और कछू कछु नाही । जैसे व
ट नाम भये वट व्योम सलीन भयौ पुनि है नभ माही ॥
सो अति मक जहां वश छाइन मेहर मोत सिला कहे
नाही ॥ छिंकुटी ॥ आदि कनो नरी अवरहे नरी मध्य
नरीर भयो अमरूप दोउ पग पायरी करै दोउ कर जोरी ॥

6K

ज्किटी ॥ आलीजानन पाँवैयर ल्याई कन्हैया । देक
जरोटा आवे आंजन के अवीर गुलाल लगावै । एकाक्ष
नाय बजावे मरलिया एकन नाय गवावै । फगवा मोग
पीतपट रवैवै करयर विनती करावै । कौन मराय को
अवन नमके ग्वाल आवन नही पावै । प्रेम रंग फग
वाहराये एक एक पापपरावै ॥ ज्किटी ॥ भलामेरी

क·
ग्र॰न॰

जोनभला नमखेलन होरी। मेरी अंगीया रंगमैं बोरी ॥
भला मेरी जान भला नमसे खेलोंगीहो होरी। बरबस
झोन लगावन छानीयो लपटावन बरजोरी। रहमकरो
कर बांउेल लामे नोहो दिननकी थोरी। क्रुलानेदबो
उलगाई पईयो परननमे नोरी ॥ जिंझटी ॥ नमह
नीयो नेद फिटौना नोरी होरी खेलनमें टोना। मेरो ह

65

एकह्रोलगी वरनो पारस मिल भयो सोना। फिंजुही

कान्हरंग डार दियो मोपर मोरी सास खीजे देहै गारी। मै

नमको परखोनन नाही मावदई पिव कारी। कमलानंद

फिरन रस मोतो लोक लाज कुल डारी॥ फिंजुही॥

डफ बाज बाज मची फाग आज ब्रजमै खेलतहै नर

नारी। एकगावन एक मृदंग बजावन एक नोचतहै

क॰
७८

मरे सदैदै नारी ॥ जिंह्लटी बंगाला नाल ॥ २ ॥ नागर
हेकि श्रप ह्रूप हेरी । ह्रारीयाना ह्रारे नमिकोरे मनो
ह्रुरी । बोखे देह्रो फाग पुन करो राग नारी पेखे बरज्
री । कारिहे निवेदन फिरे देह्न मनकाज नांही पमन
ह्रोरी ॥ जंगला निनारा ॥ ३ ॥ ह्रोरीमे श्रनोखे ख्याल
कैला नसी करदावे । श्रबीर गुलाल केसर पिचका

66

री मारी साडे प्रेमानमी भरदावे। तालजत ॥ कान्हन
मकीनो खेलो ऐसी होरी बरवसवहीयां मरोरी। अन
वादी रस वादी नेटके वर बस कर नट गोरी। जातर
ही जमुना जल भरेको काहूसें नहीबोली। तांनव
रसके प्रभ ब्रजवकमे रंग भरी चोली॥ तालजत।
होरे कान्हा होरी के दिननमे नितनई धूमसचावे।

ग्वाल बाल सबही संग लै लै मेरेही द्वारे आवे रे। कहीं न

नी कछु मानत नांही भ्रमत है कछु आरका और ईज्यों

र ईज्यौं रज मैं प्रतिबिंब सरूपं। देखि मरीच जड़ो विच

विभ्रम जानत नाहि वै हैं रवि भूपं। संद रत्नान प्रकाश

भयो जब एक अखंडित ब्रह्म अनूपं॥ रागिनी रागक

ली मनहरकंद तर मलार ताल।५॥ जाही के विवेक

का॰
रा॰ न॰

67

ज्ञानतारिकैं कुशल भई जाही बोरजाइन ताकौं तौन कोउ

कौंट खोवरे कौडावेहै। भावे कोउ निदा कारा भावे तोष

संसा करो वहतो देके आरसीमें आपनोइ मुखवेहै। देहकौ

व्यवहार सब मिथ्या करि मानतहै। सुंदर कहत एक

आत्माकी हावेहै। रागिनी गणाकली ताल। ४॥ श्रु

नस्करनजाकनम गाग क्याइ रह्यो जडाना अज्ञानवाकैं

कं॰
ग॰ नं॰

आलस भय नासहै। रजगुणको प्रभाव अंतस्करण
जाके विविधि करमनाके कामको वासहै। सतगुण
अन्तस्करन जाके देखियत क्रिया करि शुद्ध वाकें भ
क्तिको निवासहै। त्रिगुणातीत साक्षी तुरया स्वरूप
जानि भेदर करहन वाके ज्ञानको प्रकाशहै॥ रागिनी
गुणकली ताल।४॥ तमगुणी उद्धिसोतोत वाके स

68

मान जैसैं ताकी मध्याध्य सूरजकी रेखकन ज्यो

ति है। रजोगुण वृद्धि जैसैं आरसीको अभोवोरत

के मध्य सूरको कछुक उदो है। समोगुण वृद्धि जै

है आरसीकी शुद्ध ओरताके मध्य प्रति बिंव सूरज

कौ देखत है। त्रिगुण तिन जैसैं प्रति बिंब मिटि जार

हे दख कहत एक सूरज ई होत है। गुणिनी गुणक

क॰
श्रु॰न॰

ली न्याला।४॥ सबसौं उदास होइ काम्हिमन भिन्न करे
नाकाना कहियत परमपि राषहै। अनस्करणऊकी
वासनानि वर्नैहौ हिनाका मनि करतनहैं उहे वउेगग्या
गहै। वजपक ईश्वरसौंनैं कऊ न्यारो होइ उहै भक्ति
कहियत उहे प्रेमागहै। आपब्रह्म जगतके एकक
रिजाने जब संदर कहत ब ब ज्ञानश्रम भागहै॥

69

६५

रागिनी गुणकली नाल ॥ ४ ॥ कौउन्रप फूलनिको
सेजपर सूतो आई जब लगि जागै तो लो अनिख
खमान्यो है । नीइ जब आइ तब वाही कौ सुपन भयो
जाइ परयो नरक कुंड में यो जान्यो है । अनि डरविपायो
परि तिन कह्यो न जाइ को ही जागि जब परै तब सुपन
वख्यो है । इहर जट वहू कुजागरन सुपन दोउ हेदर

क॰
ग्र॰न॰

इकेन तानी षव भ्रम भाम्यो है ॥ रागिनी आ कली
नाल। ४॥ स्वप्न मेरा राजा होइ स्वप्ने मैं रंक होइ स्वप्ने
मैं बहु रव सम्न कवि जाम्यो है। स्वप्ने मैं बुद्धिहीन मू
ढ़ सम्न जैन कछु स्वपन पंडित बहु ग्रंथ्य नि बखो मैं
है। स्वप्ने मैं बुद्धिमै कामी होइ इंद्रिनि के वस परे स्वप
ने मैं ज्ञानी होइ ग्रहेचर आम्यो है। स्वपन तै जागे पाजव

४०

समुझपरी सैनव सेदर करहन सब मिथ्या करि मान्यो है
रागिनी रामकली ताल ।४।। विधि नति लेष कछु
भेदन अभेद कछु क्रियासो करन दीसे योरी निरपति
है । काहू सौ न निकट रहे के काहू सौ न दूरि भाके काहू
सौ न नेरे हरि ऐसो जाकी मति है । मयाहीन द्वेष कोउ
मोहन उछाह दोउ ऐसो विधि रहे कहूं रमिन विरति है

क·
रा·ग्र·

बाहिर व्योहार टाने मन सपन मामे संदर सानी कोकछु
अद्भुत गति है ॥ रागिनी रामकली ताल । ४ ॥ काम
होन जानी है न सम है न सती है न राजा है न रंक है न तन
है न त न है न त न है न मन है । ध्योवो वे है न जागे है न पी
छे है न आगे है न थरे है न मारे है न चर है न बन है । थि
र है न ओली है न मो न है न बोले है न वे पे है न खोलै है

न स्वामी है न जन है। वैसो कोउ होइ न तब वाकी गति
जानै जउ संदर करहत ज्ञानी शुठ ज्ञान चवहै॥ रागि
नी गुणकली ताल।७॥ स्वनन श्रवण नवे बोलत
वचन ज्ञान फूल निरूप देखत दृग न है। तकम प
रस रस रस रसना गमन करगहन गमन शुरु चल
त पग न है। करत गवन शुनि वैठत भवन सेजसो

क॰
गु॰नं॰

वनरवन बोछ्त नगानहै। जोजो कछु व्यवहार जान
न सकल भ्रम संदरकहत ज्ञान गगन समानहै ॥
रागिनी गुणकली जाल ॥४॥ कर्मन विकर्म करे
भावन अभाव धरे सवऊ अम धरैयानेनिथरकरै
वस तीन छ्यम जाकै पापहीन पुन्य ताके। अधिक
नयन वाकें स्वरग नरकहैं। भावऊरवे समदोऊ

नीचहीन उच्च कोउ ऐसी विधि रहै सोऊ मिलौ फरक
है। एक हीन दोय जानै वंध मोक्ष भ्रमानै भेद करै
न ज्ञानी ज्ञानमै गरक है॥ रागिनी रामकली ता॰ ४
अज्ञानी कौं दुखको समुद्र जग जानियत ज्ञानी कौं
जगत सब आनंद स्वरूप है। नैन हीन कौं जो चरवा
द्रिगन रूप है जैसो जाई तैसो दीप रूप है। जाके वद

कं॰
ग्र॰नं॰

है प्रकाश अंधकार भयो नाम वाकौ जहां रहै तहां सूजि
को रूप है। ऐसे अज्ञानी ज्ञानी अंतर बहुत आहिवा।
कौ सदा राति वाकौ दिवस अनूप है॥ रागिनी राग
कली नाल॥४॥ ज्ञान अरु अज्ञानकी क्रिय सबप
कसीही अरप आसा और ज्ञानी आसन निरास है॥
अरप जोई जोई करै अहंकार वृद्धि परै ज्ञानी अहंकार

७३

विन्न करत उदास है। आपसुखदुःखदोउ आपवि
है मान लेत ज्ञानी सुखदुःखको न जाने मेरे पास है॥
आपको जगत यह सकल संताप कर सुंदर ज्ञानी
कों साब ब्रह्मकों विलास है॥ रागिनी रामकली
ताला ४॥ ज्ञानी लोक संग्रहकों करत व्यवहार वि
धि अन्तःकरणमैं सावन की सी दौर है॥ देत उपदेस

क॰
ग्र॰न॰

नाना भांतिके वचन कहि सबकोउ जानन सकल सिर मौर है। हस्तन चलन पुनि देहसों करावत है थानमें गाहक निरलिप निज ठौर है। संदर कहत जैसें दल गज राजहू के खोइवेके और रही दिखाइवेके और है चौपाई॥ इंद्रिनिको ज्ञान जाके सोतो पद्मके समान देह आभि मान खान पान हि सो नीनकै है॥ अंतस्कर

७४।

राग्यान कञ्चुक विचार जाके मन्त्र खोहार भक
मेति अधीन है। आत्म विचार ज्ञान जाकै त्रिसिवास
रहै। सोई साधु सकल बानन विषै श्रवी है॥ एकपद
आत्माकै ग्यान अनभव जाकै अंदर कहन ब्रहज्ञा
नी भ्रम छीन है॥ रागिनी रामकली नाल॥४॥
पोकोन रहन कोउ ज्ञान के प्रकाशनें। जाही ठौर

कं॰
ग्रं॰नं॰

रविकौऊ दन भयौ नाही तैर अंधकार भाजि गयौ वर
ह्व वन वासतै । नतो कछु वनतेउ लछि आवै वरमोहि
नतो ब नवली जाइ कनक अवासतै । जसै पंखी पांष
टूटि जाही तैर परयो आइ नाहि फिर रह्यो उडवे की आ
सतै । संदर कहत सब मिटि जाइ तैर धूप थो वोन र
हत कोउ ज्ञान के प्रकाशतै जैसै काऊ देस जाइ भाषा क

१५

७५

है । औरसीही समझैनकोउ वासौं कहैं काकहतहै । को
उदिन रहकार कोली सीखे उनही की फेरि समझा
वै तव सबकौ लहतहै । जैसे ज्ञान कहैते सनत विप
रीति लगे आपो आपनोई मत सबकोई गहतहै ॥
उनही के मत की संदर कहत ज्ञान न वहीनो ज्ञान
ठहराइकै रहतहै ॥ कौ० ॥ एकोज्ञानी कहै तिसैं तम

कं
गु.न.

र देखियत भक्तिकौ प्रभाव नांहि ज्ञानमैं गारकह ॥
एक ज्ञानी भक्तिको अंगन प्रभाव लीयें ज्ञान मांहि
निश्चय करि करमसौं नरक है। एक ज्ञानी ज्ञानहीन
ग्यानकौ उद्धार करै भक्ति अरु कर्म इनउ है नै फरक
है। कर्म भक्ति ग्यान तीनो वेद मेव खोलिक है। है
दर बनायो गृहनाहिं रैमे मरक है। रागिनी गुणक

76

७६१

ली नाल। ४।। जैसैं पंखी पगनसो चलत अवनिआ

श्रेत सैं ग्यानी देहकरि कर्म नि करत है।। जैसैं पंख

चौंच करि चुगत अहार अवनि तैसैं ग्यानी उरमे उपास

ना धरत है। जैसे पंखी पंखनिसौं उडत गगन मांहि

तैसे ग्यानी मान करि ब्रह्ममे चरत है ।। सेदरकहत

ग्यानी तीनो भांति देखियत एसी विधि जाने सब सैं

क॰
ग॰न॰

स्य हवत है ।। रागिनी रामकली ताल । ३ ।। एक क्रिया
करि कृपा निपावन आदि ओर अंत समसे बर्ण्यो है ।।
एक क्रिया करि पाक करे जब भोजन लोकन्हू अन्तर
ध्यो हैं । एक क्रिया मल त्यागत है लघु नीत करे कछु
नाहि फटो है । त्यो यह जानि क्रिया ग्रह से यह भेद
र तीन प्रकार में ध्यो है ।। ताल । ३ ।। दोऊ जने मिलीवो

पर खेलत मारग पै श्रुति फारत पावत जीवत है सबसी

मनमे श्रुति हारते हमरे खत भासा । तैसे अज्ञानी के

हेत भयो भ्रम संहर ज्ञानी के एक प्रकासा ॥ रागिनी

गुणकली ताल । ४ ॥ सवैया ॥ जीव नरेस अविद्या नि

द्रा हव सज्ञा सोयो करि हेत । कर्म खवास १८५

री लाई ताते बहु विधि भयो अचेत भक्ति प्रधन जगा

के॰
गु॰ न॰

यो करगहि आलस भरो जे भात। लेन सुंदर अवनिद्रा
वस नोंद्री ज्ञान जागवन सदा सचेन। ज्ञान प्रकाश
भयो जिनके उरवेवचटकोंइ पेनरहेगे। भोउल
माहि डरै नहि दीपक नयापिवे सब मोन गहेगे॥
ज्योबन सारहि गोपि छिपावन तो हि सगंथ हिन
तलहेगे। सुंदर और कहा कोउ जानन वैठे किवान

७८

बरतउ करैगो ॥ रागिनी रामकली ताल ॥ ४ ॥ ज्ञानी
करिके नानाविधि अहंकार प्रानन को खोवै कमि
निके फल कछु न वांछे अंतस्करण वासना धोवै
जो कोउ खेती कौं जोतन ले करि बीज भून करि बै
हंदर करै ऐसो दृष्टांतहिं नागो द्वारपत्ते करतानि बै
है ॥ अंग· विदेहकौं धरी अजत ॥ भावे देह छूटि जा

क॰
ग॰न॰

इकासी मांहि गंगा तट भाव देह देह छूटि जाइ देखम
गहरमें । भावे देह छूटि जाइ विप्रके सदन मध्यभावे
देह छूटि जाइ स्वपचके घरमें । भावे देह छूटे देस आर
ज अनारजमें । भावे देह छूटि जाइ वनमें नगरमें । के
दार ज्ञानीकें कछु संसो नहि रहो कोइ सरग नरक सब
भाजि गयो भरमें ॥ लालजन॥ भावे देह छूटि जाइ

७१

७५

आजही पलक मेंही भावे देहाहो विरकल जग ग्रेमनः
भावे देह कुरिजाऊ ग्रीषम पाव सरिन सूरदसि सिर
सीन कूटन वसन्तनु । भावे देख नागान्यनेडू भावे उ
नगायगाऊ भावे देह सर्प सिव बीज लीहन नन्नु । खेद
र करहन एक गान्मा अंबेड मानियाही भांति निरसं
सप भये सब संतनु ॥ तालजन ॥ कैयह देहयौ

क॰
ग्र॰ न॰

वन परवतकै यह देहनदीमैव होजु। केयह देहथरो
धरनीमैकैयह देह क्समानदहोजकै यह देहनिराद
र निंदकैयह देह मराह कफोजु। सुंदर सेसयउ
रिभयो जबकै यह देहबलौ किस होजु तालजन॰
कै यह देह सदा सुख संपतिकै यह देह विपती
परोजकै यह देहनि रोगरहो नितकै यह देहरी

८०

द॰

रोगनबैरोज। कैयह देह झलामन पैठइकै यह देहहिबारे

नरोज। सुंदर से समय ईशभयो सबके यह देह जिवैपकि

भरोज॥ जीवमानकौसेग॥ प्रीति किरीति कछुन

हियाखवन जमनिन पंनिन रही कुलगारै। प्रेमकेनेम

कहूँनहि दिसन लाजन कामलग्यो सबखैरै। लीन

भयोहरिसो प्रभि सेनर आरइजामरहेमनवारो। से

क॰
ग्र॰ नं॰

स्वकोउन जानसके यह गोकुलगाववैके। पैंडोई म्यारो
ज्ञान दियौ गुरुदेव कृपा करि उरि कियो भ्रमकोवि
किवारो। श्रोर क्रिया कहि कोन करै अविन लगौप
र अल पियारो। पांव विन चलिके निरिह ठार रंगे गुभ
यो मन मित्र हमारो। संदर को उन जानि सकै यह गो
कुल गांवै कौ पैंडोई म्यारो। एक अचंविउ इन जोन भया

8|

एकबाहिर भीतर रहे एक सारो। दुष्टन सुष्टन नृपन
रेखन रेखिनन पीन नर जन कारो। चक्रिन होइ रहे सु
नभव बिनजीलगि नाहिन स्वान उजारो। स्वंदस्को
उनजान सके यहगो जलगावकौ पेडो इन्यारो ॥
लालजन ॥ दट बिना बिचारे बहुधा पाज्ञा बटस्रा
नलान अपारो। कामक्रोध नलोभ मोहन दागव

दोषन न्हारे न स्यारे। जोगन भोगन त्यागन संग्रह देह
दसा न हकौन उन उचारे। सुंदर कोउ न जान सकै
यह गोकुल को पैंडो ई न्यारो। लक्ष अलक्ष अदक्षन दक्षन
पक्ष अपक्षन बलन भारो। ऊटन सोच असोचन गोच
न केचन कोचन दीन उदारो। ज्ञान अज्ञानन मान अ
मान मनस्यान अमानन जीतन हारो। सुंदर कोन जान

सकै यह गोकुल यह गोकुल गाव कौ पैंडो ईमारो ।।
श्रवैन लान कौ वेग ।। प्रथोनर कान्हए । नाल ।। ४४ ह्लो
त्रमकौ कान है। श्रुत अंविडित देह में कोनही देह केनोरे
वोलन केमै होन हीं वोलत जानिये कैसे श्रज्ञान थै
नेरे । हरि करो भ्रम निश्चय धार कहैं गुरुदेव कहैं ताने
नटेरे । हलम श्रैसे ईह धनि श्रैसोई दोश भये नहि है

क
ग्रंन

नहे मेरे ॥ रागिनी रामकली । ताल । ३ ॥ है कछू औ
र किन कछू और कि है कछु और कि सो कछु औरे ॥
३ ॥ सुख नयन रहे कछु सो पुनि बुद्धि विलास भये जक
औरे । जैन रही बन रही है कछु सौं न रही छवि के बिना जित
ही नित दौरे । रूप नितंब धुनि है कछु सो धुनि सुंदरता पि
रयो सब ठौरे ॥ ताल ३ । ३ । ४ ॥ उत्तम मध्यम और सुभा

83

समभेद अभेद जहां लगि जोहे। दीसत भिन्नताको अ
रु दरपन वस्त विचारत एकही लोहे। जो इतनिये
ग्रह हरिये फिर वाचित और कहो अव कोहै। खेद
व सुंदर आपि रह्यो सव खेदरही में सुंदर सो है॥ रागि
नी रामकली॥ताल।४॥ जो वन एक अनेक भए
द्रुम नाम अनंतन जानिहु न्यारी। वापी तडाग रु कूं

कं॰
ग्र॰नं॰

पनदी सब हैजल एक खदे खो निह्वारी। पाव्क एकथका

सन बहु बिधि दीपव एकम मालहुवारी। खेदर बलवि

लास थंवं खेडिन खेडिन भेदकि उदिखटारी॥ रागिनी

रागा कली नाल॥४॥ एक सरीरमें अंग भए बहु एक

घरा पर धाम अनेका। एक सिला महि कार किय सब

चित्र बनाय धरे ठिक टेका। एक समुद्र तरंग अनेक ति

84

कैसैं कंकोजये भिन्न विवेका हनका। कह्युनही दे

विये संदर ब्रह्म प्रवेदित एककोएका ॥ रागिनी

शुणकली नाल। ४॥ ज्यौंमृत्तिका घटनीर तरंग ही

तेज मसाल किये जवहना। वाग्रवचूरादिगोटपरी व

ऊवादल व्योम सबो मजि मना। वृदन्ह बीज है बीज

सबदते है हनसबामे है बापहे बापस हना। एसा वि

के॰
ग॰न॰

वारत पकड़ी हेदर नाने श्रहवानेनो देशिविये हुना ॥
रागिनी गणाकली ताल ।४॥ भूमिहू वेनन श्रापहू
वेनन मेजहू वेनन हैं जश्रवेडा । वापहू वेनन थ्यो
महू वेनन शाहू हू वेनन पिड श्रंनेडा । हैनन वेनन
इद्धि हू वेनन विचहू वेनन श्राहिड देंडा ॥ नोकबु
नामपवे मोई वेनन मेदर बल श्रंवेडा ॥ ताल ॥४

एक अखंडित ब्रह्म बिराजत नाम जु दोकरि बिष्य

कहावै । एक कही ग्रंथ पुराण बखानत एक रुद

न वसिष्ठ हनावै । एकई अर्जुन उद्धव सों करि छ

ल छ्रूप करिकै समझावै । सुंदर दैन कछु मति

जानहु एकई व्यापक वेद बनावै ॥ रागिनी अरा

कली नाल । ४ ॥ मनहरछंद ॥ सिष्य पुछै गुरदे

के·
गु·ने·

व गुरु कहै एक सिष्य मैं एक समय है तौ कौंन एकै

अवही। तुम कह्यो एक ब्रह्म अवद्वै मैं कहूं एक एक

नै अनेक नाकौं इहनां भ्रम अवही॥ भ्रम यह कौ

न कौं है भ्रमही कौं भ्रम भयो अवही कौं भ्रम कैसै

तन जाने कवही। कैसें करि जानौं अभु गुरु कहै

निश्चय या रि निश्चय मैं पाहौ अब एक ब्रह्म नव

ह्री ।। रागिनी गुणकली ताल ।।४।। ब्रह्मराग ।। ब्रह्म
है देरको देरहू पीन कोउ और वस्तु कौ विचारकी
ये वस्तु पहिचानिये । पंच नवनीत गुण विस्तारैवि
विधि भांति नाम रूप जहां लगि मिथ्या माया मा
निये । सेस नाग आदि देकैं वैकुंठ कौ लोक प्रति
वचन विलास सब भेद भ्रम मानिये । नैनौ कोउ

क॰
गु॰ नं॰

उरजौन स्वरजौ कह्यौ सकौन सेदर सकल यह
डागा बाई जानिये। प्रथमही देहमैंतैं बाहिरकौ
वोक परसो इंद्रिय व्योहार सबै सेनकरिजागणेहे॰
कौनउ संजोग पाइ सब गुरु भेट भई उनपदेशतैं
कै भीतरकौं आयौ है। भीतरकौ आवनही बुद्धि
कौ प्रकाश भयौ है। कौन देह कौन जगान किन

87

मान्योहै। द्वैत विचारतनही उपज्यो अद्वैत ज्ञान आ
पको अखंड एक ब्रह्म पहिचान्योहै॥ रागिनी ग
णकली ताल। ४। सकल संसार विस्तार करि
वरनियोसरग पाताल मन भरि ब्रह्म रह्योहै। एक
नैं गनत गिनि जाइ एसो लगि केवि कारि एकको
एकही गयोहै। यहनही यहनही यहनही यह

कं ग्रं न

नहीरहे अवसोपसो वेदयौं कह्योहै। सुंदरसही सोधि

बारिकौ अधनको आधमें आपके आपही लह्योहै॥

रागिनी श्यामकली ताल॥४॥ एकन दे यन तीनन

बारिन वेद नननतें जगत कीयो। नाम अरूपकै

बहुत विधि किन्हा स्यौ नम बिना औरकोउ मोहिबो

यो। रावन रंकन रानिन दीनन दोउ कर मेलने दि

यो लीयो ।। सकल यह दृष्टि नाम मांहि उपजै विवे
कन सुंदर वडो विपुल होयो । वेदन राखौं नाही मे जग
न यह नहीं है जगत माहि मे अरु जग महिं भिन्न कहा
जोरही । भूमि हीतें भाजन अनेक भांति नाना रूप
भाजन विचारि देखे वहे एक है मही । जल ते तरं
गभई फेने वुदबुदा अनेक सोउ तो विचारे वहे एक ज

क॰
ग्र॰ न॰

लेहे उही। महापुरुष जे तेहे सबकौ सिद्धांत एक सुंदर
खेलि दखल ग्रंथ वेद है कही॥ रागिनी गुणकली ना
ला॥४॥ जैसें ईख रस की मिठाई नाना भांति भई फेरि
करि गारे ईख रस कौं लहत है। जैसे चूत बीजि कैं उगा सौ
बन्यन जान भनि पिच रैने वह चूत ई रहत है। जैसें पान
जन के पाखान ह्लसो देखि ग्रंथ सो पाखान फेरि करि

89

पानीकैं वहतहतेमेही संदर यह जगतहै ब्रह्ममय ब्र
ह्मसो जगत मय वेदयों कहतहै ॥ रागिनी शुभकली
ताल ।४॥ जैसें काठकोरताभें पुतरी बनाइ राखी जो
पिछारदेखियेतोवहै एकदारुहै । जैसेमाला सूत
सो किमनी काहू सुतरीके भीतरहूयो पुनि सुतही
को तारहै । जैसेएक समुद्रके जलहीको तो तभयो

क॰
ग॰ न॰

सोउना विचारे षवेहै जल खोरहै। तैसेही हेदरयह
जगत सब ब्रह्ममय ब्रह्मसो जगत मयपयही निरधार
है॥ रागिनी गणकली नाल। ४॥ जैसे एक लोह
के हथियार नाना विधि किये। आदि आदि अंतम
ध्य एक लोहही प्रमानिये। जैसे एक कंचनके भू
षण अनेक भये आदि अंत मध्य एक कंचनहि नानि

१०

६॰

ये। जैसे मेननके सेवारवर हाथी हय आदि येनम
य एकमेनई वखोनिये। तैसेही सुंदर यह जप
मय ब्रह्मसो जगत मय निश्चय करि मानिये॥ ५
गिनी राग कली ताल॥ ५॥ ब्रह्ममें जगत यह
ऐसी बिधि देखियत जैसी बिधि देखियत फूल
री महीरमें जैसी बिधि गिल मउलीवेमें॥ अनेक

क·
ग्र·न·

भांति जैसी बिधि देखियत छूटती जंजीर में । जैसे बि
धि केश गोरे कोहि पर देखियत जैसी बिधि देखियत
बुंदी नीर में सुंदर करत लीक हाथ पर देखियत
जैसी बिधि देखियत छीन ला शरीर में ॥ रागिनी
गुणकली नाला ५ ॥ ब्रह्म अरु माया जैसे शिव श
रु शक्ति प्रतिरूप सुरु प्रकृति दोऊ कहिबे हैना

91

यहै। पनि अरुपन नी ईश्वर अरु ईश्वरी अ नारायण

लक्ष्मी है वचन कह्यो है। जैसे कोउ अर्द्ध नारी मा

टे स्वरूप धरे एक बीजही तें दोउ दाल नाम पायें है

तैसे ही सुंदर वस्तु ज्यो हे त्यों ही एक रस उभय प्रका

र होइ आपही दिखावै है॥ रागिनी गुणकली ता

ल॥४॥ इंदवछंद॥ ब्रह्म निरीह निरामय निर्गु

क॰
ग्र॰

णगिनित्य निरंजन औरन भासे। ब्रह्म अखंडित है अध ऊरध बाहिर भीतर ब्रह्म प्रकासे। ब्रह्महि सूक्षम स्थूल जहां लगि ब्रह्महि साहिब ब्रह्महि दासे। सुंदर और कछु मति जानहु ब्रह्महि देखन ब्रह्म तमासे॥ रागिनी गुणकली ताल।७। ब्रह्महि माहि विराजत ब्रह्महि ब्रह्म बिना जिन औरहि जानौ। ब्रह्महि केजर

१२

कीटहु ब्रह्महि ब्रह्महि एक ब्रह्म ब्रह्महि गानै । कालहु
ब्रह्म स्वभावहु ब्रह्महि कर्महु जीवहु ब्रह्म बखानै ·
ह्वैहर ब्रह्म बिना कछु नाहिन ब्रह्महि जानि सबै सु
ममानै ॥ रागिनी गउड़ी कली नाल । ४ । आदिहु तो
सोई अंतहु पुनि मध्य कहा कछु और कहन कारन
कारज नाम धरे जग कारज कारन मांहि समावै का

क॰
ग्र॰ नं॰

रज देखि भयौ चित विभ्रम कारन देखि बिभर्म बिलावै-
खंदरया निश्चय अभि अंतर है न गये फिर है तन आवै-
रागिनी गुणकली नाल। ४।। ब्रह्म अरु माया के नामा
घनेरी अगरे। इन करि देखे जब है न ही सिखाई देत
एक करि देखे जब दूरे एक अगे है॥ सूरज कर देखे जब सू
रज प्रकाश रह्या किरणनि कौ देखे तो किरण नाना रं

13

६२

गईहै। भ्रम जब भयो तब माया ऐसो नाम पर्यो भ्रम के

गएतें एक ब्रह्म सर्व गईहै। सुंदर कहत याकी दृष्टि हीं कौ

फेर भयो ब्रह्म और माया के तौ माया थैं भ्रम गईहै। श्रोत्रक

छू और नांहि नेत्र कछू और नांहि नासा कछू और नांहि

रसना नाना आरैहै। त्वक कछू और नांहि वाक कछू औ

र नांहि हाथ कछू और नांहि पावन की दौर है। मन

कं·
गु·णा·

कछू और नांहि अरु कछू और नांहि विन कछू और नांहि
अरु कारनौ रहै। सुंदर कहत एक ब्रह्म विन और नाहि आ
पुहीमें आपुव्यापि रह्यौ सबै रहै। रागिनी गुणकली ना
ला ॥ ४ ॥ भ्रांति कौ अंग ॥ मनहर छंद ॥ ज्ञान कौ नाम सु
नि जनन भ्रम खोयौ है। कियौ न विचार कछू भनक परी है
कान यारि आई सुनिकै उरपि विष खोयौ है। जैसें कोउ

94

अन कहे ऐसेंही बुलायवन वार बीति गई पवि कोउ नही
आयो है। वेदहू वरनि कै जग नन रूपकाफो कियो है
न पति दजर मूलतें उठायो है। तैसेंही संदर याको के
उ एक जाने भेद जगन को नाम सुनि जगन बुलायो है॰
रागिनी रागाकली ताल। ४॥ ऐसोई प्रजान को उआ
इकें प्रकट भयो दिव्य दृष्टि हरि गये देखे धर्म दृष्टि को

क

ग्र-न

जैसैं एक आरसी सदाई हाथ मांहिरहे साम्हैं नहीं देखे
फेरि फेरि देखे दृष्टिकों। जैसैं एक व्योम अनि बादरसौं
छाय रह्यो व्योमनहीं देखन देखन वडु दृष्टिकौं॥ जै
सैं एक ब्रह्मही विराजमान सुंदर रहे ब्रह्मकौं न देखे
कोउ देखे सब सृष्टिकौं॥ रागिनी गौरीकली नाल-
ध॥ अनकृतो जगत अज्ञानतैं प्रगट भयो जैसैं को

उ बालक बेताल देखि डर्यो है। जैसें कोउ स्वप्नमें दा
धो है बयार आइ मारवे तैंन आवे बोल ऐसो दुख प
र्यो है। जैसें अंधयारी रैन जे बटीन जाने नाहि आ
पहीन सोच मान भय भ्रांति कर्यो है। तैसेंही सुंदर
एक ज्ञानके प्रकाश विन आपहु दुख पाइ पाइ आपु
पछि मर्यो है॥ रागिनी गुणकली ताल॥ ८॥

कं
गु॰नं

ब्रह्मही जगत होइ ब्रह्म उपरियौ है। मृत्तिका समाइर
ही भाजनके रूप मांहि मृत्तिकाकौ भ्रम मिटि आज्ञव
ही गयौ है। कनक समाइन्यौं ही होइ रह्यौ आभूषन क
नक कहै कोउ आभूषन कह्यौ है। बीज ऊ समाइ करि
वृक्ष होइ रह्यौ पुनि वृक्ष ही कौं देखियत बीज नहीं ल
ख्यौ है। सेंदर कहत घट यौं ही करि जानो सब ब्रह्मही

96

जगत हाइ ब्रह्म उदित भयौ है ॥ रागिनी शणकली ना॰ ४

कहत नरे देह मांहि जीव श्राइ मोहि रह्यौ कहो दहकरो

जीव तृष्णा चौंक परौ है । तृडिवेके डरके निवनकौ उ

पाय करै श्रसैं नहि जानै यह मृग जल भयौ है । जीव

रीकौ सांप जैसें सीप विषें रूपो जानें श्रोरईको श्रोर दे

खियो ही भ्रम करौ है । सुंदर कहत यह एक ही श्रखंड

क॰
ग॰ न॰

उ जल नारी कौं पलटिकै जयान नाम धयौ है ॥ रा
गिनी गुणकली ताल । ४ ॥ विस्मय को प्रसंग । मन
हरछंद ॥ वेदकौ विचार सोई सुनिकैं सनव सुख श्रा
पउ विचार करि जोई धारि यत है । जोग की जुगति जो
नि जगत उदास ह्वाइ संजमै समाधि लाइ मन मारि यत
है । ऐसैं ऐसैं करत करत केते दिन बीते संदर कहत

अजङ् विचारियनै है । कारो हीन पीरो न नो नान हीन
सीरो कल्क ज्ञाय्य न पर न नानै ज्ञाय्य जारियनै है ॥ रा
गिनी गुणकली । नाल ॥ ४ ॥ मनकौं अगाम अनि
ववनय किन ओन ब्रहिङ् विचार करि करि वनुषी
डियनै है । अवण खेनेन जाहिनैं नङ्न देवेनाहिव
सनाकोरम नववह च्यीडियनै है । वककौ परमनो

क॰
ग॰न

रिज्ञान कौन विषय होइ परा नइकरि जिन निन हीरि

यनहै। सेदर कहत आनि मतम स्वरूप फकु रायन

परननो हाथ मी रि यनहै ॥ रागिनी गणकली ना॰ ४

गफाकौं मवारि नहो आसन उगारि आणंडेका येरिवे

रिनाक मीरि यनहै। इंद्रनिकौ वेरि करि मनङकौफे

रि करि त्रिकुटीमे हेरि हेरि हियो कीरि यनहै। मवछि

१४

२८

रकाय प्रति मन्यमैं समायतहो समाधि लगाय प्रति श्री

रवि मीडि यतहै। संदर कहन क्रम ओरउ किये उपायहा

यन परत नाते हाय मीडि यतहै। रागिनी रामकली

माल। ५।। बोले हीन मोन धरे बेदहरागगोन करे जाये

हीन सो बेसनो हरिहीन मोरी है। भावे हीन जाउन नोथि

र अकुलाइ प्रति भरखो हीनाव कहुनानो हीनसी रीहै·

क॰
ग्र॰ नं॰

लेन हीन देन कछु हेनन कछु हीन कछु स्यामहीन सेवन
हेनो रानो ईन पीरो है। टूवरन मोटो कछु लांबो नहि छो
टो नाने सुंदर करहन कहा कावरी नही गोहे। रागिनी ग
णकली माल। ४॥ भूमिहीन आपन नातेजहीन नाप
नतो वापजन श्यामन नो पंचकोप मारी है। हाथहीन पो
वननो नैन वेन भावन नो रंक हीन रावण नो हद हीन वा

रोहे । पेउ हीन आणानतो जानन अजानन गनो बंध निवी
णनतो हरवोन भारोहे । हेनन अहेननतो भीनन अभी
ननतो संदर कहोनजाइ मिल्यो हीन प्यारोहे ।। यानीअ
लनाती न ।। पापन आप नमूलन ह्मन वोलेनउ
मनसोवन जागे । एकन दोयन अतषन जोयकरे क
हाकोइन पीछेन आगे । हूहन वालन कर्मन कालब

कं·
श·न·

इस विशालन जड़ेन भागे। वेधन मोल अमोलन भोद
न मेदरहीन अमंदर लागे॥ रागिनी गणाकली ना
ला। ४॥ नब अनन कयोन हि जानज मन्य अमन्य ब
रेन परेहे। जोति अजोतिन जानसके कोउ आदिन अंत
जिवन मरेहे। रूप अरूप कछूनहीं दीसत भेद अभेदक
रे महरेहे। सह असह कहे पुनि कोनज संदर बोलेन

८

मौन धरै है ॥ ताल जत ॥ खोजन खोजन खोज रहे

श्रम खोजन है पुनि खोजहि आने । गावन गावन गा

इ रहे बहु गावन है श्रम गाइ हैं गाने । देखन देखन दे

खि थके सब दीसे नहीं कछु ठौर ठिकाने । बूझन बूझ

न बूझि के संदर हेरन हेर निहेर हि राने । ताल जत

पिउ मैं है पर पिउ लिपै नहीं पिउ रे उनि यौंहि रहावे ।

क॰
गु॰ नं

श्रोत्रमैंहै परि श्रोत्र हनै नही दृष्टमैंहै परि दृष्टिन आवै·
बुद्धिमैंहै परि बुद्धिन जानन चित्तमैंहै परि चित्तनपावै·
शब्दमैंहै परि शब्द घ्यकौ कहि शब्द हूं देदर दृगि बनावै·
भूमिडु तैसेही आपडु तैसैंही तेजडु तैसैं हीतै सेही यो
ना। व्योमडु तैसैंही आहि अवेडिन तैसैंही खलरहै
भरिभौना। देहसंयोग वियोग भयोजब आपोमको

10

१२

न गयो कहि कोना । जो कहिये कहते न बने कछु भे
द र जानि गह्यो मन बैना । एक ही ब्रह्म रह्यौ भरपूरि
तो दूसरो कौन बनावन हारौ । जो कोउ जीव करे प
रमान तौ जीव कह्यो कछु ब्रह्म तैं न्यारौ । जो कहो जी
व भयो जग दीसत है तौ रवि मांहि कहो कौ अंधारौ ॥
सुंदर मौन गही यह जानिकैं कौंन हूं भांतिन कैनिर

कां
ग्रं न.

धारै ।। नालजन ।। जो हम खोज करै अभि ऐनरतै व
हसो जवरेही विलावै । जो हम बाहिर कौं उठि दौरत नै तौ
कछू बाहिर हाथ न आवै । जो हम बाड कौं एकत रहै व
निसो ऊ अगाध अगाधव तावै । नाही नै कोऊ न जा अस
कै निहिं सुंदर कौन सी ठौर बतावै ।। नालजन ।। कौ
न कहै उसकी खबर बातैं । नैनन बैनन सैनव आसन

102

बासन स्वासन व्यासन पानैं । सीतन तासन हौरन ठा
मन भ्रमन बाम पापन मानैं । रूप नरेस्वन शेष अशेष
न रेखन न पीनन स्यामन रानैं । सुंदर मैन गही सिय सा
थ कौनक कौनक है उसकी सब बानैं । नालजन
वेदत्रयके कहि नेत्रत्रयके कहि ग्रंथत्रयके निसि वासर
गाने । शेषत्रयके शिव वेदत्रयके भनि खोज कियौ व

क॰
रा॰ उ॰

इभांति विधाने । पीरथके अहमीरथैं इनिपीरथके
वहु बोलि गिराने । संदर मौनगही सिधसाधक कौन
कहे उसकी मुखवाने ॥ तालजन ॥ जोगीयके करि
जैनथके रिषिनाथ मथ्या किरहे फल खाने । संन्यासी
यके वनवासीयके अउदासीयके वहु फेरि फिराने ।
सेवम साधक औरजलायकथ्या किरहे मनमें मुसका

ने। सेंदर मौन गहो सिय साधक कौन करे है उसकी
सरवबानैं ।। रागिनी रामकली ताल धमार ।। का
न्ह ऐसी वैसी बजाई मोहलई नईनार। स्यामसे सैंनक
र रही है सन सखरी जरही है रिझवार। उदी बरनकी
ज्यौं परी रेहै चुनर अंगीया कोरंगरल स्तनार। देखो सखरा
रवे उपर ताफी सौं हन जरद किनार। रागनी रामकली

कं
ग.न.

तालधमार। ।कान्हज कहा दोगे मोकों देखिवे मोती

की नार। नखेसी खटीक वेद जैसे मखेबाको ऊख मा

नो जैसे सुनार। वैशाखी है प्यारी उमंग कीहै एरी बिष

सि करी ज्यों कचनार। मातकि बानर ज्यों परखेकी पा

रखी तमऊ मोंसरस सुनार॥ तालधमार। ।परीमो

से होरी खेलन आपस्याम ऊंवर नंदलाल। सबीगला

10K

लकी झोरि भर भर डारत रंग गुलाल। केसर रंग पिच
कारी छिरकत डारे प्रेमको जाल। कृष्णानंद रंगमे भी
जोई फग खाल प्रजबाल॥ ताल धमार॥ ॥ डारत कैं
सर पिचकारी सखीमोपैं कुंवर कन्हैया। बाटघाट मो
हे रोकत कैंधन कहा करूं मेरी दैया। वनके जनमें कुंव
र जटकटोरत सगरई लोग खरे हैंव वैया। लाज सब

क० ग्र० नं०

105

काज कौन मानें है उगीमें नंद दहैया ।। ताल जत ।। मोरें

मईयो ले आप गवन वारीमें तो खेलो होरी गरलाय ला

य । वङ्गन रङ्ग बावल खर सजनी अब पीयके रंगमें र

गीहें आय । राधा श्रीराधा सब माफ करें हैं कृष्ण आनंद मे

रङ्गोहें सगाय ।। रागिनी रागकली ताल धमार । ।।

स्याम जडार दईहो धूमधाम होरीकी व्रजमे मगावत

नन पावे कोउ नार । लरे ऊगारे मावे मीजे बरवसगा

रीगावे दे दे नार । अबीर गुलाल लाल झुमउनमें रहीन

काहूकि संभार । रसिक सनेहि रस वस कर लई मोहन

छल ब्वार ॥ नाल जन ॥ भली बिन बजाई रावरे हों

कान्ह होरी धूम मचाई । सन स्वरन मुकईम न रहना

मधुर मधुर मावदाई । डेफ मृदंग औरबाव सुरमें

क॰
गु॰न॰

उत मुरली तान न बजाई । रसिक छैल रस बस कर डारी
भैरवी गाय सुनाई । ताल जत ॥ बाउल थर उत हनव
हो नवरी अब वलहू पीया परयाय । बाहूल नैरो या
ह रख्यो है हरे हरे रंग से मन गाय । गुडीया खेलो नीर हैता
कमें नही खिलन को दाय । सात सहेली में रही अकेली
सइयाके देश चलि जाय । गुण ओगुण लेख रागे हो याव

10b

गापीयापेजाई। श्रीकमलानंदमें रंगागाई उज्ज्वल नवल
मेरहीं समाई॥ नाल जत। ।परमोठोर सावरोरी गो
री गोरी करधर लिटरहीं वरजोरी। नक झकझिज
करहीं मोमनमें मासन नंदकीहे मोहे चोरी। काकरु
किनजी उमत्वोरी श्याम सुंदर कि लागि मोहे नोरि।
सुंदर श्याममनो हर मूरन डारी रंगमलो मत्वोरी

कं
गुनं

हमानें दरंगभरि म्हरन फगु वाले हैं कुमपे किशोरी·
लाल जन ॥ कछुकहो संभार मन मोहन लाल होरी
खेलन मोसे आए हैं। काहूसों लपट औटक पटनका
हूसों काहूसें अंगलगाए हैं। अतर अबीर अरगजा के
सर पिचकारी नरंग छाए हैं। रसिक छैल अवमान
न नारी होरी धूम मचाए हैं। लाल जन ॥ मोरे वाउ

107

१०४

लके घर आज सखी मोरे बाहूल के घर आज पीय ह्वै

री खेलन आपले के साज । लोकस ऊकस वहीडर

डरु खोल झंझट पटन जहूलाज । पांच पचीस लीप

सेरा सखीयां नाना बिधले समाज । श्रीकृस्नानंद

में रंग रंगे ह्वैने कन जाई ह्वै आज ॥ ताल जत ॥ मोरे

बाहूल दीने गवन बामेनो चलीई सइयां के देशनगर

कं॰ ग॰ नं॰

आमोरी गुइयां गरे लागो हमरे फेर केन होइहै मिल
न वारी। नैहरवमैं हम खेल गमायो सासुर भए है च
लन वारी। मैं पांच सहेली तामे अकेली सइयांको
भयो है अवन वारी। च्यार कहार मिल डोलीया ले
आवो कहाको करो होरे वन वारि। न्हाय धोय न प
वस्तर पहरे केसर तिलक चंदन वारी। सज सिंगार

108

१०८

उलहन बनि बैठी लाजसमेत उनमनवारी। विदा
करन ऊटंब सब आये नाऊ बौर वलनवारि। तिर
खतरी सबबड़े गाएलोग बानैंनन नीर भरनवारी
धेनबलेके बने सबरहै नकहा है काऊको बसनबल
न वारी। धेन विदा हो चलि है डलहन पीय पीयल
गी रटनवारी। कहै कवी। मन रि डलहन पीयके

क·
ग·न·

धरले बरन बारी। नाल जन। ।काहुके हैन गए सम
जाय मोरे राम जोवन हमसें विदा मांगे। काहूके हात
लिहू ब्रज पाति काहूके हाथ संदेश मोरे राम आएव सं
त विरहके मांऊमें पीयके मिलन संदेश मोरे राम॥ ५
क बन फुफ सकल बन फुफ करि जोगनके भेश। ज
बने गए पीया भए बसांहीके फेर नही मिल्यो प्रानेश॥

109

कुल्लांनंदमें रंग रहिन्हे आय मिल्यो मोहे नटवरवेश ।
नाल जन । । मारी लइयां पिचकारी मोरे नैनके ऊपर
भरपीच कारी म्हरवे पर मारी भीजगइ तन सारि मोरे नैं
अबीर गुलाल ले रंगमें बोरी गावन देदे नारी । कुला
नंदसों फग वालीनेनव काढे वनवारी ॥ नाल जन ॥
मोहे भौर ही आन जगाई इनमोहना वनवारीने ॥

क·
ग्र·न·

कहन सकन कछु लाजकी मारी नई नई प्रीत लगाई।
प्रेमकछु बोजिनि बांह गहै मेरे हाहा करत परै पाई ॥ ह्या
हा सरकजाइ इस्क रंगीले देनी मैं रात उह्राई। तालजत·
कौउ मेरो कह्रा करे गोमें नो पीय संग खेलौं होरि। ग्र
पने अपने मंदरसे निकसी कोइ सावरी कोई गोरी ॥
मे पीय मोरा मे पीयकी सजनी पीयमौं को रंगमे बोरी

110

हुलानंदमें रंगगाउहो फगुमालेहों वहोरी। लाल जन।
होरी खेल कहा आये अजी तुम साची कहो। अधरन
अंजन पीक कपोलन भाल महा वर लाए। डगम
गात पग धरत धरनी में नीन तिलक कहा पाए। रसि
क छैल भंवर चरचर के बचन नियाविलमाए॥ अजी
लाल जन॥ जोवन कहा मानत नाही कैसे मन सम

क॰
रा॰न॰

आउं कान्ह। उमगे जोवनाजो गोवन भादो देनी मे

रामउहार। अबके पीया मिलले हमसे करो ही मे

री सहाईजो। नालजान॥ गोरी नेरो फैल रहो कज

र हमसे ओवहिपापजान। नासर पीयसो मिल

आई सजनी इटगार उलरी निलरी गजराह। नाल

जान॥ मोरी चटक चुनरीया रंगा वसरयांनो सेना

111

खेलो। मालू सरस ऊसमकी ग्रेगीयामे अपने रं
गामें रंलूंगी। नाल जन ॥ मोरे सइयांनेकीनी अवन
नामे नें खिलूंगी होरी पीके नगर। पांच पचीस लेलै
सेग सखीयां अबीर गुलाल ले खेंगा रंगों ड्रें सगर
नालजन॥ काहे मारगए पिचकारी मोरे स्याम
सुरंग चुनरीयांमे दाग परो। रपट झपट लपटग

के॰
ग॰ नं॰

ही बही यो नैं नसैं नदे श्राय श्ररे ॥ नालजन ॥ श्रावो ब
ल मजी हमारो उरे षबीर गुलाल मलैं मुखवेनैरे होरी
के दिनन मेरा करजेरें। महेमदस पीया चन्द्ररंगी
ले उरबसौं याबसो मेरे नेरें। नालजन ॥ कान्हज श्रा
वोगे मेरे हौरी खेलन जंदे खुगीमे वडे खेलार। फग
वा लेगी तब जानन उगी रसिक छैल रिजवार ॥

आज रंग है री ब्रज रंग है लीये ग्वाल सखा सब संग है। रंग हि रंग बढ्यौ और सखी री फाग खेलन में उमंग है। रंग महल और रंग ही मजलीस रंग्या बसन कु सुरंग है। रंग हो रंग पीय कांवि रंगले बाजत मधुर मृदंग है। लाल जन ॥ प्यारी आवो नी हमार गली रे होरि खेलन कों। अबीर गुलाल उडावो मन मान्यो फूली

स्व·प्र·
न·

गुलाब कि कलीरे होरी। अनर अरगजा पिवकारीके
धारले घुंघट प्रोट वली। प्यारे जीयकि प्यारी वलभ
गावन हौंरी अलींरें। तालजत ॥ ॥ हौंरी खेलन
कौं कैसे जाउं रे पीय मारे सौंन बोले एकवार। हौंश्रु
नौंन कछु जानन नाही परम वरजंरंगवार। पीय
वानर मब गुतन भरेहै श्री कमलरंग करनार ॥

११३

113

नालजन॥ जिन भीजेवो हूलमगरी करगहे पक
रत जात नार। लपट झपट वरजोरी करतहै गा
वन देदे नार। नाल जन। जिन भीजे वो हूलमगरी
करगहे पकरत जात नार। ल मोहै रंगमहीमे वोरे
रीपट्टो लिपट छीट गिरिधारी लाल। अवीर गुला
ल मलजन मुखमे रहीयसों हियजोरी। नालजन

कं·
गु·नं·

छवनोरी मोहे प्यारी लगनहै कहो लगाप ग्लाल ला
ल । सुंदर छव देख मन अटको वंसी वजावत नंद
लाल खेलन आए वन वारी लाल ॥ नाल जन ॥
लेगर मानि फागुन में एक ओर भीर भई गोपीन की
एक ओर ग्वाल के वाल । वहे ओर तें मारत पिचका
री भीजी अनरन लाल । नाल जन ॥ कान्ह तेरी मुर

11K

ली अथ किसो ह्वावे अल वेल वारे कान्ह लाल। नैं

न आगा सवनैं रङ्गी वसमे जो मन रंग वन आवे। मधु

र मधुर स्वर अधरन पर हरि रस भरी तान सुनावे।

सुंदर स्याम मनोहर मूरत गार बार वाल जिवे॥

नाल जन॥ सखी मोरे अंगी या मे अवीर मलोरी॥

पसी होंरी सरया नमसे मैंन खेलूं। वह्रीयां मरोरी

के·
ग·नं·

ष्ठरीयो फोरी पसौं रंग करोरी ॥ लाल जन ॥ जागे मे
रे भाग मैं नोतम संग खेल होरी । वसके कारन ब
स कर लीनी के पन लागी छ्यांती मोरी । अपनैं पीया
सैं मैं होरी खेली सामन नंदकी चोरी ॥ लाल जन ॥
अनोखे खेल कहां से सीखे वीन वजाय सांवरे रसिया
तानन मानन सें वस कीनी जादु सा जस जाया ॥ ला

ल जन ॥ नैन विरहिया तेरे पियारे रंगारसब सकरली
नैं जीयारे । बांक बरस कहे जाहु उरो खंदर सपामभे
री सूरत विसारे । नाल जन ॥ अलबेली भइ मद मा
ती सइयां पै रंग उरोगी । बोबा बंदन अनर अबराजा
भरव मींडके बदलाले उंगी । नाल जन ॥ परी मैं तो बा
रवार नित नई होरी खेलन पीयपै टाई । अबा बौरे के

क॰
ग॰न॰

सफूले औरकली जाही जूही । तालजत ॥ मैंतोडा

हेंगी रंगगुलाल लाल मेरे आपरी । मैंतो भरभरके

मपिचकारी पीयपै नाप । धन भाग सहागहै आप

स्याम दरसाए । मैंतो सुनियी रंगमहलमें स्यावेनाद

री । अबमैंतो परीऊं अचानक जाग पीया मेरे पाए ॥

इन विरहाने खायो मासरा उभयो खोखो कली अब

116

११६

मैं छाडलैके कित जाउं सइयां मोहे बाहे । इन अखय
नकी बडी हूंदपरनमैं पडनहै । मेरो जरनहीयरा
बुझाय सइयां मोहे बाहे । साभीष मालीकी प्रीत
अगानी नित नई । अबमेरो दिन दिन बढत सहरा
वा सइयो मोरे आपमै नोउ हेगी रंगाग । नाल खे
मटा बंगलासेरी ॥ ख्रिख्रि हारिले स्यामरायार

कं॰
रा॰नं॰

काछे पारिले नारा थाय। जिनि लेन किशोरी ह्नोरी काज केरे विलाय। जिनवो वोले झेजे पलेवो सले प्र नि ज्ञाय। दिये विलाय भंगाइ त्रिभंग थवले राथार पाय॥ ताल वेमटा॥ जदि विलवे ह्नोरी वंसी था री स्पामनि झेजे वलो। राज पथेर माझे मरिलाजे ननदी कि वोल वे वोले श्यामन॥ ताल जत॥ मोर

११७

११८,१६

के मोने ग्रान वीजों लोंकें मनथ ममिवाय। हाथे लो
ये पिच कारी अवीर खेलाय। मन्त्र गजोजिनि गानि
पसो श्याम राय। हृदये कांपी छेपदोथरे नैनन वाय
श्रामरोहप आमर होइ लेरी प्राय। आनंद वनों उड़ाय
पसो मिले वाय। छाउउचे झंम झंम अवीरो खेलयि
गलाल उडाय। ब्रज वासिंजे आशी होरी खेल वो

क॰
ग॰ न॰

गावो वासी ॥ नालजन ॥ यमुनानें नीर जाइतें न पारी

पथे मन होइये फिरे वेक विसारी। एकमोरा गोपबाला

नाही जानी होरी खोला नव नही छाडे काला दपरेग

भारी। नालजन ॥ भोरही आप मेरे गेह नाल होरी खे

लन कोमदन गोपाल। लाल गुलाल ने लालवने हे

ला लीलाल वने हे लाल। नालजन ॥ होरी देखोल

118

विचो दील साडा अटका। सावेरे दे लल साडा दिलस

टका। मन मोहन सोहन गवरु रंगडारन असाडा

चीर झटका। अलवेली पाग सलोनी अंखीयां जर

कसी जामा कट नट पनका। लाल गुलाल लेगाले

मलदा अजब खेलहे नागर नटका। रसिक बेल

हे दावन कुंजन मेल गाव्हत ध्यान निसा दिन चटका

८

कः
शुनं

नालजन ॥ सखी मेरे श्यामनें भ्रम माचाइया खोरा
मेकोउनिकसन पावैं पिचकारी नरंग छाई । नाल
जन ॥ जनमीजो भ्रनारग वाबी करलाई जमलाई
जान नार । फलसी होत है बन्द्रेनारी कोहजाने
नाजकनार कीसार ॥ नालजन ॥ नोरी गारी मो
है प्यारी लगत है निकस गई खेदरम खेने । चेद

११९

११५

सावरी मृग लोचनी कामनि ऐसे दीपत वेंदा की ऊ
लकतैं। बेसर में मोती यन की झलक वेंदा की चम
कसो हन प्यारी। लाल जान॥ सैनो खेलो होरी समा
ज जग मो माच रही है धमार। दफ कपट नी एक
रमेझभे धौर रबावें करदे नार। पांच पचीस सखी प
संग अबला हँसि हँसि मिलि गावन गारी। ज्ञान

क॰
ग्र॰ न॰

कोरंग ध्यान पिचकारी हेस हेस नामरंग दोउार । कोरे
कवीर मनो भाइ सायो जगमे खेलो संभार । तालज
न ॥ नागर है की आयो रुपो हेरी । हारी यान हारो न
देमी कोये मानो चूरी । वौं खे देह काग्र ध्रन कारे राग
नारी पाइये वरजरी । कोरे इरु निवेदन फेरी देवौ
मान कजो नाह्रीप्रमन होरी । तालजन ॥ फगुवा

170

मो गाए आयो री मेरो बारो कान मोसे। अबीर गुला

ल केसर रंग ले के उमड घुमड रंग छायो री। गोपा

ल बाल सब संखा संग ले होरी समाज मायो। हस

ने हमे रंग रंगे हैं फग बाल यो मन भायो। लाल जन·

मा बैरे हो कान्हा रंग भर दीनो बसन हमारो रे। श्री

वक श्याम जक झोरी म झलपक जपक गाढ़ी

क॰
ग्र॰ न॰

क्राउ दई ऊलकान । नालजन ॥ रेंगजार दई पिवका
री कान षेसे अनोखे खेलारी वनवारीने । मालमहं
राजस्वमी धेंगीया भीज्ञ गड् रेंग मारीका ॥ नालजन
मस्ती फागणकी किजीएज्यो चाल वलन राजह
स्ती । गलाव अनर चोवा वेदन मारव मलिन जानैंन
पावे नार हरखिल्ती ॥ नालजन ॥ वरज्यों माने न

121

८

१२१

हो नना भ होरी खेलन सब हार हार। वजत बीन मृदंग झांझ डफ और साज करी नार। देदे नार गार गाव त हे रहि नही काहु संभार डफकी धुन धेकार। ताल जन॥ दय रंग डार मोपे मोहन मदन गोपाल। नाख सिख अंग रंग मे बोरी मार पिकेशर पिचकारी। ताल ज न॥ मार वला पिचकारी मोरे नैनके उपर भर पिचका

क॰
ग॰न॰

रि। मोरे मावषर मारी भी जग रतन सारी। नाल जन॰

योवन धम मचाई सखि मेरे। जोको उप करन बोह

लोगनमें देति मै राम डराई॥ नाल जन॥ सखरवे श्र

नरिया रंग पद पीया मोको बोवा चंदन और अरग

जीके भर रंग भारि॥ नाल जन॥ कोहेको शीतल

गावन होरि खेलन नोहे ग्रव बनल्मजि। एक नोरहि

करेंहै याकी पातरउमगे यौवन वासना वनरी। नाल
जन॥ नादिन रंगभये हैं जादिन पियकोमे देखनप
रहैं। जोगन ह्वैयके मैं वन वन डोल अंगभभूतरमै
हैं। वालकी गलसेली वनै हैं लेपक ऊपक गरले
हैं। पीयमोरामै पीयकी मजनी पियपरजिव रामै
हैं॥ नाल खमटा॥ सखि वैनैना सेनै नामिलायर

क॰
ग॰न॰

हिमैं नामे फागवा मनाय रही । नामकी अंगियो जा
लि झरनी छतियनसों छतिया जउमगय रहि । नालखे
मटा ॥ अलबेलि अकेलि पियसों खेले होरिरे हेदाव
नकि कुंजगली । सालर सरकें सखी अंगिया औररंग
मेरली मेलि । नालजन ॥ होरी खेले यौवन मद मा
ती इन सोंवरे रे नेवीन बजाई री । ब्रजकी सखी सबहर

123

१२३

निकसगई गोकुल धूम मचाइ ॥ राधारुकमन श्रौर सत

भामा कुबजा खेल खिलाइ ॥ नाल जन ॥ कन्हैंया मो

पे रंग न डारो मेतो आपहि रंग मे बोरी । ब्रज कि सखी

सब बन बन आइहु महि पे रंग मारोक । भर पिचका

रि मुख पर मारि भीजगई रंग मारी । बरजरहि बर

जैं नही माने पेसे फिर बन वारी रसिक खेल ब्रजके

कं॰
ग॰न॰

जविहारि हाहा करमे हारि कन्है ॥ नाल जन ॥ जान

कहांहे आजबोरि जानन पैहो। सासके निरख्येलन

हि माने गारि देन बनाय। विचन वीर श्याम न हिमा

नन मुरली देहे बजाय। नाल जन ॥ फागुनके दिन

चार बीर पियको मनायले। रूपयौ वनको गुमान क

रिप विनि जान वहारवो। पियचानरन निपट प्रना

124

नारी पिय चरण नावेंन धार। कुला नेदमैं रंगगरिम
ह्ला गान लोक लाजननज डार॥ नालजन॥ मेरे हर
वाद्र वीच भीजाय होरिमे ना खेलेंगी फाग। अवराप
कर मेरो सवरस लिनो नेकन आइ लाच होरिमे
ना। नासर पीयसौं होरि खेलौं चरचर नेरो भागहो
नालजन॥ मोरे गार वाल गलगजाये कान्हा मे खे

क॰ ग्र॰ नं॰

लीनो सों फाग वहिया मोरे रने ऊव मावे मिडन गन
सेन मिलाय कि ॥ ताल जत ॥ मोरे नैन वाल गल
गजाय सखी मैं कैसे खेल होरी । मन मोहन मन
रस वश कर लीनो मेरे मन वानैं पगपग जाय ॥
इति रागिनी गणकली संगीत कल्पद्रुम परि
च्छेदः समाप्तः ॥ शुभमस्तु भूयात् शनानः ॥

125

रागिनी ककुभ ताल चार लालन मोरही आए
होरी खेलन कों ग्वाल बाल लीए संग। इतिअ
स्थायी। अबीर गुलाल केसर पिचकारी बाज
त ताल मृदंग। इतिअंतरा। इत सखा उतस
खी परस्पर छिरकत नाना रंग। राग बिलास
गावत फगुवा आनंद बढ़त उमंग॥ रागनीकु

रा॰
ऊ॰भ॰

ऊभ ताल चार। लालन मदनसों मदनसों मन वारे नैनसों लागत परम रसाल। इतिस्थाई। पंचरंग पाग पिछोरी को रंगबोरी भोंहे खल कमें गुलाल। इतिअंतरा। भोरे मेबरसे भाव री देत भवन में कठिन कालिन त्यागे पाप निकाल। साकित मेचकर्ई के चर आप चक

बासे प्रेम रंग कीनी निहाल ॥ रागिनी कु

कुभ ताल चार ॥ रैन बीताय आठ हो मो

हन कहो जागे रंग रागे । इति अस्थाई । क

बन त्रिया संग बिलम रहे हो होरी बिल

कहो पांगे । इति अंतरा । तो तरान बनत रा

त बैन हुन आवत आलस बस अनुरागे ·

गा॰ नाद मैन मनके मननबारे मे प्राप्ठ भाग हमा

कु॰भ॰ रे जागे ॥ रागिनी ककुभ ताल चार । रैन

बिहाय गई भोर भयो होरी कहो बिलेण्या

रे । इतिप्रस्थाई । कवन नवल तिय पीय

बिलमाएु गिनत बिती मोहे सब निशाना

रे । इतिप्रेतरा । कहूं काजर कहूं पीक ली

कम्रपरन भ्रेजन माल महा बरषारे। तो

न सैनके प्रभु तुम बऊनायक सोफकेरा

ए हों सिधारे॥ रागिनी ककुभ ताल चार।

नैन रेगाय आए हो लालन या होरी कीरा

त। इति अस्यारई। मकुच सोबेरे हित अप

नैकी कहनन पाएबात। इति श्रेतरा। क

रा॰
कृ॰भ॰

झेकझे लागे गुलाल कपोलन ढीले बोल
न ग्रतही जेभात। बलिहारी वा मोहनी प
रकैसे ग्रावन पाए कहो जु कहो तुम ग्रात॰
मन ग्रपनें की सो कहू न सकत एक बात
जतन जतन बलिहार करे कैसे ग्रावत पा
ए ग्रात॥ रागिनी कुकुभ ताल चार। लाल

अरमानैं मो रही आए। इति अस्थाई। कवन
बाम हितसों परचाए मगरी रयन जगाए।
इति अंतरा। छिग छिग काजर फैल रह्यो है
जावक तिलक लगाए। रूपकही बरनी।
अत मोहे मोहन अथक सुहाए॥ रागिनी कु
कुभ ताल चार। होरी खिले प्यारी अबकेया

रा॰
कृ॰भ॰

मोतसों लालनया मेरा। इतिप्रस्थाई। आपभी
जे औ उनकों भिजावै लपट मपट दीजे ली
जे खेरा। इतिअंतरा। मन मोहनकों पकर।
वस कीजे फगुवा लीजे उमेरा। कृष्णानंद॰
सों फागर चोंगी पकही पकड़ रेरा॥ रागि
नी ककुभ ताल चार। जेती यतें सबनाडी

4

भई अप अप गडुवा बनाय आगे धर दीनें म
हमदसाह दछन के लछन छिनक में सेना
सों मन बस कर लीनें। डफ बीन रहे दंग रबा
ब गावत तोनन बीनें सदा रंग रंगन में भी
जे घाल लय मम लीने॥ रागिनी ककुभ ता
ल चार। आज रम भीनें देखी यत लालन।

गी॰
ऊ॰भं॰

जागे भाग हमारे। इतिअस्थाई। करबसेतनि

न सबकी ओर देषत ही कृपातें कर लीए स

गेयन बीनें। इतिअंतरा। जे नरव भरी तेउआ

य ठाढी भई सब अपने गडुवा बनाय आगेय

रदीने। सदारंग महमदसा हिन छनके ल

छन समके छिन एक में टोना से मन बस

5

करलीने ॥ रागिनी ककुभ ताल धमार। लंगर वट पार बिले होरी। इतिश्रस्थाई। बाट घाट कोउ निकसन पावै पिचकारी नरंग बोरी ॥ इतिश्रेतरा। मैं जु गई जमना जल भरनें गाही गावमी जोरोरी। तान बरसके प्रभु नंद को ढोटा बरजोन मोनन गोरी ॥ इत्याभोगः। रा

रा॰ गिनी ककुभ ताल धमार। आज रस माती हो
ककु॰भ॰ री खिले लाल। इतिअस्थाई। तारी दैदै नौवत
गावत संग ग्वाल ब्रजबाल। इतिअंतरा। के
सर रंगकी छूट परी मानु मानु छबकी जाल
नट नागर प्रभुकी छब अद्‌भुत निरखत भई
निहाल। अन ठन नहीं कीजे आली अपने बा

6

लमसों यह फागुन के बीच। भाग की रीत कहो

जानें ग्वालन के तो कहो है आखिर जान की नी

च॥ रागिनी ककुभ ताल धमार। आज सखी

फाग आयो रित बरषा लिए संग। इति अस्था

ई। अबीर गुलाल के बादर छाए बरसन ला

गे रंग। इति अंतरा। बांह पकड़ जब गाढी की

रा॰
ऊ॰ भ॰

भोरल चपला मृदंग घन पिचकारी फर सेग।
कूल रसिक फाग खेले बाढोहै मन रंग॥ रा
गिनी ककुभ ताल धमार। लगवार लगाएश्रा
वत होरी में एसी देखी अनोखी नार। इतिश्र
स्थाई। एक गावत एक मृदंग बजावत एक
नाचत है ताल धमार। इतिश्रंतरा। बोहएक

उ जब बाछी कीनी कासों करों यह प्रकार। रे
ग रस रसकी धूम मची है ग्वारे खड़े ने दबार
रागिनी ऊकुभ ताल धमार। ता पर तूं करत
लागीरी यह बात पकी तो वाकों केघलियो
परचाय। इति अस्थाई। गिन तन काहू कों अ
पनें आगें ऐसो तेरे ही घर न्याय। इति अंतरा

रा॰ निसदिन हेसत डोलत रहत तेरेही गुणगाय
ऊ॰ भ॰ ऐसो तें कहा कीनी सजनीरी उरपजे तिहारे॰

पाय॥ रागनी ककुभ ताल धमार। बाजनला

गे डफ होरीका नर नारी डारत है रंग। अति

ग्रम्याई। बसन रतन सब पहरकर आई च

तर देवीनी को रंग। इतिश्रेतरा। बीन रबा

8

गये तेरो भाग बडोरी ॥ रागिनी ककुभ ताल

रूप । लाल भष उर माल काञ्चके कर हो

री के ख्याल । तन पायो ब्रजराके घरीयो

श्राविन भरी है गुलाल । चतुर नागरी ज

न विचित्र बनाय बसकर पाय नवल बाल

री रूप भष बलि हार वाही के रंग मैं गिरिधर

रा॰
कु॰ भ॰

बमन पलटि आवो की नैं औरै हाल ।। रागिनी
ककुभ ताल रूप । निरषत ब्रज में रितु बसं
तकी सुंदर कुंवर कन्हाई री । द्रुम द्रुम पर
क्षु व छाय रही है रंग रंग फूल बिलाई री॰
कुंज कुंज वहे औरै ब्रंदावन सोभा नव घ
गटाई री । जमुना तट बंसीबट छाई घाट

बमृदंग बजावत करगहै कन्है यासबके संग।
बकर नहीं देवि बर जोरी लगावत उमके संग
गगानी ऊझम ताल धमार। हों नादान गारी
दई अकेली पाय परी बर जोरी होरी कर। इ
तिअस्याई। होहो होरी बलिहारी बिहारी ते
री सों मै अबीर भरहीं परबस जाय परी॥ गगि

रा·
ऊ·भ·

नीऊऊम ताल धमार। आजरंगहै जोगीरंगहैह
मरंगभीजे साथ जोगी रंगहै। इतिअस्थाई। ब
हुरूप बहुभेष तिहारे अलाव जगावे अनहद
नाद। इतिअंतरा। अंग अंग बस्तर तोर कों अप
र मिली भभूताद। अबीर गुलाल की बुरकीडा
रे होरी होरी सेज सबास चले चलो लाद।।रा

गिनी ककुभ ताल धमार। अद्भुत मची फाग

मोहन घर देखन चली ब्रजनार। इति अस्था

ई। अबीर गुलाल के बादर छाए रंग की पर

त फुहार॥ रागिनी ककुभ ताल धमार। मो

पै का बिन रहो ही न जायरी आली कौन उपा

य करो मिलवे कों। इति अस्थाई। नयन ही

रा॰
ऊ॰भे॰

कछु तन मनकी साखी जबतें दीनी मोहन म
रलीकी धुन सुनाय। उनकों देखके लुभाय
रही मन घटकों हरिसों जाय। जनम जीव॰
न फल तबही जानोंगी जब वो मिलहै आय
आद बसंत अंत फागुन लों याही सोचन मो
हे दीन कटत जाय॥ रागिनी ककुभ तालध

10

मार। प्रभु कैसी होरी मची सब जग देखत रा

लाल रंग में बादर। इति अस्थाई। एक प्रगट

भई छब देखत उनकी बल जाने को कोउक

रन आदर। इति अंतरा। उनही के सब रंग डा

री यतजे सबही में नादर। अब के जो फाग

जगत में मच्यो सदा रंगीले कादर॥ रागिनी

रा॰ ककुभ ताल धमार। लेगर बाढीठही मोसों।
कु॰ भ॰ करतहै घनोखी बात। इतिघ्रम्थाई। छाड
ौर मग मेरेही घ्रावत रवार सखा लेसाथ॰
रागिनी ककुभ ताल धमार। जागी सगरी॰
रैन होरी खेलत पीयसेग भोर भए उठि वि
घुरे बाल। इतिघ्रम्थाई। मानों नरबर डारी

नबीच चंद्रकी जोतकी रत मानों दिनमन
लख्यो है गुलाल। इति ग्रेनरा। मानों स्याम
डोरी नतें ढाफी कंचन की पाल यह छबि
निशि निशि काम हष्ट रीझहे नन्दलाल।
रागिनी ककुभ ताल धमार। अब धूम मची
फाग मोहन घर देखन चली ये ब्रजनारी

रा॰
कु॰ भ॰

इतिग्रस्याई। एक हाथ अबीर एक पिचकारी
लीए एक नाचत एक गावत दे दे तारी। इ
तिश्रेतरा। एक बीन रबाब साज लीए एक।
करत केठ तारी। कुला नंद आनंद सो खिल
त फगुवा देत गिरिधारी॥ रागिनी ककुभ
ताल धमार। खिलन आए होरी आज रस सों

12

लालन मेरे रसपरी। इतिअस्थाई। बरन बर
न बस्तर पहरे औरआभूषन नगन जडित
के धरे तैसी मक्क माल गरे ताउ परनी की ला
गी गोरी॥ रागिनी ककुभ ताल धमार। आ
वोरी मिल देखो होरी खिले प्यारी प्यारो राम
मंदिर में बर्षा समानी। इतिअस्थाई। उडत

ग·
ऊ·भ·

अबीर घटा घिर आई पिचकारी कर जो उरब
ग ऐंथ ता में झलकत नार चपला ऐसी च
मकत मोहत सुर नर नरपानी। इति श्रेतता।
ततओ वितत गरजन सम बाजत सुघर गा
यन ओ पिक निरतकारी चातक मयूरन के
भेदन सों सुरत निशानी। फागुन में बरषा।

13

रत उन्हीं उमड घुमड बरषत रंग कुलरामि
क रंग रस कर लाय लाय मानों बूंदन बरष
त पानी ॥ रागिनी ककुभ ताल धमार। आज
ब्रज भोर ही भैरव राग में गावत होरी बिल-
त ब्रज नाथ। इति अस्थाई। सप्त स्वरन अक-
ईस मूर्छना लाग डाट लीए साथा। इत्येतरा

रा॰
कु॰ भ॰

रागिनी ककुभ ताल धमार। लालन लीज्यो ता
न ललित स्वरन मैं लाडली रीझे प्राण प्यारी॰
महा रानी। इति प्रथ्याई। मुरली धुपद धर म
धुर मध्य स्वर राग डाट मरख्यानी॥ रागिनी कु
कुभ ताल धमार। ऐसी होरी मचाई मोरही मो
हन मानो रितु बरषा फर लाई। इति प्रथ्याई॰

14

डफ मृदंग जानो घन गरजे है भोउल चपला
चम काई ॥ रागिनी ककुभ ताल यमार। मो
हन मो रही रंग रंगाए होरी खेल रचाए। ऊ
तिम्र ख्याई। ग्वाल बाल सब साखा संगलीए
अबीर गुलाल उडाए ॥ रागिनी ककुभ ताल
यमार। नैन रंगाए नवल त्रिया संग अनत

रा० ऊ० भ०

ही होरी मचाए। इति प्रस्थाई। मोरही आएहम
पहचानत नाही लाल हीला लील गाए ॥
रागिनी ऊऊभ ताल धीमार। तापर हम सा
च बोलत हो मोहन रात कहो सारी रैन जग
आए। इति प्रस्थाई। मोफके वचन सोच क
रन को मोरही माव दोव लाए॥ रागिनी ऊ

15

ऊभ ताल धमार। बरसाने में खेलत होरी।
श्री वृषभान की छोरी। इति अस्थाई। कहुं चं
दन बंदन अतर अगर जाले अबीर गुलाल।
लीए भर झोरी। इति अंतरा। कोउ गावत।
कोउ मृदंग बजावत धूम मचाई नंदरायकी
पौरी। उत ते सखा संग लीए कृस्न अभ पिच

रा० कारी नरंग छोरत भारी रंग रच्योरी ॥ रागिनी
ऊ० भ० ऊऊम ताल यमार। आई मिल कर सबही स
हेली खेल रच्यो नंदद्वार। इति अस्थाई। याय
पकर लीए नंदलाल कों फगुवा लेन ब्रजबा
र। इति अंतरा। काहूने पीतांबर पकरो है का
हू मुरली पालई देतार। अब कहो भाग जावो
16

फगुवा लेहो तब जो बीर ह्वैहै म्हारा॥ गारि

नी कुंकुम ताल धमार। लेगर लागी हो आवै

यह फागुन में नित नई धूम मचावै। इति ब्र

स्याई। कही सखी कछु मानत नाहिन मेरो

नाम लेले गारी गावै। इति ब्रेतरा। ब्रगर ब

गर के लोग सनत है सामन नदीया रिमावै।

रा॰
ऊ॰भ॰

कहो कहो मैं रसिक कृष्ण कों मोहे बर बसगार
बोल गावै ॥ रागिनी ककुभ ताल धमार। फा
गुन मास मैं धूम मचाई ब्रजमें नरनारी बौरा
नैं। इति अस्ताई। को काहू की सुध नाहीन।
सजनी अबीर गुलाल उडानें। इति अंतरा।
कृष्णही रूप रंगे ब्रजके जन मानो मेघ घटा

वोरानैं॥ रागिनी ककुभ ताल धमार। रामक
ली देखी फूली बन बनमैं चलेहै खेलन बसं
त होरी। इतिअस्थाई। लछमन भरत शत्रुघ
न संग लीनैं केसरकी पिचकारी छोरी। इति
अंतरा। सीताजू संगलइ सब सखीयां कृती
कीर्ति उर मिला माण्डवीडरू ओर भारी रंगार

रा॰
कु॰ भ॰

चोरी। तुलसी यह रघुनंद फाग मच्यो है श्री
दशरथ राज सुत के वारे उत जीती है जनका कि
शोरी॥ रागिनी ककुभ ताल धमार। आए हो
रंग भरे लालन होरी खेलन मो सों जोबन के
चिन्ह लीए। इति अस्थाई। अधरन अंजन स
ब नेबोल फीको लागत बिन कीए। इत्यंतरा॰

18

रागिनी ककुभ ताल धमार। पद देदे लेले
खब नैनन फगुवा मांगत खब गाय गा
य। इतिअस्थाई। मिलन बनी नंदलाल ला
लसौं होरी खेलसर पाय पाय। इतिअंतरा।
तजी लाज गुरजन डरजनकीतीया नेकन
सकुचाय चाय। जे मन धरी रली रंग बनी

रा॰
ऊ॰ भ॰

यों ते सब करत मन याघ याय ॥ रागिनी ऊ
ऊभ ताल धमार। ऊम सब ग्राई गोपी लिपट
रहे नंदलाल। इति ग्रध्याई। मानों स्याम घन
में चपला गत यों राजत ब्रज बाल। इतोतरा
ग्रंजन ग्रोज मोड न्नाव रोरी दे उलचा ग्रोरपैंच
त गाल। चक्र विलारन बल पीरज ग्रभुक

र पाए हैं ख्याल ॥ रागिनी ककुभ ताल धमार

ऐरी गंवार तें तो प्रीत की रीत न जांने। इतिश्र

म्याई। जासों मन लगाईये तासों औरनी भाई

ये नार। इतिश्री अंतरा। वे मन मोहन मोहन म

जनी बहुत हैं ब्रिजनार। ऐतो मान कहे करत

है आली उठ चल हरि हि निहार। कमला ने

रा॰ दत्र्यानंद में विहरत संदर रूप बहार॥ रागिनी

कु॰ भ॰ ककुभ ताल धमार। धूम मचाई मोहन ब्रजमें

अब कैसे मान रहेगी। इति अस्थाई। अबीर गु

लाल केसर पिचकारी डारत अनेक रंग बहे

गी॥ रागिनी ककुभ ताल धमार। दंपत बिल

त होरी महल में सोभा बरनी नजाय। इति अ

१०

स्थाई। सकुच छोड ग्रेग ग्रेग लपटोने सरस
माते दोउ राज बहादर फगवा मचर मचाय
रागिनी ककुभ ताल धमार। या ब्रजमें धूम
मचाई बिलत होरी। इतिस्थाई। हों सकु
चत हों जानन पाउं पनीयो भरन कोरी। इ
तिअंतरा। कुल रसिक रस रंगन बोरत ग्रद्ध

रा॰
ककु॰भ॰

त ख्यालन चोरी ॥ रागिनी ककुभ ताल धमार
चचर खायिक बिलार नार नैनन मद्य पीय॰
मों खिलत होरी । इति अस्थाई । सेत अबीर गु
लाल से डोरे चितवन में सब रंग भरोरी । इ
ति अंतरा । इक पुतरी पे चोटी पलक की फ
पक लगावत ले सम मोरी । नाचत कटाक्ष

21

न भाव बता वत रिफावत ललना लालनको

री ॥ रागिनी ककुभ ताल धमार। भोरही स्या

मतें कहो खेलो होरी नीषि सों होरी। इतिश्र

स्याई। चट पट नैन सों नैन मिलातही फट

पट पीत पगोरी। इतिअंतरा। वे तो चतुराखे

लार कंन्हैया हम बहो गुन हम निगुनी भोरी·

रा॰
ऊ॰ भ॰

बत रस उपजात हसन त्रुति रस सनातन

वगन सारी रंग रसमें भें जोरी ॥ रागिनीऊ

ऊभ ताल यमार। पहोरी खिली मवीरीसा

न बाज रंग रागसों। इतिअस्थाई। ऐसीहो

री में फाग मचावो फगुवा लो रघु राजसों।

इतिअंतरा। वेदन वेदन बुकारोली अबी

र गुलाले समाजमों। कुल्लानंद सों रंगकर

लाउं बोल हूंघट जो लाजमों॥ रागिनीकु

कुभ ताल धमार। आलीरी कैसी यह होरी

पीया मोहे चेनन देत। इतिअस्थाई। अव

रा मोरा साव मीडतहे मिशाही मिश रमले

त। रागिनी कुकुभ ताल धमार। माइरीके

रा॰ मे बसीया हू नगरमें होरी खेलत बगर में।
ऊ॰भ॰ इतिस्थाई। चोर सबै कोतवाल हसै डरना
ही नगरमें। इतिअंतरा। एकही रंगमें रंगे
है पुरजन नेकन सेग कासु घरमें। रसिक
सनेही मानत नाही बडी छोटाई लेगरमें
रागिनी ऊऊभ ताल धमार। काहारी तोहे

23

लाजन आवैरी बारबार न आवै। इति अस्थाई

ऐंडी डोले मदकी माती नैन सैंन नचावै।

इति अंतरा। बिनही कहे नम नाचत गावै

त नाना रंग उपजावै। रसिक कुमल कौंर

सबस कर लीनों तोही कौं नित चावै॥ रा

गिनी झुझभ ताल धमार। कैसे भरन जा

रा·
ऊ·भै·

उं पनीया माठ निपट अपचल खिले सांवरो
इति अस्याई। काहू सौं लरत और फगवत का
हूसौं ऐसें होरी में भयो बावरो। इति अंतरा।
कही सुनी काहू की न मानैं ऐसे ढीठ छैल
उमावरो। डगर बगर चलनन देत है ढीठ
भयो ढोटा गोकुल गावरो। कुलानंद आने

24

दमे ठेलत नेदमहर को है ज्ञडावरी। गारी

नीऊऊभ ताल यमार। लाल ज्ञ पाइ अकेली

नवेली नार म्हचर रेग गोरी। इतिअस्थाई॥

हमरे सेगकी डरनिकम मइ मोमे कीनी बर

जोरी। इतिअंतरा। बाट घाट मग रोकत ठो

कत दधि बिघार मोरी मटकी फोरी। क्रला

रा॰ नेदकेमे निकसन पइहै जो ब्रज आवत सोइ

ऊ॰भ॰ रंग बोरी ॥ रागिनी ऊऊभ ताल धमार । चौक

परी गोरी होरी में स्याम अचानक बांह गहीरी

इति आस्थाई । ससर छुडाय रिसाय चली भु

व घनाव अधर कछु कहीरी । इति अंतरा ॥

चित चितै रसके कसके भुज में रस राम ल

25

हीरी। जै श्रीकुंज लाल छबि बाल जाल छ

बि ख्याल रिसाले देख रहीरी॥ रागिनी कु

कुभ ताल धमार। लाल रस माते खेलै होहो

हो कर होरी। इति अस्थाई। इत गोकुल उत

मथुरा नगरी इत चंद उत चकोरी। इत जेतरा

ग्वाल बाल सखा सब लीए उत ललितादि

रा॰ किशोरी। क्हल रसिक छबीलो कहत है छबि

ऊ॰ भ॰ पीया प्रीतमकी जोरी॥ रागिनी ऊऊभ ताल

यमार। वे भास त तेरे नन में मोहन बल ती

या जिन रैन जगाए। इतिश्रस्थाई। विबसभ

ए भो रही आप मारी रैन जगाए॥ छांडदेऊ

मरारी घट पटी वात पीयारी। हम आगेत

२८

मकूट कहत हौं नबल नीया बलि हारी ॥

रागिनी ककुभ ताल धमार। चकई खेह ञ

हात भोरही मेरे प्रात त्तम चुरबोलत दीयो

है दरस। इतिअस्थाई। रैन के उनीदेतो त

रात नैन मूंदे मानौं बीत गए बरस॥ तुमकौं

नहीं जु होरी (बिल कहो ते आए बमनरेगी

रा॰ ऊ॰ भ॰

लेरे गाए। पहचानत हम माही न हमके ब्रबी

रगुलाल लपटाए॥ रागिनी ककुभ ताल ध॰

मार। भोर भए हरि होरी खेलत आए नवके

जन प्यारी सौं। इति अस्थाई। धन धन प्यारी

धन प्यारे हो हम धन धन धमार में विश्राम

गाए॥ रागिनी ककुभ ताल धमार। आजतो

27

छबीलों लाल प्रातही खेलन चल्यों सखा
संग लाये गारी गावै गाइके। इति अस्थाई।
खेलत खेलत वृषभान जूकी पौरी आए हो
हो होरी बोले प्यारे मन भायके। इत्यंतरा।
छबीली रच्यो उपाय स्याम कों लीनें बुला
ये मैया की दृष्ट बचाय लीनें उर लायके।

गा॰
ऊ॰ भे॰

प्रेम परम दोउ महारस भीने मह चरी सुख
पावे रसिक सुखलायके॥ रागिनी ककुभ।
ताल धमार। बिलावन आवेगी ब्रज नारी।
इति अस्थाई। जागो लाल चिरैया बोली क
है जशोमति महतारी। इति अंतरा। आभो
दूध पान करि मोहन वेगी करो सनान गो

२८

गाल। करि सिंगार नवलवानिकवन फेंट
नि भरे गुलाल। बलदाउले संग सखा सब
खेले अपनें द्वार। कुंमकुंम चंदन छोवा छि
रको चमि मृग मद घन सार। लेकन हेरस
नों मेरे मोहन गावत आवै गारी। व्रजपतित
वहि चौंक उठि बैठे कित मेरी पिचकारी॥

रा॰ रागिनी ऊजभ ताल धमार। चीरीया च्हेह च्हहा
ऊ॰भ॰ मोरही ग्रत होरी बिलन आए मेरे ग्रात। इति

ग्रस्थाई। डगमगात पग धरत हो स्याम सलौ
नैं गात। इति अंतरा। कहा इत रात उत रात
बीती जात नवल तीया के संग बिले रात।
कूलानंद तुम मोची कहो तुम कहा जारो॰

२१

मोहे कहो बात ॥ रागिनी ककुभ ताल धमा

र। जानदेहो बनवारी मेरी अंगीयां रंगभर

डारी। इति अस्थाई। देखत है गुरुजन पुर

जन मानों बात हमारी। इति अंतरा। काहे

को एकरत हो मन मोहन काहे मारत पिच

कारी। एक डर है मोहे सासनंद कों मानों

रा॰ ऊ॰ भ॰

कृष्ण रसिक बिहारी ॥ रागिनी ऊजभ ताल धमार । हो तोंको कोंन सीखदे होरी नागर

इति अस्थाई । ते तो होरी में मत छिन छिन मरि सावै उन के मनही में सब रस गुण के

आगर । इति अंतरा । अब हम मोंन गहे राखे सखी परी रूप प्रेम सागर । अब के महमद ।

30

३०

मा कोउ मनायले आवे तो भकेगी रीकची गा

गर ॥ रागिनी ऊजम ताल धमार। मदमाते

हो लालन खेलन आएरी मेरे धाम। इतिश्र

स्याई। नीकी बोन कबहनाड्र पहनाउ ता

पर मकतन की दाम॥ रागिनी ऊजम ता

ल धमार। हों तो हात बिकानी लालकेजो

रा॰
ऊ॰ भ॰

भाँवै सो कहो। इतिसरब्याई। तन मन धन स
ब तुमहीकों दीनों जो होनी सो होय चहो॥
रागिनी ऊजम ताल धमार। मदमाते आए॰
होरी के कैसे नही सकुच डग खेजनमें। इ
तिसरब्याई। चल बिचल हो रहे गैन नेनन॰
पानते अधर भर रहे रोव खेजनमें। इस्पेतरा॰

31

दग लोचन लाल लाल हो रहे तिहारे घनतै
म रेजन में। एसे ही प्राण कहो ते लालन व
म जमर में भेवर खिजन में॥ रागिनी ककुभ
ताल यमार। हौं गोरस वेंचन जाय नामकौ
बीच बाकौ कुल स्याम खिले हो होरी। इति
प्रस्याई। सट माते छके बक बक सब देत

गा॰ गार नाघर रोकनटोकन झक झोरत बांहबर
ऊ॰भ॰ जोरी ॥ रागिनी ऊझभ ताल यमार। नैन पिच
कारी प्रेम रंग भर भरके मैनन हूं त कमारी
इति अस्थाई। कुच कुम कुमा गुलालन हात
न के हरबा डारत गारे प्यारी। इति अंतरा॥
गोट प्रबीर नैनन मे काजर मांगटीको हि

32

नकारी। लाल कृपाल सौं होरी खेल ले पाए
चतुर बिलारी॥ रागिरी ककुभ ताल धमार
ननही कुंवर स्याम जू सब कौं पेखत घरमे
रो। इतिअस्थाई। यह तिहारे जीय में रहत
है मिलबे कौं मन तेरो। इतिअंतरा। धमया
म फागुन की याते सब लग लोग अजान।

रा॰ सम रूप जावो जीया अपने यातें बसीए मो ढिग आन ॥ रागिनी ककुभ ताल धमार। आज
ककु॰ भ॰ आली होरी खेलन कों मानन कीजै परम॰ पीयारी। इति अस्थाई। भाव नानन नीके।
होरी गावत गुलाल उडावत ब्रज जुवतीन के संग बनवारी ॥ रागिनी ककुभ ताल धमा

३३

र। साजन विरह वियोग विलत हैं नैननमथ
विरहन होरी। इतिश्रयाई। सेत ग्रबीर ग
लाल मिलो चित बनमें सब रंग भरोरी। सी
यरी सास मनो पिचकारी ग्राह कडोड ही
य सोफ यरोरी। इतिश्रेतरा। नानकी चिता
लगाय चित्र गाह मदन ग्रगन निज जराय

रा॰
ऊ॰भ॰

टयोरी॥ रागिनी ऊऊभ ताल धमार। ग्रूमधा
म फागमैं यातैं सब लगलो ध्यान। इति ग्र
म्याई। समफावत सब मार्वी यो ए मे बसी
यो मोढिग बसीयो ग्रान॥ रागिनी ऊऊभ
ताल धमार। ग्राज रंग भीने देषत मिल खे
लत नीके रह सब हमसें होरी। इति ग्रस्या

34

है जों ज्यों खेलत त्यों त्यों रीझत मैंग सब सों

बरे ले और गोरी ॥ रागिनी ककुभ ताल ध॰

यह कौतक देखीये हचसों मोहन ब्रज में

रची फाग। इतिश्रस्याई। एक उडावत अ

बीर गुलाल एक नारी दे दे गावत राग ॥

गोपी गोप गोरस रस माते होरी खेले सब

गा॰ चायनेहों। इतिअस्थाई। डफ मृदंग और बे
रु॰भ॰ सी बजावत मन के कलोलन सब आपआ।
पमें रंग रातें हो॥ रागिनी ककुभ ताल धमा
र। कोन्हा चंचल छैल चतर चपलासी बिल
त हो हो होरी रे। इतिअस्थाई। अबीर गुला
ल के बादर छाए रंग की परत फुहे होरी रे॥

35

रागिनी ककुभ ताल धमार। आयो होरी खिल
न कौं सखीय सखा मिल संग लीए डफबी
न की झंकार। इति अस्थाई। अबीर गुलाल।
धुंध अत बाढ़ी गावत बजावत मृदंग क
ठ तार। इति अंतरा। चहूं ओर तें नरनारी।
मिल गावै सब साखी दे दे तार। राज बहा

रा॰ इरकों जम जम जीवो कायम राखि करतार॥
ऊ॰ भं॰ रागिनी ऊऊभ ताल धमार। मारी गोरी मग
मधे मायो पाग रंग में रंगोरी। इतिश्रस्थाई। मे
ग मथनो धन गोरी गोरी मथुर मथुर धुन रा
ग मथ रंग सो धमारे। इतिश्रन्तरा। सो रंग सो
रंग राग गारी में धेधे गोरी खरंग सो स्याम म

36

यें सिर सों पग सों पग सों रंग सों थोरे ॥ रागि
नी ककुभ ताल धमार। ग्वछे होरी नंद नंद
न राधे खेले होरी। इत स्यामा उत स्याम म
नोहर अबीर गुलाल रंग घोरी। इति ग्रंत रा॰
रागिनी ककुभ ताल धमार। देखो देखो ब्र
न की विथन विथन खेलत है हरि होरी।

गा॰

ऊ॰ भ॰

इति अस्थाई। गीत बिचित्र कुलाहल कौत
क मेग साखा लाखकोरी। इति अंतरा। आई
झूम झूम झुंडन जुरि अगनित गोकुल गो
री। तिनमें जुवती कदंब शिरोमनि राधा
ज्यू नवल किशोरी। छिरकत ग्वालबाल
अबलन पर बहूका बेदन रोरी। अकन अका

37

सदेव मैय्या भ्रम खनि मनसा भई बोरी। र
पटत चरन कीच ग्रगार जाके मरक्रैमक्रम
बोरी। कही नजात गदाधर प्रभु कछु बुध
बल गति भई बोरी॥ रागिनी कक्कभताल
धमार। रडत कहा नंदके ढोटा बोल गो
ट कछु देरदे। इति ग्रय्यार। बाठ घाटमेंबो

रा॰
ऊ॰भ॰

लीटोली गावन कीजै आन कन्हैया गावज पैरे
तो दे रे दे। इति षेतरा। बिन बोहनी तो हे जा
नन देहों मोल तोल कछु है रेहे। बिनें जमा
ल गोपाल जीके प्रभु कों तिहारे दरस मो जे रे
जे॥ रागिनी ऊऊन ताल धमार। होरी खेल
आई ते फाग पीया सों मो मो डरा वत हे अप

७८

नै जीय की बात। इति अस्थाई। सूरत के बिछु

डेरे नइरा पनैनन रहे कनरा और लमत न

बिसिब गात। रागिनी ककुभ ताल धमार।

पञ्ज काल की ब्बारन मैं रो मन ले गई लेग

ई पञ्ज काल की ब्बारन। इति अस्थाई। सोक

भई अजहू नही आई झूठो बचन दे गई ए

रा॰
कु॰भ॰

इतिश्रेतरा। कबहूं कबहूं परोमनके घरआव
त जाय देखो है केगाई। बाबिन तो मोकै से व
लैवे तो विरह को बीज बोगई॥ प ज काल॥
रागिनी ककुभ ताल धमार। छैल मदमातो
बोले होहो होरी बोले। इतिश्रुप्पाई। छै नि
सेक बो श्रेक लगावै श्रौर हेहट पट खोले॥

39

इतिग्रेतरा। बातन बातन हेम हेमके ग्राव
न अपनीही सब गोले। मोहन मुख निर
खतरी ग्रारी बारी भई बिन मोले॥ रागिनी
ककुभ ताल धमार। एरी चल खिलन जा
इये सांवरी सों होरी। इतिग्रस्थाई। ऐसे म
मै बहोर नही पैहे मेरो मान कह्योरी॥ इतिः

रा॰
क॰ भ॰

नरा। अबीरगुलाल कुमकुमा केसर भरपिच
कारी रंग पीत पिछोरी। मोहन के गरलाय
कर जीवन को फल लोरी॥ रागिनी कुकुभ
ताल धमार। होरी खेलन जाने भयोरी अनोखि
छैल। इतिअस्थाई। कहो कछु कबु कहत।
न आवे रोकत है मोहि गैल। इतिअंतरा॥

40

रंग भर भर औरन आनन आनन करत अट पटे

फेल। मोहन मुख देखत सुध बिसरी मिटी

जगत की भैल। रागिनी ऊऊभ ताल धमार

तारी डफ बाजत मोहन छबि छाजत नाच

त गत सौं आनंद दे तार। इति अष्टपाई। बाज

त ताल मृदंग बेन धुन ने वर की झनकार

रा॰
रू॰ मे॰

इति अंतरा। ग्वाल बाल सब संग लिये मंगल भरमारी पिचकार। अधारेंग ब्रज धूम मची है ने द महर दरबार॥ रागिनी ऊझम ताल धमार आज तुम कैसे बन आए हो मेरे लाल लालो॰ हे नैन रैन के जागे। इति अस्थाई। याही लबन कहे देत तुमारे होरी केसर पागे। इतो

41

नरा। सीतलगात पेटलटकत पगीयाकेरंग

भीनें तन सोहत वागे। जो तम कीनी मोम

ब जानत सकुच सोच सच होत हो मेरे आगे

कहे काजर कहे पीक लीक कहे सबे चिन्ह

अनुरागे। महाराज सत्रुचंद पीय मकवले

देखो अवीरगुलाल अलक सवे लागे ॥

रा॰ ऊ॰ भ॰

रागिनी ऊऊभ ताल धमार। प्रेम रंगके भींनें
मथ मातें खेलत हो हो होरी। इति अस्थाई।
कर मध लीये सखा सखैया गावतैं तान सुर।
की बोरी। इति अंतरा। अबीर गुलाल उडाव
त सबपैं भर भर ले ले झोरी। ये कौतक चल
देखीये राजा उदित नारायण छिग ऐसे समोरी॥

42

रागिनी ककुभ ताल धमार। डफकी धुंका

र मेंगलीए ब्रजकी वियन ओर। इतिश्रस्था

ई। एकनको मबवक्रच नच सों मीडत एक

नकों गह बहीयां रंग में बोरे। रा.क.ता.ध.

स्याम बजाई मुरली की धुन सुन बौरानी सु

धन रही मोरे तन में। इतिश्रस्थाई। मटक

रा॰ पटक गाउ अबि मराई भटक रही बन मे।
ऊ॰भ॰ इतिश्रेतरा। लाज सकुच सब जीयातें त्या
गी कहा करी फागुनमे। मेरे तो जीयाको
चैनन आवत खरना बहारना मोरी ओरा
नमे। रागिनी ऊकुभ ताल यमार। धुरो॰
नेद के ढोटा तेरी लेगराई मो में कही न

नाय। राज करौ यह ब्रजकौं बसबौ नागर।
सब व्रत पाय। रागिनी ककुभ ताल यमा
र। हमारो फगुवा दीजे नंदके ढोटा नहीं
तो होलरीगी फगार फगार। के सब मीडों
गी फेंट गहे स्याम निडर निडर॥ परी क
न्हैया होरी खेलन लागे ब्रजमें धूम मचा

रा॰ क॰भ॰

ई। बाट घाट मग रोकत टोकत मुरली फेर
बजाई। रागिनी ककुभ ताल धमार। काज
र देहों नैनन को अब कैसे भजे नंदलाल ह
नर। मोरी अत चटकी लीकीनी है सोराबो
र। अरे हरि कन्हाई कहो मेरे पाछे परो है॰
मैनदे स्वपनले नदे ऐसी बैन बजाई। ला

जात जगी गोउकीरे रामराम उहराई। विरह

वियोगकी युन मोपे सनि न जात ग्रनम॥

नी सनाई। सकल सभा सभ सुनोरी कान

की मारी निकसी जातहों सताई। रागिनी

ककुभ तालयमार। सबकि तजेहों भजने

हलाल काजर देहों नैनन कोर। उनर मे

रा· री ब्रतवटकी लीकीनी है मोराबोर। रागि

क·भ· नी ककुभ ताल धमार। होरी कैसे के षे·

लीए आयो फागुन मेरा स्याम। सगरी स

षी मिल बन बन ढूंढे लै लै किसन को

नाम। डफ मृदंग लीए मेरा चलत है और

करो यह काम। अबीर गुलाल अरगजा॥

रंगालेके डोरो नंदको धाम। रागिनी ककुभ
ताल धमार। स्याम बलिहारी मुरलीबजा
वत हों वारी। गोपी ग्वार मिल होरी है गा
वत फूल देत है तारी। एक गुलाललै।
न्हाव करत हों छोर लीए पिचकारी। मग
री मचिनका बोरहा रंगम गोकुलके गी

गा॰
ऊ॰ भ॰

बिचारी। रागिनी ऊऊभ ताल धमार। मोहन
गोपीयन संग मिल कर खेलत होरी डार।
अधर धरे मुरली पीतांबर कटपट सोहै है
खत छब नार सुरनर मुनि मोहे बार॥ रा
गिनी ऊऊभ ताल धमार। अब नहीं जैहों
फागुन में उत स्याम लियो मोहि अंक भरी।

46

मैन कही काहूसे जीयकी बालापनकी
बात यह री । जब सुध आवत बासुरी
की जुग सम जात मोहे एक घरी जो यह
दरस श्री न है सोची तो घर बैठे मिलि है
हरी । रागिनी ककुभ ताल धमार । श्याम
मधाई हो मोहन कैसे के मान रहेगी ॥

रा॰
कु॰भ॰

अबीर गुलाल केसर पिचकारी डारत अ
नेक रंग छरेकों। कुमकुमकी चोटीज
व परी है गारी गाय उफस्व चर धुरेगो।
दुर लगात फागुनमें रसिक बरसानमु
छि आय कपट धरेगो। रागिनी कुकुभ॰
ताल धमार। अलीया कि चर ॥४॥

47

रंगमैं रंगोहौं भोरही आप मेरे। सांचीकौं रंग
रसी कबिहारी कहो मिलि ढंग घनेरे। व
नवात बतियां मावे उचरत नैन बैन मव
कहत है टेरे। रसिक भंवर घर घरसौं डो-
लत कहो रंग रंगे रंगेरे। रागिनी ककुभ-
ताल धमार। बेला बर बीतगई भोर भई श्र

रा॰
ऊ॰भ॰

जहेन स्रय लई । सगरी निशामत जो वनम
ई फाग खिलनकी बरषा गाई । किव उतो॰
गन बिर माथ प्यारे होरी रंग दई । कूल र
सिक ग्रलबेलो संवरो कबन सीया मन
लई । रागिनी ऊऊभ ताल जत । रंगमेंभी
जोई सुनसीया हमारी रसीया कंज विहा

48

रीनै। विहै फागुन रितु उमग उमग चितए

रन बल मरारीनैं। कीजे कहा छोटमन।

मोहन त्रिभुवन नाथ उदासीनैं। करत ख्या

ल खिमीयाल कै जन मै बरजोरी बिलवि

लासीनैं। रागिनी ऊकुम लाल जतन। केस

केसर मोथे डार दीयो है रसिया कैम विसा

रा॰
ककु॰भ॰

रीनें। कहे रही बहुत नेकन ही मानी मनमोह
न शिर धारीनें। छल बल करे रसलाल सब
मसलत ग्रबीर लगावत वारीनें। ख्याल ख्
याल करत नेद नेदन ब्रजमध खेल खेला
रीनें। रागिनी ककुभ लाल जन। है रंग मैं रं
गुगी श्रीकुंज विहारी फागुन की दिन आई।

उमग तो उमग भरे जोबन की बारी बैस मन
भाई है । कुंज कुंज में होरी बिलोगी याही ।
उमग उनगाई है । ख्याल खुशाल करी जोई
कवि बन हेरा बन छब छाई है । रागिनी
ऊँऊम ताल जत । रंग में रंगी रंग स्याम ।
के । आई बाहार फागुन की मावीरी उमग ।

गा॰
कु॰भ॰

भरी चित हकतनरीके बसीया गोकुल गाम
के। अबीर गुलाल मलोंगी कपोलन मेद।
मेदन स्याव धामके। ख्याल खुशाल करोंगी
कुंजन में उर लिपटा अभि रामके॥ रात्रि
नी जकुभ लाल जन। तिन लोक ओर वौ
हाभवन में पूरन ब्रह्म करहनाई है॥

50

भ्रह्म चैतन्य चरा चर मांही एक रूप दर्शाई है
सो गोपीन बस एडके होरी की धूम मचाई
है। रतन स्याम मल वेली खिलारी प्रेम के रे
ग रेगाई है। रागिनी ककुभ ताल जत। बैठ
रहे तो रहे ढिग बैठी जो कहूं थाउ तो प्याके
ही धावै। सोय रहे सपने में सतावै चौकाउ

रा॰
क॰ भ॰

तो हेम केउ लगावै । मनरहे तो रहे घट भी॰
तर बोल उठै तो उर मोह समावै । सेग सुरा
र रहे निसवासर हाथ धमाके तो हातन आ
वै ॥ रागिनी ककुभ ताल जत ॥ अरे हारे
केसर रंग डारी रंग डारी है सारी हमारी । स
न सावी नेद महर जी के छोटा भत पिच॰

कारी मारी। ठाढे ग्वाल बाल संग लीनें उध
र मोकु गिर धारी। ख्याल खुशाल करत अ
लबेलो मोहन लाल खिलारी। रागिनी कु
कुभ ताल जत। अरे होरे वैस मोरी बारी।
जिन मारो लाल पिचकारी। चंचल चपल
नंदजी के ढोटा अपनी खुशी के खिलारी॥

रा॰
ऊ॰ भ॰

भसिक खुशाल करत नेद नेदन रसीयो कुंज
बिहारी। रागिनी ऊकुभ ताल जत। हमरी
हूनरि कन बोरीरे लोगो। पीयकी पगरी
या हमरी हूनरीया एकही रंग कौन बो
रीरे लोगो। औरन सौ पीया हसत बोलत॰
है हम सौ करत बर जोरीरे लोगो। कृस्न

52

सिक मनवाये खेला आइ घनोखी होवीवे लो·
नागिनी ऊऊभ नाल जत। गौने के दिनन।
गी चोने गुण औगुण कछु नही माना। पे
री मोये जो पीया मोभे पूछेगे मजनी अबहे
काहो करीडे बहाना। बारा बरस मइके मे
रहूत आवर मूल कवि गाना। यहो नो खे·

रा॰ ऊ॰ भ॰

ल बहोते गाबिला माचा बोका बिलोना। ब
हीयो पकर पीया पूछन लगीहै तब का
करीहै बहाना॥ रागिनी ऊऊभ ताल जत
पगी मैंतो आईहो नंदन बनके पीया बनब
न के सइयो मिलेगे नंदा नंदके। आपनेरी
आपनें नंद सों निकसी फगवा लेगी फगाके।

मोहे श्याम सनेह सईया को उर है मै तो नई नार नव
नेह रंगीली। तेजो कहत मोहे संग चलवे
को बाली नगर में डर है। यामिनी कुञ्ज मा
ल जात। सैहे उपजे नैन कैसे सुरजे याबेसी
सोवे मे नैंह लगा। सोवत जागत विरहत
निसदिन मनमोहन सों ध्यान लगो है। हि

रा॰
ऊ॰भ॰

त चितमें नित आन पगोहे लाव तरे कोउ
बरजे। रागिनी ऊऊभ ताल जत। लालन
ग्रवन कछु बन आई होरी खेलत मेरा मो
ई बिछुर गयो। जो पीया हमसे रार करत॰
हो सो तिनकी बन आई। कुमररसिक मोहि
कछु बन भावे आन मिलो जड राई। पवंग

भीनी राधा प्यारी पीय सेरा खेले फाग निज

मंदिर एकांत परस्पर ग्रत उत्तम ग्रनुराग

ङर देखत साव सहचर सहचरी तिनहुंकेब

ड भाग। श्री हरिदासके स्वामि स्यामा सों

मित सरस सुहाग॥ रागिनी झझम ताल

जत॥ दशरथ राज डलारे खेलन केसप

रा॰
कृ॰ भं॰

वेगी देया होरी वे। अपनेरी अपने मंदिरसे॰
निकसी कोई सांवली कोई गोरी वे। कोई
वेदन वेदन जस ल्याई कोई मलत मा वे॰
रोरी वे। सीता सेन दई सबीयन कौं फेंड
फेंड उठ दौरी एक रोरी कौंआल्या स्रतकैं ले
ड्ढ पीतांबर छोरी। फगुवा ल्यौ गोपीसजबजान

59

येंगी अपने बीरनकी मोरी । फेंट पकर ल

छमन ओल लेगी तो मै जनक किशोरी ।

हंस हंस के प्रभु फगुवा दीनों लीयो भरभर

झोरी ॥ रागिनी ऊऊभ ताल जत ॥ एरी

माई कैसे भरन जाउं पनीयां खिले सोबरी ।

होरी । मेरे मेराकी हूर निकसी गई मोहे ।

रा॰ अकेली बोरी। दधि खाय मेरी मटकी फोरी
ऊ॰भै॰ कैसे जाऊं गोकुल ओरी। जोइत आवै मोड
रेगावै ब्रजमें धूम मचोरी।। रागिनी ऊकम
ताल जत।। अब कित जैहो भज नंदलाल
काजर देहो नैनन कोर। होनर मोरी अत च
टकी लीकीनी है मरा चोर। जवाने रंगनोपे

56

ओरही छिरको गोरीआज हालतेरो कछुओ
रही ओर। ले जो गई कुंजन में छिनरीया।
आवतही देषन फिर फिर कोर ॥ रागिनी
ककुभ ताल जत ॥ तामें कैसे होरी षिले
में कन्हैया लतो षिल में षिलनिकाले। अबी
र गुलाल लो तेरो बहोनो लेदारी कुंजन में

रा॰
ऊ॰ भे॰

आले। बेग भर डारी और चीर फारे और काजरको
देखन भाले। अपने दावके अचपल हो तुम
निज परे कान्हा तेरे पाले॥ रागिनी ऊऊ॰
भ ताल जत॥ रैन मैं तो जागी पीयाके॰
उमाहे सगरी रैन मैं तोजा॥ वे तो बसे॰
मो तन छिगना भर मेरी जोबन लागीरे॥

५८
५७

रागिनी ककुभ ताल जत । बहोर डफ बाजत
लागेरी ब्रजमें कीजे कौन उपाय । फरकत
भुजा देख डरतें चढी अटा पर धाय । बेदेखे
आए नाए मन मोहन खिलैंगी फाग बना
य । सखा बुलाय पठए ब्रजनारी सब बिन
ती एक आय । श्रवण सुनत जोगाकी बात

गा॰
कृ॰ भ॰

यों सब थकित रहे समझाय। सूरदास वे तो॰
सबलायक बहुनायक सरसाय॥ तुम हौ उ
धो सखा हमारे कहो बात समझाय। विध
ना लिखी है भाग हमारे हमरा दोष कहाय
बहु पानी पहुँची स्याम सुंदर पै पढत पढ
त समझाय। तुम जोगीयन कों जोग सिखा

वो अंग भभूत रमाय। आनाले उठ धायो है

उधो अलख अगध बनाय। हेजककी फन-

कार जो रह रही है चहुं दिश छाय। स्यास्या

म बेग ब्रज आवो गोपी प्राण जीवाय॥ राग

नी ऊजभ ताल जत॥ मधबन जा मेरी अर

ज करोगे। अपनें अपनें पीसे सब कोई रा

रा॰
कृ॰ भ॰

जी तुमसे कहो तुमसे रहोगे। यह चरचा हो र
ही है ब्रजमें होरीकी धूम मचनी है मचेगी। उ
थो तुम हो माखा स्याम के इतनी बिनती स
ब हरिसों कहोगे। मदन पावक मो जरत
हों निसदिन होरी सीतल हूंहू जब प्रानब
चोगे। सूरस्यामको बेगलेआवो प्रानदान

59

मोहि ओन देहोरी ।। रागिनी ककुभ ताल ज
त ।। सकल साज रंग न लगोरी ब्रजमे आई
फागुन की बहार । कुंजे कुंज छब छाय रही
है बिरहत नंद कुमार । अबीर गुलाल उडा
वत गावत जहां तहां नरनार । ख्याल खुशा
ल करत निसदिन बासर प्रेम विपिन बिहा

रा॰ र ॥ रागिनी अड्डभ ताल जत ॥ रंगे रंग कुंवर
कं॰ भ॰ कन्हाई री वृंदावन खवरही ख्याय अपार ।
विरहत संग लिए ब्रजबाल बन बन करत
बिहार । रित फागुन की सब सखि दाई ब्रज
मय अधक निहाल । ख्याल विशाल करत
त्रिभुवन पत सकल धारना धार ॥ रागिनी

60

६०

उकुम नाल जत । एतो काहेपै मान करते है
बैरी सोच मनमैंही अपनैं तनक । जो हम
मायापै भूली सो तेरी नहीं रहीं जोबना सो
है चार दिन की चमक । सब अब गुन जान
रेत रूपैपै है गोकरनी अब सब लरावनी ठ
सक । एभी एक दिन अकेली छोडके हजे

गा॰
कृ॰ भ॰

आप आप जावैगो अंतको खिसक। जिनो अ
पनो तू जानो है सो तेरे संग है है गो जब लेत ब
लो खुली है पलक। जब सोवैगी ख्वाबनीं॰
द नैना मूंद तबवै तो रजाणेगो हर मरक ॥
झूठे धंधे है सिगरे यह तज देईनें सांचे सांई
मे ध्यान लगाना भटक। केजानें पतो है सो

61

न भई दई मनमें ताबिया वाके बिरहके दर-
दकी कसक ॥ रागिनी झंझम ताल जत ॥
मोरे नैननमा में आज एमो बेर कियो सबी
मत चित सब बोराय लियो । जायलगेवा
स्याम सुंदरसों दरसनको यारस जो पियो ।
मोजसे आप भए उनहीके श्रौर मनको उर

रा॰
कु॰कु॰

काय दियो ॥ रागिनी ककुभ ताल जत ॥ ब्र
ब यह ब्रज कोउ कैसे बसोत जहां तहां मार
ग मोंक घेरत । रानी जसोमति तेरो नंद॰
नंद फिर फिर नाहिन हेरत । देखत को बा
लक यह कान्ह बनमें तरुन कै दान निबेर
न । कृष्णानंद कला की खान सारी बेसी में
नाम ले

62

टेरत ॥ रागिनी ककुभ लाल जत । नम वेरा

कोन्ह बना आएहो होरी खिले सुरंग भरी ।

उडत गुलाल लाल भए बादर पिचकारी न

लागी झरी । चोवा चंदन ग्रौर अगर जाके ।

भर गागर रंग भरी । कमलजीवन लछीराम

के प्रभु प्यारे दासी होयन पायन परी ॥ रा

रा॰
ककु॰ भै॰

गिनी ककुभ ताल जत ।। अब कोउ कैसे होरी
खेलत बार बार रंग छिरकत । यह अचरज
दिन चार साबीरी गिन गिन पाप खेलत ।
नीको धरम करम दया निय आपही आपमें
केलत । सदा रंग बिन दरसन पर मन धन
पायन सों ठेलत ।। रागिनी ककुभ तालजत

लाल तुम नीं खिबने हीं खिलारी कोउ गैल च
लन नहीं पावै। जित देखें उत सैग सखा।
ली गारी गाय सुनावै। ब्रज बीथन मैं रोक
न टोकत पिचकारी नरंग लावै। कृष्णानंद
मैं डोले मन भावै सोई गावै॥ रागिनी ककुभ
ताल जत। अब यह ब्रज मैं कोउ कैसे कवि॰

२.५.
१.

रा॰
कृ॰ भे॰

हरत। रानी जसुमति तेरो नेद नेदन फिरफि

रनारन हेरत। देखिन कौं बालक सुत तेरो फि

रफिर नैनन फेरत। कृस कल हकी खोनस

खीरी बार बार बारत टेरत॥ रागिनी ऊक्रम

तालजत। सौंधे यरे बदन विहलो कीजे॥

डारो गुलाल डगन डारिन होत प्रेम सुधार

64

स कैसे पीजै। सीप जीत सखि चेद्दव कोरे अंतर
कहो कीजे॥ रागिनी कुकुभ ताल धमार॥
एरी नारले भरझोरी गुलाल लै खिल पीसोंहो
री। कहो बैठरही करमीं हमरोरी अते नोरी
मान सिख मोरी। ए फागुनमें मत करगारि।
२.५५
१.
छि छोरी एकिन सिख दीनी हो तोरी। एवा

रा·
ऊ· भ·

तन पवन मावोरी चेतन चतुर सुजान तें आठो
जाम भोरी। औरन हि रित वार दिनन की थोरी
ऐसी बार डारत पलक किशोरी चल उठ साव
मीड वाके रोरी। कृष्णानंद में आनंद करो फग
वामें काम की चोरी॥ रागिनी ऊऊम तालज
न। फागन ही में मान कहा परी हो। ❖।

65

जो मन चित हारी निबावत नार। उनैं कहा क
हे कैसे समझाउ ज्यों मोहे पढावत बारही बार
आपही आप रंग मनायले है यह फागुन कौ।
सरसाति होर।। रागिनी ककुभ ताल जत। प
रीबे दाव गंवार नार होरी खेलत ब्रजठाकुर।
आवत तेरेही ढोर। कैसे भलो नहीं परी रवा

रा॰
कु॰ भ॰

रनारि। उत मन देत लाखन भूमें नाखि मो कहा जी॰
य लानी परी बार। उन पटई लाई हों तो पै उवन
समन कों हार लीए जार। होरी खेलत ब्रज ठा
कुर आवत तेरे ही द्वार। यह देखि परी लगरनारि
होरी में ऐसो मान कहो आली तो है मनावत पी
य आहत परी गवारि॥ रागिनी ककुभ तालजत॰

66

ऐसो मेष पढरंग छिरकौ आलीहोंरी के दिन
नमें इन मन मोहन बनवारी कछु ऐसो। म
कल त्रियनमें कानसौं करी हौं न जानौ ऐसी
कौंन है नारी दारी। हौं म जात ब्रषभान उ
लारी मन हर लीनौं नंदकौ विहारी। जौं ऐ
सो जानती मदारंग वाकौ महम गारी भयो

रा॰
कु॰ भ॰

मनवारी बजाए तारी ।। रागिनी ककुभ ताल
जत। कैसे धूम धामसे खिल रही होरी बृंदा
बनकी कुंजनमें। ठौर ठौर देखत बाहू को
न्हकों खिलरहो वो कुंडनमें। राधा जू छबि
ऐसो सोहत मानों नीलके बीच कुंदनमें।
सोबरी गोरी तरुनी बोरीके संग सामरे साम

6

ली सामलाई मानों नीको लागत फल गुंजन

में ॥ रागिनी ककुभ ताल धमार । पनीयां

भरन कैसे जाउं कोन्ह मोमों करत रार ग्वाली

हों जमुना जल भरन जात थी ठाढो रहत

लीए ग्वार बार ग्वाली । ठिठो रहत विच घा

ट बाटके नैनन चावत दै दै तारी । कब ह्व

रा॰
ऊ॰भ॰

स्याम मोसों हमके बोलनहै कबहुं देतमें है
लाबगारी ॥ रागिनी ऊऊभ ताल धमार ॥

कानर बटपार बसे ब्रजमें खेलत॰गैलनच
लन नही पावत ठेलत॰बाट घाट रंगमें रे
गरेलत। अबीर गुलाल ले घेरत।कुसर
सिकरंगपेलत॥रागिनी ऊऊभ तालजत॰

68

सब बन बन आई हों ब्रजकी बाल मेरा ली
प नैंदलाल होरी लन गोपी ग्वार। बीन र
बाब मृदंग मरलीका बजत डफकी धुंका
र कठताल किन्नरी नाचे देदे तार॥ रागि
नी ककुभ ताल धमार। अब आए हो लाल
कहो सोवतही उठ बैठनीय मेरा मोर।पनी

रा॰
ऊ॰ भ॰

मचलाई भली नाहन कौंडे कौंडे तब श्रीर
गैर ॥ रागिनी ऊऊभ ताल धमार। सब बह
कन लागेरी सगा ले ले पी पी गहक गहक
गावत धमार। यह बातन मैं नेह वे जानी
कह्हे लै कह्है तार ॥ रागिनी ऊऊभ ताल ध
मार ॥ कान्हरी बट पार बसे ब्रजमे ब्रबे लत है

होरी । मृदंग धुन बाजत गावत गोकुल गो

वार सब मिल नाचत मोहना नंद किशोरी

रागिनी कुकुभ ताल धमार ।। अब कित जै-

हो भज नंदलाल काजर दैहों नैन कोर । तु

नर मोरी अत चटकीली कीनी है मोरा बोर-

रागिनी कुकुभ ताल धमार । तुम बेग स्या

रा॰
ऊ॰ भ॰

मकोंन आएहो होरी खिलरंग भरी। मधुकरि
हरिसों इतनी कहीयो वेरीहो पायन परी।
उडत गुलाल लाल भए बादर पिचकारी न
लागी करी। ब्रजबनिता सब बन बन आई
के सब गागर भर धरी॥ रागिनी कुकुभ लाल
धमार। अब कैसे जाउं हों उनहीं ढिगनाहि

७०

न जानत तुम नायिका केवरी कीरी सकौं।
मेक लाल नहे करत कौउ ओको भरलेत प
कर पावत हो तिसकौं। कर कुप कमला
न फुल ज्यौं मीठो मसकौं तुम ऐसो जिसकौं
४.५. चलो मेग मेरे मन हहु सांवरे कहोंगी जाय।
१. पग आरत लाई होइ सकौं।। रागिनी ककुभ

रा॰
ऊ॰ भ॰

ताल धमार।। मेरो छोरो आवत घरकों नाहि
न जानत गैलो। कौन हौ जशोदा रानी त
म मानत हौ न अब जाहीन भयो है छैलो। स
गरी आय तुम कहतहो मोमे नाहीं जानत
यह फागहि फैलो। हाहाकरहौं पायन प
रे अब नाहीं करो मन मैलो। रा॰ क॰ ता॰ ध॰

7

रागिनी ककुभ ताल धमार। आई होरी खेल
नको मिस बन बन सेदर नार। एक नाचत
एक मृदंग बजावत एक गावत सब रिझवा
र। अबीर गुलाल लाल सब लेले चोहल।
सो भीजत सब सेवार। महमदशाह सदारे
गीले खबर कही एसी माची देखो धूम धमा

रा॰
कु॰ भ॰

२॥ रागिनी ककुभ ताल धमार। छरी आज पी
ये अपनें बन बन खेलत हो हो होरी। लेउ ला
ल मटौ घन भर डारे तो को का की चोरी। ह्दे
श्याम तेरी सब ही तियन मैं तु काहे मान ठा
नत होरी मैं। तेरी सुंदरता धन तेरो जोबना।
पीय पै डारे रंग जोरी मैं॥ रागिनी कु॰ ता॰ ध॰

72

माई ममध्यान तै वामन आयो भर होरी कै वी

व भरुवा। येरलीयो बरमोह गुवारन मेंड

लगावै कीच। काहू दई लमकाय परदनी

काहू कीयो कजरारो। सीठी पीठी गोबन

लपटावत वामन कों कहां वारो। काहू ने

ल हेगा पहरायो काहू गुलरी माला। मारी

रा॰
कृ॰मे॰

दैदै महर्षी न गावै हंसि हंसि ब्रजकी बाला।
जसुमति लीयो बचाय बापरो निर्मल नीर न्ह
वायौं। नय वसन पहिराय दीनें फलगाञ्ञा
य छुडायौ। नव वामन नियकङ्कै वैघो प
हीर उवजे कपरा। एक ख्वारी निश्रारिनी उ
लैडी सीरकीब भरी खपरा॥ रागिनी ककु

77

म ताल धमार। एरी आज पीया अपने सौं

खेलौं बन बन होहो होरी। ले गुलाल भ

र मटीयन डारो नहीं काहू की चोरी ॥ फ

गुवा के मिशचलि बलि लाल कौं रंगन रंग

म गो कीजे। यह औसर होरी कौं गोरी ले

हाव भाव कौन दीजे। करन मैन को सो

रा॰
ऊ॰ भ॰

च सकुच जीय इन सकुचन कहियौ कहा
लीजे। घरक छोडि घरपाय अधरस पुनि
पान कछू कौन पीजे॥ रागिनी ऊक्रम ताल
धमार। राउकी सौं मोहि हरि तुम कौन॰
छाडोंगी। अब कैसे छूटौ हौं मोपै विहसि
नारीन भाडोंगी। कुलजीवन लछीराम के प्रभुकौं

7४

रंग ले लाडीं गी ॥ रागिनी कुंकुम नाल य

मार । होरी विलन नेद डलारे मोहन पिव

कारी नरंग बरसत । सरोय अबीर अरग

जा कुंम कुमा छिरकत तन पीय सर स

त । मृगमद अगर रहेरी ग्वालिन लालि॰

न कपोलन परसत । सत सोभा मवविरहो

रा॰
कु॰ भ॰

लालनकौं प्रुनिब्रज साव हरमत ॥ रागिनी
कुकुभ ताल धमार । अब मेरा खिलौं केसेजा

य होरी कितबतीयो करतहो अट पटी । म
दमातेहै बिलन आपसों हे सीस पागहै ल

ट पटी । मोहेन भावैरीति अय कीयो तोरत
मालकरत फट पटी । महमदशाह सजान

७५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

न मैं की सट पटी ॥ रागनी ककुभ तालत्र

मार। आज नागरी नवल स्यामसौं मचव

ही निकट वृंदा बिपिन मांझ होरी। कुंज

बन सघन ड्रुम नव प्रफुलित सदा भ्रमर

गुंजत मधुर घोरे घोरी। बाजत म्रदंग बी

न रबाब मुरली डफ गावत सबहि मिल

५८

रा॰
ऊं॰ भं॰

रागगोरी। पपप धध नीनीनी सासासा नी
नी धधध पप ममरे म गगग मगरे सारी॰
निरतत गत भेद सों बजत विविध साज।
धिधिधि किट धुम किट तक धोरी। उड
त प्रबीर गुलाल कें म कुमा प्रतर प्ररगजा
रेगधोरी। पीत पट कटीक से केसर पिच॰

76

कार लीए मारे नक नक मत्रव मलेहै गोरी

हरस्याम बज वाम पैरंग छिरक पकरष्ये

गन बसन रंग बोरी ॥ रागिनी ऊजभताल

धमार । मोरी कौंन बिथा पहचानें जीय

रावर जौनमाने । कामकामन बिरहा के

बांन गह गह हत मदताने मेवगकी है ।

रा॰
ऊ॰ भ॰

अरस्याम मोहे जाय बाबोने ॥ रागिनी ऊऊ॰
भ ताल रूप । सुनरी बाल वेहाल लालके
अबीर अंगन में भरदई । अांच कहाए पाके
अल बेली नियरक अंकों भर लई । अंगीया
रंगीया ले केसर में फिकफकत बहीयो सिरि
गई । कैहनम की बलिहार छैल सो आज

77

अकेली हों भई ॥ रागिनी कुंकुम लाल रूप

आज नव नागरी लाल सों मच रही ललि

त संकेत बट निकट होरी। सघन द्रुम कुं

जन बिपिन कुसुमित सदा करत धुनकी

री कोकिल चकोरी। बाजत बर बीन डफ

नार मुरली मधुर सप्त स्वर भेद सों तान तो

रा॰
ऊ॰ भ॰

री। पधधनीनीसानीसानीनीनीसासारेसा
नीधपपगगमपपधधनीधपप्हरनसोंरी। प
रन गन भेदसों बजत मेदिल मधुर धिधित
धिधिकिट धिकिट तक धोरी। लेनगतल
टक पग पटक मोहन कटक चलत म्हृर
मेद हसि चित चोरी ॥ अरगजा ।९।

78

अबीर और कुंम कुमा को रंग घोर रंग परस्प
र बसन बोरी। निरख छब मन मो भावया
नितब मो कुल रंग दास हीय जुगल जोरी॰
रागिनी ककुभ ताल रूप। मानन करत॰
ब्रष भान किशोरी कुल कुंवर जी सों खेल
ले होरी। नेद नेदन नेरे द्वारे ही आप अब॰

गा॰
कृ॰ भ॰

काहे अबीर गुलाल लीए भर फोरी। ब्रह्मा
दिक जाको पावन पावै सनकादिक नहीमे
बलयोरी। शेष सहस्र मुख जीह्वा जपथ
करहे सो हरि पकर रहे कर तोरी॥ धनब्र
ज भूम गोम गोकुल धन धन बृंदावन या
महै खोरी॥ टोडी गाम सुख चैनमेखिलेधन

ठाट कौ होईरी । पहरे बसन बसंती राधे ।
सेग नेह नेदन सहाईरी । गावत पंचम-
राग सखी मिल ख्याल खुशाल लुभाई
री ।। रागिनी ककुभ ताल रूप । होरी खे
लाई मन मोहन प्यारे मुरली की टेर सु
नाय बुलाई । घर बहीयो रुक फोरी मो

री॰
ऊ॰भ॰

री अबीर गुलाल ले गाल लगाई। कुलरमि
क मनमान्यो सो कीन्हो देह गेह की सुधवि
सराई॥ रागिनी ककुभ ताल रूप। फाग
न चलो अब जात पीया को लेआ बोरे।
बिन पीय घरी पल छिन न रहा बोरे। वि
रह की मारी मरु मोहे जीवा बोरे। सेद र

स्याम स्वरूप मोह दरसा वोरे। होरी होय

रही जग मा रिझा वोरे। बिन हरनेकन।

महावे और नाही चावोरे॥ रागिनी ऊऊ

म ताल रूप। सलोनैं नैना तेरे ग्ररबसी

मोहे ऐसे पीकेला गत होरी। छुटे बार

मानों लूटे हार और अंगीया ग्रतर बसी

रा॰
ऊ॰ भ॰

कजरा छरक जायो कपोरन ऐसे मो मन
मैं ते बसी ॥ हेम सो छिपावन पीया ना
मर छिग मगरी रैन तैं बसी। रागिनी क
कुभ ताल रूप। कान्हर छोड देहो घ्रट
घटी वा तैं घ्रट घटी वा तैं। निसदिन होरी
के मिसमोसों करत रहत होया तैं। कुलरामि

क मतो॰

८

भावन प्यारे काहे फिरनरम माते॥ रागि
नी ककुभ ताल रूप। मोहन होरी खेल
नडोरे ब्रजमें पिचकारी करलीए। बगर
बगर बोऽहू फत तोकों उठ चलरी हवली
ए। कृल रसिक सो मिलकर प्यारी खेव
मर साची हीए॥ रागिनी ककुभ तालरू

गा॰
कृ॰भ॰

प। कर पकर कर लैंच लैंच लैलै जात कुंज
नकी ग्रोर सबमें मोहे देख्योरी मोहन मद
माता। ऐसो निलज बजेौ नही मानत सब
साखीयनमें यह हट ठोनें काम करे ग्रप
नौ मन भातो। कृष्ण रसिक मेरे मनमानें॰
या सबकों कहूं को पहिचानें फाग ख्याल को

नित चित राते ।। रागिनी ककुभ ताल रू
प । रंग मथ प्रेम पगी गगरी सिर धरे सो
नार । सुरंग सारी सौंधौं सों रंगे सगरे गो म
मथ गगरी सिर धरे सो धार ।। रागिनी क
कुभ ताल रूप । केसर रंग पिचकार मोह
न लाल सबन पै छोरी । और गुलाल अबी

रा·
कु·भ·

र लीपकावमीडत है बहीयो ककंकोरी।क्र
लरसिकबरज्यो नहिमानत लोकलाज।
तिनका ज्यों तोरी।। रागिनी ककुभ तालफ
प।कैसे होरी खिलो कान्ह सो माई वेतो हि
र फिर करत मोसों हांता पाई।ग्रतनिडर
वेढीटभए है नाजानौं कौंन उनेयह रीतसि [खाई]

84

घरतें बाहर नहीं जात डेरी नगरमें उनकी

डहाई। ऐसे रंगकों दरस कहाकीजे नाजा

नें पीर पराई॥ रागिनी ककुभ ताल रूपक।

बार बार काहे आवत होरी एकहू हौंमैं तो

सों। इत उत फोक बर आवत गरे लगाई

लेत हाहा खात है मोसों। एकोड समूह

रा॰
कृ॰ भं॰

सोवरो इनहीं बातन सो भाजत सहमको॰
सों॥ रागिनी ककुभ ताल रूपा। होरी विल
न आई है बनबन चकर मकर हिलमिल
के नार। हमतो चाहत रससों विलीए तो
सबनको रिझावत है बारबार। बाजत बी
न रबाब मृदंग डफ और बाजत कटतार।

85

अबीर गुलाल सों भाव मीड़त है बरजोरी दे
तहै गार ॥ रागिनी ककुभ ताल झप। लि
पटे है उरोज मोसों अगारजा मकत माल तू
प छीनानी जात है बिन मागे। महमद।
शाह पती अधिकाई कौंन बदिम्हदी मेरी
जानत हो भोरही आप भरा बन लागे ॥

रा॰
कु॰ भ॰

रागिनी ककुभ ताल रूप। बिनबोले ही बो॰
लि सुनावै यह छोटा जोबन मद जोर। च
टकमटक चोंपन चटकी लो मटक मटक
मेरी ओर। गारी गावै लाजन आवै सोवत॰
जगावै भोर। देखो मैं बलिहार होरी मैंर
सिक श्रीनंद किशोर॥ रागनी ककुभ ताफ॰

96

मो मेरा हीरी खिलन आईहों जु लाल मेरा
भीनें बने वागे । अरुन नैन रूपकोहीभें
हैं पलकन में खाव लागे । पीकलीकअध
रन खंजन अतही मनरंजन बहु भांतनर
स पागे ॥ रागिनी ककुभ ताल रूप । आज
कछु और मेरा भीनी दीठ परी तु गोरी । आ

रा॰
ऊ॰ भ॰

रस रंग रहत करही छेगीया किन दई रंगन बो
री ॥ रागनी ऊऊभ नार रूप। रंग लाल ब
जमैं बिले फाग मे रंगली रानी के गोपी ग्वार
एक कर डफ एक कर मुरली गावन मच
क मचक सब के द्वार। रागिनी ऊऊभ नार
रूप। होजो बिलोवनत दयनी के कोन्हर।

८४

हह परेरी। मोर मकुट पीतांबर सोहै बंसी

ग्रधर रेरी। छीट भए आगे आए ठाढे मोर

भए द्वारे ही खेरेरी। रंग पिचकारी ले डारी

मो पर कौं हे नाहि डरेरी॥ रागिनी ककुभ

ताल रूप। गुजरीया होरी खेलन कौं चली

है मोहन पै फेंटन अबीर गुलाल। फगुवा

गा॰
ऊ॰ भ॰

लीन पीत पट हिचे पकर लीए नेद लाल।
बेदन बेदन घ्रतर घ्रगरजा रोरी मल दई
गाल। मन इंछा सब पूरन कीनी तब छो
डी है गोपाल॥ रागिनी ककुभ ताल कप।
गुजरीया जोबन माती होहो कर कर बोले
नैनन सैनन बैनन गारी बनीयो यढ यढ

झोले। खेलगाबार लाल गिरिधर की गोह
न लागी डोले। प्रेम प्रीत गांठ धीरज प्र
भु भकवा हो मो खोले॥ रागिनी ककुभ ता
ल रूप। छोट देशानकौं खेलत जैसे ब्रम
खेलत हो होरी। श्रंगकौं भरत मेरी केश्र।
की मेलीटर करत मृदु गुलाल मीडत बर

रा॰
कृ॰ भ॰

जोरी। घरके लोग लरेंगे मोसो जब आउंगी। सब देग मैं बोरी। जाको उगार इच्छा बरस पी याको उ देखे तब उ घर जायगी बोरी। रागि नी ककुभ माल रूप। आईहै खेलनके फा गललाल मोहहूं मेसो छिपावत हो कहा जीय मैं ठानी॥ हो तो तिहारी प्यारी। ❖।

४१

सखी हित जानब है तेरी ननद जेठानी।
दोस छिपाय छिपे नहीं कैसे हो मन प्रीत
उफानकी इकसी री त बखानी। भोडर
के कनका चमके सखि उपर फलके सा
नौं चंपकली पर ओस को पानी॥ रागीनी
ककुभ ताल रूप। हौं किह मिश देखन

रा॰
ककु॰ भ॰

जाउ सांवरो होरी खेले ब्रजकी खोर। उफनृ
हेम मडूबर युन सनी यतन अबीर उडावत॰
दौर दौर। अबी आय अचानक घेरी छिपेजा
त है मनके चोर। आनंद बढो अपार ब्रज
मथ होरी खेलत निन भोर भोर।। रागीनी
ककुभ ताल रूप। होरे डफ बाजन लागे।

१०

खेलन चले मिल सब आए हैं ग्वार बाल। ति
नकाई युन सन मोह लई व्रजकी नारी ति
कआई सब घरके द्वार। अबीर गुलाल के
बादर छाए केसर कीच मची पिचकार।
आनंद धुम मची होरीकी काहूं काहूं कीन
सैन प्रकार॥ रागिनी ककुभ ताल कप॥

रा॰
कु॰भं॰

कोन्ह संग कानन मनी अ्रो बन दोली होरी में घली बर जोरी। मेरे ही कुम कुम मोहे पे मार न अबीर लीए भर फोरी। मोही ते छीनी पि चकारी केसर की औ र उलाल की फोरी। हे मन पीया ने मो पे मारी मेरे ही रंग में मो हे बोरी॥ रागनी ककुभ ताल फ॰ लटपटी रही

ग्रीष गोरी काहू रमीया परउरवायो नैअ
बीर। पैले तो वाहे भी जोइ लेत है लेगा रव
बरउन ढोट लेगा उनमोरा रन कीजे ओरी
ओर। हौं तो गई कपट हरि कारन तोरी।
भी जोई है बीर।। रागनी ककुभ ताल कप
काहा कारी कामर पे रंगा उग्रो चढेन हूजो

रा॰
कु॰ भ॰

रेग। ख्याल हो नम फाग खेलन कों ब्रजजीवन
नप् छेरा॥ रागिनी ककुभ ताल झप। बाव
री हम रही कों फागुन में करमान। न्नजानै
मेरे बस मोहन यातें करत गुमान। वे बहुना
यक है सब सुखदायक बातैं बाही की का
न। कुमरंग उन के सब वेस बके यनजीव

न ध्यान ।। रागिनी ककुभ ताल रूप । देखो

री धूम मची है या गोकुल की गैल । उडत

गुलाल लाल बह्रे दिशि बन लगत सुहा

बन या गोबर्द्धन शैल । कान्ह की बहीयां

पकर फक फोबन कान्ह को रंग भिजावन

बैल । कूल रंग डफ बीन बजावन ग्वाल

रा॰
ऊ॰ भ॰

न संग गावत आवत मोहन छैल ॥ रागनी
ऊकभ ताल रूप । लाल अलसानैं हों रैन ।
के जागे उनीदे नैन कजरारे लगत भले हैं
कौंन नारी के धाम होरी मची चहल पहल
तें हम तुम देख चले । वेदन बेयन केस
रंगिचकारी अबीर गुलाल सों माखीमले

९३

आनंद रंग ब्रज धूम मची है एकरन दलब
धरन पलो॥ रागनी ककुभ ताल रूप।
नाच नाच लपटत है दोउ रीझ रीझ गाव
त सब तानन ले संग समाज। मोहलीए
नर नारी मुरली की धुन सुन इन बनवारी
बोरी सकल समाज। रागनी ककुभ ता० रू०

रा॰
रु॰ भ॰

कान्ह ब्रजमें खेले होरी सेंग लीए ब्रजबाल
ना दिननकी थोरी। काहूके गुलाल अबी
र ले खरवरे डारत काहूकों रंग में बोरत बर॰
जोरी॥ रागिनी ककुभ ताल धीमा। अब
के होरीमें प्यारी लरवेको यह समोनतें।
कीनो। डफ ढोल न बजाग्यो खरगाहे सौन
नके

५५

यह गुमान हमट मारदीनौ। मृदंगानी प
गैंदा गुलाल नाकी अवाजतें गह रगाढ
कीनो। महमदशाह के सहाग भल अन
हि तबन की फ़ेड मवव फेर दीनो॥ रागि
नीककुभ ताल धीमा। होरी के दिनन मेरे
मनतें अबही टेव मनावै। पिचकारी भर

रा॰
कृ॰ भ॰

ली पठोरे ब्रजमें धूम मचावै। रागनी कुकुभ
ताल धीमा। माधो राधिका को मन योंही
पई यत जोही जोही वाको मान मानो त्योंही
त्योंही मान मनाइय। नीके नीके बीन बजा
इये औरनी को नीकी तानन नीके गाइये
मोहि विधके रिझाइये। रागनी कु॰ ता॰ धी॰

१५

मोहन बनवारी बारडारी नारी मोसो जिन

करो कपट की बात। रहत ज्ञान ध्यानति

हारो नामको सुमरन है दिन रात। तू तो

पीतकी रीत न जानें नणदी नार म्वार।जा

तो मन लागो तासों ओर निभाइये नार।

फागुन हीमें चो पडावत मन न काजानें

रा॰
ऊ॰ भ॰

पियाकी मार। कमलकेबरको माने तोसि ल
गाई लगवार। रागनी ऊकम ताल थीमा॰
आज राधा माधो प्रेम मय कुके बन बन बि
लतहै होरी। बेग चलो सब मिल के बन कों
देखि कौं तक करत है नेद किशोर किशो॰
री। नाच नाच लपटत है दोउ रीक रीऊग।

९८

परी है प्रेम की गोंठा मारग मैं ठडे है मोहन

दृष्ट प्रवीन ज्ञरगई। रागनी ककुभ ताल।

धीमा। अबरंग छिरकत केसर लालपै न

र नारी सब ब्रजकी। पकर पाय पीयो अ

धिक सीयाने नम लेगर हस हस खावत न

निरखत। रागनी ककुभ ताल धीमा। लप

रा॰
ऊ॰ भ॰

ट लपट रही ग्रीष मोरी कोऊ रसीयो सोउर
वायो ते ग्रबीर। पहले तो वाहे भीजोय लेत
है लेगर चतर छीट उनसौर। रनकीजे हो
री मै हो जो गई कपट पट उनकारन ते री॰
भीजोई है चीर। रागनी ककुभ ताल धीमा
ऐसी कौन बदी ग्रथि काई तम। ⁘ ।

१८

द्वारे आवत काहे मेरे धाम। रंगभरी चीरलेआ

य दे जोबन ना पर फेट खेचत है औरके लाज

नाहिन फिरत तेरे सियांम॰ मजुच नबैठ रहे

काहे जु तमकों फागुन बिच घने रे काम।

गोकुलकी डाडीवे मत जोबन गारी देत॰

मेरो नाम॥ रागिनी ककुभ ताल धीमा॥

रा॰
कृ॰ भ॰

अधिक खिलार भई हो जो तुम होरी खेलन॰
मेरि सान अपनी बार। औरन पै रंग डारत न
डरत पकर कर अंचर देत उघार। ऐसी कों
निलज नारी जो तो सौं सनमुख बिहँकै लरे तुम
ने दीनी है लाज उघार। चेतन सिंह बोहो गु॰
नन भरे है सब बिधके निक बार। रागनी॰

झझम ताल धीमा। मो मन यह आईजो प
कर मोहन पै बेर लेहों। गाय बजाय अबी
र ख ख मोडो पाछे ते दोर जाय अंजन नैन
देहों। रागिनी झझम ताल धीमा। कैसे क
र डारत हो प्यारे गुलाल भर मुठी पवन मे
री आंखन मे खटकत। नेरी सो खिजाय र

रा॰
कु॰ भं॰

ही हो अपनी बेर काहे मटकत। अनही खे
लार उरते लिखके ठाडो होत है बोथकों प
टकत। उची नीचे हार घामके पहरावत।
होरीमें हरत। रागनी ककुभ नाल धीमार
कर सिंगार खिलत है होरी राधा श्री ब्रजनाथ॰
रंगरंगके वस्त्र पहरके उल हत श्रीप ।*

100

श्रगार। फगुवा लीन चली मोहनपै तन मन

आनंद भयो भार कुंचन बीच घेर मोहनकों

गारी देत देतार। गामिनी कउभ नाल पीमा-

हो होरी मैं बैठ कर बनाव दोउ रीझे कौत

क देख हिय अत आवन पैठ। एहो राग वे

ग भोरी बती यन कर सबके जीयउ मैंठ। म

रा· लै सार सभार सदा रंग जे ब्रे हेमके ब्रेठ। रागनी
ऊ· भ· ककुभ ताल धीमा। होरी बिलन कैसे जाउरी
कुबजाने रावे घेर। साव नैननकी कहाक
ह बेकीना मैं मकर भरे हेठेर।। गारब सहा
गते फूल फाल भई मानो नौकोटी के फे
र प्रभु समझ सह जिन लगी वो। ❖ ।

समकत नाहक टोर। रागनी ककुभ ताल धीमा। कैसे बन जाउ खेलत कन्हैयो ब हटोर। डफ मृदंग बीन किन्नर लीए सेगा- म बिन की सोर। रागनी ककुभ ताल धीमा सब मिल खेले फाग लाग सो मो मन श्रावे लाज। जाको पी परदेस बसे तिही फीके

रा॰
कु॰ भ॰

सकल समाज। रंगगुलाल अबीर उडावत ब्र
य प्रकाश केहु काज। आन मिलो मोहे प्रीत
म प्यारो परजा हरखी मन राजा राज। रागनी
ककुभ लाल धीमा। बैरा कर अजहु नहीं आ
ए हटन लागी श्वास। एकलो बैरन मोरी न
नदीया दूजे बैरन सास। लाज सकुच सब

10२

होतन दोनो ब्रजराज मिलन चाहैं पास ॥
रागनी ककुभ ताल धीमा। चलोरी चलोरी
ब्रज मैं निकसै कान्ह खिले होरी। यही कौन
कसे जोय को पत है जिन तकनी वारी नाही
खोरी। एक जौं छीछ दूजे वोकि नार नीजे
लिपट जात बर जोरी। जोबो मो पर रंगडारे

रा॰
ऊ॰ भ॰

बीबाकेतोमें प्रबपलझे गारीयोझेगी लाख
करोरी। गगिनीझुझुम तालधीमा। प्राजम
त्वीयो रेगभीनी काम छेर बसकीनी। भोग
मान पीय सौं निश गुरुजन सकुच विदा।
कर कीनी ॥ यति प्रर मान यरत पग भू
परहें निरखत ही विन्दी। कौनभागदीर्घतेरो

103

मजनी स्याम ग्रेक भरलीनी। रागनी ऊऊम

नाल पीमा। बगार कोउ कैसेक निकसन

पावे लेगार वादेत कजर मख लाय। मन्त्र

खमाडे रहो नेदवारो काहु सेन उराय।

नई लगन लोगनकी मक्रचन खेलन कै

सेहोरी। इत वह चढन नयो जोबन उत

रा॰ कु॰ भ॰

यह दिननकी घोरी। रागनी ककुभ तालथी मा। होरीकी धूममें चतुराई बहुत करत है तेमेरी गेंद चुराई। बन बन के ग्वारनी निकसी यन यन यह तेरी चतुराई। प्रेम के प्रभु सों खेल मच्यो है एक गाई दो पाई रागनी ककुभ ताल थीमा। श्रावननिशोक[५२]

10५

तेलखकेठाड़े होतबांधकेबरा। नीकेमूके
हार चोमके पहरावत होरी में हारा। राग
नी ककुभ ताल धीमा। जैसेही गावत सेग
तसो होरी अनेक भांतन सों नई नई लेत
उपज साचे सुरन सो गाय बजाय रीझाय
लीने और समदेत। रागनी ककुभ ताल

रा॰
कु॰ भै॰

नीन। होरी खेलन जाइये लालसोंजों पी
य के मन भाइये। चलोरी सुहागन आयो
फागुन हमो केय मनाइये। अनरस को॰
सुहाग बनो है रस के गागर पाइये। रागि
नी ककुभ ताल धीमा। सब ग्वार बगार के
अवन सुहावन लागी डफ की धुंकार। रा

यो भाजन तन मन तें बिरहा सनतही प्रेम
पुकार। कृस्नानंद आनंद में खिलो कपट।
तजडार। रागनी ककुभ ताल धीमा। पाछे
पाछे कहो छिपतहों कोन्हारे अब हमके
से जाओगे घरे। सकल नार मिल आई खे
लनकों अब कैसे छूट जैहो बिन भेरे। तें

रा॰
कृ॰ भ॰

द्रग ड्रगत श्राघन श्रापन पेरे घेरे। पहो राग

रेग मोरी बती घन सबकी जी घउमडे। भू

ले सरम सदा रंग जैहै मनके श्ररे श्ररे छरे।

रागिनी ककभ माल थीमा। निपटन क

वानी कानी री या हि निलज कन्हैया। सो

हे बाडी श्रो वदत है गारी श्रबमच कतलेन वलेया

106

रागनी ककुभ ताल धीमा। रेनई लगन लो
गन की सकचौं न खिलत एसे होरी। इत
चढत नयो जोबन ग्रत बहोत दिनकीप्यो
री। पीय गुलाल डारो तीय उपर छाईबर
स बनकी चोरा चोरी। तीयश्राव रफारनै
न नीचे करही सबैं मोहनमरोरी। रागिनी

रा॰
कृ॰ भ॰

ऊकम ताल धीमा। बानिक बन आवरी मेरे
भाग जाग अनुरागे। लै सुगंध पिचकारी।
न भर भर छैगन छिरकन लागे। रागिनी क
कम ताल धीमा। परी पै मैं पनियो भरन॰
कैसे जाउं मन मोहन ठाढो घाट सखीरी मैं॰
करत फैल नित रोकत गैल फोर दयो मेरो

107

माट। रागिनी ककुभ ताल धीमा। घरी मैं कै
मैं भवन जाउं पनीयो मग रोकत होरी कों।
खिलैया। करत फैल नित रोकत गैल घमो
वे छल छैल कन्हैया। जानकी दास प्रभू
प लालची जोबन रस कोंच खैया। रागिनी
ककुभ ताल धीमा। जब हम जानी कन्हैया

रा॰
ऊ॰ भ॰

झूटे तब हमसौं न खिले होरी होजी। मौ तन
के सेग सैन करत हौं सकर जात हौं झूटे। तू
प जोबन का गुमान न करी पदेव बना पयनू
हे। प्रेम रेग सेग भेगन की जेदासी कहत।
हरि तूटे ॥ रागिनी ककुभ ताल धीमा ॥
होरी होय रही है या हू नगर में फागुन।

108

मास यह आयो। लाल गुलाल फेंट भर लाल
नके संग रंग छिरकायो। रागनी ककुभ ता
ल धीमा। होरी होय रही है याहू नगर में फा
गुन मास यह आयो। पनीयां भरन कैसे जा
उंरी लागो नंदकौं ढोटा। घर बहीयां झक
झोरे बोरे रंग में चुनर निलज करत है खोटा

रा॰
ऊ॰ भ॰

रागनी ऊऊभ ताल धीमा। आई रावन वाकी
पानी तोरे गुनन मदमाती सखीरी। जबतें
नाम सुन्यों रावनें कों आनंद भयो दिन राती
ज्यों ज्यों आय श्रवण में नियरानो त्यों त्यों उम
गे छाती जोबन धन नैं हर कर रहना लीनप
राई घाती। जो पीया केरे सोई कीजे ज्यों वाके

109

२.५

नीयकी सुहानी। गावै गुदर संग चली मइ
यो पै जग जग रही ग्रहवानी॥ रागनी कु
कभ ताल धीमा। चला जारे छैला होरीरे।
होरी कहा बर जोरीरे। चलत फिरत इत
त गोकुल गलीयन श्रेबीयन भर दई गोरी
रे। ज्यौं नभ चकर बिलाव कहावत काहेको

रा. वहीयो मेरोरीरे। चले जावो बलिहार विहारी
ऊ. भ. भर वहीयो फकफोरीरे। रागनी ऊकुभ ना
लधीमा। कौंरंगमें भिजईरे निरदई। सा
री सह रेग सई संगीया सबही मोल लईरेनि
या सब सबसर होरी के मिशा कर दई दई
कर रही। हम बलिहार कन्यो नम जावो।

110

अब सो भई सो भई। रागिनी कुंकुम लाल थी।
दशरथ के लाल गुलाल भरी पिचकारी नवी
ली करी। सीताजी को मिलन गई राम आय
थर बांह गही थरी। लछमन भरत शत्रुघ्
न सेनमें उडे गुलाल पिचकार करी। श्रुति
कीर्ति उर मिला मांडवी सीय के कहे मोहे आ

गा॰
रु॰ मे॰

गेरी। जब पिचकार फुहार चलि निहरे हे भाग
गई कछु लाज डरी। बेचारो मफे पाई अकेली
मफ गरीब पर होरी परी। टेर हारी कोउ पा
मन आई याय गामके पाय परी। प्रेम विवेमो
मो देखत सब ही प्रेम रंग मो भीज नरी।
रागिनी रुकम नाल धीमा तिनाला॥

मै तो पनीयो न जई हू आगे मचरहो ख्यालरी॰
बीच मैं गोपाल गाडे जसोदा कौं लाल री।
परी परबो देखो आवै छैला मद गजराज च
लारी। कर लिए पिच कारी फैंट मैं गुलाल
री। नागरी या केकेपे पग होत है निहालरी
मेरो हूप भयो मेरो जीयकौं जेजालरी। ११

रा॰
ऊ॰ भ॰

नीऊऊभ ताल धीमा। होरी को खेल मोहे फ
छन ठोले अब कहां जाय छिपो मोरी आली॰
प्रेयद्वार दशाद्वेर लिए मोरे प्रेगना में भ्रम म
चावैरी आली। पीयकी डराई नडरोरी आली
अब कहां जाय छिपो मोरी आली। रागनी
ऊऊभ ताल धीमा। वेतो कहने को हुजे क

112

हाए उनै हमैं भेद नहीं। कुलसमायरायिका
लीनी राधे कुल समाए। उन रंगी हम हम
उन रंगीवे दोउ एकही रंग रंगाए। उनकेस
र ज्ञनर हम रंगीवे पीयरी पाग रंगाए। उ
न रीकी भीजी रंग रंगीहो हमन हम अपने
रंग रंगाए। गगनी कुकुम नाल यीमा। एरी

रा॰
ऊ॰भं॰

मैं प्रेम नगर सौं दयले निकसी मिल गयो स्या
म कन्हैया। गह पकरी मेरो मोरबन छिनौं
ऊ कामे पुकार मेरी दैया। इत गोकुल उत
मथुरा नगरी मिल गयो मुरली बजैया।
बहीयो पकर फककोरी मोरी नारबन ननाचै
या। भेरह विभामलल्लितं प्रोरटोडी छाय रही है अलैया

113

हर स्यामके रंगमें रंगगई बारबार बलगईयो

गगनी कुकुम ताल धीमा। ऐसी खेलले हो

री जोगीया। जामें प्राणायाम तजडारी ज्ञान

ध्यान अबीर गुलाल ले सुरत कीए पिचका

री। भक्ति भभूत ले प्रेम परडारो सृंगि मुद्रा

निरतकारी। सील संतोष को पहरो चोल

गा॰
कु॰ भ॰

नाल्हमाटोप सिरधारी। विरह विरागकीका
नन मुद्रा अनहद लगावे नारी। प्रीम की॰
प्रीति नारी संग लैलै के सब रंग भर भारी। ब्र
ह्म नगर मैं होरी खिलो प्रलाव रंग भर डारी।
काम क्रोध मोह लोभ कों कीच हरत जडारी
जनम मरन की दुबधा मिटायके आसा तिसा

११५

मारी। निरगुन सरगुन एकही जानकर भ्रम
गुफा मत जारी। आनंद अनभव उरमें धारके
अनहद मृदंग बजारी। जलथल जीवजंत
चराचर एकही रूप निहारी। साहब कबीरसो
होरी मचायो खिलो जगमें धमारी। रागिनी
ककुभ ताल धीमा। जोबनकी धूम मची है

रा॰
रू॰ भ॰

नगर मैं ब्रजकी देखन आई बाल। तरनी बा
री सब देखन निकसी कौन को है यह लाल
रागनी ऊऊभ ताल धीमा। मोरे सइयोंने भे
जी बुलाय छुटा घर बाबुल के आज। सात
पांच मिल ले चले रे सनीयो रे मोरे भाई। बी
चही सब चल बसे है कोई संग न जाई। रारा

115

नी ऊऊभ ताल थीमा। या एछैंगे वात मोह

मे कछु वातन आई वादिनकी सुघ भूली।

री साथो कछु सकन बसाईकु। एक अंधेरी

कोटरीवा में दीयानवाती वांह पकड पी

या लेचले कोउ सेगन साथीकु। ओछफरी

द पीयाके चाकरदीन महेमद जानोहे य

रा॰
रू॰ भ॰

टहीमें सफत नाही सो कबीरके मन मानाछू
ढूंढत फिरी सकल जगभीतर कतहूं पी
या नही पाया। देवीदास साधन की कृपा
ते सतगुरु भेद लखाया। रागिनी ककुभ
ताल धीमा।। मैंतो उनही में वहीहो समाय
स्यामसो हे भ्रलगाय। पानपेढारीयासरवाईरे

116

फुलवारहे कुमलाय। पीयानिरमोही घ्रजहे
न ग्राए बैठी इसेज विछाय। होली तोजल
बल गई ग्रोर खोकरही उड़ाय। हमरी ग्राह
कौ ग्रान सराहे बैठी ड़ घुनी रमाय। रागि
नीऊऊभ नाल धीमा। कौं भरी वे छैला।
ग्रेखीयो उलाल। कौन नसाउ खिल विहा

रा॰
क॰ भ॰

री दै दै जो दानी गाल । ब्रजमें बास कियो म
न मोहन मगरुरी दा ख्याल । कौं ममकि
सलोने वेख महरदे बलिहारी योदा हाल
रागिनी ककुभ ताल धीमा । होरी खेलनहो
रे आयारे खुन नेंददे लाला । चंदन बेंदन बु
काकोरी अबीर गुलाल उडाया । बाजत ताल

117

मृदंग बजावत मुरलीका ग्वाल बाल सबया
रे। केसर रंग भरे पिचकारी मारे बसन भीजा
या। सखीन स्याम कों स्याम सखीन कों होरी
खेल रचाया। कृलस्याम सो फगुवा लीनो
होरी हरि यरज छुडायो रे। रागिनी ककुभ
ताल धीमा। ठरीमें कैसें भरन जाउं पनी

रा॰

कृ॰ भ॰

यो बीच खिरे मथबन के रावरे मे। अपने अप
नैं मंदिर मे निकसी मिल चली मथुरा नग
रीया। ले गागर मागर मैं बोरी आप चली॰
मानों पनीया। रागिनी कुंकुम लाल थीमा॰
कृष्ण जाउ मोहे कीच फेंकत है नदीय जा
उं पिचकारी। गोकुल जाउं नोरे गहो मे बोरे॥

118

ऐसो करत है यह मोसों दावरी। रागिनी क्र

क्रम ताल धीमा। नए हो विलार नए हो र

सीया अनोखे नई भई है ठकुराई। भलो बु

रो पहचानत नाहीं एकही बार चले इत-

राई। नई नार देखमन ललचे नई नई तान

लेत विकाई। नए नए बसन आभूषनन

रा॰
क॰ भ॰

पनपनपक्कलनपजोबनाई। रागिनी क
कभ ताल थीमा। लेगरबट पारते री बार॥
बार मेरी आयो कौंन मेत्र पटडारदियो नेक
काढ़न मोहे बतायो। हाहाकरतहुं पाय
पायपरतहुं कबहूं हष्ट मिलायो। प्रभुवि
लास यह बिनती करतहै तो बिन कौंनमि

११९

लायो। रागनी ककुभ ताल धीमा। लेगार बट

पार फोट बनवारी वाकी निडराई नईजाय

निलज अधिकाई नभयो है अनेरी। हों लाज

नकछु कही नसकत रिझ जो भार देत गा

रनारी। मग रोक रहत संग ग्वार बार लीए

आय गहत पट मेरी। रागनी ककुभ ता. धी.

रा.
ऊ. भ.

नघनम छीट लेगरवा होरी खेलन जानौं। नि
नमें नम ब्रजराज कवन छल बल लेगरसौं
नौं। गरबीलौं ग्वालमेरा लीनें मोहिनाह प
हचानौं। कामरीया नम दूर धरो ज्ञतवई
नखेलन ठानौं। रंग केसर अबीर गुलाल
अरगजा मानत ही आनौं। फाग। ❖।

१२०

साज व्रजराज दास तुम फगुवाले हो मनमानें
रागिनी ककुभ ताल तिताराधीमा। लालम
माते हैं बन बन खेले फाग। छिप छिप ल
क लक दे दे तारी गावत टोडी राग। बाज
त मृदंग संग संगत सों ताथ भेद की लाग।
मदारंग रीझ वार सुनत ही होरी लगणो बा

रा॰
ककु॰ भ॰

रन पाग। रागिनी ककुभ ताल धीमा। अब के
होरी में प्यारी लरके यह समान तें कीनो। उ
फगलनो लागी विरगागा है सो तन के गुमान
घुमट मारदीनें। मृदंग तो परोंद गोला गु
लाल धुमनाकी अवाजतें गरुर गाढ छीनें।
महमदशाह के सोहाग बढो यातें अनहित

121

अनेक कुंड सब मोर फेरदीनें। रागिनी ककु
भ ताल धीमा। सलौनी सूरत स्याम लोभा
नी। आबीरी सखि मिल होली खेले पाछवि
को सब ध्यान। कोउ नाचत साची गतले
के कोउ गावत नीकी तान। बाजत तालमृ
दंग चंग मुन बंसी बीन निशान। रागिनी

रा·
ऊ·भ·

ऊकभ नाल थीमा । सोचे मरन मौ गायबका
यरीकाय लेहो मब विय ग्रपनै गुबमौ । गु
नीयनकी मेगन मौ गग परन सभ मरलेनी
धपमगरेसा सारेगरेसा स रेगमगरेसा गमप
धनीसानी । धपमगरेसा धा किट तक ।
धुम किट तका धुम किटतक धिर किट·

122

धुमकिट तक धिर किटत कति किटतकथा
कडेन धिन्नाउथा। रागिनी ऊऊम तालधी
मा। पीय बिन अब बिरहन कैसे खेलत हो
री। उडत गुलाल सुरंग पिचकारी करतन
सब केसर घोरी। रागिनी ऊऊम ताल धीमा
आजनम कछु रंग भीनी डीठी परीन अगोरी

रा॰
कु॰भ॰

आरसी ग्रंगदरक गई श्रेणीया किनइ नरेश में
बोरी। रागिनी ककुभ ताल धीमा। लालन
अपनैंही मनमें नीके फाग मचावो। जासों
मनकी लागली ताहीके आगे होरी गावो
रागिनी ककुभ ताल धीमा। लाल बमनीके
मानत हो नीके फाग बनाय। कुंवर कन्है

123

यो खेलत होरी का माता चाचर गाय बजा
य। रागिनी ककुभ ताल धीमा। पीय बिन
अब बिरहन कैसे खेलत होरी। सोंच अबी
र हरत पिचरी बेंदन मलीन केसर घोरी
मारी सोसमन होरी गावत हात मलीन नली
प तारकी जोरी। कहो कहों निरदई कान्ह

रा॰
ऊ॰ भ॰

को सुधन लीनी मोरी। रागिनी ऊकुभ ताल
धीमा। हम तो दिनन की थोरी अत चंचल॰
होरी में यह गोरी। कर पिचका लीए रंगाउ
रत करत फिरत चिर चोरी। लाजन आवत
ब्रज के लोग मैं बात सुनत न नही मोरी। मेह
रबान नेक सुनो नारनी को माई सुन कर

न कगोरी। रागनी ककुभ ताल धीमा। रंग म
हल में आज होरी कों मचायो है नाचरहे। अ
बीर गुलाल को बादर छायो धूम धाम अत
माचरहे। रागनी ककुभ ताल धीमा। आज
न वृंदेश संग संगीत सौं नाय भेद की गाथा।
सदा रंग रिझावत नार संग या होरी खेल

रा॰
ऊ॰ भ॰

न फाग। रागनी ककुभ ताल धीमा। पाछे॰
पाछे काछी पत हो कान्हर अब हम कैसे जा
वेंगे घरे। सकल नार मिल आई खिलन कों
अब कैसे जाइ हों बिन भरे। रागनी ककुभ॰
सगुन विचार यव मना कौन दिना मेरो केश
सो आय मिलेगा। विरह की अब प्यारे कों निसो

18125

गीत बखिन मेरे जीय कों कमल खिलैगो। रा

गिनी ऊक्रम ताल धीमा। प्रबीन लालमै पा

योरी फागुन मध अबरहस हम करोंगी ख्याब

बहु भांतनके। गाय बजाय रिझाय परचा॰

य करोगी नौछावर करहौं भूषन सब तन॰

के। आनंद उपजो मोहिअ अनके औरं गए।

रा॰

ऊ॰ भ॰

मूलउमान सबसों तन मनके। तन मन धनहों
भाग मेरे री सजनी जो ही ऐसे मै पर मेचरन रे
गोरंगके महरनके। रागनी ऊऊभ नाल धीमा
घरी हो किहि मिशदेखन जोउ सोबरो होरी॰
खिले बनकी खोरी। उफ पुंजनकी गुंजसो फ
हनबीच बाजत मुरली धोरी। ऐसी मूदेरा प

126

रनकी भनक परी रहे कन नार फोफकी बी
न खेजरी मुड़बर किन्नर लेन चित चोरी। रा
गनी ऊकम नाल धीमा। गावै दे दे तारी ऐसी
बोरी नारी। होरीके प्रेगतें गावै टोडी उपज
करे न्यारी न्यारी॥ मोहन मैं बारी बारडारी।
नाव जिनक रहो कपटकी बात। रहतजान

रा.
कु.भ.

ध्यानन घनासकौं जाको सुमरत है दिन रात।
रागनी ककुभ ताल धीमा। मोपै कैसे कटेय
हरितउनी बन माई आली आयो यह फागन
पीयाकीनो गवन। ज्यौं ज्यौं सुय आवत मोह
नकी यह आंगन अत हूवर भयो देत विरह
अधिक दुखदाई। रागनी ककुभ ताल धीमा

127

कटतट पीत पट नट वर हरि भेष धरे मोर
मुकट कुंडल कानन। बंसीवट निकट हो
री विलसत बजत बीन मृदंग मुरचंग तान
न। सप्त सुरन श्रौर तीन ग्रामले बाईस सुर
न इकईस मूर्छानन। कमलरसिक सब बस
करलई ब्रजबनिता विलस्यो बृंदाबन का

रा॰
क॰ भ॰

नन ॥ रागनी ककुभ ताल धीमा ॥ खाली अ
ब लैं कैसी कुकरही मैन तैं सिगरी रैन की
ये काज ॥ भर देरीया को पन हूं न छोडत
उय नाहीन आवे बाज ॥ जीय उमग भरी
समक पीत कीनैंन मे कछु लिए लाज ॥ गर्व
महारात तैं बोले है न काहूं सों भले भले रहे तेरा राज ॥

128

रागनी कुकुम लाल पीमा। चटक मटकरी
ऐसी फिरत काहे नाहन जानत फाग मच्यो
है। एक तो छीटता में मद मातो जाके करत
कौन बच्यो है। मो हिग लाग नाछी रहे कि
न किफकन फके सोरंग रच्यो है। सम्हस्या
म श्रेग लागे मोई मानों चोखो सोनोंक सो

रा॰
ककु॰ भ॰

टीकस्यहै। रागनी ककुभ ताल धीमा। घरी
म्वार तें हटना हिन कर अपनें पीय सों एसे
फागमें। लागमें चहल देखत सेग सखा॰
सबलिए कैसे लागत है बागमें। अब सबू
ह अनुराग भरे टाढे नामले तेरो रागमें ॥
रागनी ककुभ ताल धीमा। भीजोई सब रेंग

129

चुनरीया हमारी गहरे रंग नंदलाल। हमने
भीजोई लाल पगरीया एकही रंग रमाल।
रागनी ककुभ ताल धीमा। होरी खिले प्यारी
बनबारी मोरह मरह मगरे लाग। अबीर
गुलाल कुमकुमा केसर मोहन सों मचायो
फाग। बाजत ताल मृदंग झांझ डफ गाव

रा॰
ऊ॰ मे॰

तहोरी राग। ब्रेंदाबन बीथन मग सजनी यन
यन तेरे भाग। सुंदर स्याम सो होरी खेले रह
स रहस बार लाग॥ रागनी ऊऊभ ताल धीमा
तें तो पीतकी रीत नजानें परी गेवार। ले द
पेन सुख देखले अपनों ततगत सयन सेभा
र। जासों मन लाइए तासों ओर निभाएनार।

130

फागुनही मैं चोप बहुत तेका जानें पीयको

मार। ऊंबर लाइले सो कहाकहे तोसी महह-

लगाईहै लबार। रागिनी ककुभ ताल धीमा।

लागोही श्रावै नब निकसे मोरी गैल। बाट

घाट पनघट जमुना तट मोहन है नयो बै

ल। रागनी ककुभ ताल धीमा। मुकटतक

रा॰
ऊ॰ भ॰

झकरही दीना नाथाकौं धायधाय। कटन।
कछनीकुंडलकानन गिरिधरनट धरगाय
गाय। रागनी ककुभ ताल धीमा। चेचल।
चपली चली होरी खेलनकौं नासर पीके॥
श्राज। बीन रबाब मृदंग फांफ डफ श्रोर ब
जतहै साज। नई नई गांधर्व सब मिल श्राई॥

131

होत अनके घर आनंद काज। साल भयो सो
ननहीके मन उरज गए सब भाज। रागनी
ककुभ ताल धीमा। कैसेही आवत संगत।
सो होरी में अनेक भांतन सो नई नई लेत
उपज। सोच समझ सो गाय बजाय लीजे स
मत॥ होरी में बनवारी दे दे गारी प्यारी जि

रा॰
झ॰ भ॰

न मल होगाल गुलाल। छलबलि लपटि फ
पटी छ्र नामकौं कहतै है मदन गोपाल॥
रागनी झझभ माल थी मा। सलोनी मानन
होरी गावे गाय गाय हरिकौं रिझावे। चङ्ग
र बाजे गहगड सौं बनावे नीके फागु मचा
वे। यह बिधि रिझाय महमदशाह कें बडू

13

मोतन मान मनावो। ककुभ रागनी तालधीमा·
मोहन नंदकुमार चतुर चित चेट कलायो।
रंगभीन बागेसर पागे होरी खेलन आयो। बा
जत ताल मृदंग बांसरी नटवर भेष दे खायो
जक थक हो निरख रहो सब तन मन काम
समायो। एक कर गह औरु अनीर सखमाझो

रा॰
कु॰ भ॰

करे आपन मन भायो। रागनी कुकुभ ताल धी॰
आली आयो यह फागुन कीनें गवन कैसे क
टे दिन उन बिन माई। ज्यौं ज्यौं समय आवत मो
हे उनको धर अंगना अनडवर भयो है लानड
ख दाई। मोपे कैसे कटे घरी घरी पल छिन॰
ऐसी ऐसी बातनहे को उनमानें तें उहाई। नूर

1353

रंगके रस देखे बिन कैसे नैना नीद आई। प
डख भरी पांखे लागे बडी कठन कैसे मिले स
ख दाई। गगनी ऊजम नाल थीमा। ऐसे को
उ खिलत होरी जैसे हम खिलत जोरा जोरी।
नीक लागे हमकों हो आवत भूल गए दधि
मो खन चोरी। मैनन टे बुलावत मोकों हो

रा॰
ऊ॰ भ॰

नाहीं नऐसी मोरी। हीम सकट घरजाई देखो
सुर बीच तिहारी नाहिन चोरी॥ रागनी ऊऊ
भ ताल धीमा। ऐंडी ऐंडी डोरत नाही जानत
आयो फागुन। तोह परी कहा कहावेकी मो
सों अब ज्यों होंई मेरी भागन। होरे जानत॰
आव तहै डफहे बजावत गावत मोहि लागी

13

बाकी लागन। अब कूटे भए बासिठ मिल ग

ए सब साजन। रागनी झझम ताल धीमा·

होरी आई नेद महर के घर रहस रहसकल

खेलो। मोर झुमक झुमा अबीर गुलाले बम

झे बाघे मैलो। हमझे जाने बहकाई सबन

कौं बाके आगे बम हेलो। नाहीं चलैंगी मेरा

रा॰
कृ॰ भं॰

तिहारे चाहे सबन गारी देलो। रागनी ककुभ
ताल धीमा। बोल सुनावेरे ढाडोरी पिछवारे
तेरे घर को। हौं लाजन में भीजी जात हो सास
न नद डर पावैरे ढा। गुरजन पुरजन लोगन
गरके देखत है और पार परो मनसकुच
जीयमें आवेरे। जावो छैल रसिक यरआप

135

नैं ना दिन नहीं यो फक फीरी मोरी अबल न
हीं पावै रेढा। रागनी ककुभ ताल धीमा। ऐ
सो निलज भयो ढोरे ब्रजमें काहूकी आनन
मावैरे। कुच पकरत मुख मीड डारत है का
हूकी कोनन चावैरे॥ देनदेवा है गारी ने नि
न बोले रे वह ने भार लचार होरी की हमहै

रा॰
ऊ॰ भ॰

सुलछन नागर नारी। ताके जीय आवै सोई।
गावै हम कहा कहे लाजकी मारी। होरी में
को कौंन विसयो छ्रल जीवन लच्छीराम जेजा
री। रागनी ककुभ ताल धीमा। मन मेरे कों
इच्छा एजी आयो मास होरी कौं नीकौं। मन
मथके रंग भई सूरत स्यामके देखत दुःख

136

मीठे मेरे जीकों। गुरजन पुरजन कहा करे

गो यह तो औ सब फागुन कों। ननदजे बा

नीकी कानन करी हों जायत होदोर करपी

यकों। सबै सिंगार बनाय सेबारो औरदेह

कों सब कौटीको फल जीवन लछीरामके

प्रभ प्यारे जाय मिलोंगी तन मन हीयकों।

रा॰
क॰भं॰

रागनी ककुभ ताल धीमा। हमेली तानन हो

री गावो गाय गाय साहकों रिझावो। चतुर

बाजे गह गउ सेव जावो नीके फाग मचावो॰

यह विध रिझाय महमदशाहकों बहुभांत

न मान मनावो। रागनी ककुभ ताल धीमा

मोहन होरी खेलन आए बरसाने में ब्रष

भान गोप के द्वार। ढूंढन ढूंढन नार सब मि
ल आई पिचकारन की दई है मार॥ रागनी
ककुभ ताल धीमा। सबके रूप रंगे मेरे नैन
रंगे रंगे। उरजन डर नीयतें काढो जीतब-
सुफल भयो सुख दैन॥ एरी मेरो नाह आड
न बैपैडें हों तो नाह चलोंगी कहा आवत

रा॰
ऊ॰ भे॰

वाकों मोपै देनो। होजो कहत हो मान कहो मे
रो सब सो तन मैं होइ तिहारो ई कहनो। होइ
मान वे हरावत मोकों नाहन लेग्रोंगी हों ति
हारो गहनो। नव बरस रंग की फुटी कहो
मोपै जो तुम कहो मोकों सोई सहनो॥ राग
नी ऊऊभ ताल धीमा। लाल होरी मेरा रंग

नी काहू नाहिन वाकी मन बोराई। अपनी

वारकों हम रहत है जानत हों बलीभद्रकों

भाई हो तों ब्रषभान मनाई। कपट गांठ षी

य तें खोलो कौंन एसी सिख सिखोई। अंत

काल पछताओगे विचित्र खेल फाग मचा

ई। रागिनी ककुभ ताल धीमा। मोहन

रा·
कु· भ·

नेदकेंबर चत्रर चितचेट कलायो। रंगभीनें
बागे रम पागे होरी खेलन आयो। जकत थ
कत है निरख रहे ब्रजजन मन काम समा·
यो। एक कर गहे और अचर मेरे नैनन ने
हन नायो। लेकर अबीर मरव मांडो करे
आप मान भायो। रागनी ककुभ तालथी·

139

पीय बिन सुब बिरहन पसे बिलत होरी। मो

व सुवीर सुरत पिकारी कर त लेके केसर

होरी। सरी सास मानों गावत होरी हायम

लन कियो नार जोरी। कहा कहे नीर दई

कोन्हकों सुथेइ लीनी छोरी। रागनी ऊऊ

म नाल धीमा। डफ बाजन लागे निकस

गा॰
कृ॰ भ॰

आईले सब ग्वाल। तानकी धुन सुन मोही

ब्रजमें निकस आई ले सब द्वार द्वार। नारी

नी कुकुम ताल थीमा। मेरो लागोंही आवै

सासरी नेंद नेंदन मन मोहना। ब्रज विष

नकों जनन ते कों जन आनन नेल नित गोह

ना। सहों बोलन साखी मोपै कौंन मेंयपठ

डारो। होरी मिश सबके देखत मेरो कंचन

बदन उघारो। पहलेही मन मुरली पुन में

सर बेस सब बारो। इन मोहन समझ जात।

के होहो करजो पुकारो। गगनी ककम ला

ल थीमा। होरी जैसी तुम खिलत हे गोहोरी

मोहन एसी तो कहूं नैन देखीन सुनी। तेरे

रा॰
कृ॰ भ॰

चलन को निरखि निरखि कर कहत है सब न
र नारी पुरानें गुनी। चंदन अबीर गुलाल के
मर रंगाये है देखो नेके कहो न उनी। तेरे तो
मन की मौज मय आवत उर लोउ मावि हूम
तेरी पगाकी झुन झुनी। रागनी ककुभताल
धीमा॥ आज होरी खिलनको मै। ∴ ।

आई हथिन कर लेकर अबीर गुलाल रंग। हे

हर चतुर सुघर बिलारी जब जानौं गीत ब

सैंगे मेरी संग। रागनी ककुभ ताल धीमा

मा(वी मोपै कौंन मेंत्र पढडारो। होरी मिश्र

सबके देखत मेरी कंचन बदन उघारो। प

हलेही मन मन मुरली धुनमै सर बस स

गा॰
कु॰म

बवारी। इन मोहन बस भई जोन कैं होहो क
र जो पुकारी। रागनी कुकुभ ताल थीमा। मे
रेही आवे साघरी नेद नेदन मन मोहना ॥
ब्रज बीथना कुंजन मैं आवत सेदर मन केसो
हना ॥ नई लगन सकुचन लोगनकी अ
ब कैसे खिले होरीरे। उनते चढ़ा नयोगो ॥

142

बनबाई ते दिननकी थोरीरे। नैनन मैं मनुहा
र करतहै बालहमी सब मोरीरे। पीय आने
ट घन बन मोहन प्यारे बहु बिय भई अमोरी
रे॥ रागनी ककुभ ताल धीमा। ए अबकेको
कल धूम मचाई। पीय बिदेश मोही पाय
अकेली बिरहन जान सताई। अबके कही

रा॰
ऊ॰भ॰

न जानत जैसे उनकी नी चोरी करत चतुराई मो
हे पायस्त्र। कङ्कक कङ्कक डर पावत ग्रनहीं
हीयमें इक बडाई। यह सोते मेरे पाछे परी
कहो कहेहो माई। बोल बोल बाने जिम ला
गत तन मन बेधत ग्राई मोहे पा। बीतो बसे
न ग्रायोहै फागुन देत काम ग्रधि काई॥

यह मैं ने मोरे पाछे लगी है सदारंग हों ऊमहा
ई। बोल बोल बने निम लागत तन मन वेध
आई। रागनी ककुभ ताल धीमा। मैं तो केसे
के पनघट जाउंरी बिरह भूप खेले होरी।
घर मेरा दूर गागर सिर भारी औघट पनगायो
पावरी।। देखोरी आवत है यह नगर में होरी

रा॰
कृ॰ भ॰

खिलन स्याम सलोना। छिनमें मन बसकरी है
सबनकों याकी मुरलीमें है कछु टोना। मोरमु
कुट कुंडलकी छबि मृदन नयन खंजनन येरे
कीना। रूपदेख मन होत वैरागी एसो द्रवस
यह नेदकों ढिठोना। रागनी कुकुभ तालचे॰
नीकोवन्यों गोकुल गाम सुहा बसो जहो हवे॰

१४४

लतहै हरिहोरी। उतहे सकल ब्रजके बालक
इतकुंडन जुर आई तरुनी सब तिनमें राधा
गोरी। विविधभांत बाजत नव केसर कुंमकुं
म अरगजा घोरी। रतन जडित पिचकाईन
करगहे छिरकत तकतक मदित परस्परन
वल किशोरकी जोरी। इहि विधिकर खेलत

गा॰ कृ॰ भ॰

केलन रससिंधु तरंग भई ब्रजकोरी। मोही भ्रमर बधु निरखत बरखत कुसुम नरहुबीर फिरत सेग भरि भरि बीरा कोरी। रागनी कुकुभ ताल त्रेवट। मन मेरे की ईछा एजी आयो मास फागु को नीकों। लाज सकुच तजि साजन नेहकी दैं विगालोकरसौं करपी कौं। अब मेरो कोउ कहा

14

करि गोय तोहे ग्रीमर होरीकों। मैनभरि मरत ब
नपतिको देखि उव मीटे जीको। रागनी कक
भताल वेवट। पीया मेरा मैनो आपी रंगरची
री मै अपना चोला। पीयाके रंग में आपी रंगी
ले बाइ रंगमे बोला॥ रुचर बर खिले होरी के
मदमाते। फेटबांध फगुवा भरलीनो होहोरी

रा॰
कृ॰भ॰

करबोले॥गगनी कळश नाल बेवट। आजइनो
ते खेल कहोते मीख आपनेद लाल। ओजेहग
मृगमद के बेंदादीन्हा काहू बाल। लियो छीन॰
पीतांबर मुरली जानि पायो इह ख्याल। सोची
सोंह दिवाय कहत हों हसि हसि कहीये लला
ल। लै भूषन बलिहार विरानो भय होरी फनि

हाल। रागनी ककुभ ताल चेवट। अब तो कल
अम मचाईरी पीया विदेश मोहे पाई अकेली
विरहन जान सताई। सही नजात इनकी यह
वारी विरह करत सवाई। बोल बोल बानेज-
बलागत तन मन बेयत आई मोहे पाई। बीते
बसंत फागुन आई तान लेत अवाई। वेगद

रा॰ कु॰ भ॰

रसमोहैरी ज्यो मनारंग यह रितहै सुखदाई ॥

रागनी ककुभ ताल चेवट। वाके रूपरंगे मोरे
नैन। अब हिल मिले होरी बिलोगी गनहोंन उरज
न बैन। लोक लाज कुल कान न जोंगी घरोंमा
न मन मैन। उरजन उरकाढो जीयतें जबत
ब कोउ कहे न सकैन। रागनी ककुभ ताल चे॰

147

ङफकी धुकार बाजत बन बन खिलत केबरफु
ल हो होरी। सबही विचित्र अनूप छबीली स
घरी तोन मिल गावत होरी। रागनी ककुभ।
ताल चेवट। गावत होरी नारदे ब्रजमें धूम म
चाई मोहन कुल मनारी। ले सखमीजततनारी
नारदे अबीर गुलाल केचन पिचकारी। फगु

रा॰
ऊ॰ भ॰

बामोगत फेंट पकर माब कहे जात अब कैसे
नदेहो दारी । ढीठ लेगर सेग छोडत नाहन
कहो करे सदा रंग बिचारी । रागनी ऊऊभता
ल वेवट । आई है फागुन की रित साबी मन
में बढी तरंग । अबीर गुलाल हों सबके म
लें गी महकत है गो पेंग । अनेक भांत बस॥

48

न भूषन पहर पहर रंग रंग। स्याम प्रवीन तें जा
य मिलेंगी करली फोफ मृदंग। रागिनी ऊ
भ ताल त्रेवट। काहेकों उरवत रंग लाल तुम
केसर की पिच कारी। अबीर गुलाल कुमकु
मा रोरी गोकुल के गिरि धारी। काहू सों लपट
कपट काहूकों कुल नेह दे हो गारी॥ रागनी

रा०
कृ० भ०

कुकुम नाल केवद। बहोत दिनबीतें आए मेरेग

ह लालन होरी खेलन। चाचर माचेतें कौन भो

त रुचघआई मेरीननू सोची। कहो तुम आवन होय

मेरामिलन सावेरा। रवघर लाल यह नगवार ते

ते निकी सब छाई। आपते आय रित सबनसो

पसी लाड लडाई। तरबर सब करपरे भुई मेः

149

फिर फिर लोटनी लाई। रागिनी ककुभ ताल

तेवट। बार बार मोसों करत रार लाज सकुच

दीनी। लोगन की सुन पावत मोरी सासन न

दीया चरचा करत सब घरकी॥ यह मानों

को दमामो बाजे सुनरी साखी डफकी धुकार

नारी दै दै कुक मची है लाज सकुच सबजीय

रा॰
ऊ॰ मे॰

तैं भाजउार। चेदन बेदन अतर अरगजा केसर
की पिचकारी। वेजव हैं नायक धूम मचाई।
कूल रसिक नेद द्वार। रागनी ककुभ ताल वे
वट। कैसे मोन रहेगो हो होरी होरी होरी पुका
रत। अबला मीय रे लै लै मा महरी उफ व्हदेग।
पुकारत॥ यह आई आई है आई जोबन कीमा

150

नी। सदारंग मे लाल रसके प्यारे यह बिला

य यह ग्राई है जो हो जो। रागनी ककुभ ताल

चेवट। वृंदाबन लाल होरी मथके सुरतें वृंदा

बनी एसी मुधार कन्हैया बजाई। ग्रानडुको

उदेत मोत नहीं ग्रब कौन बिपरा ठरी दैया।

प्यारी यो कह लाई। रागनी ककुभ ताल चेवट

रा॰
ऊ॰ भ॰

निपट प्रेम उपरदीनी की या ब्रजमें पहलेही म
हाराज। बड़ो सोच उनीयनके मनमें सो देख
त सकल समाज। रागनी ककुभ ताल चेवट
आईज्ञ होरी अब यह नाच नचावत। भलोबुरो
पहचानत नाहीं मथलो लहर चढ़ावत। मा
रत टाढ़ेकेउ मनकों एसो ढंग सिखावत।

15

जाको लाज सकुच है होय कान कुटमकी ता सों

उठ है छुडावत। रागनी ककुभ ताल चेवट।

होरीके खेल में लरी जिन बाल। कहा भयो तो

पै जो दीनों रेगडाल। खेल परे उनकों आपुन

कों संभाल। जब रहे तें जौवन तेरे रस लाल। रा

गनी ककुभ ताल चेवट। राधे निरतत चल

रा॰
ऊ॰ भ॰

बाढि बनतें आए व्रेंदाबन खेल मच्यो कैंजनम
घ। रैन सकन व्याकुल मन मेरी लाज गई फा
गुन माधोमय। रागनी ऊऊभ ताल त्रेवट॥
नेउ बची मेरी अंगीया उ जरी कान्ह कुंवर संग
खेले होरी। जाय करो कोउ सगरी सखीसे नं
द कुंवर के मंदिर में चोरी॥ मथुर आलीन नि

रतन निरखत आवत मोर हत मन मोहन कों

डर। मग मग पग पग ठठक ठठक ह्वै ह्वै टकी

ओट घन दामन जो मोहत। रागनी ककुभ ता

ल चेवट। अब तुम लाल कैसे खेलत मोसों

होरी। अब ही करत फिरत बनीयो मोसो तुर

तही पीत ओरसों जो री। हो हो हो होरी खेन।

रा॰
ऊ॰ भ॰

न जईए खेलन जईए कुंवर कन्हैया के संग। ब्र
घनैं रंगमैं घमौं बोरी घस्याम वरन छुछोनपा॰
ई रंग। रागिनी ऊऊभ ताल चेवट। मचजोव
तहै राधिकाज्ज्ञ चली बनवारी बृंदाबनमैं हो
री। वेगही गुजनकी माल पहरो मोरमुकट।
सीमदे वाह जोरी। ग्वारबार संग सब लैके ब्रबी

153

र गुलाल भरो फोरी। आईके मंदिरके भितरश्या

मरहे गह पकरी कुंवर किशोरी। रागिनी ऋ

ऋभ ताल धेवट। होहो होरी खेले सांवर चलो

सखी देखन जोबरे। कंचनकी पिचकार छिर

कत जैजै कुलजके तोबरे। कोउ गावत कोउ

मृदंग बजावत कोउ निरतकरत दै तालखडो

रा॰
ऊ॰ भ॰

उरे। चकत भए हर नर नारि लखि एसी होरी मची
नेंद गाउरे। रागनी ऊझभ ताल चेवट। मोहन ऊ
ज बिहारी रंग भर भर पिचकारी छोरत। मोरा॰
वोर केंचुकी मोरी भींजी और बहीये फक फोर
त। रागनी ऊझभ ताल चेवट। कैसे मान रहेगो
आयो फागुन मासरी। कोउ भलो कोउ बुरो मा

154

नेगी नैं हम बोसरी। घर घर तैं बिलन निकसवली
है कहा करी ननद सासरी। होरी होरी अबला घु
कारत सीयरी लैलैउ सासरी। रागनी ककभ ता
ल त्रेवट। लेगार अरे लेगार घटक मटक हूंघट
मैं मटक सेनार। नैनन काजर देसी देखावत।
लाजन साजन काजन करत देखत सकुचउार·

रा॰
ऊ॰ भ॰

रागनी ऊऊभताल चेवट। ऊमलानों आनन मो
हन नम फिरत ग्रनमनें आजरे। बीतत जात स
खिल होरी के विसर गए सब काजरे॥ सब बह
रावत मेरो मन नहीं मानत कहा करो कितजोउ
भलो खान पान मान बोरो भयो जग गोउ। रा
नी ऊऊभ ताल चेवट। होरी आवत रमीयाहीके

155

१४४

सीस चढी याते ऐसो काम। मथमें आई दीरकर
गाह्न पकरत गिन तन काह्नेकी बाम। प्रभु सन्न
ह्न ऐसी ढंग करवाह्नी बात नई नपायो नाम।
गागनी ऊऊम नाल बेवट। ग्रयक ध्यम ऊर।
दीनी लाल तम होरी में भए निहाल। काह्नेकों
पिचकारी भर मारत काह्नेकों मावमीडत ग्

रा॰ ऊ॰ भ॰

लाल। रागनी ऊऊभ ताल चेवट। ग्राज मदमाते स्याम खिले होरी मेरे ऊचकी तनीयो तरकी। भुज भर गरबां लगाय लीनी है वास जो ग्रावे ग्रतर की। रागनी ऊऊभ ताल चेवट। मै तेरे परवारी हो ललना वारी हों वारडारी हों ललना मै। ग्रब बड्त दिन पाछे ग्राए हो मेरे तारी दे दे गावैगा

15b

री हो ललना मै। अब तो लेगर वस पड्यो है मेरे

छी ठेगी कामर कारी हो ललना मै। चोवारे व

दन और अरगजा केसर रंग में पिचकारी होल

लना मै। साह कवीर वेग माया कीजे हमजीते

हम हारी हो ललना मै॥ रागनी झझभ ताल

वेवट। अरे मन मोहन चचर खिलार प्यारे होरी

रा॰
ऊ॰ भ॰

के दिनन में रंग भर भारी केसर पिचकारी। मो-
पर मारी सुंदर बनवारी हाहा हाहा हाहा कर हारी
अबीर गुलाल कुमकुमा केसर घोर मखरोरी-
मल रंग डारी। बाजत बीन मृदंग चंग उफ गा
वत दै दै कर सों नारी। रसिक कल्लनें रस बस क
र डारी ऐसे निपट होरी के खिलारी॥ रागिनी

157

ऊऊभ ताल वेवट। होरी को खेलेरे बिन पीय।
आयो फाग। होरी होरी सब जग होरी मै बोरी वै
राग। मैरा मितवा घरनाहन सजनी मै जहेवि
रोगकी आग। बन तर वरमें कोयल बोले हम
रे भावै काग। फागुन बीतो जात सखीरी दी प
कोरेजे दाग। अलबेली वेसर अलबेली टीका।

रा॰ ऋ॰ भ॰

अलबेलो राज सुहाग। यह जोरा निरूप भयो॰ है हमारी पीतम को वैराग। हौं तो सोवत थी कपरीछे विरह कही उठ जाग। इस मायल पी यके दरसन कारन नैन रहे फर लाग। रागनी ऊऊभ ताल चेवट। मोहन फूल मुरारी गाव न होरी। नारदे ब्रजमें धूम मची है होरी। एक

15

१५८

गावत एक म्रदंग बजावत भाव बीउत तहे नारी
मदमाती कहततहे इत फागुन की यार सब ज्ञ
क आवत दुष जंगल के झुननतहे अरी आरी ॥
रागनी ककुभ ताल चेवट । माई फागुन के दि
वार रहे खेल हम लीजीए । मानत जो मानेन ।
तकनी सब मन माने मत कीजीए । रागिनी ।

रा॰
कृं॰ भ॰

ऊऊम ताल वेवट। दिए महावर गोरे पायन।
नगन जटित कंचनकी जेहर सोवन वनी भ
वनमें डेलन वायन। जेह युगल कदली कढ
केहर रूप अनूप ग्रसोयन। श्रीयवेनेकी मर
पन यनकरमकेतहै चित चुरायन। गुलाल
भरी तन जो लागत मनोहेम चढोलनायन।

१५९

सुघराई प्रभु रीझरहे ब्रषभान कुंवरकौं भाय
न॥ रागनी ककुभ ताल चेवट। छिनरी पउ
रिकैसे भरौंगी नेबमकीनौं मेरो नाह। एकतो
जोबन मदछको फिरतहै महूर खाय मरौंगी
रागनी ककुभ ताल चेवट। वह देखो आली म
धवन के बीच खेलत कुंवर कन्हाई मेरो। ह

रा॰
ऊ॰ भ॰

मजो तिहारे पास बसंत है नई रीत क्यों चला
ई। कंस राजा की आन न मानें फेरत नेद उहा
ई। रागनी ककुभ ताल चेवट। अहो साखी भर
दे पिचकारी रंग की जो डारे पीया पर अपने॰
रंग। अनेक भांत वसों होरी खेलों प्रेम पीया
के संग। रागनी ककुभ ताल चेवट। आई है

160

फागुनकी रित सखी मनमें बढे तरंग। अतर
गुलाब हीं सबके मलौंगी महकरहेगी अंग।
अनेक भांतके बसन भूषन पहर पहर रंगरंग
स्याम प्रवीन से नायक हौंगी करले झांझ
मृदंग। रागनी ककुभ ताल चेवट। होहो हो
री खेले बागमें ठाडे संग सखि लीए सारी। ग

रा॰ लाल गेंद लाला नाफरमाओ फुली ज्यो फिरत
ऊ॰ भ॰ फागुनमें रानी। बेली चमेली केतकी सेवती
फुलबनमें जामें खिलत सदारंग महमदशा॰
म॰ खमीजन कर देदे गाव नारी। रागनी ककु
भ नाल चेवट। मोहन होहो होरीरे। आजहम
रे अंगन गारी देआयो सो कोरीरे। अबन्हीकहो

16

बैठे हो जसोदा ढिगनिकट न आवो ढिग हरि-
मोरी रे। काजर लगाय मोड भडूवा करे पाछे
ले मली मखरोरी रे। कहो रस खान यह गारी-
पर बलिहारी मै तोरी मारेगा॥ मोहन खेलत
वृंदाबनमें संगलीए गोपी ग्वाल। काहूके क
रन अबीर की फोरी काहूके करन गुलाल। नि

रा॰
क्र॰ भ॰

रथ निरष छबि मोहन गई री अवलोकत ब्रजबाल॰
भर भाग अनुराग विपिन बन निर्तत मध्यगो॰
पाल। रागनी ककुभ ताल चेवट। होरी खेलन
श्रीमोहन राधे पनहैं आनकी बार। अन सिंगा
र करे नाचै गोरी लीए केसर पिचकार। उन तें
सांवरो मुकट धरे आयो अपरन मुरली सुधार

16

हो। होहो करकर पकरे मोहन घुंघट दीयो है

उघार। हेरलीयो है स्याम सुंदर कों गर फूलन

को हार। मथुरा मे हरि गोकुल प्राणपीया प्रेम

ल चार। सूरदास प्रभु हमारे मिलन कों चलि

प राजकुमार। रागिनी ककुभ ताल त्रेवट।

लालन होरी खेलत बहुत दिन बीते प्राणपीये

रा॰ गैंह। या वरसा मैं तो बहोत भांत विफाउं सुघर।

कु॰ भ॰ वे मेरी सब साची कहो कौंन सब तो लगायो से

ग निपट सनेंह। रागनी ककुभ ताल त्रेवट॥

नंदलाल सो होरी मैं खिलोंगी। गारी देदे भरी

भराउं मन मोहन रंगरेलोंगी। नाचोंगी उघरी

गाउं बजाउं भुज भर गर बारी लेगी। कृसजीव

163

न लछीराम के प्रभुसों फगुवा लेके छोर मेलेंगी

रागनी ककुभ ताल चेवट। सब बोरावत मन

मेरोइ ग्रब कहांकहे कित जाउं। भूलो खानपा

न नहीं भावत है रु मोको ग्रब बेरी भयो सब।

गाउं। बाजत मुरलीकी धुन सुन मन मेरो उक

लावै जीय लाल बिन नाहि नचैन। एकतो बिर

रा॰
कृ॰ भ॰

हाडखिटाई माई कुहूके कोकला हूके परीजीयमें

घ्रत भर भर आवेन। रागनी ककभ नाल चेवट।

अहो घन घुमडयो मानों मगारे ब्रजमें बीजलीच

मकी वरसानेकी ओर। अबीर गुलालकी वाद

र छाए रंग फुहार परे फरबोर। अलबेलीके म

हल मची होरी। अबीर गुलाल के बादर छाए

16

रंग फुहार परे फर बौर। रागनी ककभ तालवे

वट। अलबेली के महल मची होरी। अबीर।

गुलाल के बादर छाए बहीयां पकर रंगबोरी

बाजत बीण मृदंग झांझ उफ नाचत तालदे

दे गोरीको काहकौन कान करतहै मलहीना

फागुन कोरी। रागनी ककभ ताल चेवट। हो

रा॰
कु॰ भं॰

री खेल लै रसीयो मन भावसो। इदर उदर के उ
है नाही करले तेरे जीय चाहे सों। रागनी कऊ
भ ताल चेवट। कहां गयो मेरो लाल कवन न
गरी। पात पात हेरा बन ढुंढ्यो ढुंढ फिरी।
बिरज नगरी। गोकुल ढुंढ कुंजबन ढुंढे
ढुंढी है मथुरा नगरी। प्रान मिलावो नेदला

166

लकी नाही तो गिरोंगी जमुना गहरी। मन मो

हन बिन ब्याकुल सजनी ग्रान मिली हरि ग्रब

री। मीराके प्रभु गिरधर नागर ग्राङ्ग प्रजा बोग्र

भु ग्रब हमरी। रागनी ककुभ ताल त्रेवट।३

न मानी गोरी निकस चली जमुना। ग्रपनें मो

हन सेग रानी मातीयो चाल चलत जैसे मद

रा॰
क॰ भ॰

हानी। रागनी ककभ ताल ठेवट। मनवारीसो
बरो भयोगोरी। गरबोलगाय बोलीया ममका
ई हूनर क्षीन लड मोरी। कैसे कौं गुईयोको॰
उ याके हातन बिलन रसीया नयो होरी। का
री नेरी बरछी लगी कारी कारी ने। भौंहकामा
न तानकों जानी निरगहतीर काहे मारी। क्रस

168

(५८)

रसिक कसकत निस बासर यह चित बनै है सु

नियारी सा। मन मोहन लियो रसीया गोरी ब

हीयां पकर बातन बातन। मलकर अबीर गु

लाल मोरे मुख पर अपने रंग में मोही बोरी ब-

हीयां प। काके मन सो मन अटको साबोरी ह

मरा बालम घर नाही रहत। पीत पराई जान

रा॰
ऊ॰ भ॰

तनोही जोन मईकों ठगो सखीरी हा। रागनी ऊ
ऊभ ताल सफाक। मेरे रसियानैं धूम मचाईद
यया मै क्या करे। नैनन कजरा श्रयरनवीरीह
त मरहदीरचाईद॥ जल कैसे भरुं जमना गहरी
सनमुख राजाराम के। ठाढी भरुं तो राजाराम
देखत है बैठी भरुं भीजैं चूनरी स॰ भरपिचका

168

री मेरे मुखपर मारी गोद फडला वाके शिरंग

गारीम। मै तो स्याम सौं होरी खेलो सजनी आठ

पहर मैं धूम मचाउं सोछ नही दिन रजनी॥ रा

गनी कुकम ताल स्ह, मोबरे रंग डारो छेगीयो

भीजगई मोर। छेगीया मोरे मण कैसे आईकर

डारो मरा वोर। वैरन खनी हे सासनन दीयाबन

रा॰ मे मची है सोर। अब न बसो यारी गोकुल नगरी॥

कु॰ भ॰ बसे जहां चित चोर। बर जोरी ठक टोरत अंगीया

बरज्यों न माने मोर। गावै उदर घर जो न दे सोई

जीवन जनम निहोर। रागनी ककुभ ताल ३।

आहे आई रित नवल बहार कोयल कुहके दई

अब जन उहन बिरह के रावन कस्यो अंगार।

(6)

चलो विरह सब जलबल मरिहै चढ परामकी

आर। बिन सईयो को प्रेग पनल बुजावै उमह

जोबन तन भार। गावै गुदर ते वेबस विरहन

प्रीतम लागो गुहार। रागनी ककुभ ताल सं·

छुनरी हमारी क्यों रंग डारी रे। देखत है मेरे व

गर पड़ोसन सास ह्नने दे गारी रे। हाहा करतऊं

रा॰ पईयो परत है मानो बिनती हमारी रे। जानकी दा
ऊ॰ भ॰ स प्रभु फेर मिलोंगी करी ये चाह ते हारी रे। रान
नी ककम नाल स। तो है कान्ह बुलाय गयो के
जन में उपड़ा को जालो दे गई। ग्री होरी सारु
तोरी तो वरजी नार हो मैनन मे हाहा खातरी॥
गोरी काहे तेरो बदन भयो मैलो। क्या तेरा पीया

पीढदेसो याकाके रात न्दरी सोई। रागनी ककु
भ ताल त्त्र्। उफकाहेके बजाईरे ब्रज वासी।
डफकी धुन महल में पहूंची कलन परत मैभ
इ दासी। नेद नेदन पीया होरी खेले सेगली
ए राधा गोरी। अबीर उलाल केमकुमाकेसर
माखसे मल दईहै रोरी। रागनी ककुभ ता॰त्त्र॰

रा॰
क्रु॰ म॰

होरी खिले नंदके नंदना श्रीगोकुल के मा फल॰
लना। नव ब्रज वधू उन इन सब सखा लि एक
बीर गुलाल मुख मलना पग नूपुर बजे ग्रब्जी
गत चलना। रागनी ककुभ ताल खलफाख
राजा बल के द्वार मची होरी। उडत गुलाल ला
ल भए केसर पिचकारी नरंगमे बोरी मथमाती

171

१२

घोरी न्हान चली जमुना। पांच रुपैया बाकी व
रचीनी भेजी सेगलीयो घरको वमना। रागनी
ककुभ ताल रू॰। मैतो स्याम सों उहार मिलौंगी।
वेसी बट तेरे होरी मचैहै मेहुं वोही चलौंगी।
सासन नेंद वकाई करेगी टेकसो नाही टलौंगी॰
तन मन धन मेरो स्याम लेहंदहै पाय पायकै

रा॰
कु॰ भ॰

घैलोंगी। जो गुरुजन समझावन ऐहैं परगन ए

कही लोंगी। जानत प्रेमरंग प्रभु ठाकुर साव॰

मों फाग खेलोंगी। जानत प्रेमरंग प्रभु ठाकुर

सावमों फाग खेलोंगी। रागनी कुकुभ ता॰ स॰

नंद लाल गुलाल लोचन डाली। चंदन बंदन

अतर अरगजा साव मली रोली दईरी गाली॥

रागनीऊऊम ताल रु। होरी होरी मै चलोरी ब्र
होरी किशोरी ब्रज खोरी। बहोरी ममोरी पैहो
री नथ तोरी मानन जोरी बोरी निर खोरी॥ लेग
र मोबरी छोडो छोडो हमारी बाट। जिन फेरो।
फोरो मोरी गागर भरन देहौं ईन घाट। जिन ब्र
चल पकरो कक फोरो देखो विचारो ढोर। नम

रा॰ होरी के रातें मातें बोलत श्रौरकी श्रोर। लेहों वेर
ऊ॰ भ॰ निवेर सबन पैकरी पन काहूकी कोन। श्रीवि
ठल गिरिधरन लाल हम जीते हों ससो कोन॰
रागनी ऊजभ ताल स॰ राजत है ब्रषभानकी
पोरी। ब्रजके श्रांगन खेलत पीय संग रिझब
सेत श्रागम जैसे होरी। ताल मृदंग बेन चंगबा

173

नत सरस बो हरी पुन थोरी। अगर जवादि कुम

कुमा केसर छिरकत स्याम राधिका गोरी। ज

बही रेचकी पीत पट पकरत यह रस रसिक।

देत फक फोरी। परमानंद चरन रज बंदित रा

या स्याम बनी है जोरी। रागनी ककुभ ताल सु

माई होरी खेले मोहना लीए गुलाल अबीर व

रा॰ निकसि चली सकल ब्रजबनिता पहिरे बिबिध॰

ऊ॰ भ॰ पट चीर। अगर जवादि कुमकुमा केसर छिरके॰

स्याम शरीर। उड सुसकाय परस्पर खेदर दस

न झलके सखि हीर। प्रेम पतंग पिचकारी छू

टत आरुज मना जलनीर। सूरदास प्रभु रस

बस कराली नी इन हलधर के बीर। रागिनी॰

१७४

ऊऊभ ताल स्हल। स्यामा न कवे म्हर ग्रतवनी
ब्बबकछु बरनी नजाई। सौंने सरस सु नार
गछी है हीराला लल गाई। ग्राये ग्रयर बिराज
त मोती लाल रहे लल चाई। यह सोभा हरि
वेष सोबरे चित्त चले म्हसि कपाई। रागनी ऊ
ऊभ ताल स्हल। उफकी प्रेकार स्हुनी युन।

रा॰
कु॰ भ॰

मुरलीकी गोकुल मथरीफ रही ब्रजनार। एक॰
किसन स्याम संग गोपीन याई वृषभान नंदनी
सो मिल ग्वालनी आई। रागनी ककभ लाल रू॰
गुलाल चुटा संग रंग कर बरषा एसी उफधुंका
र घन गरजनन तामें एसी फाग सुहाई। दामनी
सी पानर निरतनत तामें कोकला से कंठ नाननार

175

सौं गाई उरपति रपरि लागआट उमड घुमड घ
घीरकी बादर छाई। रागनी ककुभ ताल रू॰।
बरषारितु रंगकी ब्रजमैं घनस्याम उमड घुम
ड रंग छायो। अबीर गुलाल घटा छाई अंबर
ख दामनी मृदंग गरजे रंग बरसायो। गैंयगो
लायक मान मतिकौं मनमोह्यो मान गढ छा

रा०
कु०भ०

यो। फागुनमें बरषा रितकीनी कूल रसिक खेल
मचायो। रागनी ककुभ ताल ठु० ऐसे खेलन०
बदैगी ग्वनो खे होरीके खेलार। बाह मरोर द
ए पिचकारी और नोवत गरेको हार। कपटल
पटसौ उमड घुमड कर रंगडार पिचकार।। रा
मदास मलारही गावत बरषत रंगकी धार।

178

रागनी ककुभ ताल सू॰ बाजत डफ बीन मृदंग॰
सुर मंडल बाजेनी की संगत सो सब गुनन मिल
होरी। जैसी मदनेरे तैसी मैं रहत तन ध्यान उप
जत उपजे बहुत सुख भारी। डफ की धुंकार सु
त सुन धुन मुरली की गोकुल मथ री फरही ब्र
ज नार। इतनै कान कुंवर संग गोपन ध्याप उत

रा॰
कु॰भ॰

ब्रषभान नंदनी सो मिल ग्वारनि आई। रागनी कु
कुभ ताल त॰ आलीमैं तो घन कुम आईहो। खे
लत महमदशाह बाचर खेरे लाग चपला॥ उम
ड घुमड घनज्यों रंग बरषत परतको पिचकार॰
अबीर गुलाल को बादर छाए मानों कामनी दा
मनी चमकत बदन उजार। रागनी कुकुभ ता॰

177

ग्र होरी गोरी होरी चाचर खिले लीए कर कुमकु
म रोरी। पिचकारी भर भरके मारत चनन्यों उ
मड घुमड चहूं ग्रोर। रागनी कुकुभ ताल ह।
सलोने स्यामके धाम खिले होरी ग्रान। सकल
ब्रजकी बस करबेकों एक मुरली कर लीए मा
न। ग्वार बार सबसंग सखो लीए गावन फाग

रा॰
रु॰ भ॰

रावके राग। धन धन रुंबर कन्हैयाकहावे राज
न मन महाराज॥ रागनी ककुभ ताल हल। मा
ई मानो हन उनर आयो विलन महमदमा चाव
र फरलाय। जर तावकी गेंद पछारी दामन भा
व बनाय॥ परीप छैल विकनी यामनवारोभ
यो डोले। आवनकों मगरों करयो गारी दैदै बो

178

ले ।। मोहे भरौं जिन मकझ्या । भीजेंगी मेरी सुरंग

चुनरीया तोहे कहेंगी पानी तें हरीया । गगनी

ऊऊम लाल सुलाल । होरीके दिननमें ग्रत ब्रजना

र । फगुवो मांगत सुतकाय गाय सुखसे बोल

त उठाकर दैदै तार । मोबरी गोरी नारी जोबन

की मतवारी मथझकी विथुरी उफकी यमक

रा॰
ऊ॰ भ॰

कहूं मृदंगकी गतकारी भर फेंकत केसर पिच॰
कार। अपनें अपनें गृहतें निकसी धूम मचाई॰
नंदकेद्वार। भींजत चीर सबीरंग रातें केसर भी
नो अतर गुलाब सुशारंग लीनों सखबर चवर सु
ढर खिलारी निरतन करत थनथन गिरधार। राग
नी ऊऊम नाल सूल। खेलत फाग बडो अनु॰

121

राग सुहाग सुनी सावकी रमके। औरसुबीरले

लै केसर सब तरनी मोहन सावलावनकौं ल

मके। जब दौंरगुलालके धुंधर भूमरमें ब्रजबा

लनकी उनीयो दमके। ज्यौं सावन सांझ लला

ईके सांभ चहूं दिशतें चपला चमके। रागनी

ऊभ ताल सल। आई फागनमें पावसकी

रा॰
कृ॰ भ॰

रितते सीय प्रबीर गुलालकी घटा। भोउर उडत मानो जगत चमकत निरत नारी जैसे बीज छटा। उफ म्रदंग धुन गरजत तामें गुनीजन गाव तदाउर रटा। अहमद अलीद्रसे बरसत है के चन भूषण पसीनामें रतन जटा। रागनी कक भ नाल स्ल। अपम मधुब्रजमें होरीकी रंग

180

की परत फुहार । अबीर गुलाल के बादर छाए
भर भारत पिचकार । घटा घोर चहूं ओरनतें उम
गी चमक बीज आई है द्वार । अपनेंरी अपनें मे
हिर मे गावत गौड मलार । रागनी ककुभनाहः
अहो घन हूमडो मानों नेंद गोवतें बरमानें तें च
मक दामनी । पिचकारन धार रंग बरसत है वा

रा० सरहोगाये जामनी। रागनी ककुभ ताल सूल॥

ऋ० भै० देखीयतराधे तेरे नैन बैन मधमो भरे। घूंघट

ओट बदन राजत मानों बादर चंद दुरे। जेहर ब

नी जराव कीरे बिछुवा रुचर धरे। कर सिंगार

पीयपै चली मानों गज गत चरन धरे। खंजन

मीन मृग नैन पै वारे नाशा कीर छोर बिद्रुमस्र

18

धरे। कोकलकंठ दशन दाडिम ज्यों कटिके

हरकरे। श्रीफलसे कुच जुगम विराजत मोह

न मनज्यों हरे। सूरदास स्यामकों हसबस।

करलीनें प्रेमप्रीत रसपरे। रागनी ककुभता

ल रूल। प्यारे रंग भरडारी मोहे प्रानप्रहो ब

नराज नहीं मोहे लाज। चेदन बेदन झमझमा

रा॰
क्र॰ भ॰

केसर सब अंग छिरकत नहीं न आवत नोंहे खे
लन देखत सखा समाज। रंग कमोरी मोरे शिर
ढोरी अपनी वेर कों गए हो भाज। नारी दैदै ना
चत मोहन गारी देत भूषन सों महाराज। राग
नी कऊम ताल खल। अहो कैसे मन मानें मेरे
वस अनत जाय खेले होरी। किन नैनन यह।

182

ग्रेजन दीनों किन सख मींजी है होरी। उर नख
चिन्ह प्रकट देखी पत है पलकन पीक लगी
कछु थोरी। पगन धरत डगमगो धरन पै केसे
हूरे मोंथी की चोरी॥ रागनी ककुभ ताल हू:
पारी रंग भर दीनें दोउ नैन। लपट झपट बही
यो गहेली नी गारी दई सख बेन। सगरी सखी

रा॰
ऊ॰ भ॰

यो मटक गई है होरी खेली मोसें रैन। भोर भए
हाहा कर छुटी बिन देखे नही चैन। रागनी ऊ
ऊम ताल मल। पसो लेगर बट पार कोन्हर ऊे
बर में हो हो कर खेलत होरी। हों जो गई आली
पनीया मो है पकर गल चा देह सब मीडी हैरी
री॥ हम कौन हो ऊ कहां तें आए लाल। हमब

183

मको पहचानत नाही काहीकों डारत गुलाल। गागनी कुकम नाल। लल। ओढे सारी प्यारीग्र के रंगकी रंगकी छिरकी। रसबस मैंकीनी ब लमाकों याहीतें फिरत फिरत फिरकी। मद मती जोबनकी होरीमें गारी देत सबनकों फि रकी। डारे अबीर गुलाल सोये नन हुंघट मदा

रा॰
ऊ॰ भ॰

रंगकी खिरकी। रागनी कुकुभ ताल सूल। परी
यहै जोबन तेरो होरी मेकेसे बचैगो। एकउर॰
है मोहे वा दिनकौं सखी जादिन रंग मचैगो। जा
दिन उह पडेगी स्यामकी तादिन कौन बचैगो।
सूरस्याम आली बडेही कठिन है रसले मेंगात
चैगो। रागनी कुकुभ ताल सूल। आज कहो॰

18?

होरी खेलेहो ललना तुमकौन बालन संग।छै
ल भयो डोरत करत फिरत औरन संग बरजो
री। अब आय अचानक बहीयां मेरी मरोरत हा
थन लावो अंगीया परनाम सलो नावेरोरी ॥
रागनी ककुभ ताल सूल। कैसे होरी खेलत।
हो लालन ब्रज बालन संग छैल भयो करत।

रा॰ ऊ॰भं॰

फिरत बरजोरी। आय अचानक वहीयो मरोरी क
पटक मनकेतुकी तोरी घूंघट पट खोल मरोर
मसल गेरी। रागनी ककुभ ताल तूल। कैसे हो
री विलमै मै तुमसे लाल। हमसौं अबय वद और
नसे नेग रसनेकन थरहु चितमैं लाज।। बारेना
ह नेग मेरो जोबन योंही जाय। ए दिन हे मनभा

185

लनकेरी सजनी निसि कैसे कवि हाथवा। नग

भूषन सों जरी जात इतनसो नाहिसो हाय। मे

रे तो जीयमें एसी आवन है लीजे होरी विवखा

य। कैसे फाग खेलों फागुनमें सखे मीडत गा

रेलाय। अबीर गुलाल अरगजा के सव कैसे उ

हे रंग बरषाय। रागनी ककुभ ताल सूल। क

रा॰
कृ॰म॰

बनगुन कबन में च पठ डारी सांवरे। ग्रहो तेरे म
रमन जाने नेदन रावरे। एक व्याकुल एक भई
है बावरी सब ब्रज की ग्रीर गोकुल हरिहर हि
वावरे। सुन धुन मुरली बाट घाट कुल कुक
सिबही अपने अपने ठांवरे। प्रेम जाल ग्रभुरा
ल आयो मुझे तिहारे नेदके नेदन दोउ पांवरे॰

186

रागनी ककुभ ताल सूल। परी मेरी तिहारी ग्र
त बारे मेले कित जोबन जारे। कमत पिता मे
या ग्रपराधि नै वाहै वज्र मारे। बिन देखे सगा
ई कीनी कौन पाप उपगारे। कहा कहे यह।
कुटंब नगर सौं जिन यह काम बिगारे। रागनी
ककुभ ताल सूल। बिरहन बिरह भरी कोजी

रा॰
क॰ भ॰

वै आयो फागुन मास। जिनको पीया परदेस स
खी रोवे लेत है सीयरे सांस। ईन मथुरा उनगो
कुल नगरी मदन रायकी हास। मन डःख त-
न एसे सव तज्यों सकन बनकास। रागनी।
ककुम नाल खल। होरेके बडे खेलार देखे अ
नो हे आज। पाके तें आय खाल मीउ अेक भर।

187

गरी जात हो लाज। किन सखी ननोहि दीनीर
वेरे गारी दई हों नैन आयो बाज। ग्रथक सही
है ग्रबनसहोंगी कुल चेद महाराज।। रागनी
ककुभ ताल स्ल। डारोरी मेरी ग्रोखनमें गु
लाल भर भर मोहन मद गोपाल। केसर की
पिचकारी सखपर मारी भिज गई रंग सारीना

गा॰
ऊ॰ भ॰

घर देतहै गाल। गगनी कुंकुम लाल सहल। नाखे
ले मै नाखिल न देगी होरी सुनो एमा सुके घुत
की बरजोरी। नेसमझा समझकर ऊच परडा॰
गे हात रंग पाछे डारे ननदीया खोरी। जो ने
अपनो रंग लाबो जाबो देखतहै सब चोरा चोरी
शोक रंगासीमै रंग खेल आई ऊचकी होरी हो

188

ऊचकी होरी। रागनी ककुभ ताल खूल। खिल

न बाल गोपाल लाल मेरा म्हाव मीठे मन खेले

अहो लाल। घूंघट ओट बदन राजत है बिध।

बादरकी ओले। चिकने चबर छूटे बेनीतें म

नही बसनमै डोले। मानो रूपमंजरी लीए

चोंप बढाए मधुरे बैनन बोले। नार गंवार

रा॰ गावदे चलीहो म्हहो म्हहो ले लाल। रागनीक

ऊ॰ भ॰ ऊम ताल म्हल। एरी मन लेगयो वैनबजाय।

मधुर मधुर स्वर ग्रधरन धर हरिरस भरितान

म्हनाय। म्हजर स्याम छविछाई द्रगनमें जित

देखो तितद्दैहे देखाय। जानकी दासकोई ब्र

भकों मिलावै ताही को धरैगी पाय। रागनी।

18

कुंकुम लाल गुलाल। होरी के नए ख्याल नाम क
रत रंगीले लाल। कान्हसों लपट और झपट
कान्हसों कान्हको कसत हो पकर भुज लाल।
जानकीदास करि हरि निहाल कान्हे कान्हेकुं
करत निहाल। रागनी कुंकुम लाल गुलाल। हो
रीके खिलार भावते महीं अब जानन देहों। रंग

रा॰
ऊ॰ भ॰

भीने बागे बना एक को भर फगुवा ले हो। चोबा चे
दन और कुंमकुमा केसर कल सब ने हो। अरगजा
मिसौं कहत न स्वामिनी मिल नन को नाप बुजे हो॰
रागिनी ऊकम नाल ख्याल। रस मसे लाल भीज
भाज घर आए मेरे लालन। जोबन भर अबीर।
जिन डारे हाहा करे परे पाईये लालन। ॥

१०

रागनी ककुभ नाल खूल। उफ म्रुदंग और बांस
री बाजत है गावत राधा गोरी। एक पैंचत पी
तोबर ले फारत एक चेहुवा भर ले जात मैं रवा।
री गवाई। डरते देत दिवाइ होहो कर करहो
री मचाई।। देख सब धाई है ब्रजकी बधु सब।
मिल एकर कांन्हले आई। आयरवक मयवे

रा॰
ऊ॰ भ॰

लरच्योहै नकणीबारउनायाई। काह्नुनी पीतो
बर पकरे काह्नने मुरलीया लईहै छिनाई। श्रा
नेद बरस बछो गोकुलमें फगुवा लीनों मबन
मन चाई। रागनी ऊऊम ताल म्हल। छोंडदे
छोटा मईके देहों नेदउहाई। जाउरतेहों इत
न श्रावतही मोईबात मेरे श्रागेश्राई। बारोई।

१९१

नदोय ग्रोवीयन को जिनय पमी कुंज देखाई कोउ एक्हो नो कहो वनोउ ग्रावन नाह मोपै वान बनाई। रागनी ककम नाल खूल। देखि स्यामने धूम मचाई देखन होरी ब्रजमे। कबमें उन ग्रोर गले लगावन मगरी देन डहाई। इन नें कोन्ह ग्रबीर उगवन उननें राधिका

रा॰
ऊ॰ भ॰

केसर लाई। पिचकारनकी मोर मकुट पर देत॰
गार मोहे यह छब अधिक सुहाई। रागनी कक
भ ताल सूल। आज आए होरी खिलनकों स्याम
वृषभान सुताके द्वार। एक गावत एक मृदंग
बजावत मेंगलीए सब ग्वार। अबीर गुलालक
म कुमा केसर पिचकारीनकी मार। सखीन स्या

१.१२

मकै स्यामसखा बीनकै गावन देदे नाव। धनध
न जीवन बरसोनेमें मोहलई ब्रजनाव। रागनी
ऊअभ ताल चल। धमाव उफबाजन लागोरीब्र
जमोहनके द्वाव। अपनें अपनें मंदिरतें आई ब
नबन सुंदव नाव। कोउ ऊंमऊमा कोउ पिच।
कारी कोउ गावेहे देदे नाव। नाचत गावतरंग

रा॰
क॰ भ॰

मचावत मारत है पिचकार। रागनी ककुभ नाल
स्तल। मोथन कौंन लरे कैसे नारि सी आय। श्रो
वन देखत सजनी बाकौं केथ लीयो परचाय।
श्रवनो बात ग्रट पटी कीनी कैंनस कैसे कराय
बामा तुष सों डरी परी सजनी जीवत माखी खा
य मूला। होरे लाल चखबसे श्रनत मे आपहो मेरे

193

धाम। अधरन अंजन भाल महावर गाल लागी

है गुलाल॥ रागनी ककुभ ताल चल। भई जो

वन मदमाती इइ होरी की विलार। सब देखत

कोउ कहो कहे गोउर पर तो अवरा डार। सासन

नंदकी कान तनी है सखितें छुंचट टार। अवही

लगनै है अब लोकिन ढिग ठाडे मदन मरार॥

रा॰
क॰ भ॰

रागनी ककुभ ताल स्हल। भार मरोरी सुवरा सुरा

य छिपाय चली सुंदर स्याम मोरी। मुरली सुनत

फगुंआर केसर रंग पिचकारी संग लाए आवत

नंद किशोरी। खेलन आए नंदलालजु सखीरगु

लाल भर भर फोरी। अबके फागुण धूम मची है

खेलन होहो होरी।। इति कल्पद्रुम परिछेद:।।

१४

बत खर नानन ले खर मोरी। मोहलीये नर

नारी मरली की धुन सुनाय बनवारी बोर-

रागनी ककभ नाल थीमा। श्रीराधामाथो।

खेलेरहो होहो कर बोलेरे। रीक्क जीक्क दो

उ हसत परम परब्रजकुंजन मध डोलेरे।

नीलांबर पीतांबर राजत आनंद करनक

गा॰
क्रु॰भं॰

लोललेरे। श्रतर श्ररगजा मृगमद केसर सगंध
उठत फकों लेरे। रागनी कुकभ तालधीमा
लाल पहचानें जु तमनी के हीके खिले फा
ग। श्रवीर कुमकुमा केसर रंगले मावजात
हो भाग। रागिनी कुकभ तालधीमा॥ सज
नी छुर गई छुरई सजनी॥ ❖ ॥

195

201

अथ राग गंधार ताल। । आज अति राजत दंप
न भोर। हरत रंग के रस में भीने नागर नंदकिसो
र। अंस न पर भुज दीये विलोकत इंदु वदन विव
और। करत पांन रस मत्त परस्पर लोचन त्रिषित
चकोर। छुटी लटन लाल मन करष्यो ए याके
चित चोर। परिरंभन चुंबन आलिंगन सरमेंदर



गे·रा·

कलचोर। पगाङग मगान वलनवन विहरान नव
निङ्जवनचोर। हिन हरिवं मलाल ललनो मि
लिङियो मिरावनमोर॥२॥ रागवंयारनाल। ॥
ब्रजनव नकणिकंटव मऊटमणि शणमा श्राज्ञव
नी। नखेमिखेलो श्रंगाश्रंगमाभ्रवीमोइ शणमय
नी। यैंराजनिकवरी मंत्यनि कवकनकंचवदनी

बिझुर बेंद कन बीच ग्रई बिधुमानो ग्रसन फनी·

सो भगारस सिर श्रवनय नारी पीय श्री मे नटनी·

भ्रकुटी कांमको खेंडनैन सर कज्जल रेखव्रनी·

तरल तिलक ताटंक गंड पर नासा जल जमनी·

दसन कुंद सरसा धर पलव प्रीतमसन समनी·

चिबुक मध्य ग्रति चारु हह सहज सखि बपामल बिं

गे·गा·

ढकनी । पीनपयोधर रतन संपुटकच केंभ्रकिकोस

बननी । भुजमृणाल बल हरनि वलयजुत परमस

रस धवनी । श्याममसी मनरमानौं मिडवारी रवी हवि

रवनी । नाभि गंभीर मीन मोहन मन खेलन को

हदनी । क्रमकटि पृथु नितंब किंकिनि वृतकद

लिखंभ जघनी ।। पद पंकज जावक युत ७

भूछणा प्रीतमअउर गवनी । नवनव भाव विलो
कि भाम रम विहरत हेबर करनी । हिन हरि वे
स प्रसंसित श्यामा कीरत विसद चनी गावत श
वणनि सनत सावाकर विष डीत दमनी ।
रागगंधारताल । । देखत नवनि कुंज स
नि सजनी लागत हे अति वाह । माधव काके

गं॰ ग्र॰ नकीलनाले रच्यो मदन प्रगास । सरद मास राका
निसि सीतल मंद सुगंध समीर ।। परम ललवधम
प्रफुलत विप कितन दल कोकिला कीर । बहुविधि
रंग मंडल किसलय दल निर्मित पिय सखि सेज ।।
भाजन कनक विविधि मधु रचि नर्धरें यरंनीपर हेज·
नापर कमल किसोर किसोरी करन हास परहास ।।

3

श्रीनम पंनि उरज बर परसत प्रिया उसवति वाम

कांमिनि कुटिल भृकुटि अवलोकित दिन प्रति

पद प्रतिकूल। आतुर अति अनुराग विवस हरि

धाइ धरत भुज मूल। नागर नीवी बंधन मोचत

ऐंचति नील निचोल। बधू कपट हठि कोप कह

ति कलैनै निनैनि मधुबोल। परिरंभन विपरी

गी·गो·

नरति वाति सरस सरति निजकेलि। इंद्रनीलमणि
मयनकमानौ लसत कनककी वेलि। रतिरनमिशु
नललाट पटल पर श्रम जल सीकर संग। ललिता
दिक अंचल झकझोरति मन अनुराग अभंग। हि
नहरि वेसज श्याम सजि वनिनकुलरसा सरनसार ॥
श्रवण मनन ध्यान करति राधा पद अंबुज स

4

क्रमा॥३॥ राग गौरी ताल। ।आजु वन क्रीड
त श्यामा श्याम। सुभग वनी निसि सरद चांदिनी
रुचिर कुंज अभिराम। खंडन अधर करत परिरंभ
न ऐंचत जघन दुकूल। उर नख पात तिरछी चि
तवनि दंपति रस ससम तूल। वेभुज पीन पयो
धर परसत वांम हिमा पीय हार। वमनति पीक

गे·रा

अलक आकरषत समर भ्रमित मनमार । पल पल
प्रबल चौंपरस लंपट प्रति नंदरास कुमार । हित
हरिवंस आगवन नटन हो बलि विसद विहार ॥
राग गंधार ताला ३ । आज बन राजत जुगल
किसोर । नंद नंदन वृषभान नंदिनी उठे उनी
दे भोर ॥ उग मगा तपग परत सिथल गति

परसत नख ससि छोर। दसन बसन खेडित मावे
मेडित भाल तिलक कछु थोर। डगनन कचकर
जिनि कैरों केनैन ग्रहण थलि चोर। हित हरि वे
सवैभारत नत मन हरति समुद्र जकोर।५। राग
गैयार नाल। । बनकी कुंजनि कुंजनि डोलनि
निकसित निपट सांकरी वीथिन परसत नाहि

मे॰ग॰

निचोलनि। आनकाल रजनीसव जागे स्त्रवत सब

द्दग लोलनि आलस वलित प्रकत अति आकुलक

कुंड पजनि गति गोलनि। लिलन भ्रकुटी वदन मंड

जमरगसरसहासमधुवोलनि। अति आसक लाल

अति लंपट वसकीने विनमोलनि ॥ विललित

सिथल स्याम कुटीलट राजत रुचिर कपोलनि।

८

रति विपरीत छुंबन परिरंभन चिबुक चारु टकटो
लनि कच कुच कर अमित किसलय सेज्यापर स्रवे श्र
वल जक झोलनि । दिन हरिवंस दासरी यसीव
न वारदि केलि कलोलनि ॥ ६ ॥ राग गंधार ना-
प्रीतम दोउ वने मरगजे वागे । नवनि कुंजनै नि
कसि मानहो पीय पाछे धन आगे । छबि हिन अधर

गे॰रा

पयोधरमंडितनंगउविराजतहारो। छूटीलटहूटी
मणिमालाअर्द्धंचूंघटछबिधारो। नखसिख
उसमकीसैनाछूटेहेरतवारो। स्यामस्वामिनी।
कौंमरवसर्वसविलस्योस्यामसभागो।।७।कहूंलौं
अलकेदैहीओट।। चंचलचपलकटैराछबीलोआ
निबसोमगजोट। खंजनमीनकमलश्रुतिलाजत

१

उपमा हीजे कोट। सूरदास प्रभु कहौ लौं राधवरनी
नाहिन रूपकी टोट।८। राग गंधार नाल॥ ॥
भली यह खेलिवेकी वानि। मदन गोपाल लाल
काहूकी नाहिन राखेत कानि। देखि जसो मति
करत वसनके पहले मोट मथानि। फोरि फोरि
दधि डारि अजिरमें कौन सहे दिन हानि। अपने

गे॰गा॰

झायलेदेनवन चरकौं हृनभांन हृनसांनि । जोवर
जैनो श्रांविदिवावे परचरकूदनि दांनि । टाफी ।
हांसनि नेदजकी गांनि मंदकमल मुखवेपानि ॥ पर
मानंददासजांननहे वोलि हुकिदे श्रांनि ॥ २ ॥ राग
गेयार नाल निनारा ॥ ३ ॥ टाफी जसोदाकहे य
ह सब ब्रजके लोग लालके मोहन लागणे रहे ।

४

८३

जाके भवन जात न कबहूं सुजन टैं अनिराहै । प
क गांउ एक वास बसैबो केसैं जान निवरै । तुम
जिन खीजो मात जसोदा सबनिकौ जीवनिय है ·
परमानंद श्रीगिवरो जाकौ जूठैफौ हरिखव है ।८।
राग गंधार नाल । । सुनहूं यौं अपनैं सुतकी
वात । देखि जसोमति कांनिन रावन लै माख

ग-रा

नदपिखोन। भाजन भांतिउादिसबगोरसबोटन हे करिपान जोवरजोंमो उलटि डरावन चपल नें नकीचान। जोपावन सोलेन चपल हटिनेकडुना ह्रिडरान। होसकुवनि श्रेवर करथरिकें रहीफांपि नावगान। गिरिधर लाल हालपसे करिवलेया य नसिकान वनभुज दास सेगाहो आयो ९

हरिसों है देसात ॥१११॥ राग गंधार ताल ॥ ॥
गोकुल मनहु जसोदा गोरी। नंद नंदन मेरे मंदिर
मैं आज करत हैं चोरी। हौं भई आनि अचानक
ठाढी कह्यो भवन मैं को री। रहे छपाइ सकुचि
रीच करीह मनहु भई मति भोरी। मोहि भयो
माखन पछितावो रीती देखि कमोरी। जब ग

ग॰रा॰

हिंवोहकलाहल कीनौं नवगहिचरणनिहोरी ॥
लावेलैन नैंनजलभरिभरिमैं हरिकोंनिननोरी ॥
सूरदास प्रभुदेवनिमादिन पेसी प्रलकसलोरी ॥
रागगंधार ताल। । हाहाओरमनेगोकोऊ। व
डुरिगवालिमावेनैं जिनिकाढेजोहमजानैंदोऊ
कालककाह्हनिपटमोरोहेपांयेंचलनसिखायो

10

नासों कहति भवन अपनैं मैं चोरी माखन खा
यो। घरहु करन कलेउ क्रम क्रम जो कोउ बढ़त
निहोरे। सोकौं अनन सकुच कोलरिका केउ
किके बेटनोरे। वनभंज प्रभु गिरि धरन वेद
कौं कूहैं हीलावनि खोरे। केहे काढु श्रीरगो
पको इन नहीं के अन होरे।।३।। रागगंधारनाल

गे॰रा॰ नितउठिदेनउराहनौंआवै। यहजसवालीज्योवन
मदमातीछूटेहीदोषलगावै। कहियौंभाजनथ
रेपराये कहौंमेरोमोहनपावै। लरिकाअतिसक
माकुचाहैंकरहलथरसंगाविलावै। कबहूंक
कहतिकेउकीफारी कबहूं कछोक बतावै॥
कबहूंकरईमथानीलैकैं आंगनसोरमैवावै॥

मन मेरो लाग्यो कमल नैनसौं अनत न बहुत बनावे
बनभंजन प्रभु गिरिधर माखेचहि मिस छिन छिन दे
खो भावे। ७। राग गंधार ताल। । श्री मेरो रतन
कसो गोपाल कहा करी जो नैं दधि की चोरी। काहे
कौं आवति हाथन बावनि जो मन करही चोरी।
कवकी केतें मोखन खायो कव दधि मट की फोरी

गं.रा.

प्रेमनिन करि कबहूं नहीं चाखन चरही भरी कमो
री। इननी बात सुनी जब ग्वालिन बिहसि बली
सुखेमोरी। परमानंद नंदरानी के सुन सौं जो क
छु कहै सो थोरी। १५। राग गौरी। ४। ढोटा देव
कमाखन खायो। काहे कों हरि ईतो निरी ग्वालिनी स
व व्रज गाजि हलायो। जाकों जिन नौं न मजानत सोह

मेरो कान्हर है एकलो नव सबै ग्रमीस मिलि देहु।
कमल नयन मेरी ऐखियनि तारो ऊलदीपक ब
ज गेहु। परमानंद कहति नंदरानी सनउति ग्रपि
क सनेहु।१६। राग गंधार ताल। ।नमनी कें ड
हिजानन गैयां। वलियेकेवर रसिक नंदनंदन
लागौ तिहारै पैयां। तमहिं जानि करि कनक

गे॰ ना॰ दोहनीचरनैं पठईमैया। निकट हिरैहे परहरवीरिक

हमारो नागरलेउं वलैया। देविपन परम सदेस

लरकई चित भुहसो महदैया। ॐ मनदासप्रभ

मानिलई रनि गिरिगोवर्द्धनैरैया॥ १७॥ राग

गेयारनालाव॥ मोहन हरैहो मनभाउ कहु

नलालनी कैं ढुहि देहों रवालि निहारीगाउ॥

१३

ग्वालनकैं दोहनी कनककी करनैं लीनी धार । दे

धौंवेगि धार कीनौं ई बछरा वो छैं जाइ । हँसि हँसि

हहत ग्रह करहन मिली वातैं बहुत वनाइ । वनमैं

ज ग्रभ सहन हिं रति जोरी गिरि गोवर्द्धनराइ । १८

राग गंधार ताल । । लाल तुम कैसैं डहत हो

गाइ । कहुं वैठे कहुं दृष्टि दोहनी धार कहुं चलि जा

ग॰ रा॰

इ। यहउहिवो हमकहुं बनदेख्यो गवालिकहृ नि
समझाइ। जोककुढ़नोननकसो वामें स्निरनोदि
योलफाइ। मेरीमामखरीरिस हारी ग्रवमोहिदि
रिविरिसाइ॥ श्रीविठल गिरिधरन लालपें स
रबस बलिहराइ॥ ८९ ॥ रागगंधारमाला।
पिछौंडी बाहन दैहों दान॥ हमपें मननमलेडु

गुसांई राखो हमारो मान। मारग रोकि रहे हैं नंदनंद
न सब गुण रूप निधान। बदन मोरि मुसिकाइ भा
मिनि नैन बान संधान। नंदराय के कुंवर लाडिले स
ब के जीवन प्रान। परमानंद स्वामी मोहन हो तुम
है कौन सुजान।। ८।। राग गंधार नाल। । मोर
न तुम कैसे हो दानी। सुथे रहो गहे पति अपनी

ग०रा० निठुरेजीकीमैंजांनी । हमब्रजरी गंवारि अहीरी
तुमहो सारंगपांनी । मदु किलईउनारि सीसतैं
सुंदरि अधिक लजांनी । करगहि बिरकहापैवत
हो बोलनि चतुरस्यांनी । सूरदास प्रभु मांवे
न के हितप्रेम प्रीति चित ठांनी ॥ २१ ॥ रागगौं
धार । ताल ॥ ॥ आज दधि देखौं तेरो चाखिब

कहियौं मोल किनै बैंबेगी सत्यवचन सखि भाखि
जोई तेकहे सोईहौं देहौं संग सखा सब साखि । जो
न पत्याइ ग्वालि तेइमकौं कंठ सरिले राखि । ले
चले संग घर दाम देनको जनायौ नैं ऊकटाछि
के मन दास प्रभु गोवर्द्धन धर रस बस लियौ तनना
छि ॥ ३५ ॥ रागगंधारनाल ॥ ॥ रंचक चाखन देरी

गं॰ रा॰

दह्यो। ग्रदभुत स्वाद श्रवण सुनि मोपैं नाहिन परत

रह्यो। ज्यों ज्यों कर अंबुज कुच ऊपनि त्यों त्यों मर

मलह्यो। नंदकुमार छबिलो ढोटा अंचरा पाइ

गह्यो। हरि हठ करत दास परमानंद इहमें बहुत

सह्यो। इनबातननि खोयो चाहत हो सैं नत जात ब

ह्यो। २३। राग गंधार नाला। ३। किसोरी अंग अंग भेंटी श्या

16

झूलत माल नवल भुजमाल को लटकि मिलि ज्यौं दा
मह्नि। गिरिवर धरन सुरन रति नाइक रति जीत्यो
सेन्यामह्नि। सूरकै प्रभु उभै सुभट बिवकौ जवसी
प्रकामह्नि।२७। राग गंधार नाल। । किसोरि दे
खत नैंन सिरात। बलि बलि जाउं सुवार बिंदकी
वंद मेदकै जात। श्याम केतुकी नामैं सोभित केवन

गं॰गा॰

कलसनमान। मानौं मदन दोऊ ऊंच ऊपर नीलव
स्त्र फहरान। नकवेसरि और उरजि पीतांबर दे
खत मनि मरजान। या मुखदेखें सूरदास प्रभु
उडे प्रानै पान।२५।। राग गंधार माला।३। सघ
न कुंजनि उठे भोर रही स्यामा स्याम खरे। जलदनवी
न त्रिया मिलि दामिनि बरषिनि साउचरे ।।

सिथिल रसन पटनील पीतंबर आरस जुत पहिरे।
कंचुक छूट परनि श्रमकनिका बादर बरनकरे।भू
षण विविध पहुचि मिंउ वारी छवि रस उमडि परे।
काजर अधरन मोरनयन रस अंग अंग झिलपरे।
प्रेम प्रवाह छूटी मानों सरिता टूटी माल गरें।सो
भा अमित विलोकि सूर सखि नाहिन जाननें।५६

गं·गा

राग गंधार ताल। ।देखि सखि ध्यार चंदरकढो

र। चितवरही निते विनि पिय संग सार सुता कीछो

र। देवि धनील सखा मधन जैसैंहे विधुकी गतिगो

र। ताके मध्य ध्यार शुक राजत दे फल खातव

कोर।। सखि सखि संगप्रवाल कुंद प्रलितहो

प्रहरियो मन मोर। सूरदास प्रभु उमे रूप निधि

18

बलि बलि जगल किसोर ।२७। राग गंधार ताल । ॥
जसुमति आनंद कंदन गावति । थलकि थलकि डुल
माति देखि मुख खति मुख पंजरि पावति । बाल
जुवा हृदा किसोर मिलि चुटकी दैदै गावति । नूपु
र स्वर मिश्रित धुनि उपजत सिव विरंचि बिसरावति
केवित गेथित अलक मनोहर रूप कि बदन पराग

गं॰रा॰

वति। जन भगवांन मनइंघन विप्रमिलि मकर
वांदनी लजावति ।२८। रागगंधार माल। ३। मो
रात दीप मालिन उदि प्रात। हौं दीप मथन कर
नकौ वेठी नहो आइ धरवान। कस्यो जमो दारीयो
वोहिणी हेसि हेसि वेठेवान। भ्रजपति पीय ओर
मायानहैं कहि कहि मोनरिवान ९९ नमपेकौन

१९

उड़ावत गैया । गद्गद भाव चूवति अंतर गति अति

सकाम की नैया । गद्गद श्री जिनाकों मिलि की जे जों

होइ निहारी दैया । ज्यों भावे त्यों मिलत सबनि सों इ

है मिले ब्रै मैया । ले जर है कर कनक दोहनी बेठे दो

अप पैया । परमानंद स्वामी इह मागो ज्यों बरषे

समग मैया ।३१। राग गौरी ताल २ बसे मेरे नैन न में

गो॰गी॰

दलाल। सांवरी सूरत माधुरी मूरति राजीवनैन

बिसाल। मोरमुकुट मकराकृत कुंडल सुरगति

लकटीयें भाल। शंखचक्रगदापद्म बिराजतकौ

स्तुभ मणि बनमाल। बाजूबंद जरडके भूषणन्

छुद्र शब्द रमाल। दासगोपाल मदनमोहन पीय

भक्तनके प्रतिपाल ॥३२॥ रागगंधार ताल

२०

कौं बिसरे बहु गाइ चरावनि । बाम कपोल बाम भुज

पर करि दछिन भौंह उचावनि कोमल कर अंगुलि

गहि मुरलि अधर सुधा बरखावनि । चढ़ि बिमान

जे सुनत देवनि पतिनि न मोह उपजावनि । हार हा

स उर थिर चपला उरग्रह भुज हप मिलावनि ।।

देत यौं नित रहनि बिरजोंगी यन सुधि बिसरावति

गे·रा

मोरमुकुट श्रवणनि फल करि मदन स्वरूप बना
वनि। चरण रेणु वेष्ठन के पत भज मतिनन गम
नथ भावति। आदिपुरुष जो प्रबल भनि बोभे सेरा
सत्य गुण गावति। वन वन फिरत कबहुं मुरली
कर गिरि चढि गाइ बुलावति। लता विटपि मन
मोह प्रकट ह्वै फल भर भूमिन आवति ॥ ।

नन कुन हरित होत प्रति श्रव यव मधुधाराउपदाव
नि। मंदर रूप देखि वन लाला मत्त मधुप सरगा
वनि। आदर देत मनोवर सार सहंसनि कटवे दाव
नि। बलसंग श्रवण पुहुप सोभा गिरि सिखर ना
द धरवावनि। विविध भांति वन गामन विचल्त
ण नूतन नांन वनावनि। खनन नाद ब्रह्मादिक

गे·रा

सरगता अधिक चितमोहावनि। चलत ललित गति
हरत ताप ब्रज भूमि सो कवित मावनि। ब्रजजुव
ती मनमैंन उदे करि प्यारता ठहरावनि। दिव्यगंध
तुलसी माला उरमाला धरवाइ गनावनि। वेणु
नाद वेधित करि सब हरिनी भौंह ख्रिझावनि। कं
दहेम सिंगार सकल गंगा जमना जलउछरावनि

सहित सकल गंधर्व देवगण सेवा उचित कराव

नि। गिरिधर वकुलै व्रजगैयनकै आवन वरण

कुवावनि। वेणु वजावत व्रज हरि देवै गायनि

ले व्रज आवनि। गावत गोप विसद कीरति संग

संग फिरत वर भौंवनि। झूमत मद दृग देत मौंन

कछु झुकनि कुंडल झलकावनि। वदन मदशोभा

गे·रा

ननसबसुखन बिधजैंा अंग मिलावनि । गुणगाव
नकें प्रकट रूपमें बोस बियोग उजावनि । ब्या
बिंजाम हरिके संग क्रीडत लीला मांह समोवनि ।
यह लीला चित बसो लसो नित गोपीजन सुखेव पा
वनि । रीजेदास रसिकको यह फल ब्रजजन प
दरज पावनि ॥३३॥ राग गंधार ताल॥ ॥

23

जबतें प्रणाम शरणमें पायो। तबतें भेंट भई श्री
वल्लभ निजपति नांम बतायो। और अविद्या छा
डि मलिन मति कृति सों हृदय दृढायो। कृष्णदा
स सब जग जन खोजन अब निहचे मन आयो ४४
राग गंधार ताल ३। प्रकटे श्री वल्लभ राजकुमार।
जै जै श्री गिरिधर श्री गोविंद बाल कृष्णजू उदार॥

गे॰ग॰ गोकुलपति ब्रजपति श्रीजदुपति सोभित नंनंद

नंदधाम । करुणापति श्रीकल्यानराय जू रसिक

जनन सुखधाम । श्रीमुरलीधर प्रभु बालक

श्रीवल्लभ कुल सकल समान । विस्नदास गो

पाल लीला व्रजगावत वेद पुरान ॥ ३५ ॥

राग गौरी ताल ३ । श्रीगोकुलजू गाजूराज करो

2५

२५

या सुख भजन प्रतापतैं छिनइ उनन टरो । पावन
रूप दिखाय शरणापति पतितन पापहरो । विश्व
विदित दीनागति थेत निजगतने उथरो । श्रीवल
भ कल कमलनि दीपक जस मकरंद भरो । नंद
दास प्रभु षटगुण संपन श्रीविठलेशवरो । ३६

११ राग गंधार ताल । ३ । जे जन शरण गए ते तोरे ।

गे॰रा॰

दीन दयाल प्रकट पुरुषोत्तम श्री विट्ठल नाथ
ललारे। जितनी रवि छाया की कणिका तित
नै दोष हमारे। तुम्हरे चरण प्रताप से जैतै तेते ने
न छिन तारे। माला कंठ तिलक माथे दे शंख
चक्र वपु धारे। मानिक चंद प्रभु के शरणा पे सम सा
पतित निस्तारे॥ ३७॥ महा श्री वल्लभ के कृपाजो

25

चरण सेवज अरिमोन सेयत नजि स्वामी पदतें आ
जे । गीता भागवत नितामसे सावीनो काहेको
लाजे । गीत गोविंद विल्व मंगल सी बांको कहि
सके अनदाजे । श्रीकृष्ण नाम रनहीतें पैयेयहूद
फमति नमस्याजे । मथुरा दास कहै जवनी सभा
मे सिरिपर महल विराजे ।३८। राग सेयार ता·

गं० रा०

अपनपैं अपनी सेवा करत। आपुन प्रभु आपुन
सेवकके अपनो स्वरुप धरत। आपुन धर्मकर्म
सब जानत मरजादा अनुसरत। छीत स्वामि
गिरिधरन श्रीविट्ठल भक्तवछल वपु धरत।
२२। राग गंधार। ता० ३। हमतो श्रीविट्ठलनाथहि
जानें। आनें देव सेवन कनकरिपन हिकाकुं मैं आनें०

26

२५

कोउ भजो सुरपति कोउ गणपति चनकोउभजो
वेद प्रमानैं । कोउ रविविंद मेद शिव शंकर कोउभ
जो प्रकट प्रमानैं । कोउ भजो सनकादिक मुनि
नारदकोउ भजो करमनि ठानैं । कोउ भजो अंस
कला अवतारे कोउ सरवर नर थानैं । कोउभजो
नेति नेति कहि निर्गुण कोउ भजो पद निरबानैं ।

गं. ग. कोउ भजो नेत्र मेत्र जेत्रनकों फिरत सबै भटकानें
कोउ भजो नव ग्रह साल पदारथ भक्ति लेसकेरा
नें। करुणा निधि गिरिधर भजि टक करि हरि
लीला रसपानें। ४। राग गंधार ताल॥ ॥
श्री वल्लभके नेदन फिरि आए। वेई रूप वेई फि
रि क्रीड़ा करत आश्रम नभाए। वे फिरि राज करत

२८

श्रीगोकुलवेईरीत प्रकटाए। वेईसिंगार भोग छि
न छिनके वेईलीला गाए। जेजनभक्तिकों आनंद
दीनो सोफिरि ब्रजमें आए। श्रीविठल गिरिधरपद
प्रेमजन गोविंद उरमें लाए। ५१। राग गोधार ताल
प्रकट्यो आवीदिस सवन वेद। योंही प्रकटे श्रीवल्ल
भटह्र सरनरमनि आनंद। प्रदमन रूप भलो। ८

गो॰ग॰ किक महिमां जननि निगमनयो भाष्यो। कीर्त स्वा

मि गिरिधरण श्रीविट्ठल लोक वेद मति राख्यो

धर॥ रागगौर ताल॥ ॥ यह कलि परम

सुभग जन धनि श्रीविट्ठलनाथ उपासी। जो

प्रकटे व्रजपति विट्ठल श्रवणो सेवक व्रजवासी।

व्रज लीला भूल्यो वनवासी न वलट्यो व्रजरासी

अवलौं सठ अवगनन अभागे करत परस्पर झांसी।
अन्या सहित आधुभ पद्रें छिन दीयो नर प्रकासी।
देखियत लोक सरूप अलौकिक ज्यों गंगा सरिता
सी। पर हरि सदन सदा हरि जस गावत भक्त मुक्त
की दासी। वदन कछु भीम भव वैभव भजनानंद
उपासी।४३। राग गंधार ताल। ।जसोदा क

गं·रा·

हाकहौंहौंवात। तुम्हरे सुतनके करतनु मोपैंकरु
न कहौं नहि जात। भाजन फोरि ढोरि सब गोरस
ले माखन दधि खात। जो वरजौं तो आंखि दि
खावै रंचहू नाहि सकात। और अटपटी कहा
लौं वरनौं कुवत पानि सौं गात। चत्रभुज प्रभुगि
रिधरके गुनहौं कहति कहति सकुचात॥ ४४

ग्वालिन तोहि कहन कौं आयो। मेरो कान्ह निपट बालक कौं चोरी माखन खायो। बूझि विचारि देखि जिय अपने कहा करौंरी तोहि। केतु किवंदनो रे यह कैसें सो समुझि परति नहि मोहि। चनभेज दास लाल गिरिधरसौं झूठी कहति बनाय। मेरो श्याम सकच को लरिका पर घर कबहुं न जाय। ४५ राग गौरी

गे॰रा॰

बालकहींतें चोरीपड़ी जोनत । मातवेन हृपथ सो

ऊन ह्याओवो हौरि ग्रवानक भाजन भोनत । ग्रब

हौं लाल मेरो सर्वस मृह्यो ग्रोर उलटे वमकैसी कै

सी वानत । ऊंभनदास प्रभ मेरा लागी डोलतिमो

वर्द्धन पर ग्रजंडून मानत ४६॥ राग गेधार ॥ ग्र

ठ ताल ॥ द ॥ मानि मानि री मोहन वार ठाढे ॥

30

३॰

नैरीनो प्रकृति आवैं पियकी पीरीन जानै वानैंतो ब
झन उफानैं त्यौंतें हूदे आगेरेक पाछेहीये गाछे । वरषे
रपलि कारीतेसौं वहिलगफारी पसेरी लालन परन
न पन वारिकेरि आण दीजे काछे । स्वनन ववन पा
री केंटलागी गिरि धारी गोविंद प्रभको हृदो प्रेम
जलसौं बुजायो आप विरहानल दाछे ॥ रागगंधा

ग॰ गा॰

र ताल। ।कछुव कहीन जाइ तेरी उनकी विकट
वात। अंन अंन प्रकृति कैसें वनि आवे जो ते उर
उर तोरी हेरी पात पात। अब कहा कहति सोई
जाइ कहों प्रीतम सों छाडि देह इत उनकी पैंनसा
न। अब पति पर गोविंद प्रभु हम्हु वे मनावत ते
री वातनि वातनि भयो प्रात ॥४८॥ राग गेयार

31

पटताल ॥ लालन मुरली नेक बजाईये । विनती
करत प्यारी की सखी । जानतिहौं सकल कला गु
णनि सिरमोर प्यारीहो दीजन तातें चोष राजकें ग्रवह
मरु तानन टेरनाईये । जैसे खग मृग द्रुम पशु बेली
सलिता मोहीतें सें हमारी सखीनि को मन रिझाई
ये । गोविंद प्रभु सकल कला प्रवीन तातें हमारे प्र

गं·रा

वागनि हावे उपजाइये ४९ राग गंधार ता·

लडैनदैमेरो अवहार। जाइ कहोंगी नंदरायसोंय

हनैरो व्योहार। मेरी डलरी मेरो केकन मेरो गज

हार। नैरे घरको मोल नबैई मेरो सहज सिंगार।

बोहोत दिननको ऊगारो हामों उरमनि केचनहा

रा। ऊगारनि ऊगारनि गाई झेंजमें व्यास कियो निबीर ५०

32

३२

ऊँज मदनतैं मदन जीति उठे घन दामिनि मे मोर । ब्रज
नरुनी वृषभांन नंदनी नागर नंद किसोर । राजत हे
बनमाल ग्रीव उर वनी वलाका डोर । मनऊ पाकसा
सन सरासन सी सीस चंद्रिका मोर । परिश्रुत वैन हेस
हांसी मन चातिक नैंन चकोर । मुरली धुर मधुर क
ल गरजत ललित राग मिलि चोर । बरसे प्रेम नीरस

गे॰रा॰ रसेदरसे अनूपमजोर। देखेअम पेसेमनमोहन

आवत ब्रजको यखोर।५।। राग गंधार ताल ३।।

भलेनम आपमेरे धान। रजनी सब कहुं अनत

कीये पीयजागे सारीरात। जपिजपि आवतने

नउनीटेक होकऊंयहवान। ज्यौंजलकरतनोकिकि

निवेदकी अतिमभीनमदिजान। कहंचंदनवांछेवंद

नलागपे देखियत सांवल गात । गंगा सरस्वती मानो
जमुना श्रेगा हिमां जल खात । भली करी श्रम बोल
नि बाढ़े मेरे गृह परभात । छीन सांमि गिरि धर
छवि बातें मदन मोरि मुकवान ।५४। राग गेयार
नाल ।१। सांचे भए श्राप परभात । नंद नंदन रज
नीकहं जागे कहीये सांवल गात । पीक कपोल

गे·गा॰ तिलगे तम्हारे जावक भाल लगाज । उरहिं विराज

त विनगुण माला मोतन न लावे सऊचात । भली

करी प्रवतहीं पग धारे जहां विनाईंगात । कीतम्बा

मिति थियर काहे कौं जूठी मोहें खात ५३ । गौरो गे

पार ताला ३ ॥ मोहन कत तें दोउ तिली नी गोपद

वक्रगजो रें ॥ हाथ पे नेत्र पान वदन त्रिया नन

३४ ३८

कीरकौ किछुल कोरैं। आननरही ललित पयकी
हैं छाजन छवि त्तणतोरैं। मानहुं निकसि कलेक
कला तिपि उभयसिंधु मधि खोरे। देवंचटपट आ
टनील हंसि ऊंवर नदिन नवमोरैं। मनहुं सरद
ससिकौं मिलिंदा मिनि घेरि गलियो चकोरैं। य
ह विधि रहमन विलमन देपनि हेतनिहियें नहियोरे

गे·गा

म्हरउमगि आनंदसुधानिधमनौ विलावलिफोरै

पधारागनेपारनाला ४। अवहि देखेन वल किसो

र। चरही आवतन्ही ननभपैहै पैसेननकेचोर। कबु

दिनकरिदपि मोरवेनचोरी अवचोरतनमनमोर ॥

विविसभई नन स्वपिन संभारति कहति वात भ

ईभोर ॥ यह वांनी कहतहि लजांनी ८ ॥

35

३५

समुझि भई जियबोर। सूरश्याम मुखवे निरखि चिव
ली चरआनंद लोचन लोर।५५।राग गेयारनाल
जुवती येक आवत देखी श्याम।उमकी ओट रहे हैं
आपुन जमुना तट गई बाम।जल झलोरि गागरि भ
रि नागरि जुवती सीस उठायो।घरको चली जाइ
ता पाछें सिरतें चट ढरकायो।वनर ग्वालिकारा

गं॰रा॰

ह्यो श्याम को कनक लकुटिया पाई। औरनि सों की रहे अबारी मोसों लगत कन्हाई। गागरि लै हैंसि देत ग्वालि कर रीतो चटन दिलैहौ। हर श्याम ह्यो आनि देऊ भरि तब हिल कट कर दैहौ॥ ५८

राग गंधार निनार॥ ३॥ गोपिका प्रति आनंद भरी॥ मारवन टपि हरि खात सरवनि

३६

मेरा श्रुति आनंद देवी। कर लैलै मव पर मकरावान

उपमा वडी सुभाई। मानहु कंज मिलन ससिकों लि

ये सुधा कौर करआई। जाकारन शिवध्यान लगाव

न सेस सहस मुखगावन। सोई हरि प्रकट ब्रजभी

तर राधा मनहि रिझावन ५० राग गंधार ताल

मन मन हँसति राधिका गोरी। देखे श्याम वदन

गं॰वा॰ ब्रजभीतर हूजनिहै भईमोर नम उनकौं कहें दे

विहैकी सली करनिहैबात। वनराईनीकेगाहि

गाबौ मनवसुरिकें मसिकाम। कवऊ नौकड़े सं

ग परिहै नवहौ लीजे बीति। हरस्यामको पी

तांबर मेरौबे सरि लीजौ छीनि ॥ ५८ ॥ ॥

राग गंधार नाल॥ ॥ नमकौं कैसे स्यामलगे

न्हा नरही जलमैं सवन नहनी नव नमनैं ना कहंसव
गे। ऐसा ऐसा अवलोकन कीन्हों कौन ऐगपर रहे
पवे। भल्यो न्हो पज्ञानन नव भूली नंदसबन उनमैन
डगे। जोननिनही कहूंन हि देखे मिलिवाई पैसम
नरूसगे। सरघणाम पेसैं नै देखेमैं जानन निउखव हू
रिमगे ५९ ॥ राग गंधार निनाग ॥ ३ म ७

गं॰रा॰ जागोहो व्रजनंदकुमार। बलि बलि जाउ मुखार
बिंदकी गोसुतनमे लोखरिक संभार। आज कहा सो
वत त्रिभुवन पति ओर बार व्रज उठन सबार। बारं
बार जगावति माता कमल नयन भयो भवन उ
ज्यार॥ दधि मथि हौं माखन नैये देहौं सेवा सखा
सोपेहौं सिंहद्वार। उठि कौंन मोहिन मवदन दिखावहु

38

सूरदासके प्रांण प्यार ।। राग गंधार ताल । । नंद
के लाल उठे जब सोय । देखि मुखारविंद की सोभा
कहि काके मन धीरज होय । मुनि मन हरत जुवति
को वपुरी रति पति मांन जात सब खोय । ईषद हा
स दसन दति दामिनि मानिक श्री पिय धरे मानो पोय
नागर नंद सुवन सुषति सजनी मारग जात लेत मन

गे॰गा॰ नगोय। सूरश्याम मन हरन मनोहर गोकुलव

सिमोहे सवलोय। राग गंधार नाला॥३॥ सोवन

ग्वालिन कान्हजगाए भोर भए हम आए द्वार के

जीवनजन्म सुफल करि पाए। उत्तम भेज प्रसेन

विकोना वहुंदिस ह विकसपि आवनाए। सूरदा

स प्रभुन नुम्हारे दरसको सरणा वेद प्रगटके आए।

39

३९

बाल गोपाल उठो मेरे लाल । बलि बलि जाउ मु-
खार बिंदकी अमीय बचन बोलहु ततरात । उनी
दे नैन विसालकी सोभा कहत न आवत मोपै बात-
ठाव खिरे व्रज सखा दुआरन नैन मीडि आप परभा
त । दहुकर माट गहे नंदनंदन छिटकि हेद द
धि परत अचान । मानहु गाज मुकता मरकत पर

गे॰रा॰ सोभित सुभग सांवरे गात। लीला प्रकट्यो मन मोहन दधि ओदन मामन अरि पात। लोटत सुर श्याम पट्ट सो परत्यार पदार्थ आके हाथ। राग गंधार ताल। कौन परी नंदलाल हि वांनि। प्रात समै जागन की वेरी आ ओफन है पी नो वरतानि। मांन जसोदा कवके दासी भोजन नवाइं इराय चूतन सानि

उठो मेरे लाल कलेउ कीजे सुंदर वदन दिखा बहु

भांति। मेवा केसरवा हार मेवदाके मधुवनथेन

वयाकी भांति। हराथमि अतिहीं अलसाने सोवत

हैं अजहुं निसि जांनि। राग गंधार ताल। । नंद

नंदन हेदावन चंद। यह कहि जननी जगावति

लालहि जागहु मेरे आनंदकंद। आलसभरे उठे

गे॰रा॰ मनमोहनी चलन वाल ठुमकन अति मंद। पोंछि

वदन अंचरसो जसुमति हृदे लगाइ उपज्यो आनंद

सब ब्रज जुवती आई देखन दसमन होत मिलो इक

दंद। ब्रजपति श्री गोपाल परिवृढ़ रन जाको जस

गावन श्रुति कंद॥ राग गंधार ताल। ॥ क

रन कलेउ दोऊ भैया॥ रोटी मोगि सांति ६

४१

मोहनमैं मिश्रीमे लिखेवावनिमैया। कावोहू
य लयो थोरीको नानोकरि मथियपावनि गैया॥
करि अचवन वीराले व्रजपति पाछैंचले चरावन
गैया॥राग गौडसारंग ताल। दोउभैया मांगतमै
यापैंदे मामा खनरोटी। सुनिरी भावनी वात सुन
नकी छूटेछूद्वं धामके कोम अगोटी। वलगाहो वद

गे॰रा॰ ननासिक मोती कान्ह जेवरगारी दफकीरिबोटी। मा

नऊ हंसमोर भकुलीनें कवि उपमाजनऊ जिनिछो

टी। यहछवि निरखि नंद आनंद प्रेम मगन भए लोट

क पोटी। सूरदास जसुमति सुख विलसति भाग

वडे कर मनकी मोटी ॥ राग गैयार नाल

तिताल॥ ३ ॥ कान्ह माई मागत हे दधिरोटी·

८२

मारवन महिन देऊमेरी माई हपक्क सकोमलमो

टी। काहेकौ इतनीकरतहो मोहन काहेकौ भ्रमें

लोटी। जोईचाहो सोलेऊ नरतहीं क्काटो यहमति

खोटी। करिमन न्हारिकरे उदीनो माख जुपलो

मुकबोटी। गायचरावन चले सुर प्रभुहाथलक्क

टि याक्कोटी॥ राग गंधार ताल। । करउकलेउ

गे॰रा॰

कान्हरप्यारे। मांखनचोरी दयो छाछ्यपरवलिवलि

जाउहो खोङ ललारे। टेरन हारेरवालहू नाढि आये

नवके होत सवारे। खेलो जाइ ब्रजनहीके भीतरि हू

रि कहें जिनि जैहो वारे। टेरी उठवलराम स्यामको

धावहु जो छियें न वनवारे। सूरस्याम कर जोरि मा

नसोंगाइ चरावन चलें कहनहहारे। रागगंधारनाः ३

४३

४३

भोरभयो मेरेलाडिले जागोकुंअरकन्हाई। सखा
द्वारठाढे सब खेलो जदुराई। मोकौं मुख देख
राइये त्रयीताप नसावहु। तव मुख चंदचकोर
नयन मधुपान करावहु। तव हरि मुखपट दूरि
कै भक्तनि सुखकारी। हंसत उठे प्रभु सेजतें सूर
ज बलिहारी॥ रागगंधारनाला । नंदमहरके

गे॰रा॰

भावते जागाऊं मेरे बारे। भानभयो उदि देखियेरवि

किरनि उजारे। ग्वाल बाल सबटेरहीगैयां बनचार

न। लाल उठो मुख धोइये लगी बदन उघारन। मु

खतें पट न्यारो कियो माता कर अपनें। देखि ब

दन चकृत भई सोनक की सपनें॥ कहा कहौं व

ऊरूप की को बरनि बनावे। सूरस्याम के गुण

44

अपार नंद सुख न कहावै॥ राग गंधार नाल॥ ॥
उठे नंदलाल सुनत जननी मुखवांनी। आलस भ
रे नैन सकल शोभाकी खौनी। गोपी जन विथक
के चितवति सब ठाढी। नैन करि चकोर चंद वद
न प्रीति बाढी। माता जल झारी लै कमल मुख
पखारो। नीर न्हा परस करत आलस हि विसा

गं·रा·

हो। सखा द्वार ठाढे सब टेरत हैं बनकौं। जमुना त
ट बलइ कान्ह चारन गोधनकौं। सखा सहित जेव
इ में भोजन कछु कीन्हो। हरस्याम हलधर संग स
खा बोलि लीन्हो॥ राग गंधार ताल तिताला॥३
जागिये गोपाल लाल ग्वाल द्वार ठाढे॥ रैनि
अंधकार भयो चंद्रमा मलीन भयो तारे गण

गण देखियत नहीं नरनि किरनि चाहे। सकु
लित भये कमल नाल फैंजकरन भैया मालषकु
लित वननरूप जालऊमदनी ऊभिलानी। गंथ
वे गण गांन करनन दांनने मधरन हरर सकल
पाप बदन विप्र वेदबांनी। बोलत नंद बारबार
मखदेखे तब ऊमार गारन भई वडी बार हूंदाव

गे·रा·

नजैवे। जननी कहति उठो श्याम जानत जियरज
निनाम सूरदास प्रभु कृपाल तुमकों कछु देवे।
राग गंधार ताल।३। जागहु लाल ग्वाल सब टेर
त। कबहुं पितांबर डारि बदन पर कबहुं उघारि जन
नि तन हेरत। सोवत में जागत मन मोहन बात कर
त सबकी प्रब फेरत। बारंबार जगावति माता

46

लोचन षोलि फलक झनि बेरन। झनि कह्यौ उठी
जसोदा मैया उठह्यौ कान्हर बिकिरनि उजेरन। स्यर
स्याम हँसि चितै मात मुष पट करले झनि झनिम
षिफेरन॥ राग गंधार नाल। । दोउ भैया जेवन
मा ग्रागैं। झनि झनि लै दधि षोन कन्हाई और
जननि पै मागैं। अति मीठो दधि आज्ज जमायो बल

गे.रा.

दाकनमलेऊ । देखोयौंदधिस्वाद आपलैनापा

बै मोहिदेऊ । बलमोहन दोउजेंवत रुचिसौंसुख

लूटति नंदरानी । स्यामराम ध्रवकहत प्रजानेंथ्रे

वननमोगातपानी ॥ रागगौंडमारताल ॥ ३ ॥ जन

नीजगावतिउठी कन्हाई । प्रगहो नरुनि किरनि

गनकाई । आवऊंवदवदनदिषराई वारवारजननीवलि

४०

सखोग्वार सब बमहि बुलावत । नमकारण इस
याए आवत । स्हरस्याम उठि दरसन दीन्हो । माता
देखि सुदित मन कीन्हो ॥ राग गंधार ताल ॥ ॥
नाहिन उरमैं नाहन नारे । जागु वेथक सपन वि
साल पर हंदरस्याम खिली सवन नारे । राजत श्री
लक कुटिल कुंतल पर सोनन चितवन चिनहि वि

पं·रा

माले। सिथिल भौंह धनुष मदन ग्रण रहे कोकनद

बान बिचारे। सूदेही आवन पलोवन पलक आन

रउबरतन उघारे। सूरदास प्रभु सोई पै कहि तियप

सी को जा सौं रति रण हारे॥ राग गंधार नाल। ।

आज निसि कहां ऊने मेरे प्यारे। सौं झुंठ न स्यारी कहि

न जान बहु बिउनी दैने नरतनारे। सेवक अपर निमेष

४८

पीक छबि प्रकट देखियत ब्लारे । हरे हरा रविव
रगारी प्रलेकृत म्रगामद तिलक लिलारे । बोल
केसां वे प्राण भोर भए रमित मेज हघ भोन ब्लारे ।
सूरदास चतराई प्रकट भई प्रागेते कत होत नमा
रे ॥ राग गंधार नाल । ॥ प्रतिरस वस सैन नारत
नारे । रूपतन रूपे रूपावन होकत नत्र मन नमय

गं·रा· सिरबरन मंगारे । नवपाले हिरनमों निभली बिधि
जैइते हरिदबरदीपिडारे । जबभए प्रगट प्रवीनन
कणानननकणाई नामसजननारे । शनिशिवसूबै
वैरसमभिकरिमदनशदिनमादकबलभारे ॥ श्र
A9 निरिसभौं ह्रसरासननजननकरि श्रानकमलमेथन
सरमारे । समभिपरीसविरातिसहपनमराति ४९

पनिजैगैनिसि बिल सनकहारे। सरदासमर्थनि यै
नि समा मिनिजेहि सुत्रराग तिलक हरिसारे॥
रागर्धधार नाल। ।ललना आपहोवैनिर्गवा
ई। निसिभई क्षीन बोलत तमचुर खगगवालउ
फौलीगाई। अरुण किरनि पंकज दल विक
सित मधपतहरमजाई। चंदन लीनभोनके

गे॰रा॰

प्रगटिनकुसुदिनिगाई झांहिलाउ । गरहूनैंनिक
सि श्रोगानभई दाफीनमविउ ककुनसहराउ । सू
रदास प्रभनमरे मिलननैं मिलिकैं विकुरकजा
उ । आजुअति शोभित हैतन श्याम । माचउरीजी
ने नेदनंदन मनसिजसो संग्राम । मुकलितकच
न समान मुकुट हविरीस श्रमकण दोउनैंन ॥

५०

५०

अमल चितगति भोंति अलसवस बोलत वचनन
वैन। नखछत श्रोणित खेदगात तें चेदन मयोक
कुकुंफि मदन सुभट के सरस देस मानों लगे कस
न अंक सहसी ति प्रकट भई सन्मुख सुभग शृंगार·
सूरदास प्रभ पावें सरसै जानें नंदकुमार॥ राग
गंधार ताल। ।आज ओर छबि नंदकिसोर॥

ग॰र॰ मिलि रितलवि लोचन भयो श्रेतर चितवन चितनि
ह्यारी श्रोर । प्रकटित पीठ वलय कर केंकन देखि
घनहार हिय छिनउर । देखियत हार सनन नील
उवराने श्रुपरन श्रंजन नैनन मोर । नखछिखवलौं
सिंगार श्रटपटो पाग मनौं पलानै चोर । फूले फिर
न दिखावन श्रोर निनिउर भए देह हनि श्रकोर ॥

51

देखत न बने कहत न हि आवे वय संधि बरनन कवि
न कठोर । अवरन कौं जन न होइ इन बातनि सूर ग्रह
न देखे बिनु भोर । राग गंधार ताला ३ । रति संग्राम
वीररस माते । अहो हरि सूर सिरोमनि अजहूं नाहि
न संभारत जाते । औरें बरन भए लोचन अपनें सह
ज बिनाते । मानौं भीर मरा जोधन की भए क्रोध अति

गे. रा

रोते। परिमल लुब्ध मधुप अलि वेदन उडिन सकत
नाटौते। मानौ मन मथ सरहिं विरहे वेग प्रव
बाहरि चौंते। वैठे ज्ञान धरसा नउनीदे क्रम क्रम
उडनन झौंते। मानहु कुटिल कटाक्ष नाटसलक
फनन हौ छिपरातै। उगमगात घूमत घारलते स्व
भाव भट जलकातै। सूरदास प्रभ प्रानि सनजीते

5

ग्रवस कानरो कानै ॥ राग गंधार ताल ॥ ॥

मायोनीकी वेदसि आप। नैनउनीदे पान लटपटी

बिथुरे केश सहाप। नाव दे दो उरमें जिनहे जानौं

हिनी या चंदउगाप। विगलित वसन प्राय रतउ

गमगात कि हिं इइ वाल वलाप। निसा के नेकेन

मवसे सों वै भोर उझोउ दियाप। रमबम श्रनन रहे

गो॰रा॰

सुरन चखन उमेरे मनभाए ॥ रागगौरीयारताला ३ ।

अतिही सुरत पिय नैंन नमारे । मानहु रति रसभए

रंग मगे करत केलि पिय पलक बिसारे । मेंट मेंट

डोलत सकत से सो भिन मध्य मनो हरतमारे । मानहु

सुरत कमल संपुटतें उडन सकत चंचल अलि बारे

छिन छिन मात जाग रजन नावत अति रस बसत

53

भ्रमत अनियारे। मानहु सकल जगति जीनन कें।
काम बान खरसान संवारे। वै हिजात अलसान उनी
दे कहे मंदन करे करत उच्चारे। मानहु मारकत मयंक
तन खोलत खंजरीट चटकारे। बार बार अवलोकि
परम सुचि कपटन हु मन हरत हमारे। सूरस्याम रे
हे सखु पावति उरबसी वन लोचन रतनारे॥ ॥॥

गे.ग

धारनालारा हमे हाथिप हमेहो। उनरको उनरन
देत देवै रिनहीन कछू सेहो। वडू विन वनिनहोर
नैननिकी ववननिडू उनडू सेहो। वह मवुवकमल
विकासननहीरति लाइक सिविर विहसेहो। केक
कुगाई संपदा करैने के स्याटगे कछू सेहो। मेरेजान
हरव्रभ संवेडू मदनवीरमिलि नसेहो। रागगंधार

54

नैमरीझेके उनहिरिझाये। हाहापियपयह प्रकट
खनावहु कोटिक सौंह दिवाये। जावक भालबिन्हु
मैजान्यो हटकीयपाइलगाये। अंजन अधर उरहिन
खरेखो लटपटियाग सुहाये। विनगुणमालमिली
वहै नखकों कंकन पीठदिखावहु। सूरस्याम ह
मनोयौंजोनति नखहै कहिन खनावहु॥ रागगौरी

ग॰ ए॰ रताल॥३॥ घान हरिद्रैति उनीदे आये। अंजन अधर
लिलाट महावर नैंनन तंबोर खवाये। बिन गुण मा
ल विराजत उर पर बेंदन रेख लगाये। मगन देह
सिर पाग लटपटी जावक रंग रंगाये। हृदै सभ भगन
खेरखे विराजत कंकन पीठि बनाये। सूरदास प्रभ
रहे अंबे भौ नीति तिलक कहां पाये। राग केदार॰

55

आजहरि आलस अंगभरे। कबहुंकबोंहु गोरिपेंड़
वान वहुतजम्हानवखेरे। वैठेगेकी पावथारिये दे
खवनेंन सिरावैं। सोऊ आपपक दरसन दीन्होंकी
अवहोन विरावैं। कवके हार भये पिय ठाढेओर
वडे कन्हाई। सूरश्यामको सखनरमी वहर्योनम
केवलगाई॥ रागगंधारमाला॥३। सोंहेंकरनकौं

गं॰रा॰

भोरहीनमसेमेरे आये। रैनिकरन साव अनतहीना

के मनभाये। अंग अंग भूषन औरसे मांगे कडूपा

ये। देखिथकित यह रूपकों लोचन अरुनाये। पा

गलटपटी सोहई जावकरंग लाये। मानकियो वा

हि मानिनी खानि पाई पराये। यह चतुराई कहांप

ढो सबही समझाये॥ सूरदास प्रभु सोचिले

56

उपमांकविगाये ॥ रागगेयारमाला। । यन्मग्रा
जपद्र दरस दियो । यम यम जासौं ग्रउरागेतनजा
नीतहि औरवियो । इमतो शपास यद्र भली भावतो
भले भली मिलि भली करी । यद्र मेरे जिय ग्रनिहि
ग्रवे भितनो विछुरनकों एकघरी । जाइन हैं स
खरीहो नोकों वैसतिकै रिस पावेगी । हद्र शपास

गे॰रा॰

धनिचतुर कहावत बडहो मनन मिलावेगी । रा
गगेयारनाला २ । कौंआयेउहिभोरइहो । काहे
कौ इतनौ सरमानै बैनिरहु फिरिजाऊ नहो । हमको
कहाइतनी गरुवाई उनहो बैरीन संभारौजू । उन
आयेहनोहौ जब्यो अजऊलेपगा पारौजू । हमऊ
बोलि उहांही लीजो उर उनके हमऊ कोलैं ॥

57

सहजपाय तिनही सुवेदीजयो विलसे संगनमकौ

तै ॥ राग गैथार ताल ३ ॥ रसिक रसिक ईजा निप

री । नैननिते अरु प्यारे ऊंते नवहीनं अनिरस निसरी ।

नमजो वन अरु सो नवनेो वनि पने पर सव ग्रगनि

भरी । लाजनहीं मैरे रहह आवत जाऊं जाऊं की ति

यजहरी । अंजन अधर कपोलनि वेदन पीकपलक

गे॰गा छबि देखि रही । सुरश्यामसरनि चिन्ह दिखावत तेरे

आये भले हरी ॥ राग गंधार ताल ३ ॥ कारकारैसे क

हति हो पियनही सिधारो । आये हो मन हरन कान्ह

रिनाम तुम्हारो । भली बनी छबि आजकी कैसें ले

नजम्हाई । रैनि आज सोये नही रति कों मजगा

ई ॥ वहरति तुमरानि नाथ हो हम कैसे भावे ॥

58

५८

हरषणाम नमवङ्कशनीजे नमहिरिरिजावे ॥ रागगो
धार नाल । । आरगई वजनारिनहे । सोंरहकरन
पियप्यारी आगे आनंदविरह्मसहे । प्यारीहेसीदेखि
सखियनिकौं ऐनरसिमैंहे भारी । नैन सैनदे ऐगाग्रे
ग निरावत पियसोभा अधिकारी । स्यामरहे मुख
मंदिसकविकै जवति परसारहेहै । सूरप्रभ अंग

गे.रा.

अंग अनूप छबि कहूं पायो कहि कैरे ॥ राग गांधा
रमाला ॥२॥ नव नागरि कहति सखि पतिसों पते
परपसों हू कैरे । दरसन आन देत है हमको निसि
औरनि के बिनहैरे । नमही देखि लेह अंगवानक
पते परकों सही पैरे । कृपा करे अवनहीं सिया
रै मेरी आगैं अवज्ञ टरै । यह छबि देखि समनाथ भई मे

59

५९८

अवनाही परजाइछै। सूरस्याम रिस देखि विवलेउ
रिकहै सखी अवश्यांन फिरै॥ रागगंधार ना-।
पियछवि निरखत नागरी अंगदसा भुलानी। अं
नरगात आनंदभरी ललिताहूर बानी। सहेवरिसैं
करि सुमनलै हरि फेंदभराये। अति अधीन पिय
कैगाये वसाये पराये। मारत सुमन विकावहीप

गे॰ रा॰

गनिरगिविनिहारै। फूले फूले पायौ बलिपाउनि

डोरै। ऐसे बसप्रिय बामके स्याव सुरजजानै। जैजै

हिभावति हरिभजे नेहि तैसें मानै। रागरंगपागना

लाल उनीदे भये राजत हैं रतनारे नैना मानऊंनलि

ननये। पीककपोललिलाट महाबर बंदनबलि

नाखये। जनननन जामे सप ग्रहण दल

दलकामकेवीजवये। विनगुणगुरुरपयोयरमुद्र
हदैसरये। ग्रंजन मुपर ख्वयामवलिख्योरनिदि
व्यालेननाये। ह्रस्याम विथ्यैकव मुक्विपरनव
नारवह्ये। नाऊपर ग्रानेंद ईंडजनु मानडू समरन
ये॥ रागगंयार नाल॥२॥ नैनउनी दैमयेंगराने।
मानङ्ह्वंग ह्रमन परसजननी फिरन ग्रेंगामद

गे॰गी॰

मानैं। प्रेम पराग पांखुरी पल दल प्रफुलित मदन

लतानैं। सुभग सुवास विसाल वलोकनि प्रकट

नीति करितानैं। तैसोई मारुत मंद जु म्हावतिरमि

लत मुदित छवियानैं। सूहे सुरंग पाम मानन नि

करि हित सौं कलि कलानैं। रागगंधारताला ३

काहेकों पिय भोर ही मेरे गृह आये इतनी गए

61

हमयैवहांजे । निरमाये । नारीपैंपरापारियेवकन
मैजानैं । विनगुण गाडिमालावही मनिकड़ेविहगानै
आयेहा हावदेनको पमो हिनकारी । हमपापीम न
मकोंकोवैसीनारी ।। रागगंधारनाल । । कृपा
करी उद्धिभोवही मेरेघटह आये । अबहमभईवडभा
गिनीनिसिचीन्हदेखाये । जावककभालनिमोहिये

गं॰रा॰

नीके बस पाये । नैनन देखि बिवकृत भई कौं पान ख
वाये । अपर निपर काजर खमो वक्षरंग करूपाये ॥
बैंहन विंडली भाल की भज आप बनाये । यह मो
सौंन महीं कहौ उकहन प्रक नाये । स्हारस्याम जस
गसि हौ यनि त्रियाहें साये ॥ राग गेंधार नाल ॥ ३ ।
हरषि स्याम त्रिय बांह गही । चूक परी हमकौं

62

६२

यहवकसो आवनकों कहिगयेहरी । दिमनिउठी

ऊहासकटकिमजकुवनकहापियमरमनहौ ।

भवनगई आनरुनागरिजे आईमवेसैवकहौ·

मेरेमहलआजैने आवहुसौंहनंदको कोटिकहौ·

सूरदासजवलौं जगजींजैमिलैंनहीवसकामद

हौ ॥ रागगोषालमाल । । वहुरिमिलहुगीका ।

गे॰रा॰

लिखीचित सम्रुजिस षांनी। मेरोकस्रोनकौं
करैकाहाहि अपांनी। अनलहि औषद अनल
है सबजांनिरहीहौ। काहेकौं हठकरतिहौ वे
काजवहीहौ। घरनीघरव्याकुलषैरीषेविग
हेली। सरकस्यो सनिमांनिलैमै कहति सहेली।
नेदसवन वडनायकी अमनहि रहेजाई ॥

63

६३

बहुअभिलाषकरतिरहीनाकों विसराई । बामरये
सोहोगयो निसिजोम न लानी । नागिपरी श्रुतिसे
वमें विरहा अकुलानी । श्रावनकह्निगये सोजहीय
मझेनहीं आये । कीयौ कनडेरभिरहे फरापोरपराये·
वैरीहै बड़नायकी लाइक गणभारी । स्त्रबरणाम
कमहाभवनमधिकरि पग धारी ।। रागगंधारला

गे॰ रा॰

भलीकीनी आपहो ललना हमारे भोर भए भोरे।
हमहि दिखावन रतिके चिन्ह जो न तिहारे उनिको
ये बङतनि हारे। काहेकों होत उघारे प्रीतम लोक
निहारि देखिहैं खोरे। रसिक प्रीतम तुम काहे सि
धारो जाके निसि वसि भए दृगनि लाल लाल डो
रे॥ राग गंधार ताला ३। भली करी जू आप सवारे॰

६४

बहुरि प्रभातको उदै होइगो प्रकट दैदीवियै श्रेकानि

नारे । पलटे पीन नील पट ओंफे पमी को वनरय

न भावत । पनेमेंान देहसुधि भूली नमहो आपुन

पो विसरावत । पाउधारिये बहुत वेर भई कर गहि

कन कनलय बैठारे । परमानंद प्रभु नमसे ओरको

सेप्पा वचन बदे महि हिठारे ॥ रागगेयार माल ॥३॥

कै॰ रा॰

रसिक शिरोमणि नंदलाल । रंगभीने हो । लाडल

डाई नवल बाल । रंगभीने हो । जावक लागी सोहे

शिथिल पाग । रंग॰ । प्रिया मनाये भूरिभाग । रंग॰

ललकके लोचन उमान । रंग । प्रेम उमगि पेडान

गान । रंग । उर सोहे मणराजी माल । रंग । मदन

मन उपामगी बाल । रंग॰ । वाङ्कं डगमोक फूल । रंग॰

65

हियेहै असीसो सावको मूल रंग अलकनिकी सिर
ही सोभा देत रंग कोंमके लिके विजयकेत रंग म
ह किरहीतन अनिसवास रंग अखिगावनकी व
नि सरासमसास। रंग। जाहीसों मिलेहमैं चैन। रंग।
साखिन सकत यह गहफसेन। रंग। रामराय अभ
सनन हसे। रंग भीने हो। कोउ भाग वानके हियेब

गा गा

से ।। रंग। रागरंग धार नाल ।३। रतिरस केलि विलास हास। रंग। काउ सुंदरि नारि केलगे गान। रंग ।। अरुण नयन श्रुति रसमसे। रंग। मनो भोर भंपंज लजात लाल। रंग भीने हो। बोलन बोल धनीन के रंग भीने हो। सुंदर सांवल गात लाल रंग भीने हो त्रिया अधर रस पान मन। रंग। कहन कहें बान ।।

६६

लाल अनिलो हिनरगामगे रंग। रंग। मनो मोरज
नजात लाल बाल सिथलझबमाल सिथिलँ रंग
ससिमखेसिथलजेभात लाल केससिथलरखे
स सिथल। रंग। वयक्रम सिथल सिराव लाल गो
विंद प्रभ नंदसुन किसोर रंगभीनेहो। वज्रनाथ
कविव्यात लाल। रंगभीनेहो॥ रागगंधारना॰१२

गं॰रा॰ सांझके सोवे पोलति हरि। रजनी अनत जागि नंद
नंदन आए होति परभात सवारे। आन अरभए नील पटओ
ढ़े पीरे वसन विसारे। कुंभन दास प्रभु गोवर्द्धन
धरभले बने अति प्यारे॥ राग गोपाल॥३।
ललारे प्रीय पियारे। केसी केसी उपजन
नमैंप करन वनाइ वनाइ। अमन श्रयर कौं

67

श्याम भए कें घेर पट पलटाइ। रुचिर कपोल पीक क
हें लागी उरज पग पखलि लाइ। गिरिधर लाल जहां नि
सि जागे नहीं देह सम्हाइ। कृष्णदास प्रभु छाजे छुट
पटी श्रवननि मे को पनि आइ॥ राग गंधार ताल॥३॥
कहां थें आज कहां बसे लाल भोर भए आये उठि सवा
र पग। विरह कारकं उठे मोहन बोलन नम ज्ञम

गं॰रा॰

खग। काजर अधर लटपटी पाग उर बिलुलित कु
सुममाल ऊब परखग। अरुन नैन आलस जंभात
पीपरैं निकीयो जग। रतिके चिह्न तन प्रकट देखि
यत काहूकौ डराव करत स्याम सुभग। कुंभनदास
प्रभु रसिक गिरिधर पै चतुर नागरी फग। रागगौ
धारनाला २। कहो यौ कहा न मैं रैनि गंवाई लाल ऽ

68

श्रमताउदेखाये। कौंनसकौवस्यामघन छेदरातनम

झरवालनउढिघाये। श्रोंखिदेखिकहासाखिबूझि

येरतिकेचिह्नन प्रकट लगाये। कैभनदासमहजों

नगिरिधरकाहेंकौंडरत पीयजोंनिपाये॥ रागगौ

यारनाल। ।पेसीवातन लालनकौं मनमांनें।

उनकूबनाइबनाइनासोकहियेजोइहनजानें। रति

गो॰२

केचित् प्रकट देखिये नहैं कैसें उरन उगे नै। जो भनदा
म प्रभु गोवर्द्धनधर होनम लैरसमयो ने॥ रागगोधार
नाल॥२॥ आज अरुन अरुन डोरे लालके उगनि ला
गनहूं भले। नंदन पे पगन अलि मानौं कंजदल
नि परबले॥ लालकी पगी यामैं न समात कटि
ल आलस झिले॥ नंददास प्रभुप्रेम ५

69

६९

मानौं सोवननैं कलमले ॥ राग गंधार ताल । ।श्री
वन लाल गोवर्द्धन धारी उग मगी चाल लट पटी पा
ग । आलस नैन सरस रंग रंजित प्रिया प्रेमन वनय
नुराग । विललित माल मरगजी उर पर सुरत
समर की लगी पराग । ऊँवन स्याम अपर कलग
वनरति सुखभान विलावल राग । पलटि परे पट

गे·रा

नीलमाधवी केरस मधु जीलन मदन नआगा । हेदा
वन वीथिनि अवलोकन कुसुदाम लोचन वउभा
गा ।। राग गेयारनाल ।। ३ ।। कहान डरत पियजान
शिरोमणि रसिके चिन्ह देखियत हेरयारे ।। अरु
ण नयन घूमत आलस मह कछुक जंभात अ
धर मसिकारे ।। स्याम संगान भनावे पदन्यारे

70

चंदनखोंट बनें मांनो तोरे । अवर अनेक कहांलो ब
रनौं इहनागरराज आपह्रो सवारे । मोहनलाल गो
वर्द्धनधारी कटितट नील वसन वने प्यारे । कमलदा
स कहऊ थें श्रीनम वन्ररपीन पटकह्रां विसारे ॥ रा
ग गंधारताल । । मयाकीनी बलवीरा आपन स
ुरके बोल । नागर नंदलाल कुंवर पहिरें नीलनि

गं॰रा॰ चोल। मोहन रंगमगे अलसान कमल नयन अ

ति सलोल। अधर तिनाके देखें बने अरुण श्याम

कपोल। मृगमदको तिलक रच्यौ सिंदूरकेजो

ल। ऊपर नखे चिन्ह रतनकौ उरत अमोल। कृस

दास प्रभु गिरिधर मोहत मन अलोल। अपनौ पी

तांबर देलियो मदन मोल॥ रागगंधार नाल। २।

मोहन कुंददाम उरधर कचकुंकुम रंजितवनी।गोप
लवधू ग्रलिपंतिन नजननकेलि धन धनी।मोहनग्र
थरस्याम मनावे जेभाति संगामस्वासमनी।ग्रवरवि
न्ह ग्रगानित पियनगानैं गाधं नेगानी।कुसदाम
ग्रग्र नवरंग ग्रवलिनि विंनामनी।गोवर्द्धनधरन
धीररसिकनि कुलमनी॥रागगंधारनाल। ।

गे॰रा॰ लाल नेरे चपल नैन अनियारे। नंदकुमार सुरतर

सभीन प्रेमरंग रतनारे। कछुक अमरीये चकितव

हे दिसि नवल रजो वनवारे। मानौं शरद कमल

पर खंजन मधुप अलक बुघरारे॥ पञ्ज मीन

घनस्याम सिंधु मै बिल सत लेत उझारे। गो

वर्द्धन धर जान मुकट मणि कुंभनदास

प्रभप्यारे ॥ रागगौरीमाला ॥ ३। सोईभली जिनन

म विरमाए। स्त्राकरि भामिनी सबनिमिलनवए

दउरनाव ऊसम वढाए। ग्रहण दिसा प्रवहीनहि

देखो रहन मधुपकमलनि समुदाए। हरणिनिधो

न गसिक नेदंनेदन कवन संकोच सवारैंआए। से

ध्यावदेवोल मनमोहन कीनी भली ओर प्रवराए।

गं॰रा॰ आलस नयन जंभात अधर वर रतिके चिन्ह न

हि दुरत दुराए। अपने पीत पट दिये सखीको

की तिलए नील वसन पराए। कृस्नदास प्रभु

गिरिवर धर पिय जुवति सदसि उदार कहाए॥

राग गंधार ताल।२। यति ताल लालन महो ई

जाइ जाके रसले पट भूति। आलस नैंन देखो पन भेयरे

७३

प्रकट करन प्यारी रति। अधर दसन छत वसन पीक
सह अह कपोल श्रम बिंदु देखियति। नखलेखनि
ननलिखौ स्यामपट जिय पना करण जीत्यो रति
पति। कैतव बादन जो पिय हम सौं जे सै नन स्याम
नेसेई मनहो अति। गोविंद प्रभु पिय पायन सेवा रहु
गिवत ऊसम सिर मालति॥ राग गोंयारना-१३।

गे॰रा॰

अज वेई सिथिल देखिवयन झोवहोर सभ भेला
ल। मवनि सिजागे अति सिथिल अरुणा दोऊ श्र
उन नैन विसाल। सिथिल भूषण कटि वसन श्र
नि सिथिल मरगजी माल। लटपटी पाग सिथि
ल अलका वाल विरागिन ऊ सम गुलाल। सिथि
ल सिहंडसे मलट कि रहे आप भोरडगमगातवाल

७४

सिथिलबैन कछुकहत आनकी आनगोविंद प
भुप्रिय होवे हाल ॥ राग गंधार एकताल ॥ जानि
पाप हो लजतें बलि बलि ब्रज नृपति कुंअर । जाके
बसबनिसि जागि आपन होई अनसर । अपनीप्या
री के बिनि के बिन हमहि दिखावत आपदेत लो
नदाफेपर । गोविंद प्रभु सांवलनैननते सेई होमन

गे॰ रा॰

जनरति हीन बड़जवनी आगहर ॥ दोवा गेधार ना

ला३। बलि बलि पाउ धारिये आज कछु मेरो लह

नो ब्रजनरप हनभोर आपही रसभरे। भई बडी बार

पाउ धारिये हमनि बाजी वालो अगार जावा मेवीरा

ले आगा धरे ॥ कहि न सकति एक वान लाल

न जाके निसि बसे ताके बसन पलटि धरे।

गोविंद प्रभु प्रिय जान शिरोमणि के बल होउ के

हरे ॥ राग गंधार ताल । । आनन मे दीप मणि

जसोदा प्रभु दिन कमल नयन गुण गावति । प्रति

हि मधुर गति के द सुचर प्रति नंद सुवन के चित

हि बहलावति । नील वसन तन सलिल सजल स

नेहा मिन विब भज दे उबलावति । चेदन दनिल

गे॰ रा॰

र लटकि छबीली मनहु भ्रमर रस बाढ़ छुरावति
गोरस मथ्यात नाद एक उपजत किंकिणि धुनि
धुनि श्रवण रमावति । सूर श्याम अंचरा गहि ठा
ढे कांमक सोटी कसि दिखरावति ॥ नंदजू के बा
रे कान्ह छाडि दे मथ्यनियां । बारबार करै मानाज
ननि रनियां । नेक रहो माखन देहों मेरे प्राण धनियां

76

श्रीजिनिकरी बलिगईहौंमोहनिया । सुरनर

मुनिजाकौं ध्यावे म्रानजनिया । सुरवषामदेखि

सवभूली गोपयनिया ॥ रागगंधारताल । ।नेक

रहोमोंखेनधौनमकौं । नाफीमथनिजननिद

घि धानरलवनी नेंदमवनकौं । मैबलिजाउंस्या

मवनहेदरभूखेलगीनमेभारी । वानकहेकौहू

ग·रा·

ऊनि स्याम हि फेर करत मइतारी । कहत बात इ
रि कछून मनजन छोटे हि भरत अंकारी । सूरदास
प्रभु के गुन गरत हि बिसरि गई नंदनारी । रागगै
यार नाला ३। बात नहीं सुन लाइ लयो । नवलो
मथि दधि जननी जसोदा मांखन करि हरि हा
थ दयो ॥ लै लै अधर परस करि जेंवत :

77

देखेन कुन्यो मान हियो । आछहि खोत भ्रंमंसन
आछहि मोखेन रोटी वडून शिपो । जोअभ्म शिव
मनका टिक डर्लभ सन हित वसकरि नेदाखियो
यह साव निरखेन सोज भ्रम्को यम धम्म प
लसफल जियो ॥ रागसहरो ॥ देखी मेया दोर
नी डहिहै मेंगेयो ॥ मोखेन खोयवल भयोकरी

गे॰रा॰ नेंदड़ैंरैया। कनरीसें डरी धकरी धोरी मेरी गैया

ढहिल्याऊ मैं नरनरी नेंकोरि देवैया। ग्वालनि

कीसर डरूनंडें वजड़वलभैया। हारानिरविजन

नी हैसीन वलेनि वलैया॥ राग गेंधार माल॥३॥

वावा मोकों डरून सिखायो। नैरे मन परतीन

न आवै डरून डरून खेंगरियनि भाव वनायो॥

78

७८

प्रेरितन भावदेखिजननी नवहेंसिकें स्यामहिकंठ
लगायो। आठवरषको ऊंवर कन्हैया इतनी उहि
कहूंतैं पायो। मातालै दोहनी करदीन्हो नवहरीहैं
सन डहनकौं धायो। सरस्यामकौं डहन देखिनव
जननी मन अति हरष बढ़ायो ॥ रागगंधार ता
ला। ।जननि मथति दधि डहन कन्हाई। सखोपर

गं॰रा॰

सब कहत स्यामसौं हमऊंते नम करन वेडाई । उ
हन देह कछु दिन ग्रह मोको नव करिहै मो सम
सरि आई । जबलौं येक उहोवे नवलो च्यारि उहो
नोनेद दोहाई । छूटेहि करन दोहाई पान उहि दे
रविहिंगे नमरी श्रपि काई । सूरस्याम कह्यो का
लि उहैंगे हमऊ नमऊ मिलि होउ लगाई ॥ राग

७१

६८

उद्धीधानहीराधिकादोहनीकरलाई।महाविम्हता
मैंनवकसोकहै वलीधजराई।खरिकउद्दावन
जानिहैगमरीमेवकाई।नमटकराइनिवारहो
मोहिवेरीपाई।रीनीदवीदोहनीकनखोजनया
ई।कालिगईधवमेरीकैकोउठेविसराई।गाइगई
सवप्याइकैजानहिनहिआई।नाकारनमैजानि

गे॰ रा॰

हैा अति करत चेंडाई। यह कहि जननी सौंवली व
जकों समझाई। सूरस्याम गदह द्वारही गौ करत उ
हाई॥ राग गंधार ताला ३। खेलत महर ब्रषभान
की नंद सदन हि आई। गदह द्वारेही अजिर मैं गाउछ
हत कन्हाई। स्याम बिनै माव राधिका मन हरष
बढाई। राधा माव स्री देषि कैं तन सुरति भुलाई

40

मरूरि देखिकी रति स्वनानेहि लियो बोलाई । देप
निको स्वाव देखिकें स्वराज बलिजाई ॥ राग गंधार
नाला । आज भोरही राधिका जसुमति ग्रह आई ।
मरही कयोहेंसि दीयमथ्यो दूध मांन उठाई । स्वनि
आयस लाल्ही भई करनेन सहाई । दीनो माट बिलो
वही चित जरें कन्हाई । उनको गति हा कहा कहो

गे॰रा॰ जिन दृष्टि दुराई। लरिया ने इष्ट भरे गई या विस

राई। जसुदा निरखे हरि तें मन में मुसि काई। सूर

दास दंपति कथा मोपै वरनी न जाई॥ राग गौधार

नाला॥ महरि कहति री लाडिली किहि मथान

सिखोयो॥ कङ्के मथनी केंडे मोटहै चित करहो

लगायो। कोंधों मेरे घर आइकें ते सब विसरायो।

८

२१

मथ्यन नही मोहि आवही नम मौह दिवायो। निहि

कारण मैं श्राइकै नव बोलरखायो। नवनंदचरनी

मथिरुपि यहि भांति बनायो। हंसि बोली नव रोपि

का कह्यो अव मोहि श्रायो। नव निरखि नवेस्याम

को नहै ध्यान लगायो॥ राग गंधार ताल। । रुपि

मथनि नवालि गरवीलीरी। कनक ऊनक करके

गेरा

कणा बाजेबाजू डुलावनि फीलीरी । कुसदेवदीय
मावेन मागान नाहिन देनि रूटीलीरी । भरी गमं
न विलोवनि लागी ग्रप्ठैने रंगारंगीलीरी । हसिबो
लो नेद लाल लाल लाडिलो कछु एक बात कही
लीरी । परमो नेद नेद नेदन कौ सर्व सुदी योहे बछ
बीलीरी । रागगंधार ताला ३ दपि मथन कौ रेने दांनी है

8

वोरकन्हैया आरिनकीजे छाडिनदेहु मथो नीहो ।
वारीमेरे मोहन करपिरांउगे कोंन विनमें ठानीहो ·
हरिमसिकाउजननि ननविनयो हीपमागरकी
धोंनीहो । जेशणमरस्वनि छूदनि गाएनैंनि नैंनि
मथुवोंनीहो । परमानंद जसोदारानी सतमनैंहल
पटोनीहो ॥ रागगंधारताल । आनममें उठिज

गो.रा.

सोमनो दधि मंथन कीनौ । प्रेम सहित नवनीत ले
सुतन के मुख दीनौ । औरहि हृदय चैया कियो हरि हवि
सो लीनौ । मधुमेवा पकवांन ले हरि आगें कीनौ
इहि विधि नित क्रीडा करैं जननी सुख पावें । गो
विंद प्रभु आनंद मे आंगन में धावें । रागगोपारका·
झूलो दधि को मथन करिबो । दोवन रसिक नंद

83

नंदनको उगामगो पगायरिबो। रहिगाई तिनै चित्र
जैसे एकटक नैंन निमेषन परिबो। चतुर्भुज प्रभु
गिरिधरन जनायो नाहीमें मणि माणिकहरिबो
राग गंधार नाला। । देखोरी माई कैसी है ग्वालि
न उलटी रई मथनिया बिलोवे। चित नेनीकरवे
वल फनि फनि नवनीते टकटोवे। निरखि सबु

गी॰रा॰

पचोहरि चितलागपो एकटक गिरियरम्रवरवेजोवे-

ऊेभन दास चिते रही चक्रवक ओरें भाजन पोवे-

रागगेयार नाला ॥१॥ परी आनंदमें हरिमयति ज

सोदा कनक मथति आंचम। निर्तत कान्हलालि

न लोचन पगा परत भटपटेभूमें। बाफचरवोडाम

धजुटिलकच भमनकनानाहूमें। मनोंमकरंद

8

बिंदुलेमधुकर हततहित प्यावत झूमैं। बोलतशण
मनोतरी वतिश्रोहृसि हृसिदतिश्राहूमैं। सूरदास
वारी छवि उपर जननी कमल मवछूमैं॥ रागगां
धारताल। । आजसखीरी प्रातसमैंदधि मथन
उठी अकुलाई। भरिभाजन मणि खंभनिकटध
रिनेतली यो करजाई। सुनतशब्द हरितासमीपह

गं॰ ग॰

सि उदिय्राप्हहकाई। मोहनी बाल विनोद मोदप्रति
नैननि निरनि दिखाई। भूली नन धनि विब बिलो
कनि रीझी सहज समाई। चिनवनि चलनि हसो
चिन चंचल चिन बेझी चिनचाई। मारवन पिंडलयो
देउ करनव ग्वालि रही मासिकाई। सूरदास प्रभु
सर्वसको साख सकीन हृदे समाई। रागगंधारना॰

85

८५

छबिसौं डोलति भजन छबिसौं डोलति कटपरबेनी
या बिलोवति परवाहैं री कोटि नाच । दधिको भ्रम
र श्रमधनित बाल श्रमधनित घंटिका धनित जेनै
श्र करत सांच गौर आरक्त अतिशोभित स्वाबेश
मको बदन ऐसो मनहु कनक लागी आंच । योपी
के श्रमको मन मोहनि पई करभेद २२ नैननकी छबि

गे॰ गा॰

चलोच ॥ अथ बाललीलाके पद ॥ राग गंधार ना

ला २ । भावत हरिके बाल विनोद । केसो राम निर

खि सखि प्रहसित प्रमुदित रोहिणी मात जसोद ।

आंगन पंकराग तन सोभित चलन पुर धुनि

सुनि मन मोद ॥ परम सनेह बढ़ावन मा

त निरख किरब किटन उटि गोद ॥ ॥

४६

२६

अतिसय चपल सदा सुखदाइक निसदिन रहत के

लिबस ओद। परमानंद प्रभ खंजन लोचनि फिरि

फिरि चितवत ब्रजजनकोद॥ रागगंधारनाल॰

बालदसा गोपालकी सब काहू भावे। जाके भवन

मैं जात हैं ले गोद खिलावे। श्याम सुंदर मुख नि

रखि कैं अविरल सचु पावे। लालबाल कहि गो

गे॰रा॰ पिका हसि भलो मनावे। छुटकी दे दे प्रेम से क

रताल बजावे। परमानंद प्रभु नांच हरी सिषनाहि

जनावे॥ रागगंधारताल ३। बाल विनोद गोपा

लके देखत मोहि भावे। प्रेमपलकि आनंद भरी

जसुमति गुण गावे। बलसमेत वनसांवरो आंग

नमें धावे। वदन हूमिको दालियो मनजांनिविलावे

२८

शिवविरंचिमुनि देवता जाको पार न पावै। सोप

रमानंद ग्वालिकों हसि मिलो मनावै।। रागगौरी

रताल। । हरिको विमल जश गावति गोपांग

ना। मणिमें आंगन चंदराइके बाल गोपाल न

होकरे रिंगना। गिरि गिरि उठत ठुटक चलिटे

कत जोरत पाणि मेरो ब्रुगनको अंगना। पल

गं॰रा

रषी उठाइ गोद ले मात नजसोदा के प्रेम को भज
ना। विपद भइ भिना पीम वन आलस भयो अ
वज्र कठिन भयो देहरीको लंघना। परमानंद प्रभु
भक्तवछल हरि रुचिर हारवर के कंठ सो है बघना।
राग गंधार ताला ३। मणिमै आंगन नंदके खेलत
दोऊ भैया। गौर स्याम जोरी बनी बलजू बर कन्हैया

२८

९८

नूपुर केकन किंकिनी रुन झुन झुन बाजे। मोहि

रही ब्रज सुंदरी मनमथ रुत लाजे। संग संग जसु

मति रोहिनी हित कारन मैया। उरकी देदन वाव

ही रुत जानि नंन्हैया। नील पीत पट ओढ़नी दे

खन मोहि भावे। बाल लीला बिनोद सौं परमानं

द गावे॥ राग गंधार ताल ३। यह रुनन कारि ज्ञौं

गे॰रा॰ कमलनयन पय सोंवलियो मोहि भावै रे। चरण

कमलकी रोरि जसोदा लेले सिर सिर फावैरे। ले

उछंग मारे निरखन लागी राईलोंन उतारै रे। कौ

न निरासी दृष्टि लगाई लेले खेचरफारै रे। तूं मेरो बा

लक तूं मेरो ठाकुर तोहि विश्वंभर भावै रे। परमा

नंद स्वामी चिरंजीव कुंवार वार यों भावैरे ॥ ॥

८१

ननक कनकी की दोहनी देदरी मैया । नातनउहन

सिखवन कह्यो मोहि धौरी गैया । हरि विषमा सन

वैठिकै मटुकर थन लीनौं । धार ग्रटपटी देखिकै ब

जपति हसि दीनौं । गट्हगट्हनै आई सबै देखन ब्रज

नारी । सब किन नन मन हरि लियो हेसि वो छवि

हारी । छिनउलार दछिनो दई मंगल जसगावे ॥

गं.रा.

परमानंद प्रभ लाडिलो सबे सिंध वफ़ावे ॥ राग

गंधार नाला ॥३॥ बाबाजी मोहि दोइन सिखाऊ ॥

गाइ एक सखी सी मिल बडुहौं नीकें डडे केवल दा

ऊ। लेनोई मेली चरणनिमें लाडिलो ऊकमनो वन वछ

राऊ। पानि पयो पर परे पन के भाजन नवे गिम खो उचदा

ऊ। नवनंद रानी नैन सिरानी हिन उलाइ दकि नरिखाऊ

१०

वारि फेरि पीनें वर हरि पर परमानंद दास हिं परि

राज ॥ राग गंधार माल । । बोलन लागे मैया मै

या । बाबा कहन नंद राइ सों अरु हलधर सों भैया ।

खेलन फिरत सकल गोकुल में घर घर बजत बधै

या । परमानंद दास को ठाकुर ब्रजजन केलि करै

या ॥ राग गंधार नाल । । नंद जू नी लालन की

गे·रा·

कवि आली। चरण पैंजनियां छुम छुम बाजे चलन
सैल्हगाहि वाली। अधर अरुण दधि मुख बसें लपटे
अलिराजन नन कीटैं छाली। परमानंद प्रभु बा
लक लीला चितवन का फिरि पाली॥ राग गंधार
माला २। हरिलीला गावति गोपीजन आनंदही मैंनि
सिदिन जा३॥ बाल चरित्र विचित्र मनो हर ॰

९१

६९

कमलनयन व्रजके सुदाइ । रोहन मंडन खेडन
लेपन गतह मजन स्नन पति सेवा । बारिजोंम श्र
वकामनही क्लिनस मिरन हृलदेव देवा । भव
न भवन प्रति दीप विरा जिन कर केकन न्नरवा
जे । परमानंद बोध अन्तहल देखि भंगति स्वरप
निलाजे ॥ रागगंधारनाला । सोगोविंद

गे॰ पा॰

तुम्हारो व्रजबालक। प्रकटभएवनश्यामवर

भंजधरेदनुजकुलकालक। कमलापतित्रिभुव

नपतिनाइकभवनबनईसनाइकसोई। उत्पति

प्रलयकालकोकरताजाकोंकीयेसबकछुहोई-

सनकनेदउपनेदकथाइहईसनीरसमुद्र

कोबासी॥ बसुदेवयाभारउतारनआयो

९२

६२

परंब्रल बैकुंठ निवासी। ब्रह्मा महादेव इंद्रादि
क विननी के रहेले आप। परमानंद दास को
ठाकुर बहुनलक्षण जपके नसपाप॥ रागगंधार
माल। ।प्रानसमै गोपी नंदरानी। मिश्रितघ
उपजत हिंग्रो सरदीपि मंथत अहमोटयोनी॥
निरखत लोलके पोल विराजत कंकनन्हराकृति

गे॰ गा॰

नपकरस। रजवाकरषत भ्रजलागन ब्धविगा

वन मदिन मणाम हेदरजनस। चेवल श्रेवणलक

वहारा वलिवे नीव लाविमित क्रमहमोकर। म

गा भकामनश्री दीप श्रेपेक्षा मरूज भाव राजन

मकालिनव्रर। वफि विमान देवता गोकुल श्र

मरावनी विमेषी। परमेनंदद्योषक्रनन्हल

१३

जंहां नहीं श्रवन कुविपेषी ॥ राग गंधार ना-
शाके शाके बोलगउ । कहां करों उत्तर नहि निक
सत षणा ममनो हरबचरवउ । मेरैनेक श्रावरीमा
मिनि रहसि बुलावन हारबचउ । परमानंदस्वामी
रति नागर श्रीनि बारबन ऊंबर लउ ॥ राग गंधार
नाता । ।देखो माई हरिजू की लोटनि । यह छवि

गे·रा·

निरखि निरखि नंदरानी श्रेम श्रापरि फरिपरत
करोटनि । परमत श्रानन मनुरवि कुंडल श्रेवन
श्रवन सीप मन जोटनि । वेवल श्रघर वरण कर
वेवल मेवल श्रेवल गहन व कोटनि । लेतिबिक्कि
उड मझरि कर सौ कर हरभई देखनि उरि श्रोट
नि ॥ म्हर निरखि मसि काय जसोदा मथरमथर

९४

बोलत मधुर बोटनि ।। राग गौयार नाला । ।माथे

न निकसो वदनन निकसे चरणा भजनन निकसो

खेन । न निकसो कपोल न निकसी भृकुटी ननि

कहसनि हरि लैन है मन । न निकसे श्रवरननि

कसीदनि ग्रीन न निकसे वसनन न निकसे आभरन ।

न निकहिन निक सहा निरवारौं न निक क्रपाकी

गे॰रा॰

ऐननिकसरन ॥ रागगंधारनाल ॥३। बालविनो
द श्रांगनमैंकी डोलनि । मणिमय भूमिसुभग
न दालय वलि वलि गई मोनरी बोलनि । कठुला
कंठ रुचिरके हरिनख वज्रमाल लई नेद अमोल
नि । वदन सरोज तिलक गोरोचन लटलटक
नि मधुप गनटोलनि । लोचनकरपरसत आनन

परकञ्चुक खोत कञ्चुलगो कपोललनि । कहूँजन
म्हर कहंलौं वरनौं पग नेहजीवनिजगातोलनि
रागरंगधारनाल । । गोपाल डेरेहे माखन खोत
देखिसखी शोभाजवकी हेश्याममनोहरगात । ३
टि अवलोकि श्रेटनाकी केकिहिं विधिहेलखि
लेन । वकिननैन वहूंदिसचित वन श्रेरसखनिको

गं·रा· देत। सुंदरकर आनन समीप हरि राजत इहि आका-
र। जनु जलरुह तजि वेक विधु सौं लिये मिलत
उपहार। गिरि गिरि परत बदन तें उर पर है दीय
हनके बिंदु। मानहु सुभग सुधाकन बरखत नीष
य जन आराम इंदु। बाल विनोद विलोकि सूर प्रभु
थकित भई ब्रजनारि। कानन बचन बरजिबे कों

९६

मनरही विचारि विचारि ॥ ताते यों धारनाल।
देख्यौ मैं दरपन तनमैं दरपजान। एक घंबे भो हनि
री रजनी दिनमैं दिनजसमान। तापर कीरकीर
पर पंकज पंकजके है पान। सुंदर वदन विलोकि
प्रणाम को विमन हस सिकान। एक्षि प्रीति वढी
एहयाले कहन कही नहीजान। एतो थंतनयर

गी॰रा॰

नजे हरिको तिनही सुरबलिजान ॥ रागगंधारनो

ला ३ । सोभित करनवनीतलिये । घुटरुनचलत

रेनुतन मंडित मुख दधिलेपकिये । चारुकपो

ल लोल लोचन छबि गोरोचन चनको तिलकदियें ·

लटलटकनु मानोमत्त मधुपगन मादकमधुहिपियें ·

कठुला कंठवज्र केहरिनख राजतरुचिर हियें ॥

९७

८०

धन्य सूरपको पल यहू सबके मन कलपजियै
नगगंधारनाल। ।बालविनोद खेरजियभाव
न। मुखप्रतिबिंब निहारिबेकारन ऊलसिखइह
बनियावन। कमल नैन माखनके कारन करि
करि सैन बनावन। शह जोरि बोल्यो चाहत हरि
प्रकट बचन नहि आवन। अनेक बलोड खेरकी

गो॰रा॰

मह्रिमोसि सनामोहडरावत । सूरदास स्वामी स्ताव
सागर जसुमति प्रीति बढ़ावत ।। राग गोयारना २
नंदधाम खेलत हरि डोलत । जसुमति करति रसो
ई भीतरि आपुन किलकत बोलत ।। टेरि उठी जसु
मति मोहन कहिया बड़ भूटकनि पाई ।। बैंन सु
नत माता पहिचांनी चली घुटरू बनि पाई ।।

98

लै उछाह अंचल गहि पौंछति धूरि भरी सब देह । सू
रदास प्रभु जसुमति रज झारति कहौ भरी यह खेह ॥
राग गंधार नाला । धनि जसुमति बड़भागिनी लि
ये कान्ह खिलावै । ननक ननक भुज पकरि कैं ठा
ढे होन सिखावै । लरखरात गिरि परत हैं चलि
घुटुरुनि धावै । पुनि कम कम भुज टेकि कैं पकरै

गो॰ रा॰ क चलावै। अपनैं पाइन कबचलौ मो देखन पावै।
सूरदास जसुमति इह बिधि सौं जसुनावै॥ राग
गंधार नाल ३। चलन चहन पाइन गोपाल॥
लै लगाय अंगुरी नंदरानी मोहन सुरति श्याम तमा
ल। डग मगात गिरि परत पांणिपर भुज भ्राजत
नंदलाल॥ जब श्रीधर धरन अधो गुविंद अकति

९९

पटनि मानहुं नभि नाल हरिय उनमत नैंननि थे
जत चलत खटपटी चाल। चरण हरिण न नूपुर थ
नि मनौं मद बिहरत जैसें बालम बाल। लटलट
कनि मानौं बाहव छौंडा हाठि शोभा सिरह भाल
सूरदास पभो स्याव निरखत जो जीते जग मैं व
डुकाल॥ राग गंधार माल। । गाहैं श्रेंगरियास

गं॰ रा॰ बनकी नेदबलनमिलोवन। ध्वरबरायगिरिप

रनहूं करटे किउचावन। बारबार बकिश्णामसों

कछु बोल बोल बोलावन। बहूपाहेदतियोभ

ई श्रुति छबि मरव पावन। कबहूं कबहूं करखां

डि नेद पकौं फिरि गावन। कबहूं परनि परबे

ठि जात मनमें कछु गावन। कबहूं गोदलेरखिकें

100

जियमें बड़भावन। सुर प्रणाम सब देवि सहर्ष
मन मोद बढ़ावन॥ राग गौधारनाल। बलि
बलि जाउ मधुर सुर गावहु। अब की पर्व रमे र
कुंवर कन्हैया नंद हिनाचि दिखावहु। मोरे देहे
अपने कर की परम प्रीति उपजावहु। श्रीनंजन
श्रुति सानि उरपन कर नभो भज कटलगावहु॥

॥१॥

गे·रा·

जिन संका जिय करहु लाल मेरे काहे कौं भरमाव
हु। बाहु उचाइ कालिकी नाई धोरी धेन बुलावहु
नाचहु नेक जाउं बलि तेरी मेरे साथ सुनावहु। रतन
जटित किंकिनि पग नूपुर अपनैं रंग बजावहु।
कनक खंभ प्रतिबिंब आपनो नवनवनीत खवाव
हु। परमदयाल सूरके उरतैं हरि टारे न हि भावहु ॥

10

९२

चलत स्याम परोजत पैंजनि पगावाय मनोहर ।
उगमगात डोलत आंगनमें निरखि विनोद मग
न मोहेसुर । अकमक बदित जसोदा जननी पाछे
फिरिति गहैं अंगुरीकर । मनहुं धेनु त्रणछाडि
बच्छहित प्रेम पुलकि चित द्रवत पयोधर । कुं
डललोल कपोल विराजत लटकत ललित लटूरी

गो॰ग॰

याभूपर। न्हारस्याम सुंदर अवलोकनि विरहनवा
ल गोपाल नंदद्वार॥ राग गंधार ताला ३। कलबल
नैं हरि हारि परे। नव तरंग नव नैन जलद पर मानहु
हेमसिखानि धरे। नव गिरि कमठ स्वगाम्बर सर्पहिं
धरनमन महि नेकुडरे। तिन भुज भूषण भार पर
न कर सोपिनके आधार धरे। बिंबबदन मानहु

१०२

मथि काढ्यो विहसति मनहु प्रकास करे ॥ स्या
साम दधि भाजन भीतर निरखत मुख मुखवैनै
नटेर ॥ रागगैयारनाल । ।सिखवति चलन ज
सोदा मैया । अरवराय कर पानि गहावति डगम
गाय धरनी धरै पैया । कवहुंक सुंदर वदन विलो
कति उर आनंद भरि लेति वलैया । कवहुंक कुल

गो॰ रा॰ देवता मनावति चिरंजीवो मेरो लाल कन्हैया। क
बहुं कवल कों टेरि बुलावति यह अंगना खेलऊ
दोऊ भैया। सूरदास स्वामी सुखसागर प्रति प
नाप वलकत नंददैया॥ भावत हरिके वाल वि
नोद। श्याम राम मुख निरखि निरखि सुखप
मुदित रोहिनी जननी जसोद। आंगन पंकपरसत

१०३

103

मेडिन चलत कीनि नूपुर मन मोद। परम स
नेह बढ़ावत मानिन निविकार बैठन चढ़ि गो
द। आनंद कंद सकल सुखदायक निसदिन र
हत केलि रस ओद। सूरदास प्रभु अंबुज लोच
न फिरि फिरि चितवत ब्रज जन कोद॥ राग
गंधार ताल ३। श्रीगन प्रणमन बावंडी जमु

गे॰गा॰

मनिनंदरांनी। नारी दे दे गावही मधुरे सुरबांनी।
पायनने पुर बाजही कटि किंकिनि कूजे। नान्ही
एडिपन अङ्कनता फल विवन सूजे। जसमति
गोन सुनै श्रवण नव आउहि गावे। नारी बाज
न देखही धुनि नारी बजावे। केहरि नख उपर
सैसुहृदि सोभा कारी। मनहु स्याम घन मध्य

105

२०४

मैनो मनि श्रृंग यारी। गभुआरे सिर के से है बनै हूं ब
रवारे। लटकन लटके भाल पर बिधु मधि गन तारे।
कठुला कंठ चिबुक तरे खवि दसन बिराजे। खंजन
बिच सुक आनि कै मनो परयो दुराजे। जसुमति सु
त रिन बावरी कु बिदे खति जियवैं। सूरदास प्रभ
श्याम के खवि दरसन न हियवैं। राग गंधार नाला ३।

गे॰या॰ माथौनननक वरण घहननवक भजनननक वदनवो
लै नननकसे वोल। नननक कपोल नननकसे कारनि
परननक सेवाकेन लीयै देवन नननकयाके सकल
भवन। नननक सवनेजो जन सवसो पावत परमगति
नननक कहननतासों नंदसवन। नननकरीऊपरदे
न सकलनन नननक विनौ निधिनके हरन ॥

१०५

१०५

ननक हमति नमकौ निननक ऊनिन नरेवचन

उचरन। ननकहि तिन कननक कीछावै हरहि

ननकदी जै ननक शरन। रागगोंधार नाल॥१॥

आज हमारै मगि खिमनि कटजंहारे गोरमकी।

गोरी। निजधनि विब निरहि सिखवन सिह घ

कटकरो जिनि गोरी। ग्रंहे विभाग आजनैं हमन

गे॰ रा॰

मभली वनी यहू जोरी। माखेन लेऊ कन वडार

नहो नम वालक मति भोरी। हेमान लेऊ मवेवा

हन होय हे वान हे योरी। मिश्री हवि र थोर वाह

नहो देउ करहा भरि फोरी। मनि प्रिय ववन धीर

जन रहो नव रसिक हमी मावमोरी। सूरदास प्र

भु मकु विवले हरि मवन अंजकी खोरी॥ [illegible]

106

[illegible]

वालगोपाल विराजत आज। इंदुवदन दीपवृंद

परे नन करन वनीत मनोहर साज। किधौं प्रक

ट मकरंद कमलमैं कीनो उदित समाज। कैधौं वि

न केस लटे सन वलनन मिलियाप हे करत जैरा

न। उद्दकी देखन नचावति संदरी कटि किंकिनि

नूपुर वाज। दासगोपाल मदन मोहन कीवि वि

गो॰रा॰ नवतन सकल विसारे काज ॥ राग गंधार ताल ॥३॥

वड भागिन गोकुल की नारि । साविन रोटी देउन

चावति जगदाता सालवेल नप हारि । सोभित वद

न कमल दल लोचन सोभित केस मधुप सुन हा

रि । सोभित उर मकराकं कुंडल छवि सोभित मृगम

द तिलक लिलारि सोभित गात चरण पर

भजन सोभित सोभित किंकिनि करन उचारि। सो

भित निरत करन परमानंद गोपवधूवर भजा प

मारि॥ राग गंधार ताला। ४। खेलत घर आंगन

गोविंद। निरखि निरखि जसुमति सुख पावति

वदन मनोहर राका इंदु। कटि किंकिनी चेंदुमय

मणि कौ लटकन हलन लाल। परम सुदेस के

गं॰ग॰

ठके हरि नवेविचित्रचि वस्त्र प्रवाल। करपोहोंची

पाहन पन हराजन राजत पट पीत। तुट्टकन च

लन वछ्ठसेग विहरत ग्रव मेंडित नवनीत॥

हर विचित्र चरित्र कान्हके वानी कहतन ग्रावे॥

वालदसा ग्रवलोकि मनक मनि जोग ध्यान।

विसरावे॥ हे बलिवलि जाउ छवीलेलालके

१०८

घूमत घूमि झूमिह बनि ठोलनि बोलनि बचन रसा
लकी । छिटकि रही बंकेदिस झलटरिया लटक
नि लटकन भालकी । मोतिन सहित नासिका
नथुनी केर कमल दल मालकी । कम्बुपकहा
थ कंकुक सुरव भावन चितवन नैन बिसालकी
सूरदास प्रभु प्रेम मगन के फिरन तजत ब्रजवा

गे॰रा॰

लकी ॥ रागगेयारनाला ॥ २ ॥ वारवारजसुमतिसु

तवोयति आउचंदनोहि लालबुलावे । मधुमेवा

पकवानमिठाई आपुखोनखुननोहि खवावे । ह्रा

थहिपरनोहि लीनैंखेलैंनैं अनहींयरनीवैठावे । ज

लभाजनमैंकरिकिंउठावे याहीमैंतनतनपरिआवे ॥

जलपटओनिपरनिपरगायोगहिआमोवडुचंददिखावे

109

सूरदास प्रभु हसि मुसिकानैं बार बार देऊ कर नावै

राग गंधार ताला ४१ लैंगो री मैया चंदहि लैंगो

कहा करौं जल पुट भीतर को बाहिर लपकि गहौं

गो। इह तो कलमलात जल महिं ह्यो कैसें कर ज

गहौंगो। वह तो निपट निकट ही देखत बरजे हू

न रहौंगो। तेरे प्रेम उदित भयो माता बोराये न व

गे·रा·

हैंगो। सूरश्याम कहू कर गहि ल्याउं ससि ननता
पद हैंगो॥ राग गंधार नाला ३॥ लैहो हरि चंदा
ले। कमल नैंन वलि जाउ जसोदा नैच ऊचिनै॥
जा कारण तुम सुनि सुंदर सुत कीनी इती अ
ने॥ सोई सुधाकर देखि दमोदर या भाज
न मैंहे॥ नभतें निकट आनि राख्यो।

110

है जल थल जित तित जोते। अब अपनैं कर काढ़ि मनोह
र जाहि भावे नाहि दे। आगम गगनैति गाहि आयौं हेरे
क्षीण कपटे। सूरदास प्रभु रतनी बातकों कनमें बोला
लहूटे। राग गंधार ताल जप॥ सोहन दधि को छोट
साम गात। जब जननी के कर नैं ले दोउ करें कीर
कछु रागन उपर कछु कलेकैं हंसि माखान। ओर मो

गे॰ रा॰

गनमैं होत विलैवतव धरनीमैं लोटिजात । रसिक
प्रीतमसौं करनिनिहोरैं रानी जब मतिमान ॥ रा
ग गैंधार नाल ॥ ७ ॥ महा महो छो गोकुल गोम ।
प्रेम भरित गोपी जब गावति लेले स्याम सुंदर
कोनाम ॥ जहां तहां लीला श्रवगाहनि विरिकावो
रिदपि मेंधन धाम । परम कुनहल निस श्रकवा

५५

मर आनंदही बीतत सब जाम। नंदगोप सुत सब

सुखदायक मोहन मूरति हरनकाम। चक्रध्वज

भृगिनिपर आनंदनिधि नखसिख छवि परम अभि

राम ॥ राग गंधार ताल ३। हौंवारी नवनीत प्रि

या दिन ३ हि देन उराहनों आवति बोरी लावति चोष

प्रिया। कमबल राम संग मिलिकें ३ हि आंगन खे

गे॰रा॰ लो दोउ भैया। निरखि निरखि नैनन निमब पोउ

प्राण जीवन तन सो बारिया। जोई भावे सो लेऊमे

रे प्यारे मधुमेवा दधि दुध येया। वनमें जप भांति

विथर का के वर नमड़न कछु वड़न प्रिया॥ राग

गंधार ताल॥२॥ कान्ह सो कहति जसोदा मैया

मेरे मोहन मनतन उये वरहि खेलो दोऊ भैया

११२

धनहनी जोवन मदमाती झूठेहि दोष लगावै दैया ।
नमतो मेरे प्राण जीवन धन माष्यि कैं हूं पिवाऊं
गी मैया । व्रजभुज दास गिरिधरन कह्यो न वहैं
वन जाऊं वरावन गैया । सुनि जननी मन अति ह
रषानी भरि छंवनि अकलेनि वलैया ।। राग गे
धारनाल । ३ । चरवरडोलन मावेन लोग ।।

गे॰रा॰

ग्वाल बाल सब सखा बोलि संग लीयें सूनैं भवन पसि
जात । जब ग्वालिन जल भरिबा आई तबे भजि
मसिकात । बनभूज सभ गिरिधरन लाल सौंना
हिन कछु बसात ॥ राग गंधार ताल ३ ॥ मोहन
चलत बाजत पैजनी पग ॥ शब्द सुनत चकि
तके चितवत सौंसौं ठुमकि ठुमकि धरत हैं डग ।

113

सुदिन जसोदा चितवति निसि सुतन न लेउ छंग लावे
कंठ सुभगा । चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन लाल को व
जजन निरखत ठाडी टगाटगा ॥ राग गंधार ता-
मैया मोहि बडो करि लेरी । दूध दहि घृत माखन
मेवा जब मांगो तब देरी । कबहु हो मरा खेड जि
तिमेरी जोई जोई मोहि कहे वेरी । सौं अस बल सब

गं.रा.

छिन सहंजेमें मदार हों निरभेरी। रंगभूमि मद्द कें सुपक्षारोंपी सिवहाऊ मेरी। सूरदास स्वामीकी लीला गावौं मथुरा जेरी॥ राग गंधार मारा॥३॥ क्रीडत श्रात जगाल जडवीर। सांवेन सेग मात न मानति कुकन जसोदा नीर। मध्मजननी स न भाव संकरषन पंबन कान्ह सिर्स्यो सिरवीर

११४

114

मानङ्ग सरसुती सेगा उभेड्ज करमराल ग्रहनील
केठोर। खंदरशणामगाहे कवरीकरमकनामाल
गही बलबीर। नारन भक्कलयो आपन मानङ्ले
तनि वैरैं सीर। हरसकवि इहवरनीन आवेउप
माकही परति नहिपीर। सनक सनंदन निन
उठि पावत ग्रहगावत जाकौ मनि कीर। २।२

१४१

गं.धा.

गंधारनालो।३। बालदसा गोपाल की सब काऊ

प्यारी। लेले गोद खिलावहीं जसुमति महता

री। पीत झगुलितन सोहंही सिर कुलह विरा

जे। छुद्रघंटिका कटि बनी पायनूपुर बाजे। म

निमयि नाचे मोरी ज्यौं सुर नरमनि मोहे। कृस

दासदासप्रभु नंदके आंगन मेंसोहे॥ रागगंधारः

115

पसेलरिकाकन इन देखिवाटसवालि गोउकीमा

ई। मांखेन वोरन भाज्जन फोरन उलटिगारिदेस

रिफसिकाई। नवहो देन उराइनो थाई कहाकरौ

गोनो कहि थाई। सनइ जसोदा नम टकुरायनि

नमसौ कहन मेरी वेराई। पाहे हाढे मोहन वि

न वन थीरी होनै वाहो लाई। परमानंद दासको

गे·रा·

शङ्कर पच यो वाहन वो री खाई ॥ राग गंधार ना-॥३

मेरो लाल मेरो मोखन खोयो । वो सउ पहरी देखि

घरमें नें फेरि फेरि अब हिं घर आयो ॥ खे

लिक पाट पटि मंदिर में सब दखि अपनें साव

निखेवायो ॥ ॥ छीकें ऊँनें चखि ऊखल

पर अन भाव नो धरणी ढर कायो ॥ ॐ

दिन दिन होंनि कन्हैलौं मन्हीयेप्रकोटा ज्ञ भले फ
गलायो। परमानंद प्रभु वहुन वचनिहौं एकन थ
नो वोतैनेंसी जायो॥ रागगंधार नाला ३। वडेंनै
उपजनया फोटापैकेसी थैंलेले आवन। हरि
हरि हरि देखोरी माईजौनी ज्ञवान ड्रावन। वि
प्रमानंददपि हृथ हरायो फिरिफिरि मोहिवीरा

१.१.

गो॰रा॰

वन। वनरबोरविचामेरहन गोपिगाफिक्षोलिव नावन। जोन पनियाऊँ सों हूलेमो सों साबीमप थ करावन। नेरे वनजानजे देशिवनापरहाथ दिवावन। वदन मोरिममकाउ वलीहै फिरि उ रहन मिस आवन। परमा नंददासको टाऊँर स्याम मनोहर भावन॥ रागकेदारनाल॥४॥

117

८९

भाजिगयो मेरो भाजन फोरि । कहा कहौं इनि मा
न जसोदा अरु खायो माखन सब चोरि । लरिकाश
नपचास संग लीनैं रोके रहत गांउ की खोरि । मारग
मै कोउ चलन न पावत लेत दोहनी हाथ मरोरि । स
खिन पैया फोराकी राति चोस गोरस दै फोरि
ग्रानंद फिरत फाग सी खेलन नारी वदे देह मत न

गो॰रा॰

खेमोरि। को यह कुंवर कौनको ढोटा सब ब्रज

बांध्यो प्रेम की डोरि। परमानंद दास को ठाकुर

लैनि बलैनि बलैया कुंवर कन्होरि॥ अथ सम्प्रदाय

कीर्तन॥ राग गंधार माला॥४॥ आउ गोपाल सिंगार ब

नाउं। अति सुगंध को करौं उबटनो उदमोदक न्ह

वाउं। ऐसा ऐसो छिरकें तेरी वेनी फूलन रविकवि

भालबनाउं। ह्वैरंगलाल जरतारी चीरा रतनन खचि

तसिरपेच बनाउं। बागो लाल मनहरी कापारबीर

जार चरण चिरचाउं। पटका सरसवै गनीरंगको ह

सलीहे मडुमेल धराउं। गज मोतिनके हार मनो

हर वनमालालै उर पहिराउं। लै दर्पण देखो मेरे वारे

निरखि निरखि उर नैन सिराउं। मधुमेवा पकवा

गे.रा.

न मिटाई अपनै करले नहे जीवाउं । विमलदास कौ
उंड़ कृपाफल वरिवहौं निसदिन गाउं ।। राग गौ
र ताल । ४ ।। पीनें बरकोवलना पहिरावत मैया
कनक खनाय परदियो जीनी पकनैया । सुथ
न लाल खनायकी जरकसी चीरा ।। हसली हेम
जराउकी उर राजत हीरा ।। टाढी निरखे ३

जसोमती फूली अंगनमाय । काजर ले बिंदका
दियो ब्रजजन मुसिकाय । नंदबबा मुरली दई
एक तान बजावे । जोई सुनै ताको मन हरे परमा
नंद गावे ॥ राग गंधार ताला ३ । नैनन देखिबो
गिरिवरधर । सहचरि करति हिलोय सहचरि सों
प्रेम मदित प्यारी राधावर । भूषण भूषित अंगम

गे॰रा॰ मोहर कनक कौं नूर। चित चित हरन विषज्ञ
वनिन के सर्वस्व देन अधर कमल कर। उपमां क
हिदेउं को लाइक बरनौं कहा किसोर वैसवर।ह
रत श्रेत लटकन ब्रज भावन कमलदास वडभाग क
लप नर॥ रागगौरा ताल॥३॥ राधे वसन स्याम
नन कीन्ही॥ सारंग वदन विलास विलोचन हरि

१२०

120

सारंग जो निरति कीन्ही। सुधापान करिकै नीकी
विधि रह्यो सेष खड्डा फिरि दीन्ही। सरसवै सब्बारि
धुनि नागर भन अकरषि वंस कर लीन्ही ॥ नागरं
यार नाल ।३। कमल मुख देखत जियतिन सोइ ॥
इह कहा नाते वान उहा गिनरही तिसा भार सोइ।
मोह चकोर चाहत उड गाजै रही चंद मुख जोइ। नैक

गं॰रा॰

अकोर देनि न हिरा ये बाइति पिय हिनि बोइ। ह
रिनो अउनौ सर्वस्व दीनौ एक शेगा वइदोइ। भ
जन भेद न्यारो परमानंद जानत बिरला कोइ॥
राग गौंधार नाल।४॥ कमल मखे देखनकौं न
अजाय। हनिरी सखी लोचन अलि मेरे म दिन रहे
अरुजाय। मुक्तामाल लाल इअधर जनु फूली बनजाय

12

गोवरधनधर ऐसो ऐसो पर कुंभनदास बलिजाय ॥

राग गंधार नाल ॥ ३ ॥ माई कौन गोपके घर होउ नाग

र ढोटा । इनकी बात कछु कहत न आवे दामिनिव

ढे देखन के छोटा । अगज अनुज सहोदर दोउ गोर

श्याम ऐपहिन सिर चोटा । सूरदास बलि उभय द्

इनकी लीला ललित सबै विधि मोटा ॥ रागगंधार

गे॰रा॰ नैमेरी लाज गंवाई हो जसमतिके ढोटा। देरगविरे

हीके गई मिलि देवट घोटा। कमल नैन ननके

वरहो हलयरनै छोटा। छैल छवीले रूपमें भईलो

टक पोटा। श्रीगोपाल नम वनरहो हममति की

वोटा॥ परमा नेदसोजं नही जाति पेमकी

वोटा॥ राग गंधार राग सुहो माल॥३॥ १२२

1222

मद गज राज की सी चाल । भुज वर दंड मेडकी शो
भा हरि लीनी नंदलाल । हूदन कचके चित अनेक
भेक सबै लटकत भाल । चंबर चार अवतंस मंजरी
भटकत श्रम जलजाल । गंध अंध आवत अलि वेरे
गुंजत मंजुर माल । मोर पक्ष फहरात बात वसन
नो झलकत हैं फाल । धात विचित्र बनी तन शोभा

गलगलदावनमाल। इंदिजलथमै फाइफाइ
नहैं रटन कुटा कुविसाल। बनन बनन चेटिका
हमिान कटि उपजन धाहू सनाल॥ खेनन
खेनन सकल मेन्न उखोजत लजनन मराल। उ
वनी हदे सरसमर सिजमे जव खेले बड़काल।
मानौं खंगाखेगाल पटानौं उनके मनसे वाल॥

ग्वाली रवँगे जात सुनत नही केपिन चितव्रजवा

ल। रसहल्लनो गदाधर यौं भयो बनबेलीबेहा

ल॥ रागगौंधार ताला ३॥ आजु सिंगार निरषि

श्यामा को नीको बन्यो श्याम मन भावन। यह

छबि तनहि लिखो ये वाहन कागहिकै नाखवें

हरिलावन। भालजो रे प्रति बिंब विराजित नि

गे॰ गा॰

रसिक निरखि मनमैं मुसिकावत। बनभजनश्रम
गिरिधर श्रीराधा अरसपरस दोऊरी झिरिझाव
त॥ रागगंधार ताल ३॥ आनसमैं नंदनंदनश्या
म आवत देखे कुंजगली। नवचंदनघणामतरु
ति दामिनि मिलि राजत रूप अनूप अली। लटप
टी पाग सीस कर मुरली लोचनहूं मनभांति भली

124

सिथलित चीर मरगजी अंगिया काम कामिनी
देहछली । आरजाम निसि जागत वीती उरउम
गो अनराग वली । कजल अधर नैंन रंग वीरीम
दन न्रपति की मैंन दली । सरवदन पंकज रमणी
कैं अलक मधुप की पांनि चली । अफुलित भीति
परस्पर देवियन नारनि उदै ज्यौं कमल कली ॥

गे॰रा॰ इति रागगेधार समाप्तः ॥ शुभं ॥ श्री॰

124

125

१२५

१प

अथ स्वरघरागस्य परिच्छेदमाह ताल। चार। कछु

१नि २सं २रे २ग २म २प २नि २प २म २ग २म २ग २रे

कौ स्वरको स्वर कौन कथा वह भावन तो भरय

२सं २म १प २प २नि ३सं २रे ३सं २नि २प २प

गिरे। छिनएक तनेक वहू कल लेत रही मुखकी

२म २ग २रे २सं १प १नि २सं २रे २ग २म २प २नि

मुखे माह गिरे। स्वरके फरके फिरही फिर जात

२प २म २ग २म २ग २रे २सं २म २प २प २नि ३सं ३रे २नि

भई टटकी पिंजराकी गिरी। झुकझूमझूकी उ

२प २प २म २ग २प २प २म २ग ३रे २सं

झकी झिझकी झझरी नझरोखन झांक फिरी।

ताल ३॥

हु॰ रा॰

२रे २ग २म २पै २म २रे २सै २रे २ग २म २ग २रे

उधो कैसो लेआयो पानीरे। मोहे जोगकथानसोहा

२सै २म २पै २नि २सै २रे २सै २नि २पै २म २ग

नीरे जवसुध आवे वारीस्याम की विरहअगनवन

२रे २सै २म २पै २नि २सै २रे २सै २नि २पै २म २रे

ब्बानीरे ॥ बलवसी पवर गाम जहांनवजे वांसरी

२सै २म २पै २नि २सै २रे २सै २नि २पै २प २पै २म २ग २रे २सै

रे। वनवन डोहकरांउ वांससव जो कानन सुनाउं-

२म २पै २नि २सै २रे २सै २नि २प २पै २म २ग २रे २सै

काहेजे विरह विथा मन उपजे काहेजे नीरवहांउं-

२म २सै २प २पै २म २ग २रे २पै २म २ग २रे २सै २म २पै

दूपरंग वैरन। वांसरी कैसैके दाग मिटाउं ॥ सईयां

मोरे वारी के भँवरा कलिन कलीन रस लैरे । छोडत
नाहे सुभाव आपनो वडुकोट जतन करे हारी । क
र जोरे पाय परी वडु मांनन और कहि म व हारी । ह
परंग करम की रेखा अेरहारी टरन न हो हारी ॥ ह
रछरागस्य ताल । तीन । नैंदन नहीं आवे रे सजनी वि
न पीतम मोरे नैन । नेक पलक न नहीं लागल मोरी

ह० रा०

जागी लगी मोरी रैन । एकतो विरहा आनंद दही मोही
हूजे सतावै मैन । रूपरंग जिनके पीय रहे सोवत है
सुखचैन ॥ देखो देखो री कन्हैया रैन आवेरी । सो
वत देखी पाय मो बस भाव माहो लगावैरी । पत
उत फिरे डरे नही नागर धुनि धुनि मोहे जगावैरी ।
कौपित देख मोहि अतचंचल वैसी सघर बजावैरी ॥

२म २प २ध २नि २सं | २प २म २ग २रे २सं २म २प २ध
नैमसेरी कहो लगाए मनवारे नैणां । चंचल ओट

२नि २सं | २नि २ध २प २म | २ग २रे २सं २म २प २ध
उमरा भरे नैणां घूंघट ओट छिपाए ॥ छेगीयाछि

२प | २म २ग २रे २सं २म २प २ध २नि | २सं २नि
पाए जोबनाते मोरी । मथमानी बहू बाल चलन

२ध २प २म | २ग २रे २सं २म २प २ध २नि | २सं
है देखत मन ललचाए ॥ निरखीन गरीया मोरे

२नि २ध २प २ग २रे २सं २म २प २ध २नि | २सं २नि २ध
बालमकी बिदेशीया । बाराबरस परसाईयो मोरे

२प २म २ग | २म २ग २रे २सं २रे २ग २म
आइला न जान के हे बाटव मैया ॥ रतनारे नैणां

न्हे·रा

नमकाहेलगाए। बेदल ओक्कवीले नैणा चूंघटओ
ट छिपाए॥ मैबिरान भएहोसईयो नोरेसेजवो। मा
न मसरीया मोहेन भावै ओगोहं वाकीरोटी। पिय
पसेवाहे जाकीकमर छोटी। इरखरागस्यता· ३॥
नीदरीन आवै सारीरान मोरे बालम। मोरेपिछ्कवरी
या पीपरीको बिरवापी पराकीसी नरक्करयो ॥

3

झुक चलोरी दोउ जोबनाउ मगो जाय । छाडकेब

ल नरवार मोरे सजनी अंगीयामैं केसे माय ॥ सई

यो राजीमे रहो हुं तेरी मरजामें । हमसेती तमका

हे रिसानै बात कहो अलगारजीमे । उयो बावरी भई

मेरीजान । कहांके कान्ह कहांके वासी का सो है प

हवांन । काके कहेको संदेसो लाए कासों कहों हि

ह्रे ग

नजोंन। ऊधो अपनी रिजु आनढिगा वैठो भरराहे

रस कोंन। अब यह वेल फलैया सके वाहे कहे हित

जोंन। षैनव जायहमे मनमेरे रागा रागनी तोंन।

जैसे वधिक विचार न नाहि मारन नाहि मारन है शि

रजोंन। पिय विन प्रान प्राणपति हेरि सो विन वांधे

वेधजोंन। जब श्रीकमल पोतना मारी सूरदास प्र

4

भ्रमिको थान ॥ मावीरी हम चरननकी दासी।
जौलौं चरनन देखे उनके तौलौं जीयकौं रहन उदा
सी। भटक भटक जिन जाओ कोउ तीरथ सुननत
होरे जोगी सन्यासी। कहा होत तीरथकौं न्हमेव
री माया की फांसी। श्रावफेरी करवनलौं जगमे
काले करैसो करवनलौं जगमे काले करोहो कर

ह रा

वनकासी । उनकी दयामे देखे काजम ढोर ढोरम्

रत अवनासी ॥ विनती मानले पीय मोरी सीसध

रतहूं तोरे चरननपर । खेवट खोल दरसदे मोअंमे

वल जाउं तेरे खेवट खोलनपर । हितसे मिलनरहो

मैरन मनखकी रोउ जगवारहु हितके मिलनपर ।

कबरैहे पापपाके केतोरे आगेसीसधरपर । बक

5

सदेश्रो गणका जमकी कृपान कोंडेरसे वरणपर
हरषरागरघनाल। ।श्रेरमन स्राव वाहोतो शीव
पार्वती कौंध्यावौं। सेत मरनीका जटक्वानि जल
सानिके मरनबनावौं। आवाहन हरकी करिहौं
वर अक्षत पीय चढावौं। हरहरकर श्रन्द वाहन
हरकौं मलया गिरही चढावौं। आकथनृणवेत

रं॰ रा॰

कीपाती कनकले सुमन संचावो धूपदीपनिवेदद
हिके प्रति निज सीस निवावो । आस पास फेरता ।
रीदेगल बाल गाल बजावो । शिव सब के मन की
जानत है भक्ति भाव के भावो ॥ सखीरी बहु सूरत
मन मारी । जब मैं निरखी मोहनी री । मूरत और
मोही भावन नारी । बहुबिनवन बहु हेमन मनो

6

हरवरकान वहचाही। कुसलानंद ध्यानं दमैडोल
नखारवार वलजाही। नैनामेलिपट विकट छ
वि ग्रटके। वारीजवदन कमल लोचन जखना
निकट नटके। सोवन जागन विहरन निशिदि
न ध्यान वंसी वटके। मीरांके प्रभु गिरिधरना
गरवटके॥ हरघरागस्य नाल। ।जोकोई

६२।

कानही आज मिलावै । तन मन सौं जाउं वलिहा
री श्याम सुंदर परसावै । विन मोहन सोहन दिन
सजनी जर अंगनानन सोहावै । रूपराम शवआय
मिले मन इच्छा फल पावै ॥ औसर वार वारन ही
आवै । जो जानो सो करो भलाप किन कोउ डरव
नही पावै । तन मन धन जोवन सब जहो कोउ

कामन आवै । तन छुटे पन कौन कामकौ काहे

को किरपी कहावै । जाकौ मन हरि सो रंग राच्यो

ताकौ छूटन भावै । सूरदास प्रभु निहारे दसकें

विमल जश गावै ॥ हमतो एकही कर जानौ । दो

यकरहे ताईकौ दुबथा है जिन हरि नामन जानौ ।

एकही पवन एकही पांनी एकही जोत संसार समा

नौं। एकमटीके चडे चडेला एकहीउपावनहारमै

मानौं। माया देख करजगत भूलानो काहेरेनरन

चरवानौं। कहे कबीर सुनोभाई साधो हरिकेहा

त काहेन विकानौं॥ अरे हरे सांवरे सो कहीयो

विरह विथा भई मोरेरे। डारदीयो विरहाके साग

र भंवर मदन चाहे बोरीरे॥ जोग कीए

बिरहा नही छुटै करो तीरथ बहुतेरी रे । अब उधो ह
थो होय बोली विनती करूं करजोरी रे । गावै शदर
ऊबजा के कारन अजहूं न कीए ब्रज फेरी रेसा । हर
घ राग सू ताल । । हरन मेरी मोहन सैं अटकी
रे । जबैं मैं ओट भरे जमपहो व्याकुल फिरौं भटकी
रे । वंसी वट के निकट हरि टाफो छिन लई मटकी

हूं रा

रे । इरजन लोग चवाव करत हैं सासन नंद हूटकी

रे । ग्वालदास कवि कहें बांवरो ने वानागर नटकी

रे । अवनंद गइयां लेहों संभार । हमको नैरे थान

प्रगटे वराई है दिन चार उदद सो सब चोर चोर

खोयो तुमजो कीयो मनपाव ॥ हिरदेशोप

शग तुमारो अव डारी है नवि सार ॥ ग्वाल

९

वाल सव पडा दीने लीनें भर ग्रेक वार । मात जसो
दा हारे हाजी दीनो ग्रेग्रडार । कोपिता कोउड काको
देखैा हिरदै विचार । सबके प्रभवले ब्रज तज क
पटका गद फार ।। मेरे राम मेरे घटही मै वसता
है । जोगी होके मडे विव वैठा लेवी माला जपता है
माव नही उसके ग्रेपरथीं कामाहीव मीलता है ।।

ह॰ग॰ जोगी होके जटा वढाई नेगे पैरें फिरनाहै। सान

वोप उपर कौं करनापौं का साहेव मिलताहै ॥

मल्ला होके वांगाजो देनायौं का साहव वैराहै ॥

चीटीके पग नूपर बाजे उसकी साहेव सुनताहै॰

सबके अंदर सब सों न्यारे पर खेन कौं का पैसाहै।

कहे कबीर सुनो भाई साधो हरि जैसा कैसे साहै ॥

10

मैं पीय कूं ढूंढन जाउं जोगणी याके भेख कीए । स
गरी रैन मोहे तलफत बीती भोर भए पीय लायारी
ये ॥ इरष रागस्य ताल । ३ । ठुमरी ॥ मेरे मनवसी
सूरतवसी । जबसे निरखे गिरिधर प्यारे वह छवि
न वनवह हैसी । गुणनिधान परवीन सुंदर छब
दिल परलसी । कृष्णानंद आनंद विरह येमे अवि

३२

च विन्दयमी ॥ यद्दजो वना मैं केसे गाउं कैसे गाउं
कैसे गाउं । ज्यो पवन के लागे ऊको वारी मैं केसी ग
उं । उमगे नीर भए नन सागर विरहा रहन नन दे
गा ॥ मैं वजे पर वारी मेरा लाल वना । सिर मो हैं ए
ज राजी चीरा साथों मेरे सव जपना ॥ वीयो गो
देवरा कीने नगरी या लो भाणवेवी । कोजन में

२२

हाटल खोजलमें बाटल खोजलमें थाराज मानारे।
कौनव गीयां लेभागारे हो रामन नोता। श्रोबके
थोके नरीयरखोया चांव हृदयक्कनापावेहो ॥ कैसो
है मागर नाल गगारीया नाइ्वि बालम। गागारी फु
कके भरने लागी बिछुरन लागे पांव। भरन भर
त मोरे कमर पीरानी कैसे धरुं आगे पांव ॥ जम

ह॰रा॰ कानेरे नैनों दाका हवा हवे। गोरे मुख पर वे मर
मोहे कांनो मोहे ठेदे वाला वमका॥ रामारे भई
ली वदनाम हमरे सईयां मो पर वे नाही वनर प
मर भई। आसा राम वे निरगुण गावन का ग्रप
ली॥ विन पीया मोहे नही चैन कैसी करुं मैं स
जनी। हम सो अवध वदन न निरमर हे कैसे क

12

(२

टैंगी कटत रैन ॥ जाओ जाओ ऊधो हम जाने हो । ग
नन भरे मो है जान परे ही कपटी परम सयाने हो । जो
गकी बातें कहत न लाजो बांवन नैन पीराने हो । यह उ
पदेश देऊ जाय ऊवजा जाके रूप कल भानी हो । जै
से वे तैसे तुम सेवक देखत निपट सयाने हो । सूरदा
स गोपी सब खोटे तुम नी पके रंग रंगाने हो ॥

रे॰रा॰

सरजन वाह्मरा मीनरे वाल मवा मोरा । गाड़परवा
जे वाजनारे नगार सोहावन लोग काइकी वरजी
नारइं मोरैननदल वोले वोलरे सरजनवासर ॥
वरवा मन लागा देवरसोका जालम भोजाईरे ॥
धीरे मे टटीया खोलमोरे देवरा खटका सुने मेरा भा
ईरे ॥ इत घरा रागस्थनाः॥१॥ लिखि भेजो नैरसुलन नगीने मे

13

बिसर जड़ाई मोतीन मंगायो लालड़ी मढ़ी नगीने में

रेखथ नागस्य नाल ।१। पनरवंवंशी वर टरे। उरहोत

तन तापवरतही आनंदरहै नित चटरे। हर हरकरतन म

कल भय भाजत जमकी त्रास मिटे रे। जानकी नाथ

सेवक शंकरको कबहूं नाहीं वे चटर ।। बोलो राम

पीजरके सुआ। मुफ्त तान चैन कर देखो येथा करन

रे॰ग॰ सकल जगमख्रा। काल मंजारी ले जायगी हारवले
जैसे जनारी को जवा। गाडसत हार कटहारा साजो
अवडे बैनननी वल नही जवा। चांप साखी जोरही
आधार गाटन नही करम जडजवाँ कहत कबीर
सुनो भाई साधो संतन के सबद अम्मन चवा। रख
रागस्य ताल।३। सुनहो भरन चर जाओ करमयी

14

सीलिखी । हिरदे सोच जिन करो सदा अनंदमै रही

यो । पालागन परना नीनैं मातान सौं कह्यौ यो । जाय

अयोध्या राज करो हम विलखन नहो । दसरथ राय

सपनाल । । फेरो पिट चले हम वनकौं तजो हमा

रोने हक । नबे भरत उठ कह्यो मेरा हम तमरे चलवेका

ट चलन उरवि होय । मेवा हम तमरे करवे वालापन

ह॰ रा॰

मैं खेल रहे हैं विछुरन ग्रत डाख होय। विछुरी वि
था सोई पै जाने जाकौ विछुरन होयक ॥ जवैम
रन वर जाय माता सौं कह्यो साई। विछुरी सीता रा
म लछमन सी दोउ भाउ भाई। वैठे कैकई राज
करो राम दशरथ मागे प्रान। ऊंचे नीचे महल दे
खके कौन हमारो काम। नग्र राज सवारा रानभई

15

ोदे राम चरन चितलाई। पैकरमाकर हज पावरीम
रत कौन परणाम। धोंधींदास चिरहविचोगीजे वो
लो सीताराम। इरख राग सा नाल। ३। सब जग हसा
हसन दीजे कोई रामजी न हसो चाहीयेरे वावा। अग्रा
न जरत प्रहलाद उवारे मीरे वीष अमृत करणाइरे वा
वा॥ हरिबिन को राखे पत मेरी। थ्रेय थ्रेय थ्रेय को

ह॰रा

इष्टइच्छामन ध्यान समाधिमें चेरी । श्रीषम होगा करनेमे
जोयातिनङ्कन पाछी फेरी । श्रोमति भ्रष्ट भई सबही
नकीप करलई जोचेरी । श्रोविद्यासरहो जीयमेरे ह
रि हिरदे मैं टेरी ॥ होजउ नाथ द्वारका वासी
हइन रावे श्हो वैरी ॥ नज खिग राज श्रा
नर उदयाप नपन हरन जनन केरी ॥ ॥

16

सूरदास प्रभु बमन बडाए ह्रोयगए परवन फेरी ॥
प्रभुसे कह्योयो समझायरेऊधो । कोउरवे देवे व्रज
वेभ भनको सवै रहै बिलखोय । गोपिन व्हांडो व्र
जगोजलमें रहै ढारका छाय । गावैश्रद्ध प्रभुसे
गगयोहै आयोपहचाय । इरघरागासनाल । ३ ।
रामसोकों दर्शन दीजे हृपसलोने नैन । बरनस

ह॰ रा॰

कतहौं एकजी भयौ बल ननही मेरे वैन । वेदक
हत जननीको जठरमें निरखत मनननही वैन ॥
प्रेम रंग निशि दिन रटना मिलन चाहत मन
नैन ॥ जा जारे ऊधो हमजाने हो जाने हो पहचाने
हो । जैसे हरि तैसे तुम सेवक निपट चतुरस्याने हो
हमसे जोग भोग कुबजा सेवा हीके रुपलुभाने हो

17

१२

सूरदास मनलवी मधुकर मधुवन माह भुलानेहो

॥ जाग जागरे मुसा फिर जागरे । बीतीरैण भोरभो

रभई लवाबोली चिरैयां कागरे । गाफल पड़ासोवे

क्या कर गया ऊँच का पला भागरे । तातें सोच सम

झजीय अपनें रहैं नहीं कोई लागरे । इस नगरी

का अजब लेखो है चोर बसत ओठागरे । बलधाम

हृ·रा

गरीन मांगले नेहै कौपिप कौरी पागरे । जमासे
भार वचाय अपनैको देइनको दम थागरे । रूप
रेग हसीयार सदा रहो सोई पंथ अवलागरे ॥
राम गुणायंडरे दिनरनीयामैं राम गुण· ॥ जो
होगा वलनेह्री पारपह्रो लावल नाम नावकीमे
पाडेरे दिनरह ॥ वोन परल प्रेमरंगपाय पकरे

उदिम करि मन लाउं रे लाउं छूनी यो मेरा ॥ हरष

रागस्य ताल ।२। हरि विना कोउ नही जगमें मीता

रे । यह संसार रैनका सपना जैसो सारकी सीता । यह

स्वासा जो लहारका थमना हरि विन जगमें जीता-

रा गंगा प्रभु सुमरन करले अवसर जानहै बीता ।

३॥ बोलो राम पिंजरके सूरा । सोच विचार देखो खेटही

रु॰ रा॰

मैं थ्याकरत सकल जगत मत्ता काल मंजारी लेजा यगी हारचलै जैसे जारीका जूवा। कहत कवीरस नो भाई साधो संतनके सावे अमृत रस चूवा॥ ६

रघ रागासलनाला। २। मेरी स्याम संदेसौं लागी डोपी यो वो। हौं जमुनाजलभरन जातरही सेंगनहीको उसघीयो वो। औचक ध्यान मिले पनघटमें भूलगई सगरी वतीयो

19

१९

रामललावि न कलन परत है कैसे कटैंगी कठनर

तियांवो। रूरव रागास्यनाल।२। मेरोस्याम सनैया

नही आयो सजनी। वडो वार भई जागत गई लौं भी

र भई सब गई रजनी॥ वेदी मोरी कुटीने रूरवा।जा

कहीयो नै हरके लोगासे वेदी गिरी श्रीसरवा॥

वही नरसीवा हूल चरहूल हन चलती है पीया नी

ह॰रा॰

बोलाई। माया मोह छोड पीयर को वहीर मिलनन
हीणाई। ध्यान धारे मन हरि वर को सजनी श्रेजन न होने
जाई। चार कल्हा वेदे रे डोली याले अपने संग वा मन श्रो
रनाई। ज्ञाय धोय के वस्त्र पर पर हेसज सिंगार व
नाई। विदा करन को चले कुटंब संग ले लोग ल
गाई॥ हरष गगना॥२॥ निर्धन को धन राम हमारो

70

२०

हातन खेचवन चोरन लूटन गांफे आवत कामहसा

रेति। दिन दिन होत सवाए ऊँफे घटत नही कछु

दाम। तुलसी दास प्रभु विनमैं आवन पारस कोन

हीकाम। सयआए सयजात हरीको सं हानमेंकू

टो यह मनमेरो जो ग्रेथी मैं पात हरीकी। गांठगांठ

मैं गांठ परीहै छुटत नही छुटान। लतीफ पीयात

रे॰रा॰

ममभक्त विचारो स्वरज स्वरज पक्कनान हरिकी ॥

तन दिरनारी मतन दिरना तोरे दानीना दानीतद

नी नमननातननदिना तन दिर नदर दानी देरन ।

शावेरालकी ली नेरे पकदहे नाज्ञकनोरा क्या

लवकनाहै उलापड्ड पव हारेदामन ॥ तिपटवी

रहैया लोग बजके । मिल विछुन विछुरे फिर

21

मिल मिल पावन विनऊँचैन । हरष रागास्य नाल । २ ।
नैं मोरी मसकाउरी थ्रंगीयारे । जावो लाल पीया
हमसेन वोलो नमहीनोमसा कायउरी थ्रंगी यारे ।
तेरी विन वनकी मारीमें मरजाउंगी तेरे नैणाकी
मारी मरजाउंगी । काजमसा पीया गलवो लगावै
पमै मोरे सरमके मरजाउंगी ।। वनजरवालादेजा

ह॰रा॰

य राम देखिइन पायो रे। ईस नगरी के दस दरवाजा

निकस गाईल कौन बाट मोरे सईया हमल जाय॥

मोरे पियाकी नजरीया लागगई रे। मासा भरी का

मनी रे मोने मासे दोय। कमर फुलके बोजसे रेल

चकल चकल चहोय। हरख। ठुमरी॥ मोके चल

न धंगनवा रामनजरलगी। राह चलत मोरी

वगरी मरकराई छूट परो मोरे करको कंगणवा ॥
सन भईयो मोरेले देमोहि सागर सानका। नथनीवी
चलाल लगादे और झमक नथनी जड़ादे। हरष राग
स नाला २। ठुमरी। नदीया गहरी रे भईयो। पमै कै
सेक उतरूं पार भईयो न- एकतो बादरवा हूजे गर
जै रे तेजे अंधेरी सूनो मेरी म-। ठुमरी। साजन सरज

ह·रा॰

न विना चरी चरी नारहे। सांची पीतल गनकोटे

नासरम ठय गलसे कह्यो अपने जियाकी मरम

संग वाण छाडजनम जनमा ॥ करजर वाटेकेनेंनो

जियरामारडारे पकजरामें कछुजाडकियोहैव

स कियो आण हमारेरे। हरषरागनाल।३।हमरी ॥

लाडीलाम्हारी हेभाहो। हमलाणराना मानालांगेरेरे

२३

आईलादि वलारीजोत सवाई आवै कमा होला ॥

अस अन भीजेहलौरेकेस गोरेप । वागावरस पीछेस

ईयां मेरो आपलोकू परहे देहली केओट । ठुमरी ।

सांवरे नै वेसी वजाई मेरा मन मोह्योरे । वेसी वजाई

वरनै याई मुरलीकी सवद सुई मेरा ॥ मन लागो

सांवरी यासौं जायरे उन विन कछु व सुहायरे । जव

लागी नवलगा नन ज्मनी सभयल डरवदायरे ॥

क्यानमसी नहीं थईहो विदेसी सब परदेसी अपने

घरआप । सावन आप पियासन आपकमलगजी

यनरसैहो विदेसीम ॥ कहांलगाऊं मैनोर श्रेरैने

हरके विरवा । वेलालगोउ चमेली लगाउं वि

व विच लाउं नोर श्रेरे । कोई वोलोजीमासोराज

2

बोलेजी १ कोई मनडीनूं ओनके जगाई प्यावेदा
हउ ॥ पहोंऊमकडाला गए देवी बोवेनरकोणे
दे । सोणेदा वराचा रुपेदेमखो १स्कदे पचरोलाग
णदे । हरघागस्यानाल ।१। ओडलायीमा करो म
हाराजाजी । स्पपडे थरनी नपेरे पन हूपनमें
छिमा करोलां तेरा ॥ मैंभूली मइयो उगारवनाय

हैं॰गा॰

दीजोरे। सईयांके मिलनकों मैजोगाईरे औघटपर गयेपांव। कागाकुगा बिछुवा वाजेमोरे जीयरालजाय। ननचोउ मनपालकीरे कांईशाा पीयादेजाय। वालमवले सिकारकीरे विरह वाजलिपहतरीमेभ:॥ हमही कमावैनमिलो वीरननदीके वीरायारवे। हैम हेमभक्कवानतमवलो हमारेसाथ

25

थ्रे भैंवराकनईनजावो आदीरात ॥ परदेशीमा

रु कहां लगीई पतीकारे । नागरदम मोरे मनमेंस

नेहे किनसों ननविलमाईरे । इख्यरागाख्यताल २

गयारीया फ्कराकाईरामसईयो मोबीरे । हैंजमना

जलभरनजानही घरवहीयो मवकाईराम ॥ निगो

रैनैना लागीरहेरी वगीयामें करत कलोल । इमव

कृ० गा०

गोपीयांकी रीत नी गाली हमरे सईयां अनमोल। जब
रे लगी नवलगा तन जानी अबला उरव दैन॥ एको
ईजी मैं जोगिन होय रमन हो यी नोरे वा के नैरागंनै भ
ऊभारा वे श॥ पान फूल औरवे लकी पानी एसां ई
जीऊ के तिलक चढै श॥ एसां ई जी के लट में गंगा वह
नै है अटमट नीर पान ने ही ठा श॥ गोकुल में बिपरहि

७८

२६

योरे कन्हैयां मोसे हम रहो । तेरे कारण जोगन हुई
यो घर घर ढूंढ फिरे रे ॥ इथ रागसोरठ ताल २
सोरठा । प्यारे प्यारी राधाजी की करत खवासी । वि
जरि जावत कमल फिरावत देखे रूपकी रासी ॥
सूरज महा फिगली प्यारी ठाडी राधानाम उपा
सी । प्यारी के मन प्यारी ही रंजन किशोरी आली

ह॰रा॰

सेगदासी ॥ प्यारी दासी हो स्यांजी बिहारी अजला
रे याहे रहो । नैणांरी निरख सुहावनी सुरत प्यारी
वान परी कृष्णारी । बरषानैं की रली धंगलीयां पं
वसेरा ऊजैजी यारी । ऊंज महलमैं वहल पहल
विच ब्रज निध मानन करस्यां सारीजी । बिरदसै भारे
राजकान्हअनंदके आनंदकरो उखहो सांवरे

27

२०

निज भक्तन प्रन पाल करो ।। बोलौ क्यौं नहीं राधा
प्यारी यामैं काइ मान बढे छे । हम बोलन नेम बो
लन नाहीं । नंदरो गुमानी यारे बास बसे छे । नांके
नैना निरखी चित बनरावरी म्हारे नाहोरे दृगन ब
से छे । निहारो री लाल ध्यान निहारो है हम बन
नागरी दास दिन रैन रटे छे ।। रसीया होलारा श्रम

ह॰ रा॰

लागालानामाना आजोजी। थारी दासी मैं जन्म
जन्म मरी थे लांनैं तिनवाहा जोजी। थांरी ल्हारी
लगन लगी छे रसीया मन कहीं लोगा हे सा जोजी
ब्रजनिधर सी याल्हारे मन वसीया वेसी कोटे रह
नाजोजी ।। कोटे ल्हारे राजमई यांने करनमानी। के
काहसैं न नवसकीनैं के कहेसेगपल्हानी। केकाहे

मुरली मधुर बजाई बानी। रसिक रसीला स्यामस
लोनाके कान्ह नैना लोभानी। हरष रागास्यता ।३।
निको लागो बाल गोविंदा जसोदा नंदा। अटील ल
टुरी मरवपर धरी जसमन गोदली पनंद नंदा।।त्र
टुहनतुमकचलन मंदाम मोवन मोगे आनंद
केदा। तुम तुनन तुम तुनन विकुवाजतर

ह॰ रा॰

सिकमोगान वेदा ॥ हरिजन बोलता नहीं मखा ॥
अष्टदलके कमल भीतर नरबोलता एक मुखा ॥
तोड पिंजर उडे बावन प्रेम पारस हुआ । पांचबो
रपचीस पावक बोयडा रोकआ । दास मान कश
रण आप देन सन गरुड आ । अरेमन समझस
मझ पग परीप । इस जगमें अपना नही कोई

२१

पर कांई मोडरीय। दोलत डनीयां ऊटम कवेला
सेगानचले कहाकरीय। रामनामना विसारोजी
सरवसमिर जासी नरीय। हरष रागासपना॰।३।।श्री
लयोरी आवै केचणा दिन वीताहो विहारीजी श्री॰।।
रोथीलोरी जीतरो श्रेन नहीं केलां राजीय नरसावै
सो॰।पगाडे पगाडे श्रांवणा कहे गय नैननार वरसावै

ह॰रा॰

के। सतगुरुगोरखको अवतो आवजोवन अवरसभावैके

नाछेडेजी राजलागो नाछेडेजी। सासननतदमोरी

निरखत मनरंगराङलाल्लसी आवनमोहेलाज ॥ भवसाग

रके भटभेरनमें प्रभजी तमकें भलवहा ॥ काम

क्रोध मद लोभ मोहके जक जोरनमें ऊलवहा

व्यथा कथा बक वाद बिर हकी ।

30

३॰

इन सौं मिल मिल फलरह्या। बिहारे चरन शरण
बिन ब्रज निधयौ हीयन उन डोलरह्या॥ जाने मोरे
दीजीए चरन गहो नंदलाल। एजी जानदेह्री जग
दीश जावो हौं तुमरी बलि हारी। स्थवेवन हम श्रा
ई आनतै भई उम पररी। स्याम सुंदर बलि हारी हैं
श्रवन करो लरकाई। हमरे संगकी ग्वालनी सोई

२०ग

वैंच दही घरजाईजा॰॥पजीप्रजइंलौं यह दान दा
न मोरे पीनेन लीनौं। प्रजव रुठीले कान्ह छोटवड
जानन दीनैं। गगरी डगरमें फोरिहुं जावखड़ीदव
वाजे। रवन पैहे कं सवाजा प्रतिकठनहै करमनतमा
र॥ जासी दरसनकों फिरे सिहस्वारजदारावाप॰
मो दरशन नंद लाल प्राज हमरे श्रवन पाप॥

3

३।

सकल आनंद भाई तोय मोरे औरन कछु सहाय ॥
स्याम सुंदर जगारो सोई गावन लागो दासजो ॥ ह्व
घरागस्यनाल ॥ ३ ॥ जिन वनमें जिन चोरी भई सखी
को मेरो लागो लागो लगहार । यहरेगावको ना
म विरह प्रयह विरहा अधिकार । सूरी नागान
जानरही मन झुंझट दीनो उधार । जिन वनकाजे

हं॰रा॰

मे पेमकी गासी लगी ओहो गई पार। निपट भयो जी

यराजव आजल नवकोई ननीउकार। रहे है कस

क उठन हिरदे विच निशिदिन सो सोवार। अवलोकें

हूं भरमन जाना आपवेदहकार। पीयकी वय पक

है सजनी कीनो मनमें विचार। जोवज हन पीयम

ध वा पीया से औदेरा हूं में वाकी वहार॥ गोरी दाकेग

३२

गायारचोमै इथे फुंदीदी आयये । नथडीदा मोती
डानी कालागे करजरा थांणदार ॥ इरखरागास ना
ला ॥ २ ॥ सोरठा ॥ शुभ गफैर फिवा ज्रुकके महा बर
पाई । जैसे देखे चंद उदिनका मोदनी नीर भर पा
यके मोद उमगाई । शुभ गासनैं हनेह मडल मस
कन पीन दसन दमकत अधर पलव अरुणाई ॥

रु॰ग॰

रचित बोलत बैन सुनत पीया उरवैरत मकरंस इव न ननभरी रस पाई। उनत माधुरी ग्रीव हार हारा वली लाल पन्ना मानक मोती मेरगाई। उलरी ति। तरी चंपाकली सोहनी कोन नापे वन माला सुंघ मधुर महकाई। भजा भजन भ्रावीत वलय पहे चित रचित करचित करण महदी लगी

३२

छेगरी मधुराई दिव्यडुति वसन प्रभ्रलसन ध्रेगरे
गपर त्रिभुवन कहो पत्नीहे मेंदरताई। जगवरण
पंकज वरण तिमिर पतीयन पहरन निशिवासर
तानी ध्यान लय लाई। जयजवतीनमेज भ्रवय
हकवार जेज ख्यालख्रु मीयाल भुनकेलउरजा
ई॥ हरघरागस्पनाल॥१॥ जुकापरैनेनोडेलेके

हे·गा·

जीतो वन माली । नंदलाके नेह भरी है प्रेम पीन रस
गाली । अंग अनंग देखस कुचावन तापर मदमस
काली । निस दिन करत ख्याल खुसाल किसरी गा
ये हल गत गाली ॥ परीमाया सा स्वर है वडी डर
जो दिन सइयां मोमें सबजग सच्ची है काले कर
मिलवो हमरा चलत चलत थकगाई नेह रमें

होगई चकनाचूर । पांच पचीस दशों दिस भरवी येति
न भरके कीये भचाचूर । जिनकरूना गहना कीयो
पीयकों कर सिंगार भरपूर । गावै गुरदयाल भागस
गहै सरवपर वर्धन नूर । रूपगानस्य माला । ३ ॥
अजब नमाला देखन टवा २ पककला वहोमेरी ।
सबघटनावनचावन सारा लिखे नही जात अलेख

दे०रा०

दाऊर दौरे मैं बैठो बिरह मन मके ऐपर रोख। वेद

शाल जलाल पढपढ मजह्म और विवेक॥

गावै शब्द दोउनको उदारी साहेब जात अलेख।

मार वणारी सबका पाणी न जाय सानो सहेले मार

वणा कुमारे है। माथों कौहै मारवण भर भर ल्याय।

ये किन अकेली मारवणा बुमरह्ली। ओवटरो मेरी

३५

ग्राली भरहेन जाग पन चटउआ मारफोलाहै । दे
खनरी सखी लांरोमन लोहे लोभायउओ छेमार
डे ग्रनफोलाहै । ग्रीजुडोरी मारवण फूटन बोलवे
परदेशी फोला कबवरहै । जोंनरी मेरी ग्राली सब
हीजोन वढवो वारो मारू देखवरै है । काहेजेरी मा
रवण लीयाहै परवान काहेसें देखेवालमहाव

ह॰रा॰

सवनसौं मेरी मालीयाहै पहवानवोहीहै माहउे
मन भावणी । ओसेमे मेरे मेरी माकरीहै पहवा
न पल कांहे देखी मटकनीहै । काहे पेरी माख
नगाई मरजाय काहैकें इत उत उजकनीहै । काहे
पैरी माखणा थोवनी पावकाहीपैमिषी दांनलगा
वनहै । दोलानि मैमा श्रायोके वायौं ष्रवलो रो मन

डोरि झावत है । सोने का गडुवा मारवणी रे शामदे

रल पक झपक मारवणी जल भरे । ढोला रे खोन

रा मारवणी उभी है खवे मे पनारी बीबी ग्रपर पैरे

नार कारे बैटावन र खजान इनमें मेरा मारू ढोला

कौन के । बांको ई घोडा जोडा कमर कटार मारू ढो

ला उभा महल के । इस घरा गल नाला । १ । इमरी ।

ठुं॰ रा॰ जल भरन गगरीया मोहे लई मोहन डेरे बोरीया

मो॰। गागरी उलाहल अवना ऊपर डार चली रावरे

प्रेम फसरीया ॥ तुम बोलोरे सुगन वा बोलोरे सु

गना गधा कूल गधा कूल बोलोरे सुगना। केतो

पलावत पढत नही तुम बडो वारते मै हारी सुग

ना ॥ परी बुलीया नाकेरा मरोरी री बोलीया नाछुरे मोरे

माले लेकरे जवाराम । उववाव ढकेमै निववानिह्ला

रोरी कोउनाही मेरा वेलना उनारे राम । ह्मलवसि

क मनभयो वाउरो निश दिन फिरतनोरी नेह्लनगरी

या ॥ भोरेनी दीया सोनैना झुके मोरे पश्यो लागेज

रा सोवन देसा समोरी हसीननद मोरी वैरन करी हे

सकारेव वावरे भोरहो वनदे ॥ राजमोरी डोलीया

होरी

ले आवो रे मैनो चलीहूं पीयाके देश । वाहूलमो
रे डोलीया मंगावो चलीहूं पीयाके देश । वारक
हार भिल डोलीयाले आवो मेरी डेडीयान मेली
होय । वहीयां पकर पीयालीजै है नव संग ओरनही
कोय ॥ मोरे हूते रहीलोन जाय रे जोबन वाउमगो । का
मदेहातो करकरावारी सरमाटीयानजाय जिसमैननमें

38

पीयावसो हूजा कौनसमाय । ह्रवषरागस्य तालाः ३ ।
मेटेसज लाज लेना जाईये राज । सबजग हूबाशो
रीहूडजांगादेसईयानहसे जासो काज ॥ सेजऊीयां
नजाउंमोराजीया नवसी जीसें । जाइ थाई हूउथाई
पलग विछायथाई ठकीनीकी भाग आपवेगगादे
खायथाई ॥ विवटीया पाय लगावो नईयारहीमक

ह॰रा

यार। इसमें गुणा पवन मन जावो अपनी ओरसिहा र॥ मोहन तोरी पईयां पडं मउसी निरखोनजरी यानहेर। तोरे बिन बन सबजग बिनहे पीयाराखे सखी सबमेर। जिन देखें नित कोईन हमारो तोरी बिन बन काफेर। फिरन विसाल याही तन वनसो होयगा कहं भटमेर॥ ॥ राम सहाय ५

३१

३५

दयाकि चितवनचङ्के दिसङ्गोईगाउजेर। सईयांकौ
नगुनगीउ सजनी। कहोकौन पसी सेदर उवजाजा
के काम सबसीउसजनीस। रामसङ्गाय समउ स्र
पने मनकौउ काङ्ग कोन खोजे॥ सजनी सईयांकौ
नगुन कीनौ। एक अनेककलपपर वैठोनापर पर
दादीनो। रामसङ्गाय मौंबवङ्गी निशिदिन भय भ्रज

ह॰रा॰

ईनहीनो। बोहा बोहा वाल्हेना पर वारी वेलोआ
ही नीना जोजोभ्या वणारे या वनी त्रुटनी वालोराज
मेरा छोटा देवरानादान दन वारीरे लो आहीनी
नाजो काची कामनी। जमाजमा मार्थोंहै वालीको
ली करे हदीयाली धनोरवीकैसे समझाउंना समझेरा
ज। आपीरयानबोनो नीदगमाईरनमझाकीयायोंरी

४०

जागवद्दीलोको कीयनकाज ॥ हरबगागसमालाद

मारुजी आजवसौ नहोरा सहरोमे यांकोलांकोधी

नलगी छेमारुजपगडे चलेस्या थारे देश। लोकेये

क्रोयांकेलेक्रौ कोरत करोजीयामें श्रेदेशलोका

मारुजीयाजुव ॥ चलोनेकेसरीयारुजी लबबनी

छेहरीयाइगया। खल बल खलबल नदी नीरकरे

ह॰ रा॰

के मोरला बोले के ऊंगरो ॥ वाला जोवन येही जाय
रे मन सइयां मोरे । नजो कहत पीया वाली रे बहु
रीया हमरा कौन काज । वे दरदी सें पीत न कीजे
देखन आवे लाज । मै विरहा की मारी मह वे लइयां
मै । जो पीया हम से नस बहो है वाके पइयां पड़े रे । प
इयां पइयां वलो पिया के मिलन कूं प मजनी

(४)

४८

यारि नवरघोमैं फकरपीया परदेश वाचिर मरहाम

ना वन लागे मोराजीया । हमारे मइयां वोलीया नवो

लोमेरे साथ भज भरलीनी मोहे गान । रागरंग मइयां

मोरे पईयां परन हूं जिनकी वोलारेगान ॥ तेी द ।

की माली गई सोय परीपमैना जान महमदसापीया

मोरेडेरे आईलो रावनीनेणावालगा । मइंकेनजागा

रे॰ रा॰

वो मइयांनी दीयालागीरे। वोरे वरमें पै मइयां मो

रे आइले परडुं तोरे पइयांम॰। अबतें तो मानें नहटी

ली मोरी बनीयां। वार दिवसकी चटक वो हनी फिर

आवेगी अंधेरी रतायां। बोइग्रमान कानदे सजनी

सोग लगायरही चनीयां। रामलला सिखमान हि

मापन हरि हीय लाय जडावें बनीयां ॥ जीवे॥

४२

जीवनरा वालावनरा । क्रांइकरे गांथ्यांसेघ्यारेगाला

गगारे । राजमहलागनेरे तेरमियाले सायबांथे रामा

रीजीवनरा । इरघरागमा । २ । सईयां नदीया गहू

रीरे कैसे उतरेपार । एकनो वादर बीजचमकन ती

जैरैन अंधेरी वनवेरीरे ॥ महाराज विछुवादेरा

देरी थरेभैतो भलीपलंगा थारी सेज । रसके रसीले

ह ग

प्यारे अजंहून आपकवंहून आंउ प्यारी सेज । मेरा

कहा मानौं साय वोमोंजलीरात । चांदनी रात छि

टक रहै तारे कोटे पलंग बिछावो ॥ जीयराके मा

रडारोरे अवरेकन रवादेके । वडी २ अंखीयन कजर

सोहै चितवन मैं निहार डारोरे कः ॥ सुनो सुनो ननन

दी कैसे कटे दिन सांवना सांवना मन भावना ॥

८३

नोहरी नाहरी हूंदेमेंह्रा वरस गयो मोरला बोले महा
वना। बीजली चमके बादर गरज हरके फोल महा
वना॥ इरष रागस तालाश। जोवन बांको छेजी सा
लवरामें मसकावे। उमगे जोवन वेरा वल देशांसा
मभली मेरी आन जगावे। हेदावन बामरीसीव
जी श्रवण सनके भनक परी है नागन होके उसी

हं॰रा॰

सवाजी सां रा रसीया ला गोही आवै । वाट चलन मो

रा अवरा जोगहेलीनो वहीया पकर ललचावै ॥ मै

पईयां लागरी मोरे पिया को संदेसवा वतावो । हम

मैन हसवो सनेरी सषीरी परी जगसम दिवसरि

गानरी ॥ आमै नहीं जइहों रे मईयां वगीयां न जारे

साथ । नमनो हम मोहे बीकन लागान छुव नम

नमरोमाय। नैकेचलोरीयेगीयानीकेवलोरीयि

यायछेपकवान। नैकचलनहैनीकीलागनहैहे

समरवछेपकवान॥ इरषरागस्यताल॥३॥

छरीप विदेस वाल मथन छकेली नगनै सोवन

वर आयहो। सासरी डरव कामें करीप नमरी

नोपन निरमोही यारम हरव मांगन नरफवोला

ह॰ग॰ जदरे विदेसी वर आयहो। हरि हरी गुवर पियरी

माटी रानी महल निपायहो। उस महल उपरा

जा सोवै रानी जोवीनीया फोलायहो। उडरे का

गा मै डेगी कागा सोने से चोंच मढायहो। तेरी पं

ख उपर कलम लिखिदै है जदरे विदेसी वर आयहो

आरे गंगा पार जमुना विच चंदनका रुखहो

इस लम लावके उपर कागा बोले कागाके ववनम

हायहे श्रृमोरे वनमा बैठ श्रेगना सोवे ववनस

नायहे । धारभरके मोती डेगी जदरे विदेसी घर

आयहे ॥ इरष रागासुरुपनार॥ सोरठा ॥ सोभा

सदन प्यारी वरनीन जाई । रुपकी रास छव धन

लराजत वदन वरनन करे जीजोहरी विपवनाई

ह॰रा॰

ड्डनैं वार प्रगास ज्ञानन दिपत विकास मन यस्मैन

उप मार वोई। तामस वरति लोवर जनुड कालीं

डी लीला करन काली स जटंबलाई। तर जावन

किरण संरंग रंग डुनरी न वल आभास जल ल

लिन प्रगटाई। मनङ्गनभ मय बादर प्रकरण

ज्ञान ही विण सदिनकर सभगासकल सववदाई

रतन मणि जटित नैवेना सुंदर भाल वरभौं हमन मय
यन्रष रतिगण जडाई वलन जीतन राज वारो दिस
वकवनी राजा जो वनदेन अपनी उहाई । नैनमधुक
र जगल निरखि रमकेत्न जीको छाप उमंग भरे अ
नेहमन बढाई । जानमदन वसंतकी कीरवैवे आर
न वली अवली नापै वेसर सहाई । रंग विशालीला

हरा

तीलजी अस्थल हहनवनी कपोल लोल आरसी

हराई। अवण कुंडल मोह निरख अलकनओ

रन कुन्त बोलन जानन पावसरिन आई। नयग्र

क्का ललडीर वन लटकव लटकाई॥ निपटनि

डरनटवरवर डगरहेरे। अतहि वनर चितवत

हरि गुरु जनही नारी भकन विडरी +

४७

तिउरी धरि कर कर अंग अंग हेरे । अति अरज वर
ज काह कीन मान नल रजत हिय मेरे । हरिजक
रतकार सब सब गरज अपनी टेरे । पीनवसनदा
मिन उत हेरत जग राज दास फिर फिर नमस्का
य निरखी नीकी चितवन चितेरे । हरष रागस्य
ताल । ३ । सोरठ । कारी भारी अनही उरावत मई

ह॰रा॰

पमीछी अबोनक नमगाहे लीनी पियाकरथरदेव
थर कतहै मोरी छनीयो कैसी रतियो नमनो सर
सरमीया अपनैंही गरजके कहोकोउ कैसे केति
कसन पैप उरत फिरत होपिया कैसे करनिक
निकसे मेरे म्हावे सोवनीयो ॥ हरष रागरस्पना
ला॥३॥सोरठा॥ अबनमकैसे अवानक गाहेली

४८

पनीयां भरन करकी करांई बोलन लागी बंगरीग

ईली मरक । बाट बाट मगारो कत टोकन पैंडे चल

ननीकी अटक भटक । अपनी बारसीया तमनो

जावो कैसे केसरक । रसवतीयो विनसे करन

जाओ जाकी लागी नई अटक । परक सारंग्या

जन कांउ देसईके वरजानटे लेगारनीटनरक ॥

६ ०१

कैला मेली का जरदी मैन भोंदी नैडे नैण। जोगीरा

वला भलावे। वेषण कारण मेरल मटुकुवो शेग

भभन मलावे के॥ मोरी मईयां हो नम विननीद

न आवे। नीदन आवै विरह मनावे नम विनक कुन

सहावे मो॥ कोई वोलीजी लो रोजरा अजी हो जी पि

या सनतो। आनके जगाई पी वन दाकरी। मैं तो थारी दासी

५ ९

८५

सायबीजन मजन मरी धरजकरे केब्रोटीमाहजी।
हरष रागस्य ताल।३। बिनगई लीबारी फूलवान
लागीला मोरे हनवा। मदारंगगंगीले मरमदसा
हेदवनी मोरी वहीयां पकर लीनीमी जजरी ॥ हो
री कलालनप देखानी आली जारामरुप। नानाने
ननीया केवारी मेरने कहो ननीय मरीके अनमेरी

३·११

लोरीक लाल गारी पांवरी कह्ली वनी बेजे शरमेर दे
खेने खाजी ॥ जिंदड़ी लगी लगी नज़न नोई जिंदड़े ल
गी नज़न नोई वोवो यार । दिलां दा महरम साडा नेह्डा
के जानें रब सोहडो यार ॥ छिट कर रही चांदनी रांग
भीनी रात पीया तेरे मिलन की आस । सासन न
दिया जाये मोरी कैसे ओउं सईयो तेरे पास ॥

५०

५

मोहे मैंन डुलावै बोका मारुत भै कैसे कर थंउनो रे

भागे। चांदनी रात प्यारे मोरे नन दजे ढानी देखनी पा

जागे। तेरी परवकु रमईलकके थजीज दीनकी सखी

प कैसे थंउजोउजो नम चलो स्याम वसन्त पहर आगे

हरबरागस्त नाला ३। पिया कर जोर विननी कर

न होनिहारी सईयो इतनी अरजहै हमारी। सुनले

4.11.

रे·रा

नमते क्याजियमें विचारी । अपनें जीयाकी बात
में करहन सकत होए नीनि हुराई किनवटी आजज
दिलहों करहनि हारी ॥ वेद आयहोलाये मायवांजी
वेद आईहो । इनमें आईवादीये उनमें आयोमेहरो
भौजयारे कावने नित नित नयो सनेह ॥ वालमजी
लोंगी उनकी भौजे राज उपटागे पलो आंडी दीजेजी

5

ब्रुनरलोंगरी रंग रंगीली साथ वो छोटी लाडीजी रोजो

वनखीजेजी ।। मोहे मैन उलावैयो कामा रुज्ञपरी श्रा

ली कैसे कर आउं नेरे कारन गरूजन डुराजन लाजल

जाउं । नेकथीरा रोह्रसोवन दोमनरंगाध्यारे पईयो प

हे श्रौरवल वल जाउं । इसघरागस्य नाल ।। ३ ।।

नेवरीया झांझनवाजेह्लेवाजे । लोंगरी अवननाव

हु·रा

नैरे कोटी ताडीननदल जारे। मासन नदीयादेव
नीयाजेठानी । या आगेह्नी रहन निन लागे ॥ ल्मो
री गोरेला गाणा रसीया वालम राज अनरस जनक
रे ल्होसे अटारेगा रसीले रमपा गाणा ॥ कोयल बो
ले कोंई नारं भीनी रात ऊक२ वाग२ ऊर२ पान२ का
रयारे। हरवगागणताला॥१॥ हूदत ननन नदरेदानी

दीमन दीमन हानी दोस्त । दिस्नम १ निननारे उदनने

नदहानी दोस्त । नारकवस्स मस्तकानलके श्वज

जाउहे दोस्त । कीकर दिलजो वरहें रनसी पकी दा

तहे दोस्त । हरघ रागस्स नाला २ । लोरी कलानवे

देवानी श्राली जारासहूप । नागए नोनणीया वे

वारीमेरते कंही मणीयभरीके धजमेरा मारीकला

रू॰रा॰

लगारी पावरी कंहो वाणी छेजे मलमेर ॥ मेडतणी
मोजी छे मन वार । दशमी भाटी रामद वाखो छे भरदे
स मन कलार । नैन पीयाला पीवत श्रत हपरसका ।
म कोय दियो जार । वाखता वरमीरो वडभागनवर
वै वेंड़ी पाएरुगार ॥ इराष राग एक ॥ १ ॥ वेवटरोजिन
खोले जी थांने लांरासे छे उभी उभी मगां नै णीमुजी

53

करेकैयीरे ह्लांसो बोलो जीयांनैं ह्लां रावळके ॥
घांर आज मिलणरो उमा हौ है मन माहीं रंगरली
क जामें करसो । गणगोरो रो टोस स्हावनों रसि
क कुंवरजीनैं भज भरलेस्यां । नंदजीरा लालकें वरव
भागीमैं उनतैं वरस्यां । व्रजनिधवाल जाणो बेश्रा
लम सब हरष निरावहि वडामैं धरस्यांरे ॥ सोरठा

३.१.

हू·रा·

राणाजी मैं सांवरे रंग राची । कोय कुवक प्रेमकरि
हो हरि आगे मैं नाची । राणाजी विषरो प्यालो भे
जो हो ना हमजी पकाची । मीरां चरनन लाग रही
निरभै हुगी सांची ॥ किन लई देवनाय मुरलीया
गये । प्राणन सों निहारी सोगावन से गुणगाय
बिन देखे मोहे कलन परत है पलभर रह्यो न जाय

पर वंसीमें मेरो प्राण वसत है मोके आनंद दे[illegible]या । सि

वसनकादिक ध्यान परत है स्ववनर रहे हैं लुभाय । सूर

दास प्रभु वंसी दीनी आनंद उरन समाय ॥ इरषरागएक

ताल ।३। सोरठ । खननन दल लोरी[illegible]रोवीरानीम

मजाय । ले कोरो वीर कदम वैठा अवकथा कके मेरी

माय । आठ पहर लोरे लाई लागयो मंद मंद मसकाय

हे॰रा॰

ब्रज निधलोरी वीरदेदारी ढाळी जमना माय ॥ श्री

न करे सोमै जानीरे मोहन । देविमवामगायोनज

मथुरा रति ऊवजा सोमानी । कपट भयो कारो

तनतेरी कपट भरी सब बानी । आनंदघन हिनवि

नरी वातो जानन राधा रानीरे । उनरी मैं वेरा प्यारीजी

योरी । प्रेम प्रीतमों पीय मेरा वैठी गावततोन तरंग

८५

नवल किशोरी गोरी भोरे हैं रस बोरी श्रेग। रसिक
गोविंद अभि रामस्याममैं हिल मिल उमगउमंग।
घटानैं छोटी लटा हेदनकी अवक हारी हैमाई। विज्ञ
री चमकेकोयल ऊहूकरसावै। रंगरस भरे प्रेमद
साकौं देखरी मेरी ध्यान वटावै। श्रघरामस्यामा।२
वैरनकोयलीया ऊहकेवरी वरी ऊहकेमजविरह

२'ग

नकौं अनहरी मनावै माईरी। दादुर मोर पपीहा बो
ले अनहरी सरसावै उन तन मेरी सुपली आवइरी।
मटक्क को कोई आवै मारुडो मोरो आणी पीवै मोरो
पावै हर गगा दारुडा मारुडा ॥ पपीहा पियको
बोली नबोल। सुन पावैगी बिरहकी मारीड़ा
हंगी पंख मरोर ॥ सजन सुरजन बिना घरी

56

वेचरी नारहो संग वान छांडेहो जनम जनमकी ॥
सेवी पीतकों नगरकोंटे नारा तरस उपयों कहियाउ
नने जाय अपने गोयाके मरमकी ॥ पियो महाराज
दासजी रोप्यालो आपपीये लोने प्यावो विदानरंग
दासी धारी थंसेलो कौं काजथेलारे मनभावो ॥
छुंधीरे वगरमें उजागर सरोवरी दीपके मनभावे । वमक

३ग

नदामनी मेहा वरसे वादरसे वादरसे वादरघोर ड
रावैपमको ग्रांच जरावैसो ॥ करके गगन वासाव
लमा मोरा उनार लीनौ । ग्रेगरी पकरन पो वापक
रो वहीयो झटक ग्रवराखीनौ ॥ ग्रास प्रजामन
विना हरन भ्रम विन कौंन समझे मन डारव दा
रिद हरकरनरो । तारन नरन का समरन को

57

५८

कीजे जिन मदनकी परनसौं मनरंग स्मरन पाप जबहै
लागे के वचनमैं ॥ उनरीमैं रंगप्यारीजी प्यारी उनरीमैं
रंग । पहरी पीतसो पिय संगबैठी गावतनी नतरंग । न
वल किशोरी गोरी भोरी नेहसबोरी श्रेग । रसिक गो
विंद प्रभि रामसो हिलमिल उमग उमंग ॥ सोरठा ॥
येनो स्मांने प्यारा लागो राज । बलि बलि जावो थाके

इरा

मोर शोरी कुंवरार भलोही पपाहो लोरे आज । प्यारी रे रस वस वसीया रसीया सजके सरीया साज- यन यन जी अभिराम स्याम थेतो रसिक गोविन्द सिरताज ॥ असाढ मास बरषा रित आगम जित रे जन कल गाई । गरज गरज घन घोर आप बहे ओरतें सब को कला ऊझुक मनाई ॥ इवद राग

खरन लागीली गोपीरे पीउ नुमी ग्रोर ग्रावो गरवा।
लाग मिले। सदा रंगीले महमद साह पीय वानेक
बल मो छिग मंदर बैठो जो सुख पावै दिन ग्रनुदिन
देत नेरसु॥ वेगी फेरवैलौं वाले ग्रेरवी गाते होराम
नाम। हरि भ्रमकीनी ग्रेमैयांसीवे बहूं ग्रोर ग्रय
जाम नाम। हरघ रागस तालाइ॥ येनौ ग्रवोजी

हू रा

लोरे डेरे खरजन सइयो मोरे लेहों मे नमरी वलैया
रैन दिना ध्यान तिहारे पला गोरी रहत है आय करो
वेगी काज भरे मन के सब मेरे ॥ गंवार के ब्योहरा
रे आरे भलकहा कीनों मईनो राजा उंगो मे अपनै नन
दके ब्योरा नहीं कहीं जोरा ॥ अरे जिन आसा ला
गारे मन मेरे पियसों एक एकटी कपट भरे ॥

59

वाजी लगा सोही जीता महर्वान जाको औरहोवैपा

तश्रः ॥ इराघ रागस्य ताला । ग्रे जिन हम वज्रन

करदे वे दीदये जिन सौ मिनाई थीवे सब करदे वोदी

ट । ग्रला विन कौन खवरले मेरी वोजव साह्व

श्रपरान करदेत आदारंग सौ दिन ईद ॥ आदारंग

सौ औरनि भाईपण्यारे निशि दिनमें । पसोपीकि

हा.रा.

ननहीं पायेजो पायेसोति वलकरउनमैं ॥ परमें
मोडा पीनीयां लोहाजोनम काजान । परमे मोडा
मोधीयालो थोनम कांजान । ड़ेंगरीयाबा ड़ेंगरीवे
मवे मनसा अनणा पनणा नाथीया नाडा निततनया
रैनेननैणा करैदेयार ॥ यारप्योलणा वर आवरे आव
रे सांईमैनो नैंडीले वांवलाई अरजकरो नजनाई ॥

60

ह्रावैमैन अपनें करम दे नाल निहाल करी वे फ्हेर

बापरी मांग दे असां तुसाडे नाले साडे मनदी मरादव

रलाई ॥ हरघरागस नाला १ ॥ ओजी मैंनो काई जो

ण बे राज थारी नगरीरी बाट । अब भला भलाफि

री छोया जगरे मैकि अवधोरे नाम जपां छोले मरव

पाट होजी लांरा अपनी मौजसे दरसन करदे थाट ॥

६१

होवेमीयां मैंडे नैंडे नाल औखीलागीवे मेडाप्यारा।
जानी लोकांमैन वेखवेदानैन दे दे नहींवे नैंडे विन
हि देमाडा मन अकलोदा वेमीयां झुकवेघलामेमैं
नखब फोलन नैंडे विनदीदे मांडे चस्मीवैनलेदेना
ही ॥ मईयोनी मेडारोज़ाकेनोकहूर मोडे दिल
दानी महरम मोईरबा अक्ल अक्ल हारीरन मारी।

61

६१

जो मीयां रांझेन आन मिलावै ने हदी वेदी यारी ॥ ह
रिको नाम ले रंगवारा कहा मनसो चित वारे वारा जन
व दरसन देखा वहीये नव दर्पन मांजत रहीये जवद
र्पन लागी कोई नव दरस कहांते पाई ॥ बाजीगर
ने डंक वजाया नव लोग तमासे आया बाजीगरने
डंक सकेला नवरगाया आप अकेला ॥ नव पार उन

ह॰रा॰ र उनर नावहीयेनवके वदसौ मिलरहीये नव उनर

गए भव पारानव करोमकौ मेसारारु । जव सो

दाकी नावहीये नवसोदागरसौ मिलरहीयेसोदा

गरसोसोदाकीना सोदा गरके हमवीनारु ॥ कहे

कवीर हम जोना जानके यह पह वाना पेडिन

होयनो पनीजे मरावकी काकी कीजेरु ॥

62

सोरठा। सखी मोहे वाही देश कौं जाणा। जाको

नाम न जाने ठिकाणा। जहां टूट जाय सब फंदा।

जहां दुनीयां नही नही धंधा। जहां ओ वही सखी

भंगणं स-। जहां पीर पीगंबर देवा जहां ऋषि मुनि

मत्तरन भेवा जहां काफर ईस लाम समाना स-। ज

हां जाणा न कोई आवै जाकी गीतन कोई गावै जहां

ह॰ग

जायकर फेरन आगास॰ जहां वेद शास्त्र हैव माणा

जहां कुराण किताव न भलना जहां पुजानि माणा।

ध्यानास॰ जहां अंधरी उजीयारा जहां भूषन प्यास

अहारा॰ जहां वरन आदजमोनास॰ जहां अगिन पव

न नहीं पानी॰ जहां मरत जीवनहीं जानी॰ जहांजा

ग चढु परवो नास॰ जहां नरक सरग भी नाही ॥

६३

6

जहां सोडे पीया गल वांही जहं पैर सोहागा केवा नाम

जहां नाद उनाया जहां सिपरी मारी माया जहां पीवर

थो महारी गोनास। जहां लगी प्रेमकी वाडी जहां फ

ल रलावन वाडी जहां फलो हेमहवादे नास। ।

जहां रेष रुपन हीरेरवा विन नैन साहव देरवा जहां

पाये जीव अस्था नास। जहां ज्ञान न पांन विवेका

रू॰रा॰ सब घट पकड़ी लेखा। जह्नां कला नेंद सब भाना।
अललरूप तहा मन माना॥स॰॥ वेसी वेर परी वे मरती
यामे वेर परी। आवत जात बजावत गावत कल
परत न एक घरी वो मे। परी रावा आगात न नावत
निश दिन विरह जरी। इन निरदई नेंद वदन जानी
मदन प्रेज की मोट धरी वी। स्वष रागस्य माला। ।

64

नैनानीद छूटी की गोरी जी के नैनो नीट दउरी । थाल

स वसजो वनवस मथ वसदेखन ललतनडरी । पीय

करसौ सहज विवक तन वेकनभौं हखरी । बात

री सखी हित ख्यास सहन वल देखन आनंदभुरी ॥

वैठे दोउ कुंजनको परछांई चलो कौन देखीये ।

एक भजना गाहे लेत इनको उनो भजना गात वोही ।

ह॰रा॰

क्वि सौं क्वी लोलाल लिपटा लोरी कनक बेल उर
जाई । श्री हरिदास के स्वामी स्याम कुंज बिहारी पगै
हैं रंग मांझी ॥ सवाई पनंद बिहारी ही यो रे मोहन सब
नंद्कोर मथुरा गोकुल प्रानजीयो । कहां कहु मेरे
लाल लाडिले जो तुम विदा कीयो । जीवन प्रान हमा
रे ब्रजको वसुदेव छीन लीयो । कीयो प्रकार

65

६५

वहोत पच हार नव सजन गावन कीयो । सुरदासप्र
न मानक मोहन लेप दरस नदीयो ॥ मेरी नैन भयो
वैरागी । विन देखे मोहन पिय सजनी नेक न पल
कन लागी । जाके यह प्रभ आप बखाने यन यन
वाकी भागी । नानदास प्रभ स्याम निरख छवि
ताके होपना लागी ॥ छोटी स्यारी ननदलवडी

रू॰रा॰

कलवार है गुणवंती वाकी गुणाइन जानी एक कीन
वसे हजार ॥ हरष रागस्य ताल । । सोरठ । सखी
री चावक मोही जी चावक पीउ पीउ रटत रहत निश
वासर सोई शबद सुनावत । अत सुकंठ अपनै पीन
मकीनासे जी मन लावत आपनो पीवत रहत निशि
वासर श्रो विरहनके पीयावत । जोन सहाय होतय

6 6

पहं पंछी पाग अधिक डरवपावत । स्हर स्हफल
जीवननाही को काज परम आवत ॥ वगवा व
गवा कोयल बोले जो जो बोले त्यो त्यो मोराजी र
घ रय गाय । अरे अरे अरे मली यांहा डर पोकनी
अकेली वलाली दाबीये सदा बेगकोन आनमि
लाय ॥ हरष गगसा । पीका ॥ हांजी लांगे सेग

हे॰रा॰

लीएजाय। डेवी अटारी लोरे पीयाकी पलंग विछा

देखी लो सब पढ़ोयन जायहो॥ नैना को गलावीलो

होजी राज को नेजी धारीया। लट पटी पाग कसुंभी

वागो कहीसो नणारे रंग भरीया हो होजी॥ माणी।

सिव माणीराजा महल पधारो वालो राज। उभी उ

भीलारीयां मोगुजे करे थांलो रो राज। इतनी अर्ज लारे

67

माणले शायबां लाडीलट माणे केजी माणी। हो
जीलारी वेग स्ुथलीजे होजी महाराज। कबकी
मै उभी उभी श्रपनै मंदर् वा श्ररज करे शंवालो रा
ज होजीलां॥ होज वरने णी थांरो जोवन वा लो
जो वन वाल कोजी। सोनैं दी सुराई वारी मीने
दा पाला श्राप पीवै मदामन वालो॥ सोरठा॥

रु॰ग॰

छैलोरे बरआवोजी स्याम सलोना। अबके ह्वोरे गरे
लागो छैजी मायवा रामकरे सोई होणा॥ ह्वोराजारे
लोटेनेलाजो झालो दीयो ढूनजाय। गोरी गोरी वस्री
योंछूरला विराजे मायवांछूरलारी कोलम्मारे ब्रभ
ब्रभजाय॥ छूवा वलवावनकोरसलीजे। जीवन
हलराम अमृतफल अवगान भर भर पीजे॥

68

कोनेरो सुतपितामात काको व्रथा मोहकौं कीजे ॥
काल कराल स्वानकौं भक्षन विषे वासना कीजे
सोवत जागत विहरत निश दिन गाथा हरस कहि
जे । सूरदाससेवककौं तजके हरिचरनन चितदीजे
॥ नहीं अस जनम बारंबार । पूरब लौंधौं पुन्य प्रगटो
पायो मनुष्य औतार । घटेपल पल बढे छिन छिन

हे·रा

जातन लागे वार । घरन पनागार घेरे ते फिरन लागे
डार । भव सागर जम लोक दीसे निकट घेघेरी फार
मूर ह्री को भजन कर कर उतर पै लोणार ॥ प्रभु मै
पिक्षो लियो है नमारो । तुम तो दीन दयाल क
हावन सकल आप दारो । महा कुटिल कुबुय
अपराधी श्री गण भर लियो मारो ॥ ॥ ॥

68

सूर कूर कोयाही विनती ले चरनन में डारो ॥ प्रभु
तुम मोसो पतित उधारो । अब आयो हौं शरण तुमा
री जो जाणों त्यों तारो । तोसो पत्तिभै भक्तन कीनी का
न रहे तैं कारो । होंय तितन तुम पतित पावन अपनी
और निहारो । गीध व्याध गज कनिका तारी गए
लैलै नाम तुमारो । सूर कूर कोयाही विनती ले भ

इ॰रा॰

कुनमैंडारो॥ लागेथांने रमक रंगीली महाराज
थांनैमेंम्होनेद कुमार चंद्रवदनी म्रगालोचनी
स्यामा वरमरानैंकीनार॥ हुडोरंगलागरह्योछे
ल्मोरे आलीजा हेराज आप रंगीला थांरी सेज रंगी
ली रंग रंगीला साहबाजी कोई औररंगीली थां
री राज। इरब रागमया॥ ललतो पणरासाहवा हेराज

१०

८०

चढ़ चढ़ जोवे घोड़ैं कामणीजी कोई फौजों रासि

र दल। अटक उतर कर आवसी कोई म्लेछाँ गोजा

रे थाणा आथार ॥ चोटला कोई जीय लांणीं होवेगा

जलेरो शिव मांगोंडो राज एकलख देशांवा रोदे

य लख देशां घोंगा घोड लारी वाणा एकर खेड़ेमो ॥

हडी गोरल वा होय जदा रलो याणा आणी याला ॥

ह॰ गा॰ कैलासवासी आनंद निवासी मोहो शिव सरदार।

नदीयागहेरी भई पिया बोल ईपार। होरे होरे बीरबे

वटीया रेवेगी ने आवे नेवरीयारे। सुदन लागली मो

रेणी उन मही और आवगर वालागमिले। पसदारे

मीले मरहमदसा पीयर वानें कबल मेदर मोहि लैवेदे

मोसावेपावे हिनभुन हिन देरव जले॥ सोरठा॥

काहेकूं प्रीत लगाई रे दैया। प्रीत लगाकर बहुत

दुख दीनो यामैं कौन बडाई रे दैया॥ भालो राजकु

जी उमगो जो बनके। पलंग बिछावो ल्यारी हेली

ने बलावो टाकुरां रे वातैं कांई उणाही। जगावोरा

ज अपने उमगां मे जैसे मे जागी वैसे बणाही जगा

वो॥ राज बहादुर रो कांई जोगो राजकेफ पीवे छे

ह्रे॰ग्रा॰

वाजमत वारोकोराज। सीम लटपटी पागमो छटा
रंग करसो हैम दरोप्पालोके राव॥ मेरी गालवेगी
वेजेरडीवे मोलामोवदीवे। उचकदेवरचागीयानी
पीयांहीरंके नालमेगी॥ सोवलीया विलमायो
रीमेरे वरनहीं आयो॥ अवर मावीनमोरमको
वनीयो हमसे नजर छिपायो मेरे यार॥ ॥

हरष रागस्य ताल ३ । सोरठ । हमांरी सईईसे झालो
वालो लागे । पायल हमारी रुण झुण वाजे नंनद
ल वैरन जागे । सीसफटौं छतरी लफेटौं ओर के
सगीये वागे । रसिक विहारी जीरी छब निरख
तही लाज छाड चलो आगे हमांरी ॥ मनेरा खी
केसै तोलांण मरी वातै नाहन जोण येरो देशरा

हू-गा

भोननताइन श्रीप । बाटघाट मईरीक गगरी डि

ग डिग बेटी लोरी होजो एनीनी लानी साथएा ॥

धरे मेरा भानापरी ओजो न रहन सकन बाबारे । क्क

नीयो विलएा गईयो जो मरेरा लाढोल मेरा लावेने

हन वेला ॥ थेनो कोई जाणो बोका मा हराज ॥

विन देरेवे हमाने कलन परेबके येमो लागपो ।

73

हमारे काज ॥ थारे जमक डेको राज मेणो कोवेरा
ज । सात सखी मिल झुमर खेलन गईयो कोई गा
वे कोई भावैरे । अपनै पीया संग खेलण गईयो खे
लन कौं यह दावरे ॥ हमारा मथ वामा सहो जोयरु
रित अचवी की नारीजी । वार माहीना थाने वलन
न देखण लोवी लेवी वाह अकारीजी ॥ लांराजो

रू॰रा॰

लोंरे नै उही राजा भ्रंवणा करो कमल पदमजी री भ्रो

ण । नामरो दरवाणरी नाकरी विकट नरवदारो घा

ट ॥ वेकेसरीया लोंरी राज हुते लोंरे रंग रंगा देषा

यवे । रंग गोरी रंग सांहरे जे लोणे पंथ्यो लाणे रंगा रे

गादे राज राजे स्तर कमरजी कोई राजतम प्रवीनप

नाप ॥ राग गयानाल । ३ । भ्रपनै कीनै उपमी वडन

74

६४

गाणी पक्कगोणा । दाकमेद वदिल वदाभौंद्गीप्रक्क

दीमें वेदन सयोनें । लेकोवे जोणा सांईयावेंमकी

जवुवोदी वादी देउगपानीवे ग्राणावे १ ग्राणा । भो

वी खोदी मीठा भनलाफेरन खोदे थोडावे जेवुवो

दी । वारीलोगागाफा माकडाहो दीजे मोहे लहरो

लहरो । पार खेडामित्र रंकणा जके दिस दीयांनी

रंग

मैं महरो महरो ॥ नमिवल वेपभेदेवेपयारामलेउरी

जवलउीप । गल अनार बोला वारी मेउपी देवेथान

नीयो ॥ अरे नम आजारे अरेहो गउ अनवारे । स्याम

सेदर हम मरारे मावसे कोमरी वजायो रे अरे नेरेभी

जेगी कमरीया अरे होग ॥ वाई जीरो वीरहो मो

रो कोई जाणे कव मिलसी ॥ ॥ ॥

मोर मुकुट कटि लकुट विराजे बिन बनतैं मुहो केती

र। कहो पंडित कब मिलनहो मीजीया धरतन

धीर। रसिक बिहारीजी थांनें प्यारी जीरी श्रीराधा श्री

ण मिलो बलबीर ॥ नैणांरा म वोदी गोरी थांरे श्री

गण उभीरैमरा केरकै। मोर दिलरी थांरे दिलरी

कौन जाणें मनरेरा हैं कोई जाणा राजादीवे ॥

र-ग

बनाई देही आवैहो आवैहो राजी इहै। अवर मसी
नवी बारी पीन वछावै। मगो कहै के थोरौ वाइप
मो कपटी संग सदारंग नैन मो मैन छिपावै ॥ उम
गोजो वगा छेजे होहो बालो राज छेजी। पलगावे
थावो लोरी है लीनै उलावो लो राज दाम उगरी वन
ककेही उनौ बीच खोवो हो राज अपनी उमगा मे जैसे

76

नम जागी वैसीउनैनी जगावोउ॥ थोरेनो नैनो

मे हैं अलसो नवणी केपीया देख रही विउक

उलाय। बिथरी अलक सिथल भई पलको भौंहे

वोकतणी छे। उलरही नीदनैन अनलाली का

जरेख वणीछे। रसिक विहारी प्यारी जीरी वि

नवन मिलरही अणीसी अणीछे॥ जोगवाजो

९·रा

णपाईंलो भी थ्यां रा का खूंदणा। नैणा निवाय दीवा

य छकलवल दासी सो थ्यां राम करवाणा। थ्यां वा नै थ्यां नै

कैणा पनीजे मायवां थै नौ वालो कुटवाणा। रसिक

विहारी थै नाम कहावो सो भायावो थ्यां लछणा ॥

नैणां मै नी विष्यो है विहारी जी नै भाली। वायल ज्यो

विरावन रा येवडी नो है विना नहीं हाली। नैन सैन कहू

77

66

टौना कारकर चाल चलत मत चाली । सबडरखेमेट
मेट ब्रज वियकौ क्वाड कपट विरनाली ॥ नाडी जी
गी वौजणामे म्वरड चलीकेहो तडी टाफे उरडमें ।
नैमग गा गाडी ज्ञव वाफो राजनडी कहेकडी । जी
णापटेरे हेवट माही करवमके कंकण भुडी । या
मोभा किणारी ब्रज निय जीवा नवणावो कोई अ

न गुलजारी ।। कौनजी मरजीरा गरजी गिरधारी नेकौ
रामजीनोर । पहले मोहिन कर अपनायो चाहीजे
अवनिवाहरा ओर । बांका विहारी ब्रज निधरे दे
खो उभा हेकर जोर ।। राधे रम्हा किया सब मा
फकरो । करजोरा फौंडे मन मरवे औगुणमेरो
चितनधरो । निशदिनध्यान रहत चरणांजको ।

सुरत माधुरी हियरे य अवनो लाज स्वामिनी मेरी
व्रज निधि मेरी और ढरो ॥ म्हारो मन मोह्यो जी वे
न व जाय । सुनत कामकी पीर उठत है निशिदिन
कछु न सुहाय । दिन नहीं चैन रैन नहीं निद्रा तल
फत जीय व्रजलाल । मेरो कह्यो न मान सखी री
३१ व्रज निधि वेग बुलाय ॥ इखवरागसख ताल ॥ ३ ॥

२ग

परी सखी बावरी कौरी भई । बाकपरी लपटी सों
ऊपटी रपटी सेगगाई । जानत नही साथण बानण
बानण बाकी चई ॥ होजी मैनै कोई जाणंछेरा
जयारी नगरीरो बाट । भला भला भला फिरो
छौंपा जगरे माह प्यारो नाम जपो क्रो सख पाठ
होजी होरा अपनी मौजसो एसन करदे खाट ॥

812

यादिन मंगलरो आयो आयोछे राज । आयोछे आ
योछे लेंरा म्हारो उमैंहे आज । होजी मैनो वणाव
णाके लकरेस्यां लेंारी राज आईलें रामणा मोछे
काजयादि ॥ हेराजथे नोलेंरी लारे लागणा आ
वोराज । वोटनीयां मैमैन वलावो हे राज । इत
नी अरज लेंरी अनवलीया अनवीयां साजनलें

ह्र·रा·

राजीवथांकीवाह्रे ह्रोराज ।। ह्निदगारी यत मारुडाने

मोह्रलीयेनघरालीह्रे कांईजोएा मारुडे मोह्रलीयो

म्हगानैएाीजीह्रोमा । नानेयारेवरगईजी मायवाना

मैंलीयोके ठलाय । अमल नारी गानो मानो म्हावे

डेरे आईलो आयो केरुपलोभाय ।। ह्रमारीह्रे वैर

एा आयो वंट लीयो कंद गारी कामन +

८०

आयो आयो बोटलीयो छि ॥ मारी कडउ दलरीवा

हीरा पयापमोनगा आयो आयो बोटलीयो छिंद

गा ॥ सजन वर आवोजी मीठा बोलो । थांरे कार

ण सवजग कासी माय वो काउंगो के तिलक नेवो

लो ॥ मादो मरहजादो जी मोरो बनो राज । उकट

क थेरावींयो तिरथेन मराजिन जिन सागर लागपो

ड़ु॰म॰

जहांज हमारे बनेराज ॥ मेगगी जामेगगी जागिं द
यारेवे नैडे मावडेरी माए भेदी वहार । मेला नैडा
नितही गवमीलाज नेमे जेगादा मह हवेदी
मार ॥ सोरठ ॥ पी॰ । दाहडीरे वालहे माय
वे लोडी जीनैं हाहो जी मायवे प्यारीजीमीहो
लोरेमेदीसीयेहे । राजीदवकमसउटकलातगाचगावक

81

मेरव गवालो लाडीजी ॥ टाडीली डारवामहरे वो
लौवैसे ननदेमडरे बोला वैपडोमा । जौलों नहा
देवैनैं लोवैननही मोहे आवैरानसे यांलक आ
वै ॥ सालुडा मेरे मसका वैजो वनमाजो केजी सा
उमग जोवनमा कहीरा वलदेषा सासननद मो
री आणमजावै ॥ इरषगागमा २ ॥ होजीलारे ।

हे॰ग॰ राजाजी मोकड़ीयो होजी महलां मैं डेरा वै उाकरे

भीजे इमोरी नेहरी डोरी होजी अमसानी रंगरीव

दरी जरे डे॥ चड आप वोली दइमोर रहेर डरे हाव

की ओर। मैने जानी रितपावसकी हाफीज

आयो सावन घन घोर॥ मोकली राजपपीहानी

जगाई हो। एक तो पपीहा पीउ पीउ बोले बिरहा वेगा

8२

न मनायहोमो। कुलरसिक विननलफनकामिमन

सिजमट वैराईहो ॥ हैली ठाड़ो जमुना तीर सेट रंगा

म शरीर। मोर मुकट करल कट विराजे विनवनति

रखी विन वन ग्वाली मुरली बजावै बल बीर ॥ म

यक्षकोपा वालम ब्रोजी लीरा मोती देवालो ॥

६-११

ग्रन वट हेरा मल वट होरो मोती रारा को रपताजी

ह॰रा॰

क्योजी ॥ हौंनोरे संग कैसे क जायहें प्यारे मोरे खरवा

कैंवैगो यह बनाउ लोच नयारके । अब वम जावो आप

न मंदर कक्कुजीयनयरीयेहो चेंद्र छिपे आप ग्रेक्कभर

लीहैंगी पायन परके ॥ पीनमैनेगीरोकटारेहो रा

ज ॥ हनीयण राज संभालोहो कलेजे हमं

ण मद मदमा पीया हमारे डेरे आउलोघेतो

८३

डेरे आडलोष्ठ नो हमारो लाज मेंवारो हो राजकडेजे
वालम राजगाफोरंगमोणोछेवा॰। इलोश्नपटोन
गा राजमडेशवजकमंणाणि मैला राजन म्हनरे हमा।
रा वारीके मेंवरीरेन चनरी रंगमाणोछे॥ सजनमथ
मोजंनों त्मोलीज्यो। पेमकी गत पेमहीजंणेणे नित
नित जीवन छेजे॥ विकाने मतजाजो हो राजथांणो

ह॰रा॰ बरजेके बरीनारहे राजींद्रराज। मैंनेंदीवनकज

रावदा प्याला मनेप्याजोहै बरवन सिंदराज॥ माह

जीमैनहो आंवणा के हो हो हो राजमा॰। येमांडेरे

आईलो सायवां हो हो हो हो हो हो राज॰॥ उंची मोडी

लाल ऊरोका रंगमे रंगवन लायमां डेरे आईलो

सायवाहो॰मा॰॥ थ्यारांजोणवालेहोमरगानैणीपारो

सीम फल जरा वदा केगाणा वाला मोहै मोते माला

होम्प्ट: । रमोधा माकजी मै नावो ले ना वोल केसरी

यामा । पीछली पीत मोरी प्रगामणा जानी प्रेगीया

या वेदन खोलो के: ।। तेजान मई ओरकही योरे पा

तकना वीरा पानगवा । वाहरोय रोघ दोउ नैन हमा

६.१. रे लागा रहे दिन थोरा हारे वीरा ।। माणी हार वेमाणी

हू० रा०

राजमहल पधारो म्हारो राज । ऊभी ऊभी लाडी थारो तो
अर्ज करे छां महाराज । इतनी अर्ज हमारी मानलेसो
थमें तो लगी हमारो जी राजा रांणी राजा महल प
धारो मारो ॥ मनवालो म्हारो अन बदले गयो । लेगा
यो मैं ले मान न दे छो कोई सालजा में मन बदले गा
यो ॥ सोरठ ॥ मेरा बहुत मनै माय बांमो कली रात

85

चांदनी रात छिटक रहै तारे कोठे पलंग बिछावो
सायबो मोरु ।। कहे मोर बा बोलन लागे पीया म
य बनकी ओर । इतना संदेसा मोरा पीया सन कही
ये तुम चंदा हम चकोर ।। कोठे पे बिलसो छैजी
राजा हांरे हूंदी वाला । वा कोई घोडा थोरा वो कोई
जोड़ा वो कोई कमर कटारी छैजी । लाल चेरीया

रंग दैन मेरा अकारंगदैनी। भाल मेरा लाल विशेरै

देमोते एकलाल ॥ रमानीउभै केसे अंउराज। फ

म फुन हुन उन गायल मोरी वाजे सामन नदरी

लाज रमोंनीउ ॥ ननदल जागे लागी है केसेआ

उं राजप्यारे महल। पीरज परी मोपे वननही

पावै मनही मनमें दहल ॥ इतश्री रागास्पमाला ३।

२९

गोरलेरो निहारहै सजनी चलोवे जमना जीरो तीर
सूजन कारन ठरसो । गणगोरो दिवससो हेम
नौ रसिक विहारीजीनै भजन मुरली स्यौ वेगीलीजे
जामैं रंग करस्यो ॥ सहेली आली जारी कुवलो ।
नैं भावेके निरखै नैन सुखपावे हैं । रंगरमावेके
मुरली वजावेके । उरम जलमैं आनंद है भयो जोरे

ह॰ रा॰

जगाजगागावेहैं । सवाय घनापजलमैंभागपव

नेण घटल रहो आव्ही पीवनीवावेहे । आईसावन

नीजी सहेली सौरी । रिम झिम रिम झिम मेहा ब

रषे सरस चमके बीज । डेंगरीया हरियाला भया

जी कोई बोले पपीहा पीउ पीउ भींज ॥८॥ वहस वहस रागज

मावेहे । ऐसा भीवामहाराजजगतसिंघ सोरे महल हलाके वेः ६

87

बोडलावड काई महल करेबे प्रतापसिंघ अभरी
जु ॥ नैणां नै रलावी ह्रैलो पणा को जी राज कि
न हवीया। राना माना ओबोयां रतनारी चित व
नै मै मरण गोखा ॥ रसिक बिहारी जी नै फेर परणा
ऊं बरी किशोरी रसिक अल बेली रहस रहस गुण
गासो। अन तिय मंगल गास्यो बाजै उमगा उमगा

ह॰ग॰ मलमासों। व्रजनिधजीरी यह छबि निरखके हरख ह
रख हरखासों॥ लागोरी नैनन अनोखो नेह। उलटी बा
न सखोरी सजनी नीर बहत प्रेमीघन यह देह। खा
न पान नहीं सब बिसरीरी पलक न लगत सुहात न गेह
व्रज निध रूप माधुरी निरखत बारंबार छबि एह।
सोरठ॥ नैणांतो म्हारो लेनैहोजी प्यारे कोजी राज।

88

मैं तो थारी दासी जनम जनम किये म्हांरा सिरताज

थांरी बाजा बाणी लटकावणी । थाकी लागे छे म्हा

थेवी सालुडा झटकावणा लाछे प्यागे से । हौं राज

म्हांरी कवी नीद जगाई । पीव फन्दी जिन मन रेवार

सोपा कार्ई थांरे मन में आई ॥ यको स्टमा ते सार

वामें जली रात । चोडला तो जी जो सबी निपट निदा

२४१ न वैसे राजे को जे सायवो ववल पार खोटी लाडी

अर्ज करे शो जी यो महाराज ॥ साक मारे राग फोई हो

राज साक लोरा। भ्रागता मारे के वसे जी कोई झलो

जी रहलावी नाजक पैंवी पकर उपहो के सायवो अर्ज

करे के पिया प्यारी हूंवट डोनोर रवे डेशजी रानामा-

उमगो जोवण पवाणी रवि वदी यो वटपार ॥

८९

पावरधीजे नेडडवे कोई नीलीरे प्रमवार ।। एह्न

मउयो कामण है किये हो राज । हंगर मजादाव

नया कोइजी हंगरी लारो लागोरी आवेका । काम

न करवन इमवलीजी मायवे देवरानै पकरी वो

ह जाउ है किया हो राज का । अर मादो कौरै नछे

धीरी रिम जम रिम जमभै फरी पायलडी हमकेमे

२.रा

फरीविढुवाजनके लैंफी रोहों जीलारा राजीदवना

रा कामणा ॥ आलीकहिं वरज्योहै वरज्या मदपीवो

वादरी । गरजोहै मागर जो वपल सैननदे मारे उसेश्रा

पशो करेरा सोराजी यालर ज्योहैमा ॥ पतोपी याश्र

णमारे पैनेणंलगेपतो फोला इरावननै णोलगे । सा

यवोलारे दिलोदी सरजन साई विनमै पगे । सोरठ

९०

पैरे जोगी बावरी ये लोरी राले ग्रावरे । भादों की रैन डरावनी लागे मज विरहन कों जी बावरे ॥ होजी घानी लाया मों के हे घट राजि न बोलो । उभी उभी मदगा नैणी ग्ररज करे मो धीरे धीरे मोसें बोलो ॥ नम पर भली मरा वलोजी की महायरहे । वन रा वनरी मोज करो जी सायवा सेहरन होये मो रम

ह॰रा॰ नकेकाज ॥ नैणांमोहेरे पियाकेनैणांमोहेरे। वो

कोईनेरो कमर कटारो कोई हम कचाल पर वारीपी॰

यो करंग पियाकी अंख लगीहै अंख लगायके

लेसोईपी॰। नोरेनैणां मोहेनेके लागनहै अवलारे

स्याव दैन अटक भटक सव मिटगई आनंदहै दिनरै

नपी॰॥ हराग रागामालाना॰। २ ॥ लायाहैनैणोसांगाविरहंदी

91

सीमेटे पीर गजर दीने हादिलजीउरीयां मोन लमी

र हेदी मोगा ।। याद नालवे दिल दार नाव मोएा ।हा

ना मोना गल मोने दामोना श्याम कोनननलबदि

दिलदार नाल मोएा ।। दरदन जाए दावांमेंउसां

झ्यां । यारी वीलाई वारी वेलावन जानीमेरा मी

यो पाकरहे वननेरीयां ।। नितदीगंने दरदन जो

द्रु॰ ग॰

मह्रोह्रोयागद्दवो। अमीआपनोडे देषन कारन श्तनी अर्जमेरी॥ मोनलोरे महलो आईया हमला रा राना मानाहलोरे आयोहो राज कवर। पागकसभी योरेसा षीडान दान मोहे मदक्ककी वातो आगा सगाको दा रुगीयोक्कके॥ सोरठा॥ एको कामन वारनेउभी के होहो राजाजी योरी योरे कारनै सावणीयो।

१८

केसरीयां मागों लाल पेंगारवव लक्षकोजी सौगनती

याके हाथैं नमा॰ ॥ मोतीडा लुभछेपीरा राज बोलो

बोलोहै राज ऊमरजी । इनती विनती लोगी मान

लीजे प्रताप सिंघ थेतो दोलाको डेडी लांमौं बोलो

॥ आवोजीतो से ऊरूमारी आवो कौंगन राज । कोईप

गामों सेरुठगा मायबो आवो कौंगनर अरजकरे थो

ह॰रा॰ रे पाई पीपरतरे सभा रे गाड़ीरे फल वन हरवा ॥ नींद
नहीं आवे छे कीं कैला मोहे नींद विहाने आवन क
हो गए अजहूं नहीं आए किन सौतन विरमाए ॥
हो यवा मोरा हे योहि आवे रे । जिनको पीया पर
देश गवन कीनों उन बिन कछून सुहावे रे ॥ स
पतय विसरगई तन मनकी विरहा विकल

93

६३

भई जाय मनावै। वज निथ पनके किसन मोवेर

मजनी मोहन प्रान मिलावै॥ मोरा मन मोसो वेरा

वल जोगीरा। कानन कुंडल मेली मोहे मथ उथ

मोरी मव खोई॥ कुलनीया नेरी जोवनी नेहराके

मथर मोनार। आठ खोटकी नेयरव नीहे मोला

ही लगावै पार॥ होवीकुला मारगाया विरह कटा

हे॰ रा॰

रीरे। लोभीनीन कहो नहीं माने वरजत हारीरे॥ भलाईन सांवरेने मेरो मनहर लीनो। वोसरीव जाए मोहे टेरसुनाए वानरस हजर संदरस भीनो। निरखी चितवन मन परवस रहीना जात कछु दीना कीनो। नजक आधीन प्रनर सभरी मूरत तनमन धन वलिहारी कीनो॥ असीभला तादीवो

९५

९४

यावतैंडी हडी २ नजरां प्यारेदी । अजी जदी नवामकों

नेवी तीक्वी श्रेक्वीयां अकलाव्वेंदी इसी यावदी ॥ वि

क्वोर डावदीनैं लाल आगा आथार आकार दरसदो

रि । आवन करे रूप अजहेन आपनित टोर करनके

टोरकी भइयोंहि ॥ रमीया कांइनकरो मायकोंजी

लोरी कोई रानामों रोरयाो रोजी केसरीयाराजमें

रू·ग·

मोथेंरी दासी सायवो जनम जनम नीमैं मो थेंरी

दासीथे हेंरे मन वसीया ॥ मा हेलें रे वालो हैवा

ज । वागों वागोंके वड्गजी कोई सायबा उपर झल

गलावी नाजक पेंचा पकर लियोजी कोई अरज

करे पीया प्यारी घुंघट ओजोर करे थे स्योवा मिनता

स । सोरठा । हे महाराजाजी मैं कहियोजी जे ह्यारा

९५

५५

नेड़ वारी लाल किनान । होर शामदी डोरी रंगाड़े वे
छे महाराज ॥ ढुनो टटे छो छेजी के गाफ्ना मारछे
जी । अलगार अलगार पींवदें जो घोडे की सीधा रटे
ए विगानी । गोटनी कोई ओवट पक्योरे वार ॥
घोडादीजो राज राज लेणारो पींदे मणीवावे लाणे
दाहड़ी । नामे वारे वर ढईहे नामे लीया छेडला

ह्र·गा·

यमदकोमानोलोविग्रावसीजीयायवे ग्रेगणाओ
खोवाय ।। रेंगावरसेछे मायवां रेंगछेहो रेंगछेथा
री मछकरीनेरंगछेयारी बातडीयोनेरंगछे । आप
बनैो मनवालो मायवां मनेकहै कौन फगछे । जे
तहाणे वनगाईलाईमेवीकरो उमगछे ।। अलबे
लो मायवां मने कहै कौदेगछे मैतो मोहीग्र· ।।

९८

माथे तिलक भोगयारै मेहो वांके नैन सरोही । अ
रे दिल मैं वसगयो रंगरस रूपमपेहैन गरमैं । आव
नकी जलदी कीजीये नहीतो मौ नन कौ रंगीहैस
हैस हैस । स्यामी सांवलीयो जीवेसे राज आवन
करीस्यां मायवो । आवन करस्यां मायवो आवण
हे राजसांवलीया थारी राजकरस्यां मायवो थेहला

ह॰ रा॰

रे सिरताज ॥ मानो म्हारी वात सायबा लै काई कहै

स्यां । थेनो म्हारी पीत पहचानो में पाबण लागां म्ह

हाराज काई कहैस्यां । उभी रानीजी थानें बरज

रही मारुजी थे म्हारा सिरताज ॥ ननदलजी रा बी

रा को ही कैसे समझावे स्याथांने ओलंभो । पगांडे

को छै बिलंस्यां अलबाररया हालोजी हालोजी

९७

२८

कोर हेलादेसो राज जाणोथ्योकोबोलेवो ॥ हो
जीरसीयाराज लोरालाने श्रोगनसेन वुलावै । कै
से आरे दिराउनेरे लोरी ननदल जागे । हनक ज
नक लोरा बिछुबा बाजे हानरीजुरी बेडके महूले
जाकरसेज बिछाउं महरवान लारा रसीया ॥
हेली रसिया राज लोगोउभी श्रोगगसेन वुलावै

ह॰रा॰ मैंकेसे आउंमोरीमामननदीया औरजीडेनीया

जाये। तनकरूनकमोरीपायलबाजेहनदीचूडी

खनकेमहलोंबडमैसीजमेवारीमे हरबातमन

बसीया॥ पानीडाजाउंतोलारीडगरमीजेकोटी

लाडीजीनेवगडलाव॥ लोसोहोरावालमरीम

याराज॥१॥ वेकेबलामोरेआगणबावरीषादाव।पा

८८

गानो मह्ललगे आरी मेदवअपो मैणानयाराज ॥ लो

याणा राहोलो भी राज साहिबो थेनो ऊटी ऊही मोंह

करछो राज । वानडली नमो नस्यो ऊकाणलजोणा

ह्छे ॥ जीराज राज आज माहेजी लोरे पोवणाडेह

ली रंगवरसे । वनरकारी रलमारी री ऊमों मौज

मह्रो लोमह्लो दरसे ॥ लोवराजी हो राज चूंडेरा

रे·रा·

लागरह्यो छैलो व्रजराज हूंदे। रंगझुडो रंग चूनडी

जी कोई रंग रंगीलो साज रंग वृंदावन कुंजललनाजी

कोई सरस गोप्यां रा सिरताज हूंती रंग लागरह्यो।

रंगछे प्यारी वांसरली जी कोई रंग छे सबही समाज।

श्रीनागरि धर रंग रंगी वो हरगा है की लाज ॥ प्यारी प्या

री नैनन डो मन रंज खंजन मीन म्रग मोह्या छे ॥

मन मथ लेजन भेजन डरवेडो म्रवेडो मन मोहन
सोहाजो याकै ॥ प्यारी तेरे नैना मोहन मन रंजन
खंजन गंजन बिनाही अंजन सोभा सरस देत। रू
पउजारे अनीयारे ढारे रतनारे भारे जोबन मनवा
रे उम कमारे अरूण असित सेत। जबतैं निहारे मै
तोरी मदन बांनमीन तरल स्याज जलज समेत

ह॰ रा॰

रसिक गोविंद अभिराम स्याम प्यारे । रसवससमय

निहारे स्याम आपन पो हारे वेदवानी वदन जापवे

नतेन ।। राधा प्यारी नाचत पीया के संग । उरप तिरप

गति भेद बतावत तान तरंग । ललिता दिक सखी

ललित बजावत बीन मृदंग मुहचंग । रसिक गोविं

द अभिराम स्याम घन बरषत नव नव रंग ।। सोरठ ।

सब गुणा भरी हो गौरी रूप राधा । हाव भाव कटाक्ष
न हँस हँस पीय मन करत समाधा । खेरा खेरा गति
ललित सुभाय न पाय चलत अगाधा । जब बलि
हार होत मन मेरो गई विरह की बाधा ॥ निर्गुण
निरंजन निराकार करतार गोबर सो देखी यत ।
सबही गुननमें समाया रहो वाही बात काटमैंढ़

ह.गा.

उनामसपास फूलननैमैं बिमेबेयत। छिबमैं नतेरबनबी
नैमैं नवबरनै साईं जगात जगदीश जगपी बीयत॥
बाहीकीजगात जोत नैननके तारनमे नरनमैं मसि
मैं सूरजमैं देखीयत॥ पपीयामै बाजाउं पकारीजाउं-
रतनी भरन मारी मानले महाराजहमें कीनिदरीक
देस्या बलहारी॥ लाडोजी रमौंये भीमै बाल।

अकन कथा एक देवे सावीरी फेद गयो मनरिज
बार ।। आली कही नरजोहै वरजो मद पीवो बाद
रा कांई गरजो एमागरजो एआ॰ । चपल चंचल ह
मेरे डेरे आपलो सोक रंग लागाजीय रील हजोरी
ल रजो गएमाआ॰ ।। लाडी थांराजीवें झावन राजा
जी थांरा वारेरो राज । एक लख देसां थांने महल

हे·रा·

पधरो मायवोडजेलगादेशाणी खोलोहो खुंवदाय

म्हाराजा लाडी खोलोहो खुंवटडा ॥ जोवनजेलरहो

नहीं जाय । म्हडयां विननहाथम्हारे मरहलो आवोह

मलोराराना भाना म्हारे आयोहै राजकंवराजी । पा

गाक सुंभी प्यारे म्हायेडाने लोहै मदछकी बातां आन

खनावो दाकरी योछकी ॥ पनोकामन वारणो ।

108

उभै कुं होहो राजा थांरे कारणे सांवलीया केसरीया

महोनें लालरंगादे पवलक्षकोजी मैनलीयाकेवा

रेने ॥ मोलीडा उभै कुं थांरा राज बोलोहुँ राज केवर

इतनी विनती हमारी मानले अनापसिंघ थारी तो

दिलोंदी डेरी लोमें बोलो । आवोजानी सोज हु

मारो आवो कोन राज ॥ कोई आगमें मोसे कलासा

रू॰ रा॰

गवो। ग्रजन करे घांरे पईयो परतड़ें हुभंरगउगो फल
वन हरवा॥ लोगें लागैई ग्रावेके ननदल थारेवीरे।
लोसों पीखली ग्रीव जाता वेके। एसो कपटी फेफन
नदल थांरे वारे सवमैला जलजावेके॥ लैलीम
जनवे इस्कदे रंगरंगे। लैली मजनू मजनू लैली वे
एकही रंगा पगे लैली मजनू एकही इस्कमै वकना

103

हर इस्क सागरमें पडा सिरमें उरके पूर। मललोन
मह्र छुरीयो एक दम आया लैली पास जान पड़ा
नमजनु चला दोय मैसो पचास पाय मेगवो सोदम ॥
मेरी बानीमें बनवारी बसो पकीर गनि न बासो ॥
अमद पलाए आलपोन होए मीन नलनाई नजनिके
मको मरली नवमें ममोई लीजीये जोगावै गाय

इ॰रा॰

का सरमन तजसों। आनंद घन हित सरसो बरसो घो
इ कहनहो कहे यो हूँ शों ॥ मोहन मित्र मिलाय सो
वलीया पान लीयो हृदा उम बिन रहो न जाय। पी
य रसीयो अनाबसीयो राखो कंठ लगाय। नागरी
दास छैल रसवारो जागो नैरैन बिहाय॥ ब्रजको
लोजो बोलो मबोलो कपट न राखो जीयराखो लो

104

नैनन राजूना रहीयला शोक रंग नमसो वलो तो।

आयो हृथ्योना मारुपाव णा लेगार वान शोक रला

यो है। दिलीया नगरवासी हणावे शोक रंग थ्योरी

है नैणो ने वाने मारी हवा ॥ मै थ्यो मेनवैले राज

जीथ्यो हमारी अंगली पकरन पैवन वोङ्गी। येत्र

जवानको ब्लोहरा शोक रंग मे अजकी वोमणी थ्यो

हू॰रा॰

मेहेसकर डेंघट न बोले ॥ हिंमेल नामें कोई जलो
रान ऋगार वंदनके खेम घटानी मलया सिरकाप
टावे धाम झेर पवन उरवैया श्रीरघवट सावनकी
आज ॥ कवन घरी लागो नीहन मसीं जानीरे ॥
बोयरी कौन सौधी नैंहह हमैं जानी धी हाफिज ल
गन लागी ध्यानन आवै पीनमें हानी जान जानी ।

105

वातरी योकी राजेरै मै काई गराा मांनो । अमलछ

आप बरमौरे धीन करीलोक सम साहव की रेरा

मीने कैलनी मांनो ॥ मोरेदेरे होमायवांजी छको

दाहडे । लोननको फिरा कैसेके जाउं रखीणा नैहा

दिल मन वालडे । कयामोवे उठ जागारे भोलापारदे

शी कयामोवे । पसी करी पाके हेमीन होवे प्रेनम

ह॰रा॰

लागेतोहै रागरे मोलाय ॥ बादडी जोई सावन श्रा
या पीनरी आप वाहारसे । फूले फूल बावन बन
लता ङुम क्ता वनी क्तांई विरहा ऊरसे ॥ होवे वी
वो विडे दीपवन सो हावणी । ऊंबानी ङ्गंगर मोरला
वोलन नीयां दी रमल मो ही सावणी ॥ होवे लागेला गे
ही श्रा वै रोराजी ड ध्यां रावी रा ह्नांसे पी छली पीन जनावै

106

आवन कैरयो हमोरे पसो कपटी सदा रंग नैनोमें
सेन जनावै ॥ छिलीन पफलके साफटे मलके
मोरी जी रहो मावपर । जीना पट ड्रेचट जोरे मो
ही नयनी रे फलको हो जी मलके । पगो लागसे
जोजण जणके मोनीय नरीलरंगलरके । नरवर
कोट गाढ शेकस मोही छलकांरी पलकां रुलके

हे॰ग॰

कोईक्के विरमामी मेली वाले थ्यांरी बोमरी मणामर
ग्रामामारे वहको जातहै मोमरी। दाहडीक्ककोंर
माणे फाटलेगर् बोंही पकरलोंरो ब्बीनलीपोब्बे
होमरी। वाहनगईलो लोंरी गाफो गाफो मोकोरा
थ्यारेनें होमरी॥ ब्बैलब्बीली ब्बैलवकनीथ्यागोरी
हपलभाघोक्केजी। नमचटकन मटकन परीजवतवो

107

१०७

पकर अपनायो ब्रजी ॥ बनरवनीने बनगारिझा
यो है गणोही रिझायो हो सौ नैरी बाज बदवाली ।
ऊंफन उपरहो जीवें फ़ाणी हमारे सालग उपरवी
र । नथफड़ी उपर मोती साथवें हमारी सगीननजी
दीनावीर ॥ नैने मोही वेरा बल जोगोडा । हडीहडी
नवजावै उमगामे रूपवडप मेरी खोइवेरा बलनो ।

ह रा

मेरामनहरलीनोतुमजाउगिरधिनवोरहमजो
करहनतुम मांनत नाहींजैसे वेदचकोरमे ॥ राज
रह्योक्रेण्याल महलमैं । उमगोपीनकरनहैरंगरा
री महलमे ॥ होजीलोंनेक्रोटी लाजी कारेकेव
तलावे राज राज मैनराहे । होसमजायो समजन
नाहीएमोरीफोवसवाउराजा वैनराहे । मोरदा ।

108

८

सोवल डीपीया कोंकरदावेचेन । नोडी जदाईजा
ल सनवै आसक दिलफो केलें दीदिन रैम ।। वाली
कह्री वरन्योहै वरजो हमारा संदर सोवरा गारजो ।
वैनव जाय वसकरलीनो सेदर सरन हरजो ।। होवे
सीयो मोडी गालो सनदानासी झगाकी कीनीनक
सीर नैडी । गाव राज वहाडर करकर अदारोग नाल

ह॰रा॰

नोरहेहूरामननेमैरी ॥ अबनो ल्यारेकेंन नगावेंकेंजी
राजवालो अनेंदूजोयांमननवालीमायवो । उभके
ऊरोवेरानीवातनकेदेकबचर आवे अभंगेरोखो ॥
यांपरवारील्यारो राजवालोहै । नामेयारेमायरा
इलीनामेलीयोकेउलाय । अमलोरोराणनोमानोह
मोरेडेरे आइलो इस्कपंजेरमें पालोहै च्याप ॥ ॥

109

ऊतेनै हमेरे दे ड मेर आटे खोयेरे । मैजी खेडीयी
वाहर भोगाणमें ऊनका लेकर पाके दोरी डम पक
रके याये रे ॥ कौं वना गोथे गाम हवमयार विर
हेटी । दिलटी सोग विरहटी जप कीनी योरी इस
विघ जोटी जानगा रहीटी ॥ जानी निमाणावेमें
डालो कोटी वेदीयो महेटे पकनैंसादे कारन । आ

३·१।

जजमयाकीजी मथलीजे लारी इसविषजोंदीजो

नौनेडी देहलीजी यदीनारन ॥ हमोरराजलाउला

ह्रीराजथोनेरवेमा। उंचीअटारीचंदनकीवारी

दिवलारीजोनसवाईआयाकोथेलोरेउेरमोया

जमाजमाह्रीराजरवेमा॥ मोनलेलोवीअजेउमा।

नीउयोरा वेरवेरा रागरज ॥ अजजमयाकीजे

११०

१११

सयलीजे हमारी आपणा वे वाणारी अरज ॥ माहजी
ने कहजो होजी हमारा राज माहजीने कहजो समजा
य आसमानी डोरी रंग छुवेजी लालडे रंगकी । डेवा
याणातोल व्रजवदव मानहोरो आस मानी डोरी रंग-
। लाल पगीयां सो लागो नेंह । पसो सुंदर बरमोह
मिलावे राबैांगी नैनमे पह ॥ कोई कोई केमे हो

ह॰ रा॰

राज ग्रवैसैयोने। कृठी सोगान ह्लोमरवो उनरीरेजा
वोग्राज। नथरी ऊलकोमाहऊे मलको हेम हेम
हाहा खिाय आगाने पधारे मथवामाहल गाव
संगाहीयरेलगाय ग्रवैसैयो॥ खिलरहे सोये भीनेवा
रवार वार देखेके निहार। देखमावी ग्रलकनकी
लटकनमनमोमयोहेरिऊवार॥ होजाय कहजो

जी थालीजायोने खखेसो विहाणी रानडी ॥ वालम
आवो महेंलांकी ढाय पाप हरावे पिया खसामनवाली
रानडी । उमगाढकी उजकाण फिरत जलावोजी
ढानडी ॥ सायवा हमंगरी नींदड्लागा वालम जाग
हो जागासो । सोनैंदी सराई वारी मीनैंरा प्याला प्या
जा अधिकढकाजोजी ॥ हांजी महाराणीजी राम

इ॰रा॰

इलोरंगावरमै। देखोजवाईवेटी गेहिन विनवागेवि

सरमै।। क्वनरागीयावातरुनसोंचरराई वसायनतरसा

यनपरमै।। माहजानी समझावोहैमनदल श्रीलभो

मैदेशांजीकेदेशा इमोरे माहजने होजीसमझा।

वोहैन।। श्रीदामरुजरीवनक भरादेयायवा श्रवक

छकी छवगयोहैन।। इरष रागस्य तालतिताग

112

हांजी अमलारा माता आवजोजी हमारा बालम
राज । बाकोई जोड़ा घोरावा कोई घोड़ावां कोई क
मर कसारीहै ॥ पनीयां ले जायथो पियके देशणा
नगावा । गाल बीच मेली कोन विव मुद्राकर रहीजो
गणवारो भेश ॥ हमारी मन प्यारीजी है ऊंन ऊंव
श्वेगनासराउ । हांमोहै मृगानैनन खंजन लखवना

ह॰रा॰

साफिर डराउं। दरशन चमक चोंधे चमकन चचन
सुनन सुरवपाउं। कहन सकत कछु वदन चेदकों
मनमें सव सव साउं॥ हमारो वनारस चर संदरस
रजन चापीतकोभीतनन जानीय भ्रात मानीयहे।
पियाको पीन मोरेजीयमें वसतहै विनवेषनहों
वैन सरसमन ग्ररज करे महाहंनो भ्रानीय॥

113

होजी लटकैं छै मोती हुडौ है । हुडी सेज हुई महा
रानी अपनी उमगा सें हुडा सालुजनैं रंग छुडौ है ॥
होनी यांनैं और दोर अब बांधे औगुन वालो नाह
रबैंनैं छै जीनै इयानै । पाछली पीनकी रीनकडी
गई पतना दोष करैशो । पास बैठ कर दोष लगावै
मायबो होजी मैनो लाजमरैशो ॥ राजथे छाती मि

रे॰रा॰

जाजणी हैनेरा माहराउ भावाट ॥ रंगटी वानैं नैकरी
नगाणीछे अपनैं धणी वासो रावन कीजे पगोरीउ
मगोपीनेरा ग्वालो मथवा वागणीछे ॥ थेतो लोनैं णा
गलागोराज ॥ वली वली जावां थांरे म्हावडारी
छूव परभलाही पधामा हांरे आज ॥ प्यारी रेव
सवसीयार सीया सजकी सीयामाज । धनधनजीवन

114

राम स्याम थे नो रसिक गोविंद सिरताज ॥ होजी
थारे महलां में मंदिलरो वाजे राजनी के महर महो
रानी वरकाज । सबसमोपन मिल देशा अमीस
थाने गाफो शोक रंग मा मा रूजी हीरे मोनी पनकी
सीस विराजत ताजराज ॥ वोटला वफीयाला ह
मोरा मेंदर सरस नाल । कमर कटारो थांरो बांक

ह॰ग

डीजीसदारंग रमानीडा काईरुडी मैलकरेधणंबाल
लीरेरगेरलागरा रसीया बालम। अनर सजिनक
रोहलोसे सदारंग अदारंग रसीले रसपाग॥ परीला
लसे किसरन मिलनवैने रोपरीला॥ जोतमस
मऊ अपनैजीयमे नेम राजा हमवेरी। ननदीरावी
गौनैनलरोसोलरा। रतनी अनैलारीमानलेरंगरस।

115

जितड़ू जेरो मोपरो ।। केसरीया माह बोड़ गरेड़की
लाजनहो । होनो प्यारे दवत लगी छेघे हमारा सिरता
ज ।। सोतणकी सब सहंदे रहंदे हों नेडे कारनवा । ह
मरी मावले अपनी नही कहंदी होमहर करी श्रवस
रस इस्क सोनैणा रहंदे मैंडे पेंडे वैंडे ।। प्यारे गणमा
णीके हमारे राज । कृपाकरीजी हमारे महलां आ

हे॰रा॰ पवोरगहेकेलाज ॥ उस्कागालोनेगहलोदीजोरा जो श्रीवणलोरेकेथनवेलागे॰। श्राशाकदिलमिले बैकइवाडे। गाफा श्रीगणकेशाकेरगलिपाउकी कीईकापाउ ॥ वणीयवार लोनेभईहो राजयारी मगाजोहे। कोटे विलेभी लोरे मंदरहे महरवोन मे उभी अपने हारयारी मगाजोहे ॥ सोवठा ॥

116

११६

जागो कौंन राजहो हे वाजे टननननननै वराज

नकार वाजे वाजे वांकी राज। होनी मायको नटा

हठी पीवैं यों राज। नथनी पटके होके पाफोला

मोती होती फोलो फोलो वाकी राजसा ॥ लाडी

प्यारोंनी वेहो वनरा बादशाहे सगाए। एकलाव

देशो वारी महल पधारो उजे लाव देशो खोलो

ह.रा.

छूबटवाला ॥ सांवल मेरा मिलावे सोई गल भोंदी ।
वे मैंडा मैं उनकी सजनी ज्यों सोणा सोहणा गावंदी ॥
थेनों आवन करेस्यां राजमई ऊंडा लागे के सनीमा
रीसेजरी रैन अंधेरी । निशा अंधियारी कारी बीजरी
चमके सब भवन वेकल भई चेरी सजनी अजे सब
लीजो सबर सहो विरहा उरब देस्यां ॥ सोरठा ॥

117

लाडीजीरा प्यारा होपीवर आवोनो मेले बोवलाई ।
किनरी वार मोह्रीमे ओजोवन भयो वेग आवन करे
सो सांई ॥ हो मारुजी मैनही आवणा हो ४ राज ।उ
वीमाडी दिवराकांरां रंगही रंगावन लाखोये सोरेह
रेम्हारे लो मायकां हो ६ राज ॥ गोरी री यारे वो केचवसे
उक श्रेणी याभे यो रे । सीय रेहानन लावो मह रवान

ह॰रा॰ लागी लगे छै करावै ॥ अब नै गीजी री मारुजी मै

नै थ्यां री दासी साथबां जनम जनम री नेहा लगाव

मी पालो हो । हांजी ओ रीजी मारुजी मैंनो थ्यां रे क्रय

थां । नामें थ्यां रे चाल वली क्ले नामे किया छै करार ।

रमक जमक के मारी डेर आमला लारे ढारे ढाडे

वलिहार मैं॰ ॥ सोरठा ॥ नींदकी मातीवाई

118

९८

सोय शरीपमैना जाउकोई । महमदमा पीया मोरे
हैये आइलो गावेनी मैनेनवोदोय ॥ माबै मोहे ना
गाँटै ऐ लोक शरीपमै कितजाउ । बाबरजीयतमा
ननवाही केनी कवारसमजाउ ॥ हमपरदेशी लो
गभैवरापीया का मिलन कवहोवेगा । अवके बिछु
रेकवधौ मिलोगेनदीया मावसंजोगभेवरा ॥ वोन

हे.रा.

ज्योऊमरहीयां ॥ दिनवार। यजहोवना नरवरकी
ख्इयां देखो शोचविचार ॥ रैनकी उनींदी मातेका
हे झेंजगायरे। सागरीरयन मोहे नलफनवीती
भोरभए गरलाडेरे ॥ केंगणीयां खडायदो ब्बोजी
आब्बालाग मारुफोला। सोनेके मोही केंगणीच
रायहीरा मोती लाल लगायदो ॥ इरुबरागरण ॥

बोलीयान बोलो आधीरातमोरे मइयां जोगीयाकेसे

गा विकस जांउगी । जोगीबोली मोहे निको न लागे

तन मन धन सब साउंगी ॥ प्रेमनो आया आया इमा

गीपसाथ्यरामेजाणांमैवाडकी । रुप नगरसो चली

मारवरा फते गाफ गोर जोय घरमे रना मरहट धम

न वसी मार माडकीमेवाडकी ॥ कहां कहां जोउं

हे·गो

तोरेसाथ कन्हैया वंसीकेरेवजैया कन्हैया। हेंदाव

नकी कुंज गलीनमें गहेलीनो मेरो हायक॥ दय

मेरे खोयो मटकीया फोरी लीने भजभरवाथ दय

मोखनके चौरेया क। लपट ऊपट मोरी गागर प

टकी सांवरे सलोने सलोने गानक। कवहू नटा

नलियो मन मोहन सदा गोकल आन जानक॥

१२०

मीरांके प्रभु गिरिधर नागर जनमजनमके नायक

रे गोली सखी वैसी वनमें वजी धीर समीर नीर जमु

नाके सुंदर स्यामसजी । श्रवण सुनत सब ब्रजकी व

निता आतुरतुरतभजी । जानकी रात स्याम मिले व

को कुलकी लाज नजी ॥ मेरे डेरे मीना मोहन आव

रे । दरद दिवाणी रूप लोभानी सुंदर रूप देखावेरे ।

ह॰ग॰ पल कनके पडुपोंवको करहूं यर घनरी पर पावे रे ॥
गोविन्द सावरा व्रजमोहन प्यारे आनन्द रंग वरसा
वे रे ॥ ये होरी गरबला योजी स्याम सलोना । कृपा
करो हमारे मङ्गल पधारया मोहन मनही लगाना ॥
सुंदर वदन सोभा सुख सागर मुरली मंत्र मदन को
टोना भरदासी व्रज तिय प्यारी अब कछु और न होना

इमा राव सिया वालम जी थांने चाहे हो राज । दासी ।

थांरी मैं जनम जनम री थे मो का सिरताज ॥ला

गरसीया वालम जी मोती वालो । अलहै वटखास

व मलवट हैस्या मोती डारा बोर पन्नाजी हो । झौर

उटै थांरे कटे नारी थांने कुंदपनाचनाजी हो । उभेरा

या थारी अरज करे कुमानो हजबनाजी हो ॥ हेली

हे भा

चलो देखोरी कितरो घोर रैणा ग्रेथीरे कारी बिजरी च

मकत मोर करत मुत सोर । ब्रजगोपन सव स्वखम

दमाने किन रजनी किन भोर । वृंदावनकी कैजगली

नैंम मदन जगोवहू डोर ॥ नेह महरको फोट सो

वरो हमसों भयो कठोर ॥ मन व्याकुल बि

न दरस स्यामके देवत विना मन जोर ॥ ॥

122

तोन सैनको दासन दीजे श्रीवल नंद किशोर ॥२॥
ज हमारे नाकेडीजी लडके हमारी हाथोरी चूडी
पायल हमारी बाजे । इतनी विनती मोरी तुमसो
महर बान सासन मद मोरी जाये । रैण चांदणी को
ई हट करी पोरहा यनजारो ॥ भवनन भावेपरी मो
हे पीया विना । एसो जान सज्ञान पीया वरी वरी

हे॰रा॰ पल पल छिन छिन शत घन गरजे बीजरी चमके जी
यद्दुरपावे ॥ बनाजी थारी अंखडीयां कामनगारी
छेबनाजी । मोहीकेजी थांरी लटक चाल परवारम
नैकीनारी । जंत्र मंत्र जाडु टोना करकर बहोतहारी
हारी । मिरा नेन मकी योगिरधारी सांवरी सुरत
प्यारी ॥ १ छै आतर आयो मनों थबीयो बांगेदार ॥

1213

अलवलीया रिजवारसी अजवज्ञकणरोतोर । छि
पिछाने आयो जरा मिल करसी अलगार । अवर
सीत्या जव राजन करनांडउरहार ॥ पसरो मोवन
वीने जान मोरे पीयाने रखीवान । वरषन मेचप
ला चमकरहे जीयगाडरन अयमान । सांवरंगगपी
यापरदेश ख्यापडन विन कछुन सहरान ॥ ननदी

ह॰रा॰

राखीरा कोरी कोहि कैहै समझावो। बोफ वरोजी र

मानी प्रवेश सखीया कोई थांरे मनमें आई॥ उनी

री खांजी कोजी काई जगाई जगाई हो राज। आल

स आवै नीय अकलावै नाहक नींद गवाई॥ होमा

रुआने थांरी वाह वाणीके उर चलने अपधारो मारी

मावणामाह॥ मैनो थांरीदासी जनमजनमरी

124

१२४

श्राजजमारोथनीछे ॥ जाश्रोवीजाश्रोउनीरे साथवो

राजकंवरजी थांरे पगपरश्रोश्रोर देशारामइहाइ ॥

इमोरोमारुडे किन विधथेवमकीनो । एकजोपी

या लोइमरोपीयालोनीमरो पीया लोभरदीनो ॥

छकीया राजीद श्रायोइ मारवण । देख मावीश्राव

लवाम्होभाजाईजाईकरो नैवरइमारवण ॥ वेणोरा

ह रा

सवादी थांरे आंगणा उभो सोनकोरवड़ो थांरा मनरीवा

नवीन रंगाउन रा मनरी वात मैन थांने हो राजोजी ॥

अमलो रा माना हमेरे डेरे आवोजी राज ॥ उगमगाता

महल पधारो खेमा खेमा करलेशां ॥ आजो पगाडे

पावनोथे केथा अलगा कौ आगा आवणा ॥ ॥

इतिश्री ह्रषरागस्य समाप्तः ॥ शुभं ॥

125

३ यताल: । कट केकन ञपणाथा २ दोताल: वप

क: । मतिमेथा म्वतमेथा । संगीत ताल ।। तन्स

त गुरु तामा नेद चवगा मरगा उज्वार परमा नेद केदे

इति ताल प्रबेय: ।। ।।

वतरंग ताल । ३ । वतरंग गाइन गुगा गाइये गा

इये रिझाइये रङ्गनाथकों स्वर तान तालसों गाग

रा॰म॰

ड़ेट सैं स्वर समसैं मान मनाइये । इत्यष्टपाये । नन न ननम् दिर दिर नोम नदीम नदीम नादिर दिर दि र दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर नोम ननोम उद न टन्न कननं यलल यलल लं लाइये ॥ इत्यंतरा ॥ अथाभोगः ॥ सानिधपमगरे सासारेरे गग मम पप धध निनि ससप ससप सधाइये ॥

✓

री कहौ कछु कहत न बनि आवै लगी मरम की

भालीरी । सूरदास प्रभु मन हरि लीनों बिबस

भई हौं कासौं कहौं यह आलीरी ॥ राग देवगा

खनाल । चौपदी । आनिन देऊ छटौना छौ

टा रेंडुणी पराई । तेरो कोउ कहा करेगो लरिहै र

मसौं बहिनी माई । मेरे संग की और गई ने जल

गी॰ दे॰ भरि धरि धरि करौं फिर आई। हरषधाम इंद्रगोदी

जै न नो जसमति सौं हमकैहैं जाई॥ रागदेवगा

ख नाल । चौपदी॥ गोकुलके गवैंडे एक सां

वरो सो छोटा माई आंगिन के पैडे पेढिजीके पैं

डे पर्यो है। कलन परति कुन ग्रह भयो समव

न तन मन धन प्राण सकल सावे हर्यो है। म

बन न भावै माई अंगन न रह्यो जाय करो हाय हाय

देखौ जैसे हाल कह्यो है । सूरदास प्रभु नीके

गावत मधुर सुर मानहु मुरली में पीयूष रस भ

र्यो है । रागदेव शाख ताल । चौपदी । मेरो

हरि नागर सौं मन मान्यौं । मन मोह्यो हेरतवर

नायक भली भई जग जान्यो ॥ बिसरी देह गेह

चा·दे सुधि बिसरी बिसरि गई जलकी कान्यौं । सूर स्या
म प्रेया मनकी नव भावै भोजन पान्यौं ॥ इति
आभोगः ॥

4

४

रागदेवगांधार ताल । षट्पदी । बजावै मुरली
की तान सुनावै यह विधि कान्ह रिझावै । नटवर
भेष बनाये वटकसों ठाढे रहे जमुनके तीर निरव
न खग निकट बुलावै । ऐसो कोजो जाय जमुना
तें जल भरि घरहि लै आवै । मोर मुकुट कुंडल व
न माला पीतांबर फहरावै । एक अंग शोभा अव

रा॰ दे॰ लोचन लोचन जल भरि आवै । स्याम स्याम के अं

ग अंग प्रति कोटि काम छबि छावै ॥ राग देव

गांधार ताल । षट्पदी । पनघट रोके रहत

कन्हाई । जमुना जल कोऊ भरनन पावत देव

नहीं फिरि जाई । तवहिं स्याम एक बुद्धि उपाई

आपुन रहे छिपाई । तट ठाढ़े जे सखा संग के नि

नकौं लिये बुलाई । वैदोरे ग्वालनिकौं उमनतर श्रा
बन फिरि फिरि देखत । बडी वार भई कोउ न आ
ई सूरश्याम मन लेखत ॥ राग देवगाधे ना-
षट्पदी ॥ घटभरि देऊ लकुट नव देहौं । हमहूं
बडे महरि की बेटी तुमकौं नहीं डरैहौं । मेरी क
नक लकुटिया देरी मैं भरि देहौं नीर । बिसरि गाई

रा॰ दे॰ साधिना दिनकी तोरि हरे सवनि के चीर। यह बा
नी सुनि गवारि विवस भई तनकी सुधि बिसराई॰
सूर लकुट कर गिरत न जानी श्याम ठगोरी लाई॰
राग देवशाख ताल । षट्पदी। घटभरि दि
6 यो श्याम उठाई। नैंकु तनकी सुधि न ताके च
ली ब्रज समुहाई। श्याम सुंदर नयन भीतर रहे

६

आनि समाई । जहां जहां भरि दृष्ट देखे तहां तहां

कन्हाई । उनहि ते एक सखी आई कहति कहा ब

लाई । सूर अबही ह्वै गनि आई चली कहां गवांई॥

राग देवशाख ताल । षट्पदी । सुनत बात य

ह सखि अकुलानी । नाहि चीर गहि घर पढ़ुंचाई॥

आप चली जमुना के पानी । देखे आय तहां हरि

दे.रा. नाहीं चितवति जहां तहां चितनानी । जल भरि ढ

ढुकत चली घरहि तन वार वार हरिकौं पछिता

नी । ग्वारिनि विकल देखि प्रभु प्रकटे हरष भ

यो तन तपनि बुझानी । सूरदास प्रेम मगन भरि

लीनी गोपी प्रेम अगम गति की जानी ॥ राग देव

गांधार ताल । षट्पदी । मिलि हरि सुख दि

यो तेहि वाला । नपति मिटि गई प्रेम क्षाकी भई सबै ह्वाला । मगानही उधा भरनि नागरी भवन गई भलाई । जल भरनि ब्रजनारि आवति दे खि नाहि उलाई । जाति कित है आर क्षांडे कयो रतको आई । सूर प्रभ के रंग राची चिते हरि चित लाई ॥ राग देव शाख नाल । घट

ग॰ दे॰ काहू मोहि ठगौरी लाई । बूझति सखी सुनति न
हि नेकहूं तही कियौ दया भरि खोई । चौंकि परी
स्वप्ने जनु जागी नव बानी कही सखिन सुनाई ।
श्याम वरन एक मिल्यौ ढुटौना तेहि मोकौं मोह
नी लगाई । मैं जल भरे इनहिकौं आवति आनि
अचानक अंक मलाई । सूर ग्वालि सखियनि के

आगे बात कहहि सब लाज गवाई ॥ रागदेवशाख
ताल । षट्पदी । आवति ही जमुना भरे पानी श्या
म बरन काहूको ढोटा निरखि वदन घरगैल भु
लानी । उनमोतन मैं उन तन चितयो तबही तेउ
न हाथ बिकानी । उर धकधकी लगी मन व्याकु
ल मुख मैं फुरति न बानी । तब कह्यो मोहन मो

सू॰ दे॰

हनी नहंको हैया ब्रजमें ही पहिचानी । सूरदास प्र

भु मोहन देखत जनु बारिद जल बूंद हिरानी ॥

राग देव शाख नाल । षट्पदी । नेक न मन

नें टरत कन्हाई । एक पेमेह्हि छकि रही श्याम र

स नापर यह यह बात सुनाई । वाको सावधान क

रि पठयो वली आप जलकों प्रतवाई । मोर मुकुट

पीतांबर काछे देख्यो कुंवर नंदकी जाई । कुंडल
झलकत ललित कपोलनि सुंदर नयन बिसाल
सुहाई । कह्यो सूर प्रभु ए ढंग सीखे ठगत फि
रत हौ नारि पराई ॥ राग देव शाख नाल । षट
पदी । कहा ठग्यो तुमरो ठगि लीन्हो । क्यो न
हि ठग्यो और कहा ठग्यो हो और रहिके ठग तुमको

रा-दे॰ बीन्ही । कह्यो नाम धरि कह्यो लगायो मानियावे

यह बान । ठगके लक्षण मोहि बतावहु कैसे ठ

गके बान । ठग लक्षण हमसौं मानिये मद्

मुसकनि मन चोरन । नैन सैन दे चलत सुर

प्रभु अंग त्रिभंग करि मोरन ॥ राग देवगा[illegible]

ताल । षट्पदी । प्रीतिहि करन नम श्रव

10

गारी । काहूकी ब्हीनत हैं गिंदरी काहू कि फोर
न है गगरी । भरन देहु जमुना जल हमकों ह्
रि करो बातैं ये लँगरी । पैडे चलन न पावत कोऊ
रोकि रहत लरि कनिलै उगरी । वाट घाट सब
देखन आवत अबला हरनि मर हैं सगरी । सूर
श्याम तेहि गारी दीजै जो कोऊ आवै त्हरी

गा॰दे॰ वगरी ॥ राग देवगांधार ताल । षट्पदी ॥

नीके देहु न मेरी गिंडुरी । लेजैहै यशि जसुमति

आगे आवहु री सब मिलि एक फेंडरी । काहु

नहि डरात कन्हाई बाट घाट तुम करत अचगरी॰

जमुनादह इंडुरी फटकारी फोरी सब मटुकी

अरु गागरी । भली करी यह कुंवर कन्हाई आ

॥

तु मैं दिहैं तसूरी लंगरी । बली सूर जसुमति के

आगे उरहन ले तरुनी ब्रज सगरी ॥ राग देव सा

ख नाल । षट्पदी ॥ आपुन चढे कदम पर धा

ई । बदन संकोरि भौंह मोरत है हांक देत करि ने

द उहाई । जाय कह्यौ मैया के आगे लेउ सबै मि

लि मोहि बंधाई । मोकौं जुरि मारन जब आई

तव दोनौ गिंडरी फटकाई । ऐसे करि मोकौं तुम
पायो मनो इनकी मैं करी चेराई । सूर श्याम बेदि
न बिसराये जब बांधेते ऊखल लाई ॥ राग दे
व गांधार ताल । षट्पदी । कन्हाई रहौ तौ बदौ
कन्हाई । आपुनाई जस मतिहि सुनावन फैगाई
श्यामहि नेंद डराई । महरि मथति दधि सदन

आपुने इह अंतर जवनो सब आई । तिनै रही जब

तिनको आवत कहा आवनी भीर लगाई । मैं जा

नति इनको हरि रिझई तातें सब उर हन लै धा

ई । सूरदास रिस भरी ग्वालनी ऐसो ढीठ कियो

सुतमाई ॥ राग देवशाख ताल । षट्पदी ॥

सुतकौ बरजि राखहु महरि । उहर चलनन देत

ग०-दे० काऊहि फोरि डारत रहरि । श्यामके गुण कछु

न जानति जाति हम सौं रारहरि । यहि लालच गा

य दूध लिये वसति है ब्रज वहरि । जमुन तट हरि

देखि दौरे उरनि आवै वहरि । सुर श्यामहि ने

कु वरजह कराति है पुनि वहरि ॥ राग देवगांधार

ताल । षट्पदी ॥ हमसौं कहति सकुचनि

मऊरि । श्यामके गुण नहीं जानति जाति हमसौं ग

हरि । नेकहूं नहिं सुनति श्रवणनि करतिहै हम

वहरि । जल भरन कोऊ नहीं पावन रोकि राख

न उहरि । श्रुति अवतारी करत मोहन फटकि गु

डरी दहरि । सूर प्रभुकौं कहा सिखयो रिसनि ज

वती जहरि ॥ रागदेवगांधार ताल । षट्पदी ॥

रा·दे· कहा करौं मोसौं कहौ तुमही । जो पाऊं तौ तुमहिं
दिखाऊं हाहा करि तबही । तुमहू गुण जानति
हौ हरि के ऊखल बांधे जबही । सँटिया लै मारन
जब लागी तब बरज्यौ मोहि सबही । लरकाई तैं
करत अचगरी मैं जाने गुण तबही । सूर स्याम
के हाल करौं सो देखोगी तुम अबही ॥ राग देव

14

शाख नाल । षट्पदी । मैं जानत हौं ढीटक
न्हैया । आवन दीं घर देहु श्यामकौं जैसी करौं स
जैया । मोसों करत ढिटाई मोहन मैं वाकी हौं मै
या । औरन काहूको वह माने कछु सकुचत वल
भैया । अवजो जाउं कहां तेहि पाऊं कासों देउ च
रैया । सूरश्याम दिन दिन लंगर भयो हरि करौं

गा॰ दे॰ लेगरैया ॥ राग देवशाख ताल । षट्पदी ॥
जुवती वीथि सव वरह पठाई । यह अपराध मो
ह वकसौरी यहै करत हौ मेरी माई । इनतैं चली
वरनि सव गोपी उनतैं आवत कुंवर कन्हाई । वी
थिहि भेट भई जुवतिन हरि नयनन जोरत गये
लजाई ॥ जाउ काहू मरत नारी देषति वढ़नवडाई

15

१५

करि श्रम आई । स्तन श्याम स्रवे निरखि सिंहारी

मैं कै हौं जननी समझाई ॥ राग देवशाख ना

ल । षट्पदी ॥ सकुचित गये घरको श्याम ।

हारवही नैं निरखि देख्यो जननि लागी काम ॥

यहै वानी कहत माखनै कहांगयो कन्हाई । आ

पुहाढे जननि पाछें मननहैं चितलाई । जलभ

रा॰ दे॰

रन जुवती न पावै चाट रोकत जाय । सूर सब की
फोरि गागरि श्याम गये पराय ॥ रागदेवगंधा
ताल । षट्पदी ॥ जसुमति यह कहि कै रिस
पावति । रोहिनि करति रसोई भीतर कहि कहि
तिनहि सुनावति । गारी देत बहू बेटी को बैया
ई त्यों आवति । झगरा करति सबनि सों मैं ही कै

१८

६

से हूं लैंट खिझावति। जाति पांति सौं कहा अब

गारी यहि कहि खनहि पठावति। सूर श्याम कों

सिखवति ह्यारी मोहेहु लाज न आवति॥ राग दे

व गांधार ताल ।षट्पदी। न मोही कौं मारन

जानन। उनके चरित कहा कोऊ जाने उनहि क

ही न मानति। कदम तीरतें मोहि बुलायो गाढि

रा-दे

गाढि बान बनावति । मटकनि गिरि गायारि सिर
तैं ग्रब ऐसी ग्रुहरि ठानति । फिरि चितई न कहों
रह्यो कहिमै नहि तोको जानति । सुरझनहि दे
खिनही रिसघाई भाव हूंवति उर ग्रानति ॥ राग
देव गाख नाल । षटपदी । फूटेहि सतहि
लगावति खोरि । मै जानति उनके ढंगनि की

17

बानें मिलवनि जोरि । वे जोवन मद सब मद माती

कहो मेरो ननक कन्हाई । आपुहि फोरि गागरी

सिरनें उरहन लीन्हें आई । न उनके ढिग जात

कनहि है वे पापिनि सब नारि । सूर श्याम नु क

ह्यो मानि अब है सब ढीठ गंवारि ॥ राग देवशा

ख नाल । षट्पदी ॥ मोहन बाल गोविंदा

रा॰दे॰ माई मेरी कहा जाने चोरि । उरहन लै जुवती स

व आवति झूठी बतियां जोरि । कोऊ कहति गिं

डुरी मेरी लीनी कोऊ कहति गगरी गये फोरि॰

कोऊ चोली हार बतावति कान्हइनैं पै भोरि । अ

व आवै जो उर हन लैकैं तौ पठऊं मड़ मोरि । सूर

कहो मेरी ननक कन्हैया आपन जोवन जोरि ॥

18

राग देवशाख ताल । षट्पदी ॥ व्रज वर घर

यह बात चलावत । जसुमति को सुत करत अव

गारी जमुना जल कोउ भरन पावत । श्याम वरन

नटवर वपु काछे मुरली राग मलार बजावत ।

कुंडल छवि रवि किरनिहूं तें दुति मुकुट इंद्र ध

नु तैसो भावत । मानन काहून करत अवगारी गा

गा॰ दे॰ गवि धवि जल भई फरकावत । सुरभ्रपामको मान

पिना दोउ ऐसो ढंग अपुनही पढावत ॥ राग दे

व शाखे नाल । षट्पदी ॥ करन अचगरी नंद

महरको । साखा लिये जमना तट वैठो निवरत न

हि सब लोग उगारको । कोउ खीजो कोऊ किनि

वरजो जुवतिनके मन ध्यान । मन क्रम वचन

१९

१९

ब॰ २६

स्याम बरन है औरन हूजो सान । स्वरनकु काम ये
नु स्वाद त्यागयो ब्रज जुवतिन के हेत । सूरभजे जे
हि भाव कुसुम को ताको सोइ फल देत ॥ राग देव
गाख ताल । षटपदी ॥ जमुना जल कोउ भरन
न पावै । आवत बैठौ कदम डार चढि गारी दै दै स
बनि बुलावै । काहूकी गागरी गहिकै फोरत काहू

गा॰ दे॰ सौं करि प्रीति मिलन हूं नयन सैन दै चित्त चुरावै

वर वसही अेकवार भरन यरि काहू सौं अपनो मन

लावे । सूर श्याम अति करत अचगरी कैसेहू का

हू हाथ न आवै ॥ राग देवगांधार ताल । षट्प

दी ॥ ब्रज गैवैडे कोउ चलनन पावत । ग्वाल स

खा सब लीन्हें अेलन दैदै हांक जहां तहां पावत ।

काऊकी गिंडरी फटकारत काहूकी गगरी फरकावत । काहूको गारी गारी दै भाजत काहूको उदिधेक मिलावत । काहू नहिमानत ब्रज भीतर नंदमहरको कुंवर कहावत । सूर श्याम नटवर वपुकाछे जमनाके तट मुरलि वजावत ॥ राग देवशाखेनाल । षटपदी ॥ गाथा सखिन लई बोला

रा॰दे॰ य। चलहु जमुना जलहि जैये चली सब सुख पाय॰
सवनि मिलि एक कलस लीन्हो तरनि पहुंची जाय॰
तहां देख्यो श्याम सुंदर कुंवरि मन हरषाय। नंद
नंदन देखि रीझे चिते रहे चित लाय। सूर प्रभुकी
प्रिया राधा भरति जल मुसुकाय॥ राग देव गांधा
नाल। षट्पदी॥ घरहि चली जमुना जल भ
२१

रिकै। सखिन बीच नागरी बिराजति भई प्रीतिउ

र झरिकै। मंद मंद गति चलत अधिक छबि अंच

ल वह्यो फहरिकै। मोहन को मोहनी लगाई मे

गहि चले उगरिकै। बेनीकी छबि कहन न आ

वै रही निवनि फरिकै। सूरश्याम प्यारी के

वस भए रोम रोम रस भरिकै॥ राग देव गाव

रा॰ दे॰ ताल । षट्पदी । गागरि नागरि जल भरि घर

लीन्हें आवै । सखियन बीच भरयौ घट सिर परना

गर नयन चलावै । डुलन ग्रीव लटकनि नक बेस

रि मंद मंद गति आवै । भ्रकुटी धनुष कटाछ बा

न मनो पुनि पुनि हरि हिं लगावै । जाको निरषि

अनंग अनंगन नाहिं अनंग बढावै । सूरश्याम

प्यारी छवि निरखत आज़हि यम कहावै ॥ १ ॥ रा
देव गाव नाल । षट्पदी ॥ ग्वालिनि वली
जमन वहोरि । नाहि सव मिलि कहति आवहु
कछु कहति निहोरि । ज्वाव देनि न हमहि नाग
रि वड़ी वदन निहोरि । ठगि रही मन कहा सोच
नि काहु लियो कछु चोरि । भजा यह करि रह्यो

गा. दे.

वलहित आवै अवही खोरि । हरप्रभके चरित स
खियनि कहति लोचन फोरि ॥ राग देव गाधना
ल । षट्पदी ॥ मोहन बिनु मनमारहे कहा
करो माईरी । कोटि भांति करि करि रही समझा
इरी । लोक लाज कौन काज मनमैं नहीं आई ॥
हृदयतें टरत नाहिन ऐसी मोहनी लगाई । छेदर

23

वर त्रिभंगी नव रंगी सुखदाई । सूरदास प्रभु बिन

मोसो बरयो नेक न जाई ॥ राग देवगांधार ताल ॥

षट्पदी ॥ नंदको नंदन सांवरो मेरो चित चोरे जाय ।

रूप अनूप दिखायके वह औचक मिलयो आय ॥

मोरमुकुट श्रवण कुंडल ओढनी फहराय । अध

रनि पर मुरली धरे मधुर तान बजाय । नंदनकी

रा॰ दे॰

रोरि किये काछनी बनाइ । सूरदास प्रभु वैठे जमु

ना नट कन्हाइ ॥ राग देव गांधार ताल । षट्पदी

जुवती एक जमुना जलको आई । निरखति अंग अंगे

गा अति शोभा रीझे कुंवर कन्हाई । गोरे वदन सूनरी

सारी अलकै मरव वन राई । उरवनि नारि नारि भरी

विरान कर कंकन जल काई । सहज संगार उठन

२५

२८

जोवन तन विधिसें छाय वनाई । हर स्याम आये फि
ग आंगन घट भरि चलि झमकाई ॥ राग देव गाव
नाल । षट्पदी ॥ छांडि देहु मेरी लट मोहन । जव
परसत श्रुति श्रुति मुखवन नहि कन आई तजि गोह
न । जुवती आनि देखिहै कोउ कहहि वेंक करि मो
हन । वारवार कहि वीर दोहाई तुम मानत नहि सो

रा॰दे॰

हन। इतनेही को सोइ दिवावति मै आयो मखे

जोइन। सूरश्याम नागरि वस कीन्ही विवस

चली घरकोइन ॥ राग देवशाख नाल । घट

पदी ॥ चली भवन हरि हरि लीन्ही। पग है

जाति ठठुकि फिरि हेरति जिय यह करति क

हा हरि कीन्ही। मारग भूलि गई जेहि आई आ

25

२४

घ 22

बन कौ नहि पावति बीन्ही । रिस करि खिझि
खिझिके लट झटकति श्याम भुजनि छुट का
य इन्ही । प्रेम सिंधमैं मगन भई पिय हरिके रंग भ
ई अति लीन्ही । सूरदास प्रभु सौं चित अटक्यौ आ
वन नहि इत उतहि पतीन्ही ।। राग देवशाख ता
ल । षट्पदी ।। घर घर जनकी सुधि जब आई·

गा-दे-

तब मारग ह्लिझियो नयननि कछु जिय अपने त्रिय गई लजाई। पहेंची आय सदन ज्यों त्यों करि नेक नहीं चित दरन कन्हाई। सखी संग की बूझ न लागी जमुना तट अति जेर लगाई। औरे दसा भ ई कछु तेरी कहहनि नहीं हमसों समझाय। क हा कहो कहन न बनि आवै सूरश्याम मोहनी ल

२८

२६

गाय ॥ राग देवशाख ताल   । षट्पदी ॥ सखी
वा जमुना के तट । हौं जल भरनि अकेली पनघट
गही श्याम मेरी लट । लै गगरी सिर मारग डगरी
उन पहिरे पीरे पट । देखत रूप अधिक छवि उप
जी काछ्वनि किंकिनि रट । फूले एक ग्वालिनि
के भेटन ज्यौं रन जीते फिरै महाभट । सूर लख्यो गो

गी॰टी॰ पाल अलिंगन सुफल किये कंचन घट ॥ रागदेव
गांधार ताल । षट्पदी ॥ कहा करौ सखि कहत बने
नहि नैंद नंदन मेरो मन जु हर्यो । मात पिता पति बं
धु सकुच तजि मगन भई नहि सिंधु तर्यो अरुणा
अधर जग नयन रुचिर सर मदन मुदित मन सं
गलस्यो । देह दशा कुलकानि लाज रज सहज सु

27

२८

ब-२८

भाव बढ्यो सुयस्यो । आनंदकंद चंद मुख निरखि दि
न अब लोकन यह अमल पस्यो । सूरदास प्रभु सो
मेरी गति जनु लुब्धक कर मीन चस्यो ॥ राग देव
गाख ताल । षट्पदी ॥ मेरे जिय ऐसी आनि ब
नि विना गोपल औरन हि जानो सुनि मोसो सजनि-
कहा कांच संग्रह के कीन्हे डारि अमोल मनि । वि

रा०दे० घ सुमेर कछु काम न आवै अस्टन एक कोन। मन

वच क्रम मोहि और न भावै अव मेरे अपाम यनि ॥

सूरदास स्वामी के कारन तजी जाति आपनि ॥

रागदेवगांधार ताल । षट्‌पदी ॥ अवटफ

करि यरि यह वानि ॥ कहा कीजे सोनफा जि

हिं होय जिय की हानि। लोक लज्जा काव कि

२८

रंग श्याम कंचन खानि । कौन लीजै कौन नजिये
राखि तुम्हहि कहो जानि । मोहि तो नहि और सु
ऊन बिना सुइ मुझ कानि । रंग कापै होन न्यारे
हरद चूनो ग्रानि ॥ यहै करिहो और नजिहौं
औरं परी ऐसी आनि । सूर प्रभु पति बर्न या
त्यो मेटिके कुल कानि ॥ इति श्राभोगः ॥

29

राग देवशाख ताल । अष्टपदी । युवती एक ब्र
खन देखी श्याम । दुमकी ओट रहे हैं आछुन जम
ना नटगई वाम जल हलोरि गागरि भरि नागरि
जबही शीश उठायो । घरकों चली जाय तापाछें
सिरतैं घट ढरकायो । बनर ग्वालि कर गह्यो श्या
मको कनक लकुटिया पाई । औरनि सौं करि रहे

रा॰दे॰ अचगरी मोसौं लगत कन्हाई । गागरि लै हंसि दे
न ग्वाल कर रीतो चट नहिं लैहौं । सूर श्याम स्यों
आनि देहु भरि नतरु हि लकुट कर दैहौं ॥ रागदेव
गान्धार ताल । अष्टपदी ॥ सुनहि महरि तेरो
लाडिलो अति करत अचगरी । जमुन भरन ज
ल हम गई तहां रोकत डगरी । सिर तै नीर फ़रा

30

३॰

स्रू॰ १

यफै फोरी सब गागरी । गेंडुरी दई फटकारिके
हरि करतहैं लंगरी । नित प्रति ऐसेहि ढंग करै ह
मसौं कहै यगरी । अब बसवास नहीं बने यहु नव
ब्रज नगरी । आइगयो चढ़ि कदम कि चितवत
रहे सगरी । सूरश्याम ऐसे सदा हमसौं करै झग
री ॥ राग देव गाधार ताल । अष्टपदी ॥ गागरि

गा-टै-

नागरि लिये पनघटनैं चलि आवै । ग्रीवा डोलत
कोचन लोलत हरिके चितहि उरावै । टटुकानि व
लै मटकि मड़ मोरै वेकट भौंह चलावै । मनङ्ग
काम सैना अंग सोभा अंचल धुज फहरावै । गजि
गयंद ज्ञव ज्ञम्भ किंकिनी मनङ्ग घट झहनावै
मोतिन हार जला जल मानो खुभी नदत झलका

३१

३१

वै । मानहु चंद मध्यावन स्रावको अंकुस कर वेस
रिको लावै । रोमावली हेडि निरनी लौनाभि स
रोवर आवै । पगाजे हरि जंजीरनि जकरयो यह
उपमा कछु पावै । चटजल छलकि कपोल
नि केकी मानहु मदहि चुवावै । वेनी डुलनि डु
हनि नव विच मानो पंख हलावै । गाज सिरदार

रा॰ दे॰

सूरको स्वामी देखि देखि सुखपावै ॥ राग देवशा

ख ताल । अष्टपदी ॥ सखियनि वीच नागरी

आवै । छबि निरखत रीझे नंद नंदन प्यारी मन

हि बिझावै । कबहूंक आगें कबहूंक पाछें नाना

भाव बनावै । राधा यह अनुमान कियो हरि मेरे

चितहि चुरावै । आगें जाय कनक लकुटी लै पंथ

३२

सेवारि बनावै । निरखत जहां छांह प्यारीकी न
हे लै छांह छुवावै । छबि निरखत नत वारि आ
पनी नागरि जियहि जनावै । ओढ़ि ओढ़नियां
चलत देखावत पहि सिस निकटहि आवै बारबा
र सिर कर धरि धरि अति अधीन ह्वै जावै । हर
श्याम ऐसे भावनि सो राधा मनहि रिझावै ॥ रारा

रा-दे.

देव शाखे नाल । अष्टपदी ॥ लगि लागि मन नहि

पावन धपाम । नव एक भाव कियो कछु ऐसो ण्या

री नव उपजायो काम । मिस करि निकट आय मु

ख हेरयो पीतांबर डारयो सिर वारि । यह छल क

रि मन हरयो कन्हाई काम विवस कीनी सजमारि

पुलक अंग अंगिया दरकानी उर आनंद अंचल फ

33

हगन । गागरि नाकि कोकरि मारे उचटि उचटि
लागत छिय गात । मोहन मन मोहनी लगाईस
विन संग परहेंवी वर जाय । सूरदास प्रभुसों म
न अटको देह गेहकी सुधि विसराय ॥ राग दे
व गांधार ताल । ध्रुवपदी । मेरी गैल न छांडे
सांवरो मै क्योंकरि पनि घट जोउरी पनि मजवनि

गा॰ दे॰

इवपति रहैं मोहि धरै नकोऊ नामरी । जिन देखौ नित देखिये री रसिया नंद कुमार । इतउत नयन चुरायके मोहि पलकनि करनजो हारी । लकुट लिये आगे चलेहो पंथ सवारत जाय । मोहि नि होरी लायके यह फिरि विनवै मदहकाइरी । जमुना जल भरि गागरी लेज व सिर चलो उचाय । सैं

३४

केतुकि अंचरा उडै मेरो हियगातकि ललचायरी ॥
गागरि मारै कांकरी सो लागे मेरे गात । गैल माझ
ठाढो रहे मोहि सबै आवत जानरी । हौंसकुचनि
बोलो नही लोक लाजकी संक । मोनन छेवैहरि
चलै वह नाहि भरनदै अंकरी । निकट आय मारव
निरखिके चितवै बहुरि निहारि । अब फग ओंकी

रा॰ दे॰

ओढनी पीतांबर सोपर वारंरी । जब कछू लग ला
गै नहीं तब वाको ज्यों अकुलाउ । तब हरि मेरी व्या
हू सो बह पावै व्याह कुवारी । कोजाने किन होत
हैरी चरन शरजन सोर । मेरो ज्यौं गोदी वेष्णोवा पी
तांबर की क्वोरी । अबलौं सकुच अटक रही अब अक
ट करौं अनुरागा । हिलि मिलि हे सेग खेलि हौं मानि

आपनी भामारी। घर घर ब्रजवासी सबै कोऊ कि
न कहै पुकारि। श्रम प्रीति परगट करौं कुलकी
कानि निवारिरी। जब लगि मन मिलयो नहीं न
यो चौंपको नांव। सूरदास प्रभु मिलि रहै सबक
रौ मनोरथ सांवरी॥ राग देव गांधार ताल। पुष्ट
पदी॥ परी नबानै टग हरि रंगोरी। देखोमैं ज

रा॰ दै॰ मना नट वैसौ ढोटा जसमति कौ री । प्रति सांब
रो भयो सो सांचे कीन्हे वंदन खोरी । मन मथ को
टि कोटि गहि वारो ओढे पीत पिछोरी । उलरी
केट नयन रत नारे मो मन चितै हरयो री । विकट
भृकुटि की वोर कोर तैं मन मथ वान परयो री ।
दमकत दसन कनक कुंडल मुख मुरली गावत

36

गोरी । श्रवननि सुननदेह गति भूली भई विकल

मति बौरी । नहि कल परत विना दरशननैं नयन

नि लागि गफोरी । सूर श्याम बिन दरत न नेक

झ्रे निसि दिन रहत लगोरी ॥ राग देव शाख

ताल । अष्टपदी ॥ ग्वालि जट सिर पगि चली

जमकाई । श्याम अचानक लट गहि कहि अति

गा·दे

कहाँ चली अनराई । मोहन की प्रिय मावकी अल
कै यह उपमा अधिकाई । सोऊ सबै सजवन मा
नो पंकज बीच परे अलि समुदाई । मनहु सुधा श
शि राहु भुजावन पत्यो नाहि कर वरि आई । कुच प
रसे अंकम भरि लीनी उर मन हरष बढाई । सू
र श्याम मनो भ्रमरन चटनिको देखत है करलाई ॥

३०

राग देवशाख नाल । अष्टपदी । सोरठ । कैसे जल भरन मैं जाउं । गैल मेरी पहो सखीरी कान्हजा को नाउं । घरहितें निकसत बनत बहि लोक लाज लजाउं । तन इहो मन जाय अटको नंदनंदन ठाउं । जो रहौं घर बैठि कै तो रह्यो नाहिन जाय । सी ख तैसी देहु तुम हीं करौं कहा उपाय । जात बाहि

रा॰दे॰ १ बननना ही घर न नेक सोहाय । मोहनी मोहन
लगाई कहति सखिन सुनाय । लाज कानि सब
जात जियलौं करति हौं यह सोच । जाहि बिन तन
प्रान छाडै कौन बिधि यह पोच । मनहि यह पर
तीत आनि हरि करि हौं सोच । सूर प्रभु हिलिमि
लि रहौगी लाज डारौ मोच ॥ रागदेव शाख ना॰

38

३८

ल । अष्टपदी । मोहि भावै सजनि मोहि गहव
न कछु न सोहाय । जमुन भरन जल मैं गई नहो
श्याम मोहनी लाय । ओढे पीरी पामरि हो पहिरे
लाल निचोल । भोहै काट कटिलियं मोहि मोल
लयो बिन मोल । मोर मकुट सिर राजयहो अधर
धरे मुख बैन । हरिकी मूरति माधुरितातैं ला

रा॰दे॰

गिरहे दोउ नैन । मदन मूरति के वस भई अबभ

लौ उरौ कहौ काइ । सूरदास प्रभुको मिलि कौस

न एकै नन दोइ ॥ राग देवशाख नाल । अष्टपदी॰

भक्तनिके सुखदायक श्याम । स्त्री पुरुष नही क

कुनाम । सेकटमें जिनि जसे प्रकास्यो । नसे प्र

कटि तिनको उधास्यो । सुखभीतर जिनि सुमिर

३९

३८

न कीन्हो । तिनको दरस नहीं हरि दीन्हो । ऊधव
हृव मैं जे हरिको ध्यावै । तिनको नेकन हरि विस
रावै । विनतैं भजै कोन हूं भाउ । ताको तैसेइ त्रिभु
वन राउ । कामातुर गोपी हरि ध्यायो । मन वच क
र्म हरिसों मन लायो । षटदरसन तपकीनों नन गा
री । होंहिं हमारे पति गिरिधारी । अंतर जामीजा

रा०दे०

नन सबकी । प्रीति प्रगटानन साली नवकी । वसन
हरे गोपिन सरव दीनौ । सरवदै सबको डाव हरि
लीनो । खवनिनके यह ध्यान सदाई । नेकुन खेत
र होय कन्हाई । बाट बाट जमुना तट रोकै । मार
ग चलन जहां तहां टोकै ॥ काहू की गागरि परि
फोरै । काहू सो हँसि वदन सकोरै । काहू को ख्रे

४०

११

कम भरि भैंटै । काम विथा नहि गनि की भैंटै ।

ब्रह्मा कीट आदि के स्वामी । प्रभु है निर्लोभी निः

कामी । भाव वश्य संगहि संग डोलै । विलहँसे

तिन निसौं बोलै । ब्रज जुवती नहि नेक विसारै-

भवन काज विन हरि सौं वारै । गोरस लै निक

सी ब्रजवाला । नहीं तिनहि देखे गोपाला । प्रेम

गा-दे-

ग्रेगा सजि स्रेगार वर कामिनि । चली मनहु जव
निजरि दामिनि । कटि किंकिनि नूपुर बिछिया
धुनि मनहु मदनके गज घंटा धुनि । जानि सा
ट मटुकी सिर धरिकै । सखि सखि गान करति
गुण हरिकै । चंद्र वदनि नव धनि सुकुमारी ।
अपने मनसा कृस पियारी । देखि सबनि सीके

4)

नव वारी । नव मनमैं एक बुद्धि विचारी । एव दरि

दान रचौ एक लीला । जवनिन संग करौं एक क्री

ला । स्व श्याम संग सखिनि बुलायो । एह ली

ला करि स्वाद उपजायो ॥ इति श्राभोगः ॥

राग देवशाख ताल ।४। देखियो वाके चंचल नारे।

कमल मीन कहे कहा एनी छवि खंजन ऊनजात

ग०दे०

उनझोरे। वेदेखिवाहकक्रदिलअ छत्रपरकेविनत्र

लकमनो श्रलिवारे। बिठरनभजनमानककाडेर

घजनुसंसकसमिलेगारडोरे। वेदेनिमघनमनम

रलीपर कर मावेनेन पकभपव्यारे। मानौजलहर

सैंवेरननेविथ करतनादवाहन छत्रकारे॥ ह

रिकोरूप सकल व्रज मोहन सब जवकी +

८२

जनप्राणधनवारे। हरसमवो निजरही विनेतन
मनक्रम वचन चित अननननटारे॥ रागद्वेषा
विनाल।४। बनेहै विसाल कमल दल नैन।
ताऊमैं अति चारु विलोकनि रहकुभाव स्वचित
सविबैन। वदन सरोज निकटकें चिन कच म
नहु मधुप आपरस लैन। तिलक ललाम ससिक

ग-दे

हसन कंचुक हरिमोहन मधुरमनोहरवैन । मद
न नृपतिके देसमह्ममद उथिवलवसिनसक
तहैवैन । सूरदास प्रभु हंसदिनहि दिन पदवच
चरित्र नौतनी दैन ॥ राग देवगाख नाल ॥ ३ ॥
मनो हरनैंनकी यह भांति । मानौ हरि करनवल
अपनै शारदकमलकी कांति । इंदीवर राजीव

A3

कुशो मयजीते सब गुणजाति । अतिसोभा आने
दकेंद दगा फूल दिन अकराति । खंजरीट मृग मी
न विराजत उपमा कौं अकुलाति । चितवनि वा
हि विलोकनि चंचल पकौ चिमन समाति । अंतर
करत निमेष लगि अंतर जग गाहि समान विराति-
न्हा सम तो अति रसिक राधिके निमष बावरे अनखा

रा°३°

ति ॥ आलस जुत दृग वियत जो जामिनी । राजत हैं
रत तारे नैंन नियिय सेत जायत गई जो जामिनी ॥
बांह उठाय जो गिजें भानी पडानी कमनीय कांमिनी-
भुज छूटत छवि यौं लागत मानौं हूटि भई केे
हुक आंमिनी । उचट नैग पर रखी केंउ की सो
भित त्रिवली उदर सो जामिनी ॥ मानो मदन

४४

नपतिके नेह्रहरीमनजीमो राधिका नोमिनी ।
विथुरी अलक सिथलकच ओरी नवेखत कुरि
नमराल गामिनी । छिगता हवति करि श्रीगोपा
लभजि अनुदिन विद्या दास स्वामिनी । रागदेव
गावेनाल ।४९। जोरस रसिककीर भनि गायो·
याहीरहन रहन निसिवासर सेस महेस भावे पार

१०६

नपायो । गावत सुक नारद मुनि सारद कमल
को सर मत उन बतायो । नरनि तन या नट निक
ट बेसी बट है दावन बीथी न वह्रायो । सोर सवसि
क दास परमा नेद ले गाथा उर बीच ड्रायो । जय
पिरमा रहत चरणन नरनि गामनि प्रणाम श्रगा
थबनायो ॥ राग देवशा । आनंद की निधि नंदकुमार

45

४५

परश्रवन नटभेषमनोहरन जगमोहन लीलाश्रव
तार। श्रवननि आनंद लोचन आनंद मनमें आनं
द आनंद मूरति। गोकुल आनंद गोपिन आनंद
आनंद जसुदा आनंद मूरति। सबदिन आनंद धेनु
चरावत बेनु बजावत आनंद केर। खेलत हसत
अनहूल आनंद राधापति हेरावन बेर। श्रकम

रा॰दे॰

नि आनंद भक्तन आनंद निजजन आनंद हासवि
लास। चरण कमल मकरंद पान करि अलि आनं
द परमानंद दास॥ रागदेवगाखताल।३।मेवा
श्रीगोपालकी मेरे मन भावे। मनसा वाचा करम
ना उर आन न आवे। करि दंडवत मनेहसौं सनमुख
सिर नावे। लोचन भरि भरि भावसौं हरि दरसन पावे।

46

प्रेम नेम निहचै करि हरि के गुण गावै । यह प्रताप
फल परम राम हरि भक्त दृढ़ावै । राग देवगावे
नाल । ४ ॥ यह न होय जैसे माखन चोरी । जानत
किते बलबीर ब्रजपति के धन संपति सब मोरी
नवनित दिनन कुमार कान्ह तुम अपनें जानत
मद मति भोरी । अब भए कमल किसोर कान्हन

रा॰ दे॰

मह्मभई सजग समान किसोरी। नखसिखते
चितचोरि सकल अंगछबी न्हे पर कतन करत मरोरी
एक सखि मर हसो मेरो सरबस अरु उलटी डो
लों मे गडोरी॥ राग देवशाख ताल। ५। अब
मेरी खेलन जान बलैया। जबही मोहि देखि लरि
कन संग न बही गिल कान नहैं बलभैयाँ मोसों कहत

४०

नानवमहेदेवैरे देवकीनेरीमैया। मोललयेकछु

देवमहेदेवहि कविकाविजनन बैदैया। अववावा

कविकहत नेदसों अकजसमनि सोंमैया। पसेक

हिकहि मोहि रिविजावनन नवउटन मोहि रिविसै

या। पाछें नेदमननतेंहैं वाढे नव हसि हसिउरलै

या। महानेंदवलगमहि हटको मनिमनहाघक

स॰दे

न्हैया ॥ रादेवशाखेनाल ।४। माखेनखोनपराप
घरको । निनश्चनि मह्रहमथानी मथियेमेचथा
हृदयि माटच मरको । किनक श्रहीरजीवनचर
मेरे दयिलेन माखेनकोमरको । नव लखेयेन्
उग्नन जिनके निन वडेनामहे नेटमह्रको । ना
केहनकहावनहोगमवोरीकरनउघारनफरको ।

48

सूरश्याम हम किननेको वैहैं दधि माखन मे
रे जहे न हो दरकौ ॥ राग देवगंधार ताल ॥ ५७ ॥
नंद घरनि सुत भलो पढायो । ब्रजवीथनि पुरघ
रनि मैं बाटघाट सबसोर मचायो । लरकनि मा
रि भजन काहूके काहूको दधि दूध लुटायो ।
काहूके घर करत भंडाई मैं ज्यों त्यों करि पकरि पायो ।

रा॰ दे॰

श्रवनो याहि जकरि बांधौं उन सब नहारो गो उभ
जायो । सूर सषा मसजगाहि नेदंतनी वडूरिका
न्ह सपनैं हित लायो ॥ राग देवसाख ॥ ४ ॥ ला
लन वारी तेरे या मुखऊपर । माई मेरी दीठि जि
नि लागो कबहूं मसि बिंदुका चो मूपर । सव
सबै पहिलेरी दीये नान्ही नान्ही दंतियां हूपर ।

अब कहा सूर कहै तो न्यो छावर अपनैं हो लालन लट्
पट् ॥ राग देवगाधार ताल । ५ ॥ जब नंदलाल नैंन
भरि देखे । एकटक रही मैं भावन ननकी मोहन मू
रति पेखे । स्याम बरन पीतांबर काछे श्रू चंदन की
खौर । कटि किंकिनि कल बलाव मनोहर सकल
त्रियन के चित के चोर । कुंडल झलक परन गाउनि

रा·टे·

पर आइ भवानकनिकसे भोर। श्रीमुखकमल
मेद मंड मसकनिलेन करषि मनंद किसोर·
मुक्तामाल राजत उर ऊपर चिन पसरबीजवै इहि
ओर। परमानंद निरषि श्रेम शोभा व्रज वनिता
डारति तिणतोर॥ राग देवगांधार ॥ ५॥ वांपों आज
नेहिको कोर। बहुत लंगर यो कीनी मोसें भुज गहि

50

अवकुबेलसौं जोरे। जननी अति रिसजानिबं
धाय चितै बदन लोचन जल ढोरे। ऊखल सौं
कटिसौं गहिकें ल्यादां मबहुत सबतोरे। यह
सुनि ब्रजजुवती सब धाई कहति कान्ह अब का
हे न छोरें। सूरश्याम कौं बहुत सतायो चूक प
रीहमतैं यह भोरे॥ राग देवशाखनाल॥ ७॥

ग·दे·

कहाकरो हरि बहुत निबुझाई । सहित न सकी रिस
रिसमैं भरिआई दई बहुत फ्री बोजकन्हाई । मेरेक
हे नाहिं नै मानन करत आपनी टेक । ओरउराह
नौं लेले आवति ब्रजको वधु अनेक । फिरत जहां
न हो ध्रम मचावत घरनहि रहत सचेत । हरासा
मनि भवनके करनानसों जसुमति करहुत अवेत·

51

जसोदा तेरे भाग्व हरि जोवे । कमल नैन हरि हुलक
निरोवे । बंधन को गिरी जननी जसोवे । जो मेरो ख
नाखे रोई अवगारे अपनी छबि को जायो । कहा
भयो जो घर को फोटा बोरी माखन खायो । तेर
न देह नी दसो जमायो जा खेन सृजन पायो । ता
घर देव पितर काहे कों जा घर कान्हर आयो । जो

रा.दे.

कोनामलेन अव भाजे कर्म फंदसव काटे। सोईह
रिदैमदोवरीकांपेजननी मांटिलीपेअंटे। हृदहा
मप्रभभक्कहेतकेदेहथरे नमपायो। तुःखिनजो
निरोउमतन अवेरके निनहित आप्रवेयाप॥ रागदे
वशाविनाल।४। जाऊवली अपनै अपनैवर॥
नमसबहित मिलिफोटकसोयहअव आई

52

वेथन कोअनवर। मोकौं अपनें बाबाकी सोकान्ह
रि भुवन पन्याउ। भवन जाउ अपनें अपनें सव ला
गनि निहारे पाउ। मौकौं जिनि वरजोरी कोउ देवे
हरिके ग्वाल। सूर स्याम सौं कहति जसोदा नंद व
डे नंदके लाल॥ राग देव गाव नाल। ५॥ सव रि
स्याम पक अरि उपाई। जवनीतई वरनि सव अपने

गां·टे·

गटहकाम्रजजननीघटकाई। श्रावनगाईजमल
श्रजननतरपरमतपातउदेउडहराई। दीपेनिरा
इयरनिदोउ नर वरनव ऊवेरमन प्रकटे आई॥
हेकरजोरिकरनदोऊप्रकात ध्यारभजानिन
कट दिखाई। हरयम्य व्रजजन्मलियो हरि
यरनीकीआपदानमाई। रागदेवशाखना·१७।

53

धनि धनि धनि जसुमति आपहि पाए। आदि अना

दि निगमन हि जेंननतने हरि प्रकट देह धरि

आए। धन्य नंद धनि मानें जसोदा धनि आग

नं जहां बैठि खिलाए। धन्य श्याम जसें दाम

वे पाए धनि ज्वाल धनि माखन खाई। दीन

वेष करुणा निधान प्रभु गोविलिये शरणागत

रा॰ दे॰

न श्राप। हरस्यामके वरागासीमयघि श्लनक
रि निज धाम सिधाई॥ राग देव गाँधार ताल। ४।
कौन मेरे आंगन के जगायो। जगामग जोति
वदनकी नाई मपनौ सोजभयो। होंद्रथिम
लि भौंन हानि सजनी लेन गई जमथ्योनी॥
कमल नैनकी नाई विनयो वरु मूरतिमैं जानी

54

५४

करनहि चलत देहगति याकी वक्रता लेदमै पा
यो। परमानंद प्रभु चरण शरण गहि रहनी कि
रद्द आयो॥ रागदेवगांधार नाला ५॥ नंदके
लाल हर्‍यो मनमोर। द्वै छंपनै मोतिन लरपो
हनिकोंकंडगरिगपं झरिविभोर। वंकविलोक
निवांक छबीली ॐटिल कमोन भौंहकी कोर॥

रा॰दे॰

कङ्काको मनरहे श्रवण सुनि सरस मधुर मुरलीकी

घोर। ससिविचित्र बदनको करन नरसननैं दृग वि

हंगचकोर। सूरदास प्रभुके मिलिवेकौं ऊनष्री

फलहैं करन चकोर॥ राग देवगांधार चौ

ताल॥४॥ इनि नैंननि सौं मानी हारि। अनुदिन

हैं उपरांत श्रोनकबिवाधो सबलोगनि सौं रारि।

55

५५

तदपि निठुर बलि जात न य प लो दोऊ सुघट सब न
कपाट उघारि । बिगत मस्तान प्रतिहार महाबल
लाज लकुट कर इहन निवारि । श्रीगोपाल कौत
क मन आयौ नवौने बनराति भई बिहारि । हर
दास लोभनि केलीनै स्विरचर सही जगन की गा
रि ।। राग देवगांधार ताल ।४।। सखी ऐसी जागौ नौ

रा॰दे॰

कोऊफिरानाही उडिलागी ब्रजलोन। मेजायमोंमा
वहिमिले मायो भूलिरही अनबोन। नीदरिमेमव
जाइ मदनहै रागवी प्रथम पैब मेधान। नामेंसो
वतिमिर माईसी चपल छुटे छबिबान। म्हारस
कनिजैसें लखमन नन वरवरणकों कछु छे
गान छोन॥ लगाउं मजोवनमूरि मक्रंदहि

50

५६

ॐॉं बम्हेनव श्राग । राग देवशाख मालश्री । बहि
रीखवालिजो वन मद माती । मेरी कूगन मगान
मे लाल रिकतले उकंगल गावति कानी । खी
जनमें खवरी नखेरि मान्ही नान्ही उटति हयकी
देनी । बिलनदेव राजाहि श्रापनें डोलति कहार
मोरनराली । उदि वलीखवालि लाल लागे गोवन

रा॰ २

नवजसुमति लाईवड भोनी। परमानंद श्रोठदे श्रे

चल फिरिश्राई नैननि सुमिकानी॥ रागदेवगा

रवेनाल॥४॥ गावति गोपी मदनमधवानी। जाके

भवन वसत त्रिभुवन पति राजा नंदजसोदारानी

गावत वेदभारती गावत गावत नारदादि मुनि

ज्ञानी॥ गावत शिवकाल गणगंधर्व गोकुल

57

५७

नाथं मह्रानमंजोनी। गावत वनराननगाजस्रा
नेनगावतसेस मरुह सावदास। मनक्रमव
चनश्रीन पद अंबुज अघगात परमानंददास॥
राग देवगांधार माला ५॥ अंगसव मिलि लागेउ
रवेदैन। अपनीपि रवनमा कराहें सखि वदना
कियोकैवैन। लोचन भपरमप उडिवेकों वदन

ग॰ दि॰

कमल मधुलैंन । कौनने मञ्जन लियो सनन को

विना वदन विधुवैंन । नासा सुमनव वचनन हि

हि करन मनन धरन कछु सैंन । पगन चलन इ

क पैंडनी टिकैं नन धुर पमसौं मैंन । अवल्यो

उ ब्रज नाथ निकट तो हिनो लौं इह सवे सहैं

न ॥ सुर निमिष समझोन जगाहि =

58

जगकैं छिनमाउरैन ॥ रागदेषशाखेनाल ॥ ४ ॥
इहबल किनकूं जोनिजडराइ । नमजवले इमश्र
वलनि पैंनै नरकि वहें छिटकाइ । कहियनहे
श्रनिवनेर सकल सिधि जानन श्रवरउपाइ । नौ
जानैं जो श्रवपकैं छिनसकोइ दैनेंजाइ । सरदा
सरसाकी श्रीपनिकैं भावस श्रेनसभाइ । सहिन

रा॰ दे॰

सकेरनि ववन उलटि हसिलीनी केंटलगाइ ॥
वाग देवगावत नाल ।४।। श्यामाने श्रनि श्याम
हि भावे । वैठन उठन वलन गोचारन ने रोई नाम
लैलै गावे । पीने पीत वसन भूषन सजि पीना व
र उरलावे । चंद्रवदनि सनि मोर चंद्रिका सीसम
मकुट वनावे । श्रनि श्यामसुंदरस संभ्रमसिलि

59

श्रेता श्रेता मनुपावे। विक्रुरतनो हि कामिताये
करि जेजे जेज प्रति पावे। नेतोई ध्यान धरे तननि
रखन वासर विरहन लावे। नरवपा मरसमा सिवसि
कसविवेकमें अंतर आवे॥ रागदेवशाखनना ४॥
मोनि मनावो मोनरसी। सकुचसमेन नमावीउठि
आंतरवनकी गैलगही। विधुमाखे निरविम्न

दिकवि लोचन मनि विधु बदन वही। दशमप

मनद रूप आज निज भूमि नाव लेखि कही। ख

रूप करेरा मारेरा रिपु श्री फि दिखावत चतुरल

ही। पनिस्मर सत सी सप रस पर मसकाने नवही·

निन नो हो दिन जान जिते गण काफि निरख मही·

हर शपाम वडौं मिलि विल मझ जानि यवति सवही·

गायदिन हलहरो मेदलाल । रीझि विकायत हो
वसे जहां नवढ लहो ब्रजवाल । सिथिल पान गा
मिउरग मगोहो वसन मरगाजे गात । सोभित हो
तुम रमभरे मानों ब्याह भएजागे रात । नैनल
लोहे हमोहो चितवन चित हरि लेत । कहै भग
वान हितराम राय प्रभु हसन वधाई देत ॥ ११

ग।दे· देवशाखनाल।४।ग्वालिनी हस्तन भगठोनेहु।द
धिभाजन सिर पर धरैं नाहि कहति गोपाल हि लेहु।
ब्रजवीथीनि ब्रज भरगली सेजंहातंहा हरिनाम।
सम्नजाई सम्भुजैन हीना हि सिर देविय कोभोम·
लजाल हरिने मिनी हीगर जनगहिरी थाव।उह
फूलति परमिननकी नाहि नवनन लाई वार॥

61

६२

मरितानि कटत उगाके दीने हल विदारि । नाम
मिटो मरि नाम भई अब को मनि वारे वारि । दीपक
मे मंदिर जैसे बाहर लखे न कोय । तिन पवमत
प्रज्वलित भई अब तम कहां ते होय । पांनको येजे
वाकही हो मलव बोलतन मंभार । घरनि घरनव
११५ गा उगा मनै वाके विष्करी अमलकलिलार । कौंम

ग़ ३٠

सैनै कासौं कहौं हो कौनै सवनि सकोच। कौनै उ
रणय ग्रणयको ग्रवको उनसकोपोच। विधुभाज
न ग्रोछौरचो हरिसौ भामिध ग्रपार। उलटि म
गनतामैं भई ग्रवकौन निकासनहार। चितउ ग
यो नेदकेहौ सवली मधुर वजाइ॥ जिहिल।
जा जगलाजिये सो लजा गई हेलजाई॥

62

प्रेम मगन भई ग्वालिनी हो सरदा मघभ मेंग-

श्रवण नैन मुख नासिका हो ज्यों केचुकि भ

येग॥ राग देव शाख नाल॥ ४॥ कहा करौं वैकुं

ठहि जाइ। जहां नहीं नंद जहां नहीं जसोदा ज

हां नहीं गोपी ग्वाल नहीं गाइ। जहां नहीं ज

ल जमुना को निर्मल और नहीं कदमन की छा

१।८

३। परमानंद प्रभु चतुर ग्वालिनी ब्रज रंजन जि
मेरी जाइ बलाइ॥ राग देवगांधार ताल॥ ४॥
अद्भुत एक अनूपम बाग। जुगल कमल प
र गज वर क्रीडत तापर सिंह करत अनुराग।
हरि पर सरवर सर पर गिरि वर गिरि पर फू
ले कंज पराग। रुचिर कपोत बसत ता =

63

६३

ऊपरताबर एक श्रमीफल लाग। फलउपरपुहु
प उपर पल्लव तिन्हें रहत शुकपिकमृगगा
ग। खंजन धनुष चंद्रमा ऊपरतिन्हें वसत एक
मणिधर नाग। इन्हें सविरस होत नहिं कव
हुं शोभा छिन न करत नहि त्याग। सूरदास
स्वामिनी रसिकवर नवछिन वारो सिंधुसुता

रा॰ दे॰

ग॥ रागदेवगांधार नाला ४। ललितकथाइक
कहौं लेउ तेतें सर जसमड़ छांड़िदे यारि। सूर
जवंश नृपति दसरथ के भए सुभट सुंदर सु
त च्यारि। तामें वडो राम वे इ राजा जनकसुता
जाकें वरनारि। पंच वटे कौं वले राजन जिमानव
वनमायेंपरधारि। श्रीवैकुं मायापरमीपरविरहत

६४

65

वननाथम अनुहारि। मारअटिल सबल गनम
अतिकानन बसत विचन सबढारि। कपट रू
प रावण सीता कौ लै गयो लंकै सिंधु के पारि॥
जनकी हरन सनन सरज प्रभु चौंकि उठे लयो
धनष संभारि॥ रागदेवशाख नाला।७। सनस
नपक कथा कहें प्यारी। कमल नैन मन आनंद

रा॰दे॰

उपज्यो रसिक शिरोमणि देनहुँकारी। दशरथनंदपतिहूने रघुवंशीतिनकैं प्रकटभए सुनधारी। तिनैमैं राम एक व्रत धारी जनक सुता ताके बर नारी॥ मात वचन मानि राजन ज्योहे भ्राता सहित चले वन चारी। तिन उहि जाइ कनक मृग मारयो राजीव लोचन केलि विहारी॥

65

५५

रावण हरण सीवको कीनो सुनि नेंदनंदननीद
निंवारी । परमानंद प्रभुवा परटन करल कमन
देह जननि भ्रमभारी ॥ राग देवशाखविमाल ॥ ३ ।
अह्रो मेरी प्राण पियारी । भोरहि खेलन कहां थें
सिधारी । कुंम कुम भाल तिलक किनकीनो
किन मृगमद को बिंदा दीनो । छंद । बैराजनम

ग॰ दे॰

गामदृदीयो माथे निरखि ससि संसेप हो। एक
शरद निसिको कला पूरन मान मद दर्प हर्यो।
हेरि मुख हसि कहति जननी अलपवेनी किन
रही। सुत के प्रभ मोहि अबरज रची किन मन
मथमई। नंदमह रावरनी या मोहे। जिनमे राव
दनज फिरि फिरि जोहे। खेलन बोलिन कटैवे हारी॰

66

६६

कछुमनमैं आनंद कीयो भारी । छंद । मनमैं जो

आनंद कीयो भारी निरखिव सुत बिह्वल भई । बा

बाजूको नाम हुलो मोहि हसि गारी दई । पा

टीनो पाटिमें वारि भूषण गोदमें मेवा भरी । हु

रके प्रभु हरषि मनमें विधनासें विनती करी ।

इह सुनि बानकी रति मसि कानी । मैं नंद रानी

ग॰ ६

केजीयकीजानी। मेरीसवहिरूपकीरासी। वे

तो कान्हवनवासी उदासी। छंद॥ कान्हउदासी

वनोवासीरंग फंग इह करंगवनै। कनकमणि

फिणरत्न अमोलिक काच कंचनकोंसनै। ल

लिताविसाखासेंकरोउ किललीननिनसकि

नरही। हरकेअभवनवा हिरजानननिदीनोकहि

67

६७

दिनदस पोव घटक जव कीनी । ऊंवरि ठेकुर ल
दिखाई दीनी । सरकिमणीनन सखिन संभारे ॥
ऊंवरि ठेकर ली भंयंगम कोरि । छंद । कोरिभयंग
मडंसी प्यारी मारदू ठंरो सवे । पंकनैर्द नंदन मेख
मिन ग्राली ठठ विषदाग्यो नठी दवे । मनहारि
कीमोहन उलाप सकल विषदेषननमे ॥

रा॰ दे॰

सूरके प्रभुजोरी अविचलजीयो जगजग मन
बसे। विहसिउटी नवबदन पावाहो। निरखि
मोहन नैन अंचरा मेंभावाहो। गुरिबैठी मनभयो
हुलासा। कीरतिनिगाई अपने पतिपासा। छंद।
अपनेजपतिपैंगाई कीरतिसी निरीखफाइये।
मंत्रकीनो आइको सबसाखी संगलगाइये ॥।

68

हेदावनमैरच्यौ स्वयंवर उछव मंडप छाइयो । सू
रके प्रभु श्याम हूल हरायिका वर पाइयो ॥ वि
यिवत विधि सबकीनी । मंडल भीरके भांवरी दी
नी । विविध कुसुम बरषावै । नहां मानिनि मंगल
गावै ॥ छंद ॥ गावैं जमानिनि मिलिकै मंगलक
हनि कंकन छोरहू । पेमीनही गिरिउचकि ली

रा॰दे॰

नो लाल हरखि मन मोदऊ। क्रो कयो न कछु टेउ रना

इह प्रीति रीति अति मन भई। हरके प्रभ जवति

जन मिलि गारी मन भांवनी दई॥ राग देव षा।

एबनाल।४। जिन व्रत यहि कें देवी हजी। तिन्के

मन अभिलाषन हजी। देवी ने इमतन हो झपनि मेरे।

जो पैं हो य अनगर हमैरे। ऊंट। करि अन गरह वर दियो।

जब बरष भरलौं तप कियो । त्रैलोक से दरपय ब
भूषण पील गुण नाहिन दियो । उबरि बोरि
सिंगारि सवियन कंज चोरी श्रानी । बरष भर
जाका तप कियो सावरी विधनाबानी । मकु
ट सिवि कें मोर बनायो । सोमाथ्य धरि हरि ब्रं
श्रायो । तनसो बोरिह पीनद कुल । जाहि देवि

रा॰ दे॰

बनदामिनि मले। छंद। दामिनी बनछबिको
दिखायें जबनिहारें मुखछबी। छंडल विराज
ने गंड मंडिन नहिन सोभा ससिरवी। याछवि
की उपमा कों नाही सकल है गणां जोही। सा
नों मोर निनैन संगा डोलन सकटकी पर छांही
गोपे स्योने आई। मुरली धनिपठे जबलाई।

नेहे सब मिलि मंगल गाए। बहु बिधि फूलन मे
उपहार ल्याए। छंद। ल्याए जो फूलनि तेज मंडप ब
लिन मैं बेदी रची। बैठे श्री श्यामा स्याम बर त्रैलोक
की शोभा सची। इनको किलगारी कैं ऊलाह
ल उर सकल ब्रजनारी। आई ज्युमी ते दहूँ दिस
नैं देति आनंद भारी। रास मंडल मैं सब भजजो

रा॰ ६

री। हरिहैं सांबल राधाजू गोरी। पाणि गहि ह्रगावि

पिजनबकीनो। मेडल भरि भांवरी दीनी। छेडरी

नोजो भांवरि रास मेडल प्रीति गांठि हृदे पटी ॥

सरद निसि सुन्यो विमल ससि निकट हेंदराञ

भवरी। गाय मीत पनी न सवियनि वेदकवि

मंगाल भनी। इनतेदसनत हषभांनन नयारासमेजी

हरि

मनमनसैंनवगानी। इसफले अनगान अनभांती।
वेदीजननहरिजसगावे। मनवावडवा जियवजावे।
छंद। बाजेसवबाजे सकलनभ सरघ्यांजलिवर
षेही। सनिदिवरव्योम विमांन दीपक जसैंसप
करहरषेंही। सनिसादासहिभयो आनंदहुंजी
मनकी आसा। श्रीनंदनंदन लाल हलहडलहि

रा॰दे॰

नीश्रीराधा॥ रागदेवगाबेताल।५॥ श्रीललि

ताज्के घंजनवधायो। श्रीवृंदावनप्याह्रवायो

प्रालिस्योति पटाई। वेमंगल निधिस्योनेत्नपाई

छेंद। लपाई जम्यातो माजिमनविथनिमेडलीग्र

भनस्वो। वोपिवंदनकारववेदिमव्याहविथिवेली

सवी। मेकेनदेवीएजिललिनारहसिसुनिश्रांनदमरी

72

७२

नवलराधेडलहिनी को हलह्र बरपीयो ह्ररी । दे
वीबह्रभांति प्रजाई । विधना उह्र विधि आनि मि
लाई । सोई राधे जिनि हरि आराधे । प्रेम लक्ष सोई ह्र
रि संगसाधे । छंद । सोपि ह्ररि मंगलग्रललिनार
ह्रसि मंगल गाइयो । विविधजऊ स्मम विचित्र मोर
वि मह्रा मंउप छाइयो । उबरि राधे डलहिनीतन

रा॰ दं॰

स्यामकैंउबटनकियो।सिंगार्‌करिसिरंप्यिमै
रीमकुटमोरहनकैंदियो।करमैंकरजोरिबैठाये
भौंवरिदैदैहसिकेफिराये।नवरसिलललिताद
ईहेवधाई।वैनौफूलीअंगनमाई।छंद।फूलीअं
गनमाइललितारंगभरिअंगअंगरही॥या
आरकोरसरीतिसविरीजानिनहीमोपैकही॰

73

येनि येनि दिन यह रानि येनि येनि येनि निज कु
ल शुभ भवी। येनि येनि नंदकुमार हलह रलहिनी
गयभवी। हलहवेहेनिसपानो। श्रीराधजूकेह
लभानो। छिनपकविलेवनकीजे। ग्रोवरमों
ओरमौंकारहीमे। केद। कियो श्रवराजोरनोमि
लिसवी वारु मोनै कियो। करिदीये जेजगवे

गा॰ टे॰ शोटोजयम ललिताकोहियो ॥ नवलसखीम
नेकक्षविपरबार नैंहों बलिगई । आज प्रबल
महागाकीकक्षुजाजनहीमोपैंकहीई ॥ राग
देवगाविनाल ।७। व्रज हलहकीखचर वो
री । विपना मानों मोवे छोरी । वाकोललित
वदनमनमोहे । अवगाकपोलवमकिवितपोहे ·

७४

ताके लोचन चंचल नीरे । मानोंक्रेनगदीपऊन्ता
रे । ताकोकोननकी छबि प्रसी । कोमकेतनरनी
चंचलजैसी । ताकेदंतनबनीसी हीरा । जीभलाल
न वोंयेमालों वीरा । ताके अहरण अधर अतिदी
से । फूलजेरे जंवहरे हरे हीसे । केदा । फूलजेरे
हृदेमंडीहतरंगंनि अति छबि पाईये । मेरेनंद

रा॰दे॰

नंदन पाणिपनिकी सबरचोरीगाइये। वाके

केस वार सुकुमार मनौं मार बेलि मोतिन मोंही।

मन रिझावन मनहु मोवन मास से फलीज्ञ

ही। वाकी पीठि कौं जिनि डीठि लागौ सिलि

रही मोटी गूंठी। फिल मिले ग्रंनि बिवतापर

मानौं मैंन चढाउठी। वाकी हैक बबरा उनिवाली

75

७५

मनमथ मानो सोवे परि कांफी। वाके केवन
मान वनाए। वरण शरण वेरावलि श्रोण। वा
के चारौं छोर श्रुति जलकैं। हगनि राखन लागेन
ही पलकैं। वाकी केल छबीली छाती। मत्व
मल कोमी पसम सहानी। वाकी वाल विवेक
न मोहे। देखन सबके मन मोहे। वाको नव

गा ८

सिरवरूप सुहायो । मरवमली अरतोन बनायो ॥

केद ॥ मरवमली उरतोन झलमले परनन जटि

नल गोमजी । जीन परम प्रवीन जयामगे मानो

मरवनि कोमजी । असवार नंदकिसोर हलह

चित सब हिनके हरे । हरषि बाई लोंनबारे आरती

जसुमति करे । यनथमयहसुवेषपामबन

७८

६७

प्रभु हगनि प्रति सबे पाइये । मेरे नंदनंदन श्री
गोपति की सुघर बोरी गाइये ॥ राग देवशाख
नाल ॥ ३ ॥ ब्रजति जननी कन्हाइनी प्यारी ॥ क
होइहै भाल तिलक रुचि दीनो किनक च गंथि
मांग सिर वारी । नेह घर निज सुननि करियन
हैं मोसो कयो हमारो भारी । तिल बांवरी मेलि

ग·टे·

गेहकामै करिया कारिदई मोहि सारी। मेरो नाम
बूझि बूझि बाबाको तेरो नाम बूझिदई हमि सगा
री। मोतन चिते चिते फोटा तन कछु सबि जान
न श्रोलप सारी। बोलि लये हम भांन भांवती हमि
हमि बाते बूझिउ लारी। हरदास रमसिध वफो
श्रनिंदपत मनमैं रहे विचारी।। श्रथ जन्मा मंगल

77

66

मैरेषी सोइ उठी फरकत बाहु सुलोचन वाम । हे
रत सगुन सुभ आवपहैं मेरे सुंदर श्याम । छंद ॥
श्याम सुंदर आइकैं रहु साइकैं गैरला इहे । देख ।
लिगन प्रेमसों मन सुखवे सम्हहु बरषाइहैं ॥ श्म
हिंमनडूलसानि धनिहरी प्रेम पुंज बढाइहैं ॥
हृगाा करीहैं मनोरथ सब अंग संगलगाइहैं ।

१।९:

भूषण विविधि रचे अंग अंग प्रति कहे न जाई।
केउ किंकिकसि जोलई श्याम अंग जलके अधिका
ई। छंद। अधिकाइ जलके रंग चूनरी लाल
रंग सुहावनी। पीत लहंगो बन्यो हरि अनत संदे
ह विमन की भावनी। दोऊ जो लोचन अंजि सुह
ह्मि मैनैन सैन बनावनी। चूरी दुजे करपह हरी

78

सुपरम फावं फवावनी । वेनी सुभगा नही सुगं
धैतेल लगाइकै नीकें । सवहि वनाव किये
गातें हानहोय मन पीकें । छंद । पीयके मनहा
रिजेसैं पसीमें तिन मेगाभरी । टीका । वलीव
ऊ परम सुंदर जटित नगा जगमगा करी । वेस
रिकवि रनामा विराजे मनकवनी शुति केटमरी ·

गा॰दे॰ हारहाटक जटितनग सब वलन मोतीयरयरी॰
फूलन सेजरची परम मंडलपयफेन समान।
नकिश रुचिर यपेरगालम सरी मानऊंचंदभो
ना। छंद। चंदभोन समगालमसरी मानौ देत
सोभा अतिघनी। कादर विकाइलगाइसौर
भवऊसे गंयनसौं मनी। ऊरिविधि मनो हर

७१

८५

सोजिवैठी महासभटकेचननतनी। झलसाति
पलकति मनहि मनमैं आइहै त्रिभुवनधनी।
फूलहूराजोधरी अपनैं हाथसँवारिसँवारी।
नवैकिसोररूपवनीमनमथकोटिदेउवलिहा
री। छंद। वलिहारिमनमथकोटिछविपर
और उपमालाजहीं। छिनभवन छिनवाहर

गी. १२.

विलोकति साजसब विपिसाजरी। मसिका
ति मन मन विव मकेकै अद्भुत छवि काजरी।
मंजल मनोरथ करति मन मन आईहै पीयआ
जरी। भागापति आपगाप निरखवित हरी भई उ
ठी हाफी। हदेलगाइ लई आनंद लहरी उमगि
अति बाफी। ७२। बाफे आनंद लहरि बढ़ी बिपि

८०

श्याम सुंदर वसपरी । रति केलि भोग बिलास
सब निसि जागि याके संग करी । जो गाइहे इह
रसिक लीला परम रस आनंद भरी । कहि सूर
ताके सब मनोरथ पूरिहैं सब अघहारी ॥ श्री जमु
नाजी के पद ॥ श्री जमुना करुणा मई बिनती
सुनि लीजे । दासनतें पावन सदा सुमिरत अब

रा॰दे॰ कीजे मेजनननवजलपावनी मनमावकीरलीजे॰

गावन वेदपुराणमैंजमनें स्ववजीजे। भावभ

क वरदेनही मोकोंवरदीजे। श्रीविटल गिरि

धरनके गाउ गुण रसभीजे॥ रागदेवगांध

राल॥ ५॥ श्रीजमुना गोपालहि भावे। जेजमु

नाके दरसन कीनें कोटिजनमके पापनशावे।

दर

जेजनगंगाप्रदमानकरतहैं धर्मराजलेखोन

गनावे। जेजनगंगाजलपानकरतहैं वडेरो

संकटओरनआवे। पद्मपुराणकथासवकु

परथरनीसौं वरांहजसगावे। तेनीरथप्र

गटजगतमें परमानंदप्रसादपावे॥ रागदे

वशाखनाला १॥ श्रीगंगाजीकेपद॥ परमे

गं॰ दे॰

षरीदेवीसुनिवेदपावनदेवीगंगे। वामनचरण
कमलनखरंजितषीतलवारितरंगे। मज्जन
पानकरनजी अंगणी विविधतापदुखभंगे। तीर
थराजप्रयागप्रकटभयोजववनीजमुनावेणी
संगे। भगीरथराजसगरकुलतारनवालमी
कजसगायो। तवप्रतापहरिभक्तप्रेमरस।

जन परमानंद पायो ॥ रागदेवगाधारमाल ॥ ३ ॥

धमी ॥ वानीकसरकी जोति जगमगी आरनी

विटल नाथ विराजे । वेदानाल पखावज आवज

समसरनि सारदा साजे । याछविकी उपमा कहा

कहों कोटिकाम निरखत लाजे । श्रीवल्लभ छे

सप्रताप भरे निते आनंद मंगल गोकुल गाजे ·

रा॰ दे॰

रागदेवगांधार ताल । धा । श्रीवल्लभप्रकषोतमरूप

सुंदरनैन विसाल कमलरंग भावे मृदबोलन

वचन अनूप । कोटिमदन वारों अंग अंगपरभुज

मृणाल अतिसरस स्वरूप । दैवीजीवउधारन प्र

गटे दास शरण लक्ष्मनसुवनभूप ॥ रूपस्वरूप

श्रीविठलराय । वेदविदित स्वरत प्रकषोतम ।

श्रीवल्लभ गृह प्रकटे आय । लटपटी पाग महा
रस भीने श्रुति सुंदर मन सहज सुभाय । श्रीनख
गिरिधरन श्री विट्ठल प्रगट निज महिमा क
हीन जाय ॥ राग देवगंधार नाल ३ । श्रीवल्लभ
सुत परम कृपाल । तेसेई श्रीगिरिधर श्री गो-
विंद बालकृष्ण जू नैन विसाल । महा मोह दोख

१।९६. इहबीजन प्रकट भए छूटदरसनईस । जीव अनेक
कीये कि परनारथ कोमल करचरन परसीस ॥
जाको दरसन सुरनर कौं दुर्लभ शारदागनकौं
सुलभ अपार । जनम मरन भवबंधन छूटे ति
न श्रीमुख देख्यो इकबार । श्रीवल्लभ रघुपति
श्री जदुपति मोहन मूरति श्री घन श्याम ॥

84

२८

जनम गंवान नाय वलिहारी इह सनि नपों निहारो
नाम ॥ रागदेव गाव नाला ३। धनि धनि माता
तें तुलसी वडी। नारायण ले माथे वन्धो। जो को
उन तुलसी की सेवा करै। कोटि पाप छिन में परहरै
जो कोउ तुलसी कूं फेरी देत। सहसै जनम सफ
ल करि लेत। रोत अंगपाप मी तुलसी होय। कोटि

दा॰६

कफल पावैनरसोई। जेघर तुलसी करतनिवास
सोघरसदा कृस्नकोवास। कृस्नदास कहै बारंबार
तुलसीकामहिमा अपारंपार॥ समुदाइ॥ राग
देवगाधे ताल।४॥ जमुनां जलघटभरिचली
वृंदावनिनारि। मारगमैं खेलतमिले घनश्याम
मुरारि। नैननिसौंनैनाजुरे मन रह्यो लुभाइ॥

85

मोहन मूरति जी यवसी पग यहां न जाइ। नव
की प्रीति प्रकट भई यह पहिली भेंट। परमाने
द पसै मिले जैसे गुरवैंट॥ राग देव गाँधार ताल।३
सेंदर प्योटा कोन को सेंदर मल वोनी। भेदवना
यो मवालिनी आयो नैन दोनी। सेंदर भाल नित्त
क दीये सेंदर मम्म कोंनी। सेंदर नैन निहरीली

रा॰ दे॰

यो कमलनिको पांनी। सुंदरतानिहूं लोककोया
ब्रजमैं छांनी। परमानंद जसोमती सब सखि लप
टांनी॥ रागदेवगांधनाल॥४॥ कमलनैनक
मलापती त्रिभुवनके नाथ। एक प्रेमतें सबबने
जो मनसोंयहगाथ। सकललोककी संपदा जो
आगैंधरिये॥ भक्ति विना भावैं नहीं =

86

जोकेटिककरिये। रामकहावनकठिनहोजो
लोबिनराग। परमानंद प्रभ सांवरो पेयनवड
भाग॥२॥ राग देवगांधार॥ आवति भोरभयेकें
नववनतैकहेकेड्ढ श्रमजेकलसमकेसमै। रतिव
संगभीनी सोहे सारी तनजीनी भूषन अट
पटि अंगअंगकछुविटेलखियतनखदेसमैं। ओप

गा॰ ६

मैं ओप भई विरहजनाप गई सब्द चेंदनहीगतनति
लेसमैं। वनभुंज प्रभ गिरिय संगानि सजागी
जवनी शिरोमणि बोघ देसमैं ॥ रागदेवगाव
ताल ॥ ४ ॥ मांग सवराजी तिलक साथे श्रम
रनिरंगआई सगासगानि ॥ चपल नयन श्रा
लसहिजना वनमोंरहभजेगिनिल सल सानि ॥

87

८०

मोनके सोखल छूटे चोलीके बंद टूटे बदनकी जो
ति कछु थवरहि भांति । ऊखनखेरेखवनी किल
कन कोननननी मानऊ कनक चटमानिककोति ।
पलटिपरे पटकरऊ करैाने बोलन बोलकछु ष
ट पटोति । केशऊसमसमसि परनारख एजनबन
लमधरयाति ऊगमगाति । सरनंसमरजोग्यो

रा॰ दे॰

मदन नृपति तैं नारी तैं अधिक फूली अंगन माति
फूल दाम स्यामी लाल गोवर्द्धन धारी संगारनि वि
लास सबै भले कीनो रानी ॥ रागदेव गावे ताल
४ ॥ आई बनि रा॰जी तैं भामिनि बांधी काछ कटि
नटपट फेंटक। विजयो सकल कला गुनानागर
कछु तेरे नैननि मटकेटक। भले नक्षत्र भले

88

सगुणनिमें मनि कमल नयननसोंनै वदे सहेट

क। ऐसी कही अबहीं आवनिहैं आपुन वंसोन

होवसहेटक। डगमग वरणधरनि धरणी नल

गज मद्दवननिवरनि गतिकी लटक। वसन

भुजंग निरखिनि रवेणी भूषन निरखि वसन

मणिहाटक। मोहन लाल गोवर्द्धन धारी करव

रा°३

रकमलगाडीवनहारीलट। कामकेलिशय्या

परनवई कुसदामप्रभ सावनेगनट॥ रागदेव

गावेनाल॥३॥ चारीजणानें सनहे प्यारीनेमोर

नगोपालहिभाई। सकलसिंगारसाजिस्यानय

नी अवसरभलेवेनिवलीआई॥ लहेंगालाल

रुमककी सारी पचरंग सिरश्रोफनीवनाई।

81

८५

मवंरगा उवनन हावेकी बोलीक संभीववरनपिय

रैनरंगाई । मया मदपवलिविव क्रुव जगाविव

क्रुहमनि मान प्रतापमनमाई । उवकानिरह

कनकमणि लेहान निरावेनरुनि पनिरयो

लजाई । कृसदासस्वामी सावसागरनासोंम

रिवननसम झुकजाई । मोहनलाल गोवरधारी

ग॰ ६

90

अपनी जानि हसि कंठ लगाई ।। रागदेवगांधार

ताल ।३। चर्चरी । नैन श्रोन मन को भावनो लाल भाव

तो तेरो । मनही मन मिलि रहि मो हि देखत किये

रति रण केरो । हिलगाइ देम हें की जानिये सभा

ग हरवैनैरो । कृष्णदास निज प्रभु छैल गिरधरण पायो

रसिक स्वभाव केरो ।। रागदेव ।। अनि रसमगी

देखियत हेप्यारी हसति वदति गालमसैंबोल ॥
डगमगि चलति प्रकटदसहि मकरपदनखेस
जत वेचल लोल । गौर अंगमहँ अधिकववनेसवि
कदेवक्रकसमंगपीमनिचोल । पलटिपरेनेजैन
हिमावेरसमैं मगनमानौं मदनकलोल । क्रम
दासस्वामीकंमनजीतिनिमिहलीपिपसवन

रा॰ दे॰

हिंदोल। मोहन लाल गोवर्द्धन धारी देसरव वसंत लीनी मोल ॥ राग देवगान्धार ताल । ३ । कहौं लौं वरनौं तेरे वदन की ज्योति झलक ऊपर वारौं कोटि चंद । श्रवण पालना टेक मोहन मानो रवि ससि जुगल परे मन फंद । उपमा करत न बने कमल की ताक झुक मोहित मोहन छंद ॥

ग्रंथ रागिनी मधुमाधवी संगीत । परमानंदकंदे
सिरी रागमे हर विन मधुर चिन्मकरंद ग्रनंद समान
सम्यक निर्मलेका कलश मद सगरी वेतन न कला
नयना चला । इत्यष्याये । अथ समम ताल ग्रसवारी
श्रीमत करुणा वरस कलोल कला पंचम खीना
ल सवला सकला दरकंपयति ब्रह्मताल । ययप

रा॰म॰ प मगरी गमे मगरी मगरीसा सरिमग सरिगमग

सा पमा । इत्येतरा । अथ श्रामोराः । अमवारी

विपरीत पंचताल । पीमधे रम हेकार श्रीतज सर

ला क्रमता । गीतताल । डुम डुम चटा डुम डुम

चटा घ्यारी गिर गिर चेरा घ्यारी गिर गिर चेरा ।

थमालताः । कनन कनन कन मन मेवः ॥

न विधि मनकी जानी । बालकहै दिये पठै येन बन
कहो हिरानी । जहां तहां बन ढूंढि के फिरि आये ह
रि पास । सखा सबनि बैठारि केहो आपन गये उदा
स । हरिलै बालक बछ ब्रह्म लोकहि पहुंचायो ॥
फिरि आवै जो कान कहूं को उनहिं बनायो ॥ जा
नो यह मनमै नवै विधि लै गयो हराय । प्रभु नव

म० रा०

ह्वी तेहि रंग रूपके ह्वै बालक बच्छ बनाय। तासैं कीने और ब्रह्म हदि नाल उपायो। अपनौं करि ते हि जानि कियो ताको मन भायो। उच्चाटन मारन समर्थ मन हरि कीन्हौं ज्ञान। अनजानैं विधि य ह करी होनयोचे भगवान। उहे बुद्धि उहे प्रकृति उहे पौरुषतन सबके। वहे नाम वहे भेषपेन व

3

ख्रा मिलि रवके । श्याम कहे सब सखिनिको ल्याव
ड़ गोधन फेरि । संध्या को आगम भयो है ब्रज नन
द्देको घेरि । सनन ग्वाल लै धेनु चले ब्रज ह्न्दा
वनतें । कान्ह हिं बालक जानि डरो सब ग्वालहिं
मनतें । मध्य किये लै श्यामको सखो भये व
ड़े पास । बछ धेनु आगे दिये सो आवत करत वि

भ॰रा॰

लास । बाजत वेणु विषान सबै अपने रंग गावत । मु
रली धुनि गोरंभि चलत पग धरि उठावत । मोरमुकु
ट सिर सोहई मनहु वेदकन शीत । आस पास नांव
ने सखा हो विच हरि गावत गीत । देखि हरषि ब्रज
नारि श्याम पर तन मन वारति । एकटक रूप नि
हारि रही मेटति चित आरति । कहा कहैं छवि आ

जकी सात्व मेहिन खुर धरी ॥ मानहु हरन वेदमाहो
अहू रह्यो आहरि गोकुल पठेवे जाय नायक वालक
अपने घर । गोकुल अरु नर नारि मिली अति हीक
रि आदर । प्रेम सहित वे मिलन हैजे उपजाये आज
जसुमति मिलि सुतनसौं कहति हैरैनि करत कि
हिं काज । मैवर आवन कह्यो सखा संगकोउ न

म॰ मा॰

हि आवै । देखत वन प्रति प्रगाम उगावै मोहि उर

पावै । वार वार उर लायके लै वलाय पछिताय ।

कालि इतै नैवेई मवेह्रो त्यावहि गाय वरा । यह सुनि

के हरि हंसि कालिह मेरी जाय वलैया । भूख लगी

मोहि वड़त नरनदी दे कछु मैया । माखन दीनो हा

थपै वर नवलो नमखाइ । नानो जतहै थामको

हो ननक तेलसौं न्हाइ । तवजलसुमनि गहि बीर ब
ली हरि लै अन्हवाये । रोहिनि करि जेवनारि श्याम
बलराम बुलाये । जैंवन अति मति पावही परस
ति माता हेत । जैंय उठे अंचवन लियो हो डुड़े क
र बीरा देत । श्याम उनींदे देखि मान रचि सेज बि
छायो । तापर पौढे लाल अतिहि मन हरष बढायो ।

म॰रा॰

अव मर्दन विधि गर्व हरन करन न लागी वार । सूर
दास प्रभु चरित को पावन कोऊ न पार ॥ रागिनी
मधमाधवी नाल धी३ । विधि मन ही मन सोच पर्यो॰
गोकुल की रचना सब देखत अति जिय माहिं डर्यो॰
मैं विरंचि विरच्यो जग मेरो यह कहि गर्व बढ़ायो॰
ब्रज नर नारि ग्वाल बालक कहि कौने ठाठ रचायो॰

6

वृन्दावन वट मधुवन नरवर नर मोहन सबै बुलायो ।
सखा संग मिलि करत वन भोजि विपिसन भमि उपा
यो । यातें प्रणाम अनिरुद्ध ब्रजराने नरत नहीं उठिया
यो । बालक बच्छ हरे चतुरानन ब्रह्म लोक पठै वा
यो । यह विचारि सब भये आपुही वयसंग प्रकृति
करायो । सूरदास प्रभु गर्व विनासन नव क्रम फेरि

म॰रा॰

बनायो ॥ रागिनी मधमाधवी ताल पी६॥ नव ह
रि हस्यो विधिकोगर्व। वछ बालक लै गयो धरि
नरन कीन्हो सर्व। ब्रह्म लोक दुराय आयो बहुरि न
देखन आय। वछ बालक देखिके मनकरन पछ्या
नाय। जब गयो विधि लोक अपने हाथिकै फिरि
आय। जानि लिय अवतार धरन पधारो। पायनि

याय वहुत मैं अपराध कीन्हौं छमा कीजै नाथ ॥
जानि यह भैनङ्गी कीनी जोरि कर रह्यो माथ । व
छ बालक जानि सन्मुख शरण उकारि । सूर प्र
भके चरण गहि कह्यो निकट गाउ मुरारि ॥ रागि
नी मध माधवी ताल ३ । कौन सकृत इन ब्रज
वासिन को । वदन विरंचि विशेष । श्री हरि जिन

म·रा॰ के हेत । प्रकटे मानुष वेष । ध्रुव । ज्योति रूप जग

धाम जगत गुरु जगत पिता जगदीश । जोग ज

ग जप तप व्रत दुर्लभ सो हरि गोकुल ईश । एक ए

क रोम विराट कोटि सम अनेन कोटि ब्रह्मांड । ता

हि उछंग लिये मात जसोदा अपने भरि भुजदंड ।

जाके उदर लोक त्रई जल थल पंच तत्व चौ खानि ।

सो बालक कै झूलत पलना जसुमति भवन हिंडो

रि । छिति किति विपद करी करुणा मय बलि छ

लि रुपो पनार । देहमी उलंघि सकल नहि सो प्रभु

खेलत नंद दुवार । घनुदिन सुर नर पैव सुधारस

विना मागि सुरधेन । सो नंदि जसुमति को पय पी

वत भक्तन को सावदेन । रवि शशि कोटि कलप ब्र

म॰रा॰

व लोकन विविध नाम कै जाप्य । सो भेजन करलै ह
न कहि कछु भेजति जसुमति माय । दानी भोक्ता
करता हरता विश्वम्भर जग जानि । ताहि लाय
मोखन की चोरी बांधे जसुमति रानि । वेद वेदां
त उपनिषद षटरस ग्रपित भगावे नाहिं । सोहरी
ग्वाल बाल मंडल में हसि हसि जूठनि खाहिं ॥

कमला नायक त्रिभुवन दायक सुख उपजे जिन
के हाथ। कांध कमरिया हाथ लकुटिया विहर
न बछरा साथ। बकी बकासुर शकट तृणाव
र्त अघ धेनुक वृष भास। केस केशी को यह दा
नि दीनी गोवे चरण निवास। भक्त बछल हरि
अंतर जामी रहे सकल भव पूर। मारग रोकि द

म॰रा॰ स्रो हारे पति पतित सिरोमणि सूर ।। रागिनी मय

मायवी लाल ३ । अवरज एक देखोरे भाई । निर्गु

ण ब्रह्म सगुण कै जाई । आदि सनातन हरि अवि

नासी । सदा निरंतर घटघट वासी । पूरन ब्रह्म

पुराण बखान्यो । चतुरानन मैं अंतन जान्यो । गु

ण गण अगम निगम नहिं पावै । ताहि जसोदा

10

गोद खिलावै । एक निरंतर ध्यावै ध्यानी । ब्रह्म
ज्ञान नहै निर्बानी । जप तप संयम ध्यान न आ
वै । सोई नंदके आंगन धावै । लोचन श्रवण न र
सना नासा । नापद पानि न जल परगासा । विश्व
भरण निज नाम कहावै । घर घर गोरस जाय चुरा
वै । शुक सारद सो करहि विचार । नारद से पाव

म॰ म॰ हिं नहिं पार। अवरन वरन सरुप नहिं याहै। सो

गोपिन के वदन निहारै। जरा मरण तें रहै अकाया

मात पिता सुत बंधु न जाया। ज्ञान रुप हिरदे में

बोलै। सो वछरुन के पाछे डोलै। थर जल अग्नि

अनल नभ छाया। पंच तत्व मिलि जगत उपाया

काल डरै जाके डर भारी। सो ऊखल बांध्यो म

रु नारी । माया प्रकट सकल जग मांहे । कारन
करन करै सो सोई । ब्रह्मादिक जाको पार न पावै
सो गोकुल मै गाय चरावै । अंडन रहै सदा जल दाई
परमानंद परम सुखदाई । लोक रचै राखै अनिपा
रै । सो ग्वालनि संग लीला धारै । गुणातीत अ
विगति न जनावै । जस अपार फनि पार न पावै ।

म॰ गी॰

जाकी महिमा कहत न आवै । सो गोपिन निशिवा
सर भावै । जाकी महिमा लखैन कोई । निर्गुण
सगुण धरे वपु होई । चौदह भुवन पलक में टारैं
सो वनकी थिन ऊटी संवारै । चरण कमल निज र
मा पलोवै । चाहत नेक नयन भरि जोवै । अगम
अगोचर लीला धारी । सो राधा वस कुंज विहारी

12

भाग बडे जे सकल ब्रजवासी। जिनके संग रमें अ
विनासी। सूर सुजस कहि कहा बखाने। गोविंद
की गति गोविंद जाने॥ रागिनी सुघमाधवीना॰
ब्रजकी लीला देखि गर्व विधि को गयो। ध्रुव।
त्रिभुवन नायक आनि भये गोकुल गौचारी। ग्वे
लन ग्वालिनि संग रंग आनंद सुखारी। घर घरतें

म॰गा॰ जाके चली मान सरोवर नीर। नंद नंदन के संग
चले हो बालक सखा अहीर। अंजन सकल सं
गाय सखनि के आगे राख्यौ। लाटे मीठे स्वाद स
दै रस लै लै चाख्यौ। रुचि सौं जैवत ग्वाल सब लै
लै अपन खान। भोजन को सब स्वाद लेहो कर
न परस्पर बात। देवन गण गंधर्व सकल सुर

ब्रज के बासी । आश्रम मैं वै कहत हैं सत पई अविनासी
देखि सबै अचिरज भये कह्यो ब्रह्मसौं जाय । जाको
अविनासी कहैं हो सो ग्वालिनि संग खाय । यहि
सुनि ब्रह्मा चल्यो तुरत है दावन आयो । देखि सरो
वर सलिल कमल तेहि मध्य सुहायो । परम सु
५-११. भग जमुना बहै तहाँ बहै त्रिविधं समीर । षट्रुपत

भ॰गा॰

ना द्रुम देखिके होत किन भयो मति धीर । अति रम
णीक कदम्ब छांह रुचि परम सुहाई । राजत मोर
न मध्य अवलि बालक छवि पाई प्रेम मगन है पर
स्पर भोजन करत गोपाल । तौ लगि गोसुत हेरि कै
द्वो प्रभु पठये है ग्वाल । बन उपबन सब ढूंढि स
खो हेरि फिरि आये । चकृत भये अदृष्ट केहुं खो

जन नहिं पाये । सबै सखा बैठे रहे मैं देखौं थौं जा
यँ बच्छ हरन हरि जानि जिय रहे आप गये बहराय·
जब गोविंद गये हरि बालकनि हरयो विधाता ॥
लै रहे नगर में गाय आऊके जैसे नाता । ब्रह्म लोक
वल्लो गयो लै बालक बछरा सेत । प्रभु की ली
ला जानी नहीं विधि कियो गर्व अति अंग । नव बि

भ·ता

न्ता मणि बिनै बिन एक ब्रहि बिचारी । बालक
बछ्रु बनाय रचे वही अनुहारी । करत कुचाह
ल सब गाये ब्रजबर अपने धाय । अति आदर
करि करि लिये हो अपनी अपनी माय । बला
कियो विचार जाय निज गोकुल देखो । करि
हैं सोक सन्ताप नाथ पितु मातहि पेखो । आये

15

तहां विधिना चले चार जब देख्यो आय । संध्यास
में होत कौतूहल जहां तहां उहि गाय । कि य
हु गोकुल और किधौं मेरी भ्रम भूल्यो । यह ग्र
विलासी होंहि जात मेरो भ्रम भूल्यो । अन्तर जा
मी जानि यौं हरे वच्छ लै आय । जगत पितामह
मे भ्रम्यो हो गये लोक फिरि धाय । देख्यो जाय

म·गा

जगाय बाल गोसुत जहां राख्यो । बिधि मन बक्र
न भयो बछरि ब्रजको भूमि लाख्यो । छिन भू न
ल छिन लोकमैं छिन आवै छिन जाय । ऐसैं हि
करत बरष दिन बीते थकित भये बिधिपाय ॥
तब जान्यौं हरि प्रकट ज्ञान चितमें जब आयो ॥
धिग धिग मेरी बुद्धि कमलसों बैर बढायो । लै गो

16

सुन गोपाल शिशु शरण गयोंकि साय । वारिहु म
ख अक्षनि करे अभु हमो मोहि अपराध । अब जान
तेरो करो न महिसौं मैं वरि आई । एमेरे अपराध ह
मऊ त्रिभुवनके राई । ज्यों बालक अपराध मात जन
नी लेति संभारि । शरण गये रावन सदा हो औगु
ण सकल बिसारि । ज्यों खद्योत उडि जाय मांहिकों

म॰रा॰

तिमिरन सावै । दीपक बहुत प्रकाश तरनि सम
कौं करि आवै । मैं ब्रह्मा एक लोककौं ज्यौं गल
रि फलजीव । प्रभु तुम्हरे एक रोम प्रति हो कोटि
ब्रह्म ग्रह शीव । मिथ्या यह संसार और मिथ्या
यह माया । मिथ्या है यह देह कहो क्यौं हरि विस
राया । तुम बिन जानै जीव सब उतपति प्रलय स

17

माहिं । शरण मोहि प्रभु राखिये हो चरण कमल

की छांहिं । कीजे मोहि ब्रज रेणु देहु वृंदावन वासा-

मांगौं यहै प्रसाद और नांही मेरे आसा । जोई भावै

सो करौ लता सलिल द्रुम ग्रेह । ग्वाल बाल को

सरूप करौ हो मनहिं सन्य बन जेह । जो दर्शन नर

नाग अमर सुरपतिहुन पायो । खोजन जुग गये

बीति अंत मोहन दिखायो । यह ब्रज पारस नित्य
है मैं अब समझी आय । वृंदावन रज ह्वै रहो मोहि
ब्रह्मलोक न सुहाय । मांगत बारे बार शेष ग्वाल
नि को पाऊं । आज लियो कछु जानि भल करि उद्र
भराऊं । अब मैं रैनि जु ध्यान यहै रहो जु हट नित खा
य । और विधाता कीजिये होमैं नहि छाडो पाय ।

तब बोले प्रभु आप बचन मेरो अब मानो । और का

हि बिधि करौं तुम हितें कौन सयानो । तुम जाना

कर्म धर्म के तुमने सब संसार । मेरी माया अति

आगम तोहि कोउ न पावै पार । श्री गुरुदेव बानी

करहु न बिलंब अब नेकु न लावहु । ब्रज परिकर्मा

कराइ देहके पाप नसावहु । तरन जाउ बहि लोक

म·रा

को विधि कीनी मनहारि । ब्रह्मा करी अस्तुति व
ले है हरि दीन्हो उर हारि । धनि वछरा धनि बा
ल जिनहि तें दरशन पाये । उरमेरो भयो धन्य
फूल माला पहिराये । धनि जसुमति जिन वसि
किये अविनासी अवतारि । धनि गोपी जिनके
मदन हो मोहन लोन मनारि । मथुरा आदि अ

४१

नारि देह धरि आपन आये । धनि देवै वसुदेव पुत्र
मेरो तुम पाये । जाहि वदन मैं कहा कहे तुम्हरि
महिमा गाई । सहसानन निशि दिन रटे होत न ऊ
न गाई जाई । गायचरावन ग्वालन संग करत
जेहि ध्यान लगायो । ते ब्रज वासिन संग रहत
अति प्रेम बढ़ायो । वृंदावन ब्रजको महत कावैं

म॰गा॰ बरन्यौ जाय। बनरानन पद परसिके होगयो लोक

ग्वरवपाय। हरि लीन्हों अवतार पार सारद नहिं पा

वै। मन गुरु कृपा प्रताप कछुक नानै कहि आवै॰

सूरदास कैसे कहे महा पतित अवतार। शेष सहस्र

स मुख जपत सदा हो सोऊ न पावत पार॥ रागि

नी भयमायबी नाल २। माधो जू जो जनसों वि

४०

गावै। सुनि कृपाल करुणामय कबहूँ प्रभु नहि वि
नयावै। जो शिशु जननी जठर अंतरगत शान उपजाय
करै। नऊ ननय नन्नतोषि पोषि वित विना मित अंक
भरै। द्विज रमनादलि डरिवित होन नव नो रिस
कारि करै। तमि छुत छोभ छीर मधु मिश्रित सु
ख समीप संचरै। यद्यपि विटप जरहु तन हेतु क

म० रा०

रि कर ऊदार पकरै । तदपि सुभाव सुशीतल रि
सुनत ताप हरै । यर किश्वेसि हल हलत क्षषी क
रि वैर बीज सवैरै । सो मनभाव सुभाव सहित मनो
गुण शशि वङ्क फरनि फरै । कारन करन अजित
कहि कहि विधि बरणपैरै । यरु कलि काल चलत
नहि मोपैं सूर शरणाहि यैरै ॥ रागिनी मधमाध

वी नाल २ । माधो मोहि दीजै वृंदावन की रेनु । जिन
चरननि डोलत नंद नंदन दिन प्रति चारत फिरत धे
नु । कहा भयो यह देव देह धरि ध्रुव ऊंचो पद पायो
ऐन । सब जीवनि लै उदर मांझ प्रभु महा प्रलय ज
ल करत सैन । हम तें धन्य सदा ये लता द्रुम वाल
क वक्ष विषान वेन । सूर श्याम जिनके संग डोलत

म·रा·

हसि बोलत मधि पवन फैंत ॥ रागिनी मधुमाध
वी ताल ३ ॥ ऐसे बसिये ब्रजकी वीथनि । साधु
नि के पनवारे चुनि चुनि उदरजु भरिये सीथनि ॥
पैंडेके सब वृक्ष विराजत छाया परम पुनीतनि ॥
कुंजकुंज प्रति लोटि लोटि रति रज लागो रंगरीतनि
निशि दिन निरखि जसोदा नंदन अरु जमुना जल

पीतनि । परसत सुख होत तन पावन दरशन करत
धनीननि ॥ रागिनी मधमाधवी ताल ३ । धन्य
यहु वृंदावन की रेनु । नंदकिशोर चराई गैयां मु
खहि बजायो बेनु । मदन मोहन को ध्यान धरे जो त्रि
नि सुख पावत चैन । वल्लभ कहें मन वसि न धरी
नन जहें लेत नहि देत । यहां रह्यो जहां जहं जनि पा

म॰ रा॰

वड ब्रजवासी के पेन। सूरदास स्वांको सरवरि न

हिं कलप हल सुर येन ॥ रागिनी मधमाधवी ना

ल ३। आज जसोधा जाय कन्हैया महा डुष्ट एक मा

ह्यौ। पन्नग रूप मिलि शिशु गोसुत यहि सब सा

थ उवाह्यौ। गिरिकंदरा समान भयो वड वडो

मुख वदन पसाह्यौ। निदरि गोपाल पैठि सुख

23

भीतर खेड खेड करि डारौ । जाके बल हम गनत न
न काहू सकल भुवन लग वारौ । जीते सबै सु
र हम आगे हारि कबहूं नहि हारौ । बरष गये स
व करत महरि सों अबहि अगासुर मारौ । सूरदा
स प्रभु की लीला को को भलै न पारौ ।। रागिनी
मधमाधवी ताल ३ । गोविंद चलत देखियत नी

के। मध्य गोपाल मंडली विराजत कांधे पछिलिये
छीके। बछरा हंद घेरि आगे करि जन जन पैंठाव
जाये। जनु वन कमल सरोवर तजिके मधुप उनीं
दे आये। वृंदावन प्रवेश अस माखौ बालक जसुम
ति मैंयो। सूरदास यह सुनत जसोदा चिते वदन
सुत हैयो॥ रागिनी मधमाधवी ताल ३। जसु

24

मति हनि हनि बकन भई । मै बरजति वन जात

कन्हैया कांपौं करै दई । कहे करै उपहै मोहन ने

कन तउ दगन । आपु कही तैने सोवाने मनडू बनडू

मैंचान । मेरो कह्यो सुने जो श्रवणनि करनि जसोदा

खीजति । सूर श्याम कह्यो मनहिमै नेहों यह कहि

मन मन रीजति ॥ रागिनी मधमापवी माल ३ ।

म-रा

हरिकी लीला कहत न आवै । कोटि ब्रह्मांड छिन
हि में नाशो छिनही में उपजावै । बालक बछ ब्रह्म
हरि लै गयो ताकौं गर्व न मावै । ऐसो प्रगट्यो वछ ह
नि जसुमति छोकति प्रति समझावै । शिव सन
कादिक अंत न पावै भक्त वछल कहवावै । सूरदास
प्रभु गोकुल में सो बन बन गाय चरावै । रागिनी म

य मायकी नाल २ । अवा मागि आये नंदलाल । ब
ज युवती सुनिके उठि धाई घर घर कहत फिरत स
व ग्वाल । निरखत वदन चकृत भई सुंदरि मनहीं
मन यह करि अनुमान । कहति परस्पर सत्य वात
यह कौन करे इनकी सरिग्रान । येई है रति पति
के मोहन येई है हमरे पति प्राण । सूर श्याम जननी

म·रा· मन मोहन बारबार मांगत कछु खान ॥ रागिनी
मथ माथवी नाल ३ । मांगि लेहु जो भावे प्यारे । ब
हुत भांति मेवा सब मेरे छह रस के प्रकार हैं न्यारे । स
बै जोरि राखति हित नमेरे मैं जानति तब बाति । त
रत मथ्यौ माखन दधि आछो खोहो देउ को आनि
माखन दधि मोहि लागत प्यारो और न भावे मोहि॰

सूर जननि माखन दधि दीनो खेलन हसत सबै जो
हि ॥ रागिनी मध माधवी ताल ३ ॥ दै मैया भंव
रा चकडोरी । जाय लेहु आरे पर राख्यो काल्हि मोलि
लै राखी कोरी । लै आये हंसि श्याम नवनतेरी देखि व
हे रंग रंग बहु डोरी । मैया बिना और को ल्यावै बार
बार हरि करत निहोरी । बोलि लये सब सखा संग

म॰रा॰ के खेलन कान्ह नंदकी पोरी । तैसेई हरि तैसेई व्रज
बालक कर भंवरा चकरिन की जोरी । देखति जन
नि जसोदा यह सुख विहंसति वारवार सुख मोरी ।
सूरदास प्रभु हंसि हंसि खेलत ब्रज वनिता डारति
तृण तोरी ॥ रागिनी मधमाधवी ताल ३ । मेरे
हियरे मांझ लागी मन मोहन लैगये मन चोरि । अब

27

हो यह मारग ह्वै निकसे छबि निरखन लगी गोरि ।
मोर मुकट स्रवननि मनि कुंडल अरु बन माला पीत
पिछोरी । दसन चमक अधरनि अरुनाई देखत प
री ठगोरी । ब्रज करिकन संग खेलत डोलत हाथ
लये फिरत चक डोरि । सूर स्याम चितवत भये मो
तन मगन भई री तन मन लयो अजोरि ॥ रागिनी

म०रा० मध्यमाधवी ताल ३ ।। नवनैं मेरो ज्यो न रहि सकत न
छिन देखैं तिनहीं वह मूरति नयननि मैं नित ल
गोई रहत न । ग्वाल बाल सब संग लये खेलत न मैं क
रि भाव चलत न । अरुझि परयो मेरो मन नवनैं कर
बटकन चकडोरी हलत न । अब मैं कहा करौं मेरी स
जनी सुरति होत नव मदन दहन । सूर प्रणाम मेरो

२४

चित हरि लीनों मकुच छांडि अब मोहिसों कहत ॥
रागिनी मधमाधवी ताल २ । खेलत हरि निकसे
ब्रज खोरि । कटि काछनी पीताम्बर ओढे हाथलि
ये भँवरा चकडोरि । मोर मकुट कुंडल श्रवणनि ब
र दसन दमक दामिनि छबि थोरि । गाये स्याम र
वि तनया के तट अंग लसत चंदन की खोरी । श्री

स·रा·

चकही देखी तहं राधा नयन विशाल भाल दिये रोरि·
नील वसन फरिया कटि पहिरे वेनी पीठि रुरति झ
कझोरि । संग लरिकिनी चली इत आवति दिन
थोरी अति छवि तन गोरि । सूर श्याम देखत ही
रीझे नयननि मिलि सिठगी ठगोरि ॥ रागिनी
मय माधवी ताल ३ । बूझत श्याम कौन तू गोरी

२९

री । कहां रहति काकी है वेटी देखी नहीं कहूं व्रज

खोरी । काहे कों हम व्रज तन आवति खेलत रह

ति आपनी पोरी । सुनति रहति श्रवणनि नंद ढो

टा करत रहत माखन दधि चोरी । हमरो कहा चो

रि हम लैहै खेलनि चलो संग मिलि जोरी । सूरदा

स प्रभु रसिक शिरोमणि वातनि भुरै राधिका भोरी ·

कृ॰ गा॰ रागिनी मधमाधवी ताल ३ ॥ प्रथम सनेह दुहूंनि

मन मान्यौं । नयन नयन बातैं सब कीनी । गुप्त प्री

ति शिशुताप्रगटाम्यौं । खेलन कबहूं हमारे आवहु

नंद सदन ब्रज गांव । द्वारे आय टेरि मोहि लीजो का

न्हा है मो नांव । जौ कहिये घर दूरि तुम्हारे बोलत सु

निये टेर । तुमहि सोंह वृषभान बबाकी प्रात सांझ

एक फेर । सुपे निपट देखियत तम कौ तानै करि
बैन साथ । हर श्याम नागर उत नागरि राधा हू
रि दोऊ मिलि गाय ॥ रागिनी मधमाधवी ताल ३
सैननि मैं नागरि समझाय । खरिक आव दोऊनी
लै यहै मिस छल लाय । गायनको करन जैहैं मो
हिलै नंदराय । बोलि वचन प्रमान कीन्हौं उहैन

म॰रा॰

श्यानंद नाय । कनक बरन सुकुमार सुंदरी सङ्गवि

राजत सखि समुदाय । श्याम प्यारी नयन राखे प्रीति वि

शाल बनाय । गूढ प्रीति न प्रकट कीनी हृदय उ

रेति छिपाय । सूर प्रभु के बचन सुनि सुनि उंच

रि रही लजाय ॥ रागिनी मध्यमाधवी ताल ३

31

राई वृषभान सुता अपने घर । संग सखिन सौं क

रति बली घर को जैहै खेलत इनके संग । बड़ी बेर
भई जमुना आये खोजनि ह्वै है मैया । बचन कह
नि सुनाव हृदय प्रेम डारि मन हरि लियो कन्हैया । मा
ना कह्यो कह्यौ प्यारी कह्यो अबेर लगाई । सूरदास
नव करनि राधिका खेलि देखि ह्यौं आई ॥ रागि
नी मध माधवी नाल २ । नागरि मन गई अरु

म॰ग्रा॰

जाय । अति विरह तन भई । व्याकुल वदन नैंकु
मुरझाय । श्याम सुंदर मदन मोहन मोहनी सी ला
य । किय चंचल कुंवर राधा खान पान भुलाय ॥
कबहुं विहसति कबहुं बिलपति सकुचि रहति
लजाय । मात पित को त्रास मानति भई चिंता बा
य । जननी सों दोहनी मांगति वेगि देरी माय । सूर

35

प्रभुको खेलिक मिलिहों गये मोहि बुलाय ॥ रानि

नी मथमाथवी गोल २ ॥ मोहि दोहनी दैरी मैया-

खेलिक मोऊ अबहीं कै आई अहिर उहिन अपनी स

बैया ॥ ग्वाल उहन न गाय हमारी अपनी उहि

जब लेन । खेलिक मोहि लागै खेलिकामें न आवे

जनि देन । सोवनि ठली जेवरि गाहीमें खेलिक

म·रा॰ गई समझाय । कब देखौं वह मोहन मूरति जिन मन लियो चुराय । देखे जाय तहां हरि नाहीं वहु न भई सुकुमारि । कबहूं इत कबहूं उत डोलति ला गी प्रीति खुमारि । नंद लिये हरि आवत देखे तब पा यो विश्राम । सूरदास प्रभु अंतर्यामी कीन्हो पूरन काम ॥ रागिनी मध माधवी ताल ३ । नंदगाये

33

खेरिक हि झरिलीन्हे । देखीन हो राधिका ठाढी

श्याम बुलाय लई नेहि चीन्हे । महरि कह्यो खेलो

तुम दोऊ हरि कबहू जिनि जैहो । गाननी करन

ग्वाल गैयनि को मोहि नियर नमेरैहो । सुनि बेटी

वृषभान महरकी कान्हहि लिये गविलाय । सूर

श्याम को देखे रैहो मोरै जनि कहुंगाय ॥ रागिनी

म॰रा॰ अथ माधवी ताल २। नंद बबा की बात सुनो हरि
मोहि छांडिजौ कहूं जाउगे ल्याउंगी तुमको धरि
भली भई तुम्हें सौंपि गये मोहि जानन देहौं तुमकौं
बांह तुम्हारे नैंकुन छांड़ूं महर खीझिहै मोकौं ॥
मेरी बांह छोडिदे राधा करत उपरफट बातें ॥
सूर श्याम नागर नागरि सों करहन प्रेम की बातें

34

रागिनी मधमाधवी ताल गीत।। बाननि लई राधेला

य। चलहु जैये विपिन हूंदा कहत श्याम ब्रजराय·

जव जहो नन भेष धारी तहो तमसो पाय। नेककहे

नहिं करो प्रेनर निगम भेद न पाय। नत्र परसि न

न तपनि मेरो काम देहु गंवाय। चनर नागरि हं

११.११. सिरहो मानि वेद वदन नवाय। मदन मोहन भाव

म·रा·

जान्यो गगन मेघ छवाय । श्यामा श्यामा गम ली
ला सर कौं कहै गाय ॥ रागिनी मधमाधवी ता॰ १
गगन गरज घहराय जुरी घटा कारी । पवन झूक
झोर चपला चमकि चहुं ओर सुवन नन छिपै नंद
डरत भारी । कह्यो वृषभानकी कुंवरि सों बोलिके
राधिका कान्ह घर लिये जारी । दोऊ गृह जाइ संग

३५

रागान भयो श्याम रंग कुंवर कर कर राग्यो वृषभा

न वारी । गाये वन वन ओर नवल नंद किशोर न

वल राधा नवल कुंज भारी । अंग अल किन भये

मदन ननमैं गाये हर प्रभु श्याम श्यामा विहारी ।

रागिनी मध माधवी ताल ३ । नयो नेह नयो रे

ह नयो रस नवल कुंवर वृषभान किशोरी । नयो

म॰रा॰ पीताम्बर नई ह्वै नवी नई नई ह्वै दनि भोजनि गोरी ।
नये कुंज अति पुंज नये द्रुम सुभग जमुन जल पव
न हिलोरी । सूरदास प्रभु नव रस विलसत नव
ल राधिका जोवन भोरी ॥ रागिनी मध माधवी
लाल ॐ । नवल गोपाल नवल राधिका नवल प्रे
म रस पागे । अन्तर वन वन विहार दोउ क्रीडत

३८

आपु आपु अनुरागे । शोभित सिथिल वसन मन
मोहन सुखवत श्रमके बागे । मानहु तजी मद
न की ज्वाला बहुरि पजारन लागे । कबहुंक बैठि
प्रेम ध्वज धरि कैं पीक कपोलनि पागे । अतिरस
रासि लुटावत लूटत लालच लाल सुभागे । मा
नहु सुर कल्प द्रुम की साखि लै उनरी फल आगे

४.४.

म·रा·

नहिं लखति रति छविर भामिनी ता सखवैमें दोऊ लोगे ॥ रागिनी मधमाधवी ताल २ । उतार ते है केंटरि तै हार । हरि गर मिलन होत है अंतर यह मन कियो विचार । भुजा वाम पर कर छवि लागत उपमा अन्त न पार । मनहुं कमल दल कमल मध्यतें यह अद्भुत आकार । त्रिवन अंग पर

३७

सार जनु जग बेद करत हिनकार । रसन बसनभ
रि चापि बढ़र श्रति करत रंग विस्तार । गुण साग
र निधि रस सागर निधि मानज स्याव भ्योहार । स्
र श्याम मानो रस रसिके रीझे नंद कुमार ॥ रा
गिनी मय माधवी ताल २ । नवल किशोर नव
ल नागरिया । अपनी भुजा श्याम भुज ऊपर

म॰रा॰ अपनाम भजा अपने उर धरिया । क्रीडा करत तमा

ल तरुण तर अपना मानो अपाम उमगि रस भरिया । मि

लि लपटाय रहे उर उर ज्यौं मरकत मनि कंचन म

नि जरिया । उपमा काहि देउं कोलायक मन म

घ कोटि वारनै करिया । सूरदास बलि बलि

जोरी पर नंद कुंवर वृषभान कुंवरिया ॥ रागिनी

मथ माधवी ताल ३ । आज नंद नंदन रंग भरे । वि
वि्ध लोचन विशाल दोऊके मनही मन चित हरे ।
भामिनि मिले परम सत्त पाये मंगल प्रथम करे ।
करसौं करज कसौ कंचन ज्यौं अंबुज उरज धरे ।
आलिंगन दै अधर पान करि खंजन कंजलरे ।
हठ कर मान कियो भामिनि जब तब गहिपाय

म॰ गी॰

परे। मुकुट मंजरी मकरमाल श्रंग श्रंग मनुरागाभरे

रचना सुभ रची वृंदावन श्रानंद काज करे ॥ रागि

नी मध माधवी ताल ३। हरि हंसि भामिनि उर

लाई। सुरत श्रंत गोपाल रीझे जानि श्रति सुख

दाई। हरिष प्यारी श्रंग भरि भरि पियहि कंठ ला

ई। हाव भाव कटाक्ष लोचन कोक कला सुभाई

३१

देखि बाला अतिहि कोमल नख निरखि सकुचाई
सूर प्रभु रति पति के नायक राधिका समुझाई ॥
रागिनी मधमाधवी ताल ३। श्रीराधा नागरि बर
गाई। नवल गाये नेह मदन कन्हाई। प्रेम मदै राधा
बर पटई बादर जहाँ तहाँ दये उडाई। प्यारी की सा
री आखन लै पीताम्बर राधा ओढाई। ज्यों दामी जल

म॰रा॰ मति हरि ओढ़ि मन यह करति कहा यौं पाई । जननी

नैन न रतन लागि लीनी नवहि श्याम एक उड़ि उपाई॰

सूरदास मनसौं जन मानि कहै पीरि ओढ़नियो कहा

गंवाई ।। रागिनी मध माधवी नाल ३ ।। पीत ओढ़

नी कहा बिसारी । यह तो लाल फिरानकी औरै है

काहूकी सारी । हौं गो धन लै गयो जमुना तट जहां

झूनी पति ह्यारी । और भई सुरभी सब विडरीं सुर
ली भली संभारी । ह्वैं लै भज्यो और काहू की सो लै
गई हमारी । सूरदास प्रभु भली बनाई बलि जसु
मति महतारी ॥ रागिनी मधमाधवी ताल ३ ॥
मैयारी मैं जानत वाको । चीन ओढनिया जो मे
री लै गई लै आवो धरि ताको । हरि की माया कोउ

म॰गा॰

न जानत आंखि मूरिमी टीनी । लाल ढिगानि की

मारी ताको पीत आफनी कीनी । पीतांबर लै ज

नति देखावत लै आन्यों नैरि पाम । सूरमन हि म

न कहति जसोदा ननिक पठा वनि गाम ॥ ॥

रागिनी मथमाथवी ताल ३ ॥ प्यामहि देखि

महरि मुसिकानी । पीतांबर काके ह्वर विसरा्यो

काहूकी फिरा सारी आनी । ओफेनी आनि दि

खाई मोको नहिग्यान की सिखई बुधि हानी ॥

घर लैलै मेरो सुत भीतर बनिये ऐसी सब दिन कीजा

नी । इति अंतर जामी रति नागर जानि लई जननी

छहि बानी । सूर निरखि मारव सउखि भगाने प

हिलीला की यहै मयानी ॥ रागिनी मथमाथवी

म॰ रा॰

ताल ३ । मंदरि गई मद्ध मध्य राय । दोहनी कर
हय लीने जननि देरि बुलाय । प्रेम प्रीन निचोल
हरि को कहे यह लो छिपाय । औरकी और कहति
कछु मान मनहि डराय । कुंवर को कहे डीठि
लागी निरखि के पछिताय । सुर नव वृषभान
घरनी राधिका उरलाय ॥ रागिनी मधमाधवी

माल २ । जननी कहति कहा भयो प्यारी । अबही
खरिक गई नंदनी के आवनहीं भई कौन बिथारी ।
एक बिटिनियां संग हमारी मेरे कारे खाई ताहि तहा
री । मो देखत वह परनि परी धरनि मैं डरपो अप
ने जिय भारी । श्याम बरन एक ढोटा आयो यह न
हि जानति रहत कहां री । कहत सुन्यो नंदको बर

४-११

स-रा

ताते कछु पढ़िके नैननहि बहि जारी । मेरो मनम
नि गाये: वासतें सबनी कौं मोहि लागत भारी । सूर
दास अलि चतुर राधिका यहु कहि समुझाई मह
तारी ॥ रागिनी मध्यमाधवी ताल ञ । केवासौं
कहति वृषभान घरनि नेक नहि चखरहति तोरि
किन कहति बिसति मोहि दहति वनभई हति ॥

43

लरिकनि मनभनि वरनोसी नेंही कोउ निठर वलनि

नम चितै ननकै परनि । वडो कर वर टरी सोपसौ

उववी वातै कहन नीरि लमलि जरनि । लिवीमे

है कौन करता सोन मोई वैरे होन हावी करनि ॥

सना उरलाय नन निरखि पछिमाय उरनिसाई क

रि लाय सर वरनि ॥ रागिनी मधमाधवी ना॰ ७५

म॰रा॰ महर वृषभान के यहँ कुमारी । देव यामी करन

द्वार द्वारे फिरत यह है तीसरे यहँ मारी । भई वर

स मानकी सभ खरी जानकी प्यारी उहं भानकी

वडी भारी । कुंवरि दै अन्तकाय गई नन मुखफाय व

सन पहिराय कञ्चकटनि खोरी । जाइ जनि खेरि

क नन खेलि अपने सदन पर सनम हेमति मन

44

श्याम नारी । सूरप्रभु ध्यान धरि हरषि आनंद भरि

गोप नर खेलि हो कहति नारी ॥ रागिनी मधमा

धवी ताल धी३ । खेलन के मिस कुंवरि राधिका नंद

महरि के आई हो । सकुच सहित मधुरे करि बोली घर

हौ कुंवर कन्हाई हो । सुनत श्याम कोकिल धुनि

बानी निकसे अति अतुराई हो । माता सों कछु क

म॰रा॰

लनकरनरहे रिसउसहो बिसराईहो। मैंप्यारी न-
इनकोशांभूलिवारंवारवनाई। जमनानीरका
लिमैंभल्योवेरिपकरिलेआईहो। अवनोइसो
मोहिसजविनिहेमैंदेसोंहउलाईहो। स्यामपा
ऐसेगुणआगरनागरिवझनविजाईहो॥रा
गिनीमधमाधवीनाल २। कौजानेंहरिकी

बनराई । नयन मैन संभाषन कीन्हो प्यारी की
उर नपकि मिटाई । मनही मन दोउ रीझि मगा
न भए अति आनंद उर मैंन समाई । कर पलव
हरि भाव बनावन एक देदेह बनाई । जननी
हृदय प्रेम उपजायो कहति कान्ह सौं लेहु उ
लाई । सूर स्याम गहि बाहु राधिका ल्याये मह

म॰रा॰

रि विहसि बैठाई ॥ राधिकानी मथ माथ वी नाल॰ देखि सहारि मनही जो सिहानी । बोलि लई बूझ ति नेद रानी कुंवरि कहांनि कथेरे मथ वानी । हू जैसे मोहि नहीं कहूं देखी कौन गांव है तेरो भली करी कान्हहि गहि खोई भल्यो मो सुत मेरो । नय न विसाल वदन अति सुंदर देखत नीकी छोटी॰

हर महरि सविता को बिनवनि भली प्रणाम की
जोटी । रागिनी मधमाधवी ताल ३ । नामक
हो तेरी री प्यारी । बेटी कौन महर की है तू कहि
मो सैं को तेरो महतारी । धन्य कोखि जेहि तो
को राखी धन्य घरी जेहि तू अवतारी । धन्य पि
ता धनि तेरी छवि निरखति हरि की महतारी ॥

म॰रा॰ मै बेटी वृषभान महरकी मैया तुमको जानति।

जमुना तट बहु बेर मिलन भयो तुम नाहिन प

हिचानति। ऐसी कहि बाको मैं जान्यो वह तो ब

ड़ु भरतारि। महर बड़ो लंगार सब दिनको हँस

ति देति मुख गारि। राधा बोलि उठी बाबा कछु

तुमसौ ढीठो कीनो। ऐसे समरथ कब मैं देखे

हैसि प्यारी उरलीनी । महरि कुंवरि सों यह क
हि भावति आंगु करौ तेरी चोटी । सूरदास हर
षि नंदरानी कहति महरि हम जोटी ॥ रागि
नी मथ माथवी नाल २ । जसुमति राधा कुंवरि
सवारति । वडे वार श्रीमन्न शीशाके प्रेम सहि
त लैलै निरुवारति । मांग पारि वेनी हि संवार

म-रा

ति गंरुषी सुंदर आंति । गोरे भाल बिंद बंदन मनो
इंदु अंतर विकांति । सारी सीस नई फरिया लै सुप
ने हाथ बनाई । अंचल सों सब पौंछि अंग सब स्या
मुहि लै परिराई । तिल चोवरी बताशे मेवा दिये
कुंवरि की गोद । सुर प्रणाम राधा तन चितवत ज
सु मति मन मन मोद ॥ रागिनी मथ माधवी ना ३

X8

खेलो जाय श्याम संग राधा। यह सुनि कें वीरहर
ष मन राधा कीन्हों मिटि गई अन्तर बाधा। जननी
निरखि चहूँन रही राधी दम्पति रूप अगाधा। दे
खति भाव उडुनि को सोई जो बिन की अवराधा।
संग खेलन दोउ जगावन लागो सोभा वर्णी उपा
या। मनहु तडित घन इंदु तरनि है बाल करत रस

म॰रा॰ साधा । निरखत विधि भ्रम भूलि परयौ तब मन
मन करत समाधा । सूरदास प्रभु और रच्यौ वि
धि सोच भयो तन दाधा ॥ रागिनी मधमाधवी
ताल ३ । विधि के आन विधि को सोच । निरखि
नत्रु रूप भाल ननया सकल मन कहत पोच । रमा
गौरी उर्वसी रति इंद्र विभौ समेत । सत्य हित म

नि कहा सारंग ऊधै मानहि देत । चरन निरखि निहा
रि नख ब्याधि अजित देख्यो लोकि । चिन शरण महिमा
जु जानत वीर रावन लोकि । महा आनि विरंचि विर
च्यो भक्ति निज अवतार । अबलके बल देखि अथी
न सकल संसार ॥ रागिनी मध माधवी ताल ३ ।
राधे महरीसों कहिबली । आनि खेलत रह्यो प्यारी

स॰ सा॰ श्याम वाम हिलि मिली । बोलि उठे गोपाल राधा
सकुचि जिय कत करति । मैं बुलाऊं नहीं आवति
जननि को कत डरति । मैया जसोदा देखिहै को
करति कितनो छोरु । सुनत हरि की बात प्यारी
रही मुख विहसन जोइ । हँसि चली वृषभान तनया भ
ई बुझत प्रकार । सूर प्रभु चितवैं टरत नहि गई घ

50

रके द्वार ॥ रागिनी मधमाधवी ताल ३ । हमनिज

ननी कहेंा इतनी प्यारी । कौन तेरे भाल तिलक रवि

दीन्हों किन कच गूंथि मांग सिर पारी । खेलन रही

नंदके आंगन जसुमति कह्यो केवरियो आरी । तिल

वांवरि गोद दिखरावति फरियादई फारि नई सारी

५-५. मेरो नाम हरि वावाको तेरो नाम हरि दई हेसि

म॰गा॰ गारी । मोनन विनै विनै फोरा नन कड सविना न

न गोद् एसारी । यह सनि सनि वृषभान सुदिन हु

हजन बान डलारी । सर सनन रस सिंधु बढ्यो ग्र

ति टेपति मन मन यहै विचारी ।। रागिनी सपमा

यबी नाल ।। मेरे श्रागे मरारि जसोदा मैयारी तो

हि गारी दीन्ही । बाकी बान सबै मै जानति वै जैतीमैं

दीन्ही । जोको कहि उनि कह्यो बवाको बढो श्रुन
वृषभान । मै नव कह्यो तयो कछु तमको हेसि ला
गी लपटान । भली करी नेमेरी वेटी लियो आपनो
दाव । जो मोहि कह्यो सबै गुण उनके हंसि हंसि कह
नि सुभाव । फेरि फेरि वृजनि राधा सों सखन हस
नि सबनारि । सूरदास वृषभान घरनि जसुमति को

म॰रा॰ मावति गारि ॥ रागिनी मधमाधवी ताल ॥ क

हन कान्ह जसुमति समझाय । जहां तहां आवे रह

ति हिलोनावा था जिनिलै जाय चुराय । सोऊ सेवा

रै आवन लागी विनै रहति मरली तन आय । इन

ही मैं मेरे प्राण वसतहै तेहै भायेनेक नमाय ॥ या

हि छिपाय कह्यो करि मेरी वलदाऊको जिनिप

तियाइ । सूरदास यह कहति जसोदा को लैहैं

मोहि लगै बलाय ॥ रागिनी मधमाधवी ना० ३

मेरे ललाके षेम खिलौना एसो कोले जैहैरी ।

नेक स्रवनन जो पैहों ताको सो कैसें ब्रज रैहैरी ।

अजहूं गाउ उठायरी मैया मोगे नें कहा दैहरी ।

५१. आवनहीं लै जैहै गाया अनि पाछें पछितैहें हेरी ॥

म·गा

बिनु देखे न कछू कहैगी सो कैसे प्रकटै है री। सू

र दास नव कहति जसोदा बड़री पणाम फिर ऐरे

री ॥ रागिनी मधमाधवी ताल ३ । सैननि हर

षि खिलोना हरिके । जानति देव आपने सुत

की रोवत है भीत लरिके । धरि चौगान बेसगु

रली धरि अकभंबगावक ओरि । प्रेम सहित लै

53

लै यरि गावनि पमव मैर कौरी । अवगनि सन

त अधिक रुचि लागति हरिको वतियां भोरी ॥

सूर श्याम को करति जसोदा हय पिवड़ बलि

तोरी ॥ रागिनी मथमाधवी माल ३ । आजसवा

रे येनडहीं मैं वरे हय मोहि भावैरी । सनि मै

या मैंतो पैपीयो मोहि अधिक लगव आवैरी ॥

म॰रा॰ और धेनको इथ न पीऊं जो करि कोटि बनावै री॰
जननी कहति इथ धौरीको मोको मोह करावैरी॰
नमनै और कौन मोहि प्यारी वारं वारं मनावैरी।
सूर श्याम कोपय धौरीको माता हेतै ले आवैरी॰॥
रागिनी मध माधकी लाल ३। आछो इथ पीव
ऊं मेरे लाल। लालौं लगान वदन नहि परसन दे
5K

कि देखि है जसुदा मात । औरि यहो अबहीं ही
मोहन नम्हरेही हेत बनाई । नंग पीवह मैं नय
नन देखो मेरे कुंवर कन्हाई । हय अकेली थी
री को यह मन को अनि चित कारी । सूर अपार
पै पीवन लागे अनि नातो दियो डारि ॥ रागिनी
मधमाधवी ताल २ । पय पीवत देखन बलराम

म·रा·

नाचे लगत डारि भ्रम दीन्हों दावानलहिं अंचवत
नहि नाम । कबहूं रहत मौन धरि जलमैं कबहूं
फिरत बंधावत दाम । कबहूं अजासुर बदन स
मानै कबहूं अंध्यारे जानत धाम । कबहूं करत
बरुथा सब वैपद कबहूं देहरी उलंघि नजाय
षट्दंस सहस गोपिका बिलसत वृंदावन सि

55

सिग्रो सब साय । यहै जानि अवतार यवन ब्रज ह
र नर भवनि यह भेद न पाय । राजा क्रोरि वेदि नैं
ल्याये तिहूं भवन में विदिन बजाय । एड़ गोपी
एड़ ग्वाल यहै सखा यह लीला कड़ें सजन समा
य । जगाजग ब्रज अवतार लेन हरी अखिलब्र
लोड खेडके नाय्य । यई सेव यही हेदावन यह

म॰रा॰ जमुना यह कुंज विहार । यहै विहार विहारत नि

तही नित यहै हैं जनके प्रति पार । यही है श्रीपति व

ज्ञनायक यही है करता संसार । रोम रोम प्रति ब्रे

सु कोटि रवि भाव हैं भति जस भति कई वार । य

है कंस कई वेर संघाल्यो वल्ल यल्यो कुस्वाप्रवना

व । मेगावन खोल उपाय करतिनै कछुन वार भये

56

वेद कुमार । आदि अंत नहि कोऊ जानत हरता

करता सबके सार । सूरदास प्रभु बाल अवस्था

नरुण छद्रको करै निवार ॥ रागिनी मधमाधवी

ताल ३ । बलि बलि बसित गोकुल राय । दावा

नलको पान कीनहीं पिवत हथ सिराय । सनना

हरि आन सोवे अपनउर लपटाय । करत जन

म॰ना॰

नी हय डारन विकजन कक्कु श्रन खाय । यसो वि
दि खर दोहनी कर परन बांह पिराय । सकट भंजन
श्रमन ऊखजरा कठिन लागत पाय । त्रणा वर्त्ते ग्र
कास नैं पटक्यों सिला पर आय । डरन ललन हि
डोल [illegible] खेरे देन झुलाय । बका सुरकी चोंच
फारी सा खेलि प्रकट दिखाय । कीर पींजर गहन त्रे

गरी लाल लैन भजाय । बिना दीपक सदन सबै क
बडे घर नन पाय । प्रजासर सबै पैट निकसे बा
ल बछ जिवाय । जमल अर्जुन तोरि तारे हदै प्रेम
बढाय । हरन तोरि पलास पलव देह देत सिखा
य । इह विधि बछवाल नव छतनहेत दोरी माय ॥
बरन पेत न मिली तिनको आपदौरे धाय । लिखो

म॰रा॰

काजर नाग डारे श्याम देखि डराय । नथन का
ली नाग फन फन नृत्य ताल बजाय । गोप ना
रि समेत मोहन रच्यो रास बनाय । ब्याह की जब क
हत माता हंसत बदन डराय । कहा बरनैं कोटि
रसना भली बुद्धि उपाय ॥ सूर बाल बिनोद ब
न हत अंग सभाय ॥ इतिश्रीभोगः ॥ ॥

४8

वेमन मीनन नजन अलक अलि अनि सो भनल
पर मकरंद। कमलदास अभ गोवर्द्धन पर अवलि
लेमैं देखे टूटे केतुकि वेद। भिन्न सेन विरहन ते
करीनी अतिनागर हरी मनगयंद॥ राग देवगा
धमाल॥२॥ शोभा वरनीन जाई री माई जो मन वे
जीभ होइ लखे कोरी। नैदराइ की अगुरी लागो गि

रा॰ हे॰

सियपिय बल रामकी जोरी । बडे भाग देखे नैन
न भई जेनिक कहे नेती नेती थोरी । फूलदाम ब
लि वलि चरणन की तनमन फूल गावे नाचे हो
री ॥ रागदेव गांधार ताल । ३ ॥ केवन मणिम
रकत रस टोपी ॥ नेटम्य बनके संगाम सावेब
र अधिक विराजत गोपी । करत विधाता गिरिधर

पियहित सवन भुजा सव वेपी । वदनकांति
कै हानि री भामिनि सवन वेद श्रीलोपी । आप्ता
नाथके बिसवोरनकौ भौंह भजे गानिकोपी ।
क्रस्नदास स्वामी वसकीनै प्रेमपुंजकीकोपी ।
राग देव शाख नाला ३ । कटिमट मोहनि हैम
गिरिदोम । पीनकाक्रुपर प्रथिकवि राजिनम्।

गा॰ ६

रलजावनकोंम। कोहैन मोहनको चितमोहतिच
पल कुटिल भृकोंम भ्रव छिन रटनवेणु कलकू
जिन सुनि रायेनव नोंम। नेरेनील पट ओढिरस
कवरेले नदिवसकेजोंम। कृष्णदास प्रभु गोवर्द्ध
न धर सुभगसीव अभिरोंम ॥ राग देव
गांधार ताल चोताल॥५॥ छैल छबीलो।

लाल रंगीलो देखहि किन कानन नआई। हरषनि
धौन रसिक गिरिधर पिय हौं तो कौं लेन पठाई॥
सघननि कुंजन वल विहसारी विविध लताकु
सुमनि छाई। पिक अलि संगा करत कुलाहल
लय पवन वहे सुखदाई। रतिपति मन वांध्यो
खेलन कैं कमल पत्र ले सेज विछाई। कुसुमदा

गी॰ट॰

सघन सरन सचा निधि जवनि सभा इह कीरति गाई ॥ राग देव साख नाल ।२। सोवत गोविंद से संग निसि जागी सोहै लोचन उनींदे मानौं बंधूका के फूल । सहज हि सुंदर सुजान गोवर्द्धन नाथ मिले सरन के हिंडोल बोलैं लीनी प्रेम झूल ॥ ॥ मदन कला अति रसाल

संगीन कला रनिछनि रूपरासि पसी कैौं ननेरे

समनहल । कूलदाम स्वामिनी मनोज मेवराणि

का बदन जोनि निरखिन भसि सचन चंदमूल

राग देवशाख नाला ॥४॥ पनेरे नन लागीप्यारे

रंगकी ओपसे रंग सुनि सखि काहे कौं डरा

वति । अपने सयान नगननि अवर कौं जे मेने

गा॰ दे॰

से हमोरनैं नयन चुरावति। बोलन हासन सी जब

तिनि महा मे मिन कौं वान नि वारावति। वचके

भेदन जानति नागरि मनकी प्रीति थेरी गिरि तिनस

मजावति॥ मोहन लाल गोवर्द्धन धारी सो

रहसि मिली कोकिल स्वर गावति। कृष्णदास

प्रभु नटवर नागर रसिक शिरोमणि सचिवपि

15

९५

विजावति ॥ राग देवशाखे नालं ३ ॥ ऐसे मेरे मन

भावन मदन गोपाल । खेल मनोहर हेम लतांग

वनि निरखन मन माल । परीशं भदगाय मन्मथ

को धन विछिन धवहि करत धनि पाल । वृंदाव

भभ विहरत स्वपानिरिपि कूजित वेणु रसाल ।

हुलदास धभ रसिक शिरोमणि ब्रेजुजनैनवि

ग॰ दे॰

मान। नवभूषण कव विनधरिवा ख्यो गोवर्द्धन
धरलाल॥ राग देवगांधार माला ३। अरुणोदेश्रा
वनिहे वसन सीस मिसि उर सिवाल चकनसार।
पीन काछनी कटितट बांधें नहि भई मानौं नंद
कुमार। मोरचंद्रिका मुकट धरे सिर जवनि भा
वको बिगन विचार। पियको मुरली अपने

96

ग्रथर पैं करहुजनि मह लोचन ग्रनुसार। ननम
यरसिक लाल गिरिधर मौं देखो निदहे दिसिस
रन विहार हल दास ग्रभ ग्रपनै हपरासवसकि
यो नई हदान उदार॥ राग देवगाधे ताल॥३॥
पिय के श्रीनिकी हलज नावनरी नैरे नव लोचन
मन। ग्रलाकोदय तरमी रहको श्रीजी नन वार

ग-२६

ननकणानिजबल। मिटननझी अभ्यास अधरको
ह्वरनसेजकुजी स्वकंटकल। कुसदास अभुगि
रिसंगमभीजे उरज बिमल हार अमजल ॥ राग
देवशाख नाला।३। नैरेउर मोहनन ह्वनि संदरिपिय
संगमकी अमजल बूंद। कच उपर मंजरी बिरा
जत मनहु अमरन बट दीनी रजि मेंद मारवे

97

६

जे भान जीनति ब्रज वन मोह निरसि कदमन
कलिंद र । कूल रास प्रभ गिरि सभरि वसकि
यो मदन उगान पद वंदि ॥ राग देवशाख ना ३।
हरि भज भामिनि सुभग मयानी । शारद काल
की चरा मरण तें कन गारज लि प्रलमानी । रोप
टईन बरंगराउ पति सीवि धुकन मधुवानी । वि

रा॰दे॰

रहु धवलमन्दाकिन प्रीतम रसिकैराइ सावेदोनी-
हूतयमं प्रतिनिपुनहतिकासरल सुभावहि या
नी। कुलदास प्रभुगिरिधर पियको रवकि केद
पटंनी। रागदेवगाखेताल ॥४॥ नैरवपलन
यन ज्जवा खंजननैं नीके। तापहरन प्रतिविदि
न विभ्रमहूं देखत गान दल लागत फीके॥

14

धण म रे वेन रामे धनि यारे गिरिधर के वर सिमट
सावनी के सेन कूलदास स्थल केतक वमण्
री इल राजति धण नैं पीके ॥ राग देवशाख ॥ २
मेरे वरण किहें धरण । रावे राखे दयाल म
रति रसिक गिरिवर धरण । कामक्रोध जदोव
दाजो कविधि लागो धरण । कृपादृष्टि जिवा

रा॰ ९॰

उनवनशपाम श्रेत्रजवराग । निरगविनखमगा
स्योतिवैभवमदिन श्रेनकराग । हमदासनिते
गेईवतविरहजलनिधिनराग ॥ रागविदेव
गाखमाला ॥२॥ अथ र वेद्र तिलक श्रीरायेकैक
मकोना मह्रो म्हेग मदसविडमानऊषपाममन
लागिरयोशपाममेहदरकोविडकमाइनशपाममविड

९९

रि

सखिनैन डराइ कान पोछत बिब अवजरामह

श्रमजलबिंद । कृलदासप्रभ गिरिधर जानीरी

फिरिद्यो तुंवन सोहन पीकबिंद ॥ रागदेवगं

धनाला३। देखिरी नैननि गिरिवरधर । सहव

रि कहनि डनिय सह चरीसों प्रेम मुदिन प्यारी रा

धावर । भूषणभूषित अंग मनोहर वसनमनोह

गा॰ है॰

रकनककांतिहर। चितवितहरन विषजवनिनि

के सर्वसदेन उदारकमलकर। उपमा कहा कसैं

कोलाइ बरनौं कहा किसोर बैसवर। सरुन श्रेनल

टकन ब्रजभावन कुलदास बडभाग कलपत

रु॥ राग देवगांधार तालनिमावा॥ ३॥ राधा

रंगाभरी नहिबोलति। मोहन मदन गोपाल

100

लालसौं अपनौ जोबन तोलति । चाहति मिलन
प्राणप्यारेकौं मेरोई मनटकटोलति । छाडि
बदन बानरी भामिनि कनरसमसीजककोल
ति । प्रान होन लागयो हसि सजनी अवहीनम
उरी बोलति । कुलदाम अभिगिरिवा घरहिन
सौं रंग नैन मलोलति ॥ रागदेवशाखिमाला ३

रा॰ टे

एक छिराय टेकैं दाढी दषि मध्यनियें सीसलियें

उगारति उरिवानैं कहूति फोट भई हूजो कवहू रिस

रवि निपट निकट किये। वलनि फिरि वलति जा

ति नोंही वलि जानन मन रभोंह किये। क्रम्सदा

स पमुलन रूकिपर मति नैंन श्रोरवैंन श्रोरहि

यें।। रागदेवसाखनाल।।१।। वलीजानि उरगेहूकौ

10

भरि भरि हरि देखें निरखत । कबहूं को रहि मित
राधीके लावणपरि हि सुधारनि कबहूं श्रोफनि
श्रोवत बनाइ बनाइ फिरा फिरा तिन । कुटेरे सो
व सोचि सोचि धरति करनि उगारनि फिरि उगार
नि करनि उगारनि घूटपटानि कछू मलीसो श्रम
नि विन । कुलदास प्रभुके रुपगण मन प्रकलो

मं·रे·

मानैं म्हारजिन सकानि सकानि धकनि हितन ।। राग
देवगांधार ताल ।३। काहे बांधनि नां हिनैं छूटे केस
ससि मावे पर चन धारा छूटी कछुक जवलीउर
देस । अंग अंग पट शोभा कहा कहूं निसि जागि
आई और रही वेस । कुंभनदास प्रभु ओप नै ओप भई
गोवर्द्धन धर मिले ब्रजजनवन रेस ।। राग देवगांधार

10

मोमिन मांग विफरी ससि मावे परमानो नक्कुचश्रा

ये करन रंजा । अंचल फहरान उरपर कों मधुजा ।

विरहाइनैं छूटि सकल कला विमल भई देखन

सावजा । कुंभनदास प्रभु गोवर्द्धन धर श्रयरहया

कीये पान कंठमें लिउ हार भजा ॥ रागदेवगांध

नालाश ॥ नैनो प्रात समभरो देवियन हेरी रसी । रस

रा॰रे॰

नीचोरि नातै आंखिन लागी ग्रह अकेली भामिनि कुंजवसी। चरविरोयनै हसी काऊ जानी नवनकौ दिन रात हीनसी। कुंभनदास गिरिधरकेकंटकी यह जांनति होनैनो गिरीपाई मोनिन मालल सी॥ रागदेवगांधनाल॥२॥ आजवदेखि यान वदन उहडयो प्यारी रंगामसेनैनानेरे +

10³

१०३

रंगभरे। मानहु शरद कमल ऊपर उनमद जुगल

खंजन लरे। रसिक सिरोमणि लाल सुसीनल

कमल कर उरधरे। कुंभनदास कहि कहित न हले

गिरिधर पिय सब उर बिहरे॥ राग देवगंधार तिता

ला॥ काहे तैं काज बिफरी प्यारी कौन बांधहि

अलक। भौंहक मानतैं नरन नारे मानों न लागी

रा॰दे॰

पलक। रतिरस हावकी फूल जनावति मदगयंद
की चाल मलक। कुंभनदास मिली गिरिधर कों
मानों कोटि चंद झलकीक॥ राग देवशाखना॥ ३
जो नीमें आज मिली प्यारे मोने अपनो भाव मोहो
रीकीयो। सकल रैंन रागन रसरंग खेलत पलक
सों पलक न लागन दीयो। कंठ लागी भुजा दे

सिरहानैं रसिक लालको अधर सुधारस पीयो ॐ
मनदास प्रभु गिरिवरधरकौं अंकोंभरि भेंटि उ-
ठायो हियो ॥ राग देवगांधा ॥ ताल ३ ॥ रसमसे नैं-
न नैरे निसिके उनीदे । काहेकौं उर निज उलटी बा-
नै स्यामहरी जो भनीदे । वदन आलसमैं आलसकी
जभायवे अति अलसात वचन कीदे । ॐ मनदा-

रा॰दे॰

सअभिलाषिरियरमिलेनाहिं सकल अंगसेवीरे ॥
रागदेवशावेनाला३। सखीरीजिनिवसरोवर
जाहिं। अपनेरसकौंतजिचकवाकीविछुरिव
लनिसावेचाहिं। सकुचनकमल अकालपाइकै
अलिज्यांजलउरवेदाहि। जैसेसहज अनयहगतिर
हअपराधकहिकासि। यहअद्भुतसमिरव्यो।

105

विधाता सरसतरण अन माहि । कुंभनदास प्रभु गि

रिधर सागर देखत उमगे नाहि ।। रागादेव ठाढे

नाल ॥ ३ ॥ नंदनंदके अंकौते मुरली सुंदर बजनार ह

रनि । नृप राम बिनोदके अंकन अंकन पगा धर

नि धरनि । कनक वलय के कंकन भुजा नि जुगाउ छ

पकरनि । कुंभनदास गिरिधर के माछिन नैन देख

रा॰दे॰

मिवकुमसंद ह्रामसस जागानैनै ङसनि ॥ रागदेव
शारव नालाश नागरसंद कुमार खरली ह्रसनन
जोनी । तितिव रयरके थेकने थ्रवानकलईशपि
कामयोनी । ब्रजहेदसिजननति मडिकीनथ
रकेकनवोनी । क्रेभनदास नमकानी मेदरा
ति थकुनहि थकुन पयानी ॥ रागदेव शारवनाः२

106

१०६

तेरे मनकी उपमाकों देखोमें विचारिकें कोउना

हिन भामिनी। कहा बपुरो केघनकदली कहांके

हरिगजकपोतकेमपिककहां चंद्रमा ओरकहां

नपुरी हे भामिनी। कहा ऊरे राजक वेष ककेकीक

मला आगें श्री देखिये सब वनि कामिनी। मोहन र

सिक गिरिधरन कहत राधा परम भावती नेहें हेकें

रा॰ दै॰

भनदासस्वामिनी ॥ रागदेवगाख नाल ॥ ३ ॥ तोसों मोरसमें कहूहसिकेकह्यो साबीरी नेकरनिमान । इननैंहीकों काहेकों हसनि गोवर्द्धनधारीण्यारे रहव निधान । मेरो कह्यो करि काढि अटपटी मनिरी नजहि अपनो सयान । कुंभनदास स्वामीसों प्यारीनकरिनिधान ॥ रागदेवगाख

107

जोतेतेसों बातनकही पीयतरेतानेकाहेकोरिसानी

भाग नायसोंवीच पारेसोई अयानी। जाविन र।

लोमपरे छिनमासों कौं हसियेमयानी। ऊभन

दास प्रभ गिरि धरन करे सोईकोजियेज्यों रहिये

हटेलपटोनी॥ रागदेवगांधार ताल। ३। हमिगो

पाल पकवन संदेरीतमहि निलनकोवोंहानक

गा॰ ६

रति। बारबार मोसौं कहति रहति है है वाके जीयबो
होत धरति। तुमहीं जपति रहति निसिबासर ओर
बात कछू जीवन धरति। श्याम स्वरूप वंकेटि चित
लाग्यो लोकलाजतें नाहि डरति। होतन चैंन वा
हि एको छिन अति आतुर चित विरहभरति ॥
कुंभनदास प्रभु गोवर्द्धन धर तुम का

108

कारन नव जोबन थारनि ॥ राग देवगांधार ताला ३।
नैरे नैन चंचल बदन कमल पर जनौ जुग खंजन क
रत कलोल । कुंचत अलक मनो रसलै पट चलि आ
ये मधुपति के टोल । कहा कहौं अंग अंग की शोभा
खुभी नषर हसन चारु कपोल । कुंभनदास प्रभु गो
बर्द्धनधर देखत बाढे मनज अमोल ॥ राग देव

रा॰दे॰

षा॰वा॰ना॰ला॰ ३॥ न्हांनकोबोले केखकीकसनें। सनमुख केषिय ऊंगिव ऊसेबेनिनव श्रेगुरीदीनी निवदसनें। लजिन ननकैपिनभैयाई त्तीनें श्रोर बसनें। ऊंभनदास प्रभ गोवर्द्धन धरतनेंही लाल लगेहै हसनें ॥ राग देव षा॰वनाला॰ ३॥ श्रेवलपीक कऊं कऊं लागीनैंननिसरावी करति सबकृटि ॥

१०९

मोहन लाल गोवर्द्धन धारी सर्वसभामिनि लीयो है

लूटि। नैनारसमसे प्रथम और कवि वंदन गायो

गानमें सूक। ऊंभनदास प्रभसों मिली भामिनि

कहनम कनैं सब भई गाति सूक॥ रामदेवशाबे

लाल॥२॥ पीउमेरा जागो वृषभानु दुलारी। प्रेमर्थे

गा आलमजे भागिन प्रति ऊंज मदननैं भवनसिधारी

गा॰दे॰

मारग जात मिली सखी औरें नवहिं सकचित ननद सा
विसारी । कौन स्वामिनी सौं कहे भामिनि नेहि हिमि
ले निसि गिरिवरधारी ॥ राग देव गांधार ताल ।३।
राधा निसि हरि के संग जागी । जमुना पुलिन स
घन कुंजन में पिय संग मिलि मिलि के अनुरा
गी ॥ कुटिल अलक बगरी जु बदन पर दोउ

110

कपोलपीकनिमैंपागी। छीनस्वामिनीउमगि

उमगिकैं गिरिधरलालनिकेउरनिसोलागी॥

रागदेवगांधारताल३। बालकृष्णजागऊमेरेप्या

रे।वैठीसेजकहतिहेजननीवारवारमुखकमल

निहारे। हमोवचनमानोजबहीतनिकन

निकदोऊनैनउघारे। लीयेउठाईअंकभरिनव

गा॰दे॰

हीउदमोदकसौंवदनपखारे। माखनमिश्री श्रोर
मलाई श्रोसोह्य नमलेडूउलारे। विविधभांतिप
कवांनमिठाई आननमेलि अघनपेबारे। खेप
खोरिझगुली पहिराई सिरऊपर चौतनि जबथारे
डोलन अजिर मदिन मन मोहन ब्रजजन श्रोट
भई जनि हारे ॥ रागदेवशाखनाल ॥ २ ॥

11

गोद लीये जननी मुदित मन वाल कमल को कर

ति सिंगार। जग लीलाल जरी पहिराई सिर क

लही धारत नि एक सार। हमली केट जटित नग

मानिक अरु मोहन मोती के हार। बाजू बंद ला

ल भुज राजत जग मगात है परम सुढार। पहुंची

हाथ नि परम विराजत ताकी शोभा को न ही पार॰

रा॰ १

मानो सुदहि सनके फणि ऊपर मणि की जोति भई
उजियार । कटि कौं धनी किंकिन बने छबि पग नेउर
नूपुर झंकार । इत हरन पावत मनि आगन में ब्रज
पति देखि लजानो मार ॥ रागदेव गाव नाल २
बाल छबि कों जसुमती लीयें गोद खिलावे ॥
सुंदर माव छबि निरखि कें मन में सचु पावे ॥

112

बहुकोरे ठेवन करै कडूलाइ लडावे। कबहूंक थे
गरी लाइकै मेद बलन मिलावे। छुटरुन चलन
अलसौं मैया ढिग आवे। लेउ डूंगा जननी नवे
स्तन पान करावे। पीन झगुली पहिराइकै सिर
झूल बनावे। केंट कठुला हसुली वनी को यनी
सुहावे। गृह गृहनैं सब गोपिका देखन को आवे

रा.दे.

अजिर दौरि निगनकरे ब्रजजनसंगयाथावे ॥ रामादे

व धारि नाला ॥ २ ॥ वानक हू एक हिनकी मोसों ।

धारिकरे जिनि हति मन मोहन देवऊकारीक

हि कहि मोसों । सूरज वंश भयो नृप दशरथ तिन

के पुत्र भई हैं चारि । राम भरथ लछमन शत्रुहनो ब

लन गरह आगनके हारि । विश्वामित्र मख रछना

113

॥३

कौशिके मख नारी गउतम की तारी। मिथिल जा
इ शिव धनुष तोरी कै नव मनक सुता माला उर
डारि। करि विवाह वर कौं जब आए भरथ गए मा
तुल के धाम। नृप मन सोचि कह्यो गुरु आगे वे
गहि राज देउ श्रीराम। केकइ वचन पिता किया
सो चले डंडक तापस अनुहारि। लछमन सहित

रा॰ दे॰

मेग बरनाकी ओलत बन निवाप करयारि। पंचव
री विवरन विपके मेग रावणा हरन कीयो तिहि
काल। इनकौ सुनन सुरकी स्वामी वौकि कह्यो
है यनुष उमाल ॥ रागदेवशाख माला ३ ॥ सुनि
सुनपक कथा कस्त्रौ प्यारी। कमल नयन मन
आनंद उपज्यो रशिक शिरो मनि देनडं कारी ॥

115

नगर एक रमनीक अजोध्या वहै मङ्गल जहां अग
म अपारी । बहुत गली अवीव विराजत भांति
भांति सब हाट बजारी । तहां नृपति दशरथ रघु
वंसी जाके नारी तीनि सब कारी । कौशिल्या के
कई सुमित्रा तिनके जनम भये सुत च्यारी । चारि
पुत्र राजा के एक है तिन मे एक राम अवतारी ॥

रा॰ दे॰

जनक धनुष पन कीयो जानकी त्रिभुवनके सब
न्रपति हंकारी राजापुत्र दोउ मिथिलै आये लछम
जनक भवन नई पगुधारी । धनुष तोरि सब मोरि
न्रपतिको जनक सुता लिन नव बरी नारी । परा
श्रेगरा जब पीर न्रपतिके नवकेकई सब मेलि
निवारी । बचन मांगि न्रपमों घर लीनौं रघुपतिके

115

नव के अभिषेक संभारी । मात बचन सुनि तज्यो रा
ज तिनि आज्ञा धरनि सहित बनचारी । उन के जात
पिता मन त्यागो अति व्याकुल करि जीव बिसारी ।
चित्रकूट भरत मिलन बन पगायों बरी दे करी कृ
पारी । जब तिहि हेम कपट मृग मारयो राजिव लोच
न गर्व प्रहारी । रावन हरन कीयो सीता को सुनि

रा॰दे॰

करुणामयनी दीनवारी। हरश्यामनवरंगेनचा
पकोलक्षुमन देइ जननि भ्रम भारी॥ रागादेवगा
रवनाल॥२॥ आजनिकुंज मंजमैं खेलत नवल
किसोर नवनि किसोरी। अति अनुपम अनुरागा
परस्पर अति अभूतभूतलपरजोरी। विद्रुमफटि
कविविधि निरमितवारनवक स्वरपरागनबोरी

कोमलकिसलयसैनस्पेमलना परश्यामलनि
वेसित गौरी। मिथुन ह्रास परि ह्रास पराधनपी
क कपोल कमल पर जोरी। गौर श्याम भुज कल
हमनोहरनीवी वेथनमोहनडोरी। हरिउरस
कर विलोकि ग्रपनपो विभ्रम विकल मोनङ्ग
नभोरी। चित्रकसचाक ग्रलोक्ग्रवोयिन पीय

गी॰ दे॰

ध्रति विंवजनाइनि होरी। नैनिनैनि ववनो मरन
सनि सनि ललिता दिक देखनि डोरि वोरी। छिन
हूनि वेस करन करधूनति श्राय कोप मालावलि
लोरी॥ राग देव शाख नाल॥ १॥ ध्रानिंद्री प्रतन नैरनै
ननलिनरी। श्राल सजन इनरानरगा मरो भपनिसि
जागर मलिन मलिनरी। शिथिल पलकनै उठन

११७

गोकुलकगति विपियो मोहन मग सकत चल
नरी। हिन हरि वेस हेमकलगामिनि संभ्रम देत
भवरिन अलिनरी ॥ रागदेवगाले ताल ३ बनी
गाया मोहनकी जोरी। इंद्रनीलमणि श्याम मनो
हर सातकुंभतन गोरी। भाल विसाल तिलकहरु
रिकांमिनि चिकुर चंद विचोरी। गजनायक

गी·दे·

श्रम बाल गये दनि गनि वृषभान किसोरी । नील

निचोल जवनि मोहन पट पीन उरहन सिरवोरी ।

छिन हरि वे मरसिक रा धा पनि सरनि रंग मैं बोरी

रागदेव शाखे नाल । २ ।। चर्चरी ।। आज नाग

री किसोर भांवती विचित्र जोर कहा कहे अंग

अंग परम माधुरी ।। करत केलि कंठ मेलि

118

१८

वाङ्क देउगेट मेट पार्सि सरसरा मलास्रा मेंटली ज
वी। शपाम संदवी विहारवांसवी सटंगनाव मधुर
वोष मद्रुगादि किंकिनी वुरी। देवति हरि वैसग्रा
लि निनिनी सर्वय वालि वारि फेरी देन प्रोन देउसे
उरी॥ समदेवपावनाला। शावर्वरी। मंजलकु
लकंज देन राया हारि विमदवेसरा कानभजग

रा॰ दे॰

दंवभ्रमरदगामिनी। सांवल तनि कनक प्रेरा विर
वनलि लिपक सेगनीरदमणि नील मध्यल सनि दो
मिनी। अरुनपीनतन वंडकूल अनुपम अवगाग मल
सीर भजुन सीस अनिल मंदगामिनी ॥ किसल
यदल रचित सैन बोलत पिय चाटुवैन मान स
हित गति पद अनकूल कामिनी ॥ ॥ ॥

119

मोहन मन मथन मार परसन ऊधनी बीहार वेप

शुजनैनेति नैति बदनि भामिनी । नरवाहन प्र

भ सकेलि बहु बिधि भर भरति ऊलि सरतिर

सरूप नदी जगत पांविनी ॥ राग देवगा बिला

ला ॥२॥ चर्चरी । बलहि राधिके सुजान तेरे हितस

रव निधान रासरसो सधाम नटक लिटनैहिनी:

त्नमति जुवती समूह राग रंग अति कतूहल बाज
न रससूल मरलिका अनंदिनी । बंसी बटनिकं
ट जहां परम रमण भूमिनहां सकल सावेदवेरे
मलयवायु बदिनी । जानी इषद विकासकान
न अति सेह वासरा कानिसि सरदं मास विमल
चांदिनी । नरवाहन प्रभु निहारि लोचनभरि

गोवनारि नखसिख सौंदर्य कोंमंडखनिकेदि

नी । बिलसय भुजग्रीवमेलि भामिनी खवसिं

धुकेलि नवनिकुंज स्याम केलि जगानवंदिनी ।

राग देवसाखमाला ।३। निरखि सखि विविख

खैंनैन सिरान । रति विपरीती मीन स्यामल पं

र शोभित गोरे गात । लटमैं लट पटमैं पट ब्रह

रा॰ ३

ॐ अरुन नैन चतुर जान । भावै मैं अधर बाढ़ति मैं
हटक वंधे बलि जान । चंद्र वदन सानंद किसोर
चकोर पियनैन पजान । आस स्वामिनी पियसं
ग विहरति मानसी सदै लाल ॥ राग देवगा
ख ताल ॥ ३ ॥ श्याम सुजरी करत युनिको
मल मराल किसोर । सखि सुकमारी महा प्रीति

कठिन कुटिल नव सिव से गनोर। कहें कपो
ल मण्डल संजल प्रति कहें न बनव रसकोर। क
हें बिंबाधर जलधर सम कहें दसन अमारे ओर
कहें उंबर कैा सदय हृदय कहें नव उमपीन कठो
र। कहें निराग सनाऊ कहें टढ बाहनि बेयन
जोर। कहें दीन आधीन कहें नववेक विनवनिव

रा. दे.

रचोर। आसखामिनी रसिक सीनमके नाते क
होसखचोर॥ रागदेवगांधार ताल।३॥ ठाढे दोऊ
कुंज महलके द्वार। राधा मोहन मोहि लागतहैं ने
देखियो नैकु नैंन भरि सोभित अंगसखप्यारे॥ अ
भि अन्तर तोही तन बिन बन३कट कपल कल ग
न नहि लोचन मीन लगे ज्यों गारे॥ ॥

122

श्यामस्वामिनी चितवत ह्री ठुँवत ललित विहसि
उरसि पियलई विरहत गाल्यो रंग ध्यारे ॥ रागदेव
गावे नाल ॥३॥ मोहनकी देही उलटी रची री । नै
ननीर भर बूडत ऊँनै विरह दहन नै जरत बची री ।
भई श्याम नै पीन परति उहि तक हारी धनापन ची
री । हारा यैरब श्रवण स्ननननै धजहून निटरल

रा.दे.

चीरी । चंदन चंद पवन वन पात्र कौ रङ्गखि कौरा

सिर चीरी । नोविन श्रवन नैन शारग मीन कहू भी

नम सभा बिर चीरी । इननैं सवनि उठि चली घलि

संग ढंग सुअंग गान चीरी । व्यास स्वामिनी रसिर सब

रंघत स्वावैमे कीवस चीरी ।। रागदेवगाख ना. १२

ऐसो कुंवरि कहा पियपाई । राधाजू तें नारुसिख

हेदरी प्रवलौं करहोंडराई । काकी नारि कौंन की
वेटी कौंन गाउंनें आई । सुनी न देखी व्रज वृंदाव
न सुधि बुधि हरति पराई । याकौ सुभग सुहागा
भाग अति लागत अति मन भाई । याही के सब
सुकै नम वृषभांन सुता विसराई । यह विनोद
सुनि देखन आई रविकि केठ लपटाई । स्याम सुखो

गा॰ दे॰

मिली विहसि मिली नरो मरम सुधंगान चाई ॥

राग देवशाख नाल ॥२॥ कहैन पैयेहै कोऊ वान·

श्याम काम बस गोरैहि गये राधाके मेगान । जै

सोई ध्यान धरे हो नै सोई भय ग्रथ परगांउ अजान । न

रविसिख श्रेग श्रनेगमो ह्रियन देखिन नैन सिराण ।

वज्रगुन रूप न नौ ऊमें मवि फुल जैन सम काल·

124

गजमरालगति निरखत मोहत हैं मनमिज सं
कान। अपनी जो रिहि भैंटो चाहत ललिता दि
की बलि जात। मैंडी रसमें विरस कियो अब को
न काज पछिताति। कंठ बाहु धरि चली अलीके
मनि अनुत सफलाति। व्यास स्वामिनी परस
न मोहन परनि गिरे लपटाति॥ इति राग देव

ग॰ दे॰ ग्रंथसमाप्तम् ॥

124

रागिणी सैंधवी ताल ३ ॥ टपा । चोपरी जोरें दे

परे बन बन ओदे हो मीयां पर नामा रसकदे पखाना

ओ समरू तेरे रुवरू ॥ परीयोंदे चीपरे परी उडन सक

दीयां शोरी देनी टपेन तेरे आवरू ॥ रागिनी सैंध

वी ताल ३ ॥ परीदा नाजक खावडा नाजक न

जर निजारे नैनवे ॥ तेरे मस्ताक होवी शोरी मियां

सैं॰रा॰
२१

शिरतनरीजरीदा रागिनी सैंधवी ताल ३ ॥ खेला
जोरजोर करदा मैंडेनाल दिलभर यार दिल वरीयं ॥
हम दम कोई कीसोदा वारी कोई कीसोदी श्रोर ॥
रागिनी सैंधवी ताल २ ॥ रहेंदी याद मीयां बेबे
परवाही दीनैंदडी ॥ शोरी श्रापेन कौं करदा वरवा
दमीयां ॥ रागिनी सैंधवी ताल २ ॥ नजाराजरि

यांदा यारबे शिाल साडी मानले समज सांई ष्ठन ष्ठन

सकदा मार लटी यांदा यारबे ॥ रागिनी सैंथवी ना

ल २ ॥ सै॰ भांदावे साडे दिलन्है हरम यारदेनि जा

वेदा गमजो ॥ अघवेशोरी डूणा वीनो ग्रम जग्रजेनै

णो हीयो समझो ॥ रागिनी सैंथवी नाल २ ॥

सुड श्वामी मांडडे कौलवे कैला ॥ शोरीमै नेन्ह

मैं॰ रा॰
२२

चोटीयां नसी कवीन रही मेला मेलावे ॥ रागिनी मैंथवी नाल ॥ रमजां नैंठीवे रमानीठा भली लगदी दिलनूं दिलवर ॥ महमहता वसिनारे व स्मा शोरी नेरी शोरव निवाहदे मदके हमजो ॥ रागिनी मैंथवी नाल ॥ नेणोदे नि जारदीयों वेरमजां वेरवमैं भलगईयो ॥ शोरी नेन वेरवरही

ये छोदी जोदी रुजो गमजो ॥ रागिनी सैंधवी ता॰ २
मन भलावे दरदी यारदे नेड़े कों नहीं छोदा जोदा ॥
यार यारांदा की करी पगलो शोरी अजब नेरे दार शाम
वला ॥ रागिनी सैंधवी ताल ८ ॥ ससिदे मन भा
ल छन यारदा मिलनासैं मीयां शोरी मीयां ॥ शोरी
मेरी तेरी मिलन गानी मन लाय छनियारदा मिलना॰

सैं० रा०
२३

रागिनी सैंधवी नाल ३ ॥ भला मिलादे मैंडे सांवरे नू
विन दीठे मैनू चैनन आंदावे ओखलगी नही छुटदी ॥
रागिनी सैंधवी नाल ३ ॥ फकीरांदा दिल राखणा
राजी जानी यार ॥ होंदा सौदा किसिनेंद प्यारा शोरी
विच वान सांव सवदे शरीरदा ॥ रागिनी सैंधवी ना
ल ३ ॥ चल फिर करदेदी रनिजा प्यारीयां सोणी स

३

जदा ॥ गोरी ईसवीच ग्रोदे जोदे करदे दंपे दार जदा ॥
रागिनी सैंधवी नाल २ ॥ ग्राजदी सानू मानले मरजो
देखा गमतेरा मै तेरी सैां ॥ लोकोंदी वदनामीयां उरम
न गोरीन अपना गम खोदीमैं तेरी सैां ॥ रागिनी सैंध
वी नाल २ ॥ आपि यारा मिलजा किसवेले दी मैरव
डीयां ॥ नकदी राहकूपन्न गोरी नही मिलदा वीरे काला

मैं॰रा॰
२८

रागिनी सैंधवी नाल ३ ॥ करदीवे यादकरदी श्रा
डावे मैनक रहीयां हूपन दरद वालीयां ॥ शोरी श्रावे
न कौं करदा बरबाद मीयां ॥ रागिनी सैंधवी ना॰ ३
कौं रुठड़ा जांदा वेहांवे राजी रहणा मिलजा मैनू न
कसीर साडी माफकरी राजी रहणावे ॥ श्रावनडो रे
व जावन फरव शोरी ३ हस्सगलीश्रांदा जांदा मवेरा

वाहणांवे ॥ रागिनी सैंधवी ताल २ ॥ ग्रावोजी म्र

जा जान मांडे डेरे ग्राजावां कम ज्वान ॥ घोरीं देशार

दार परीयां करेदीयां मिजमानी कोई ढपेदी स्वनली

ज्योतोन ॥ रागिनी सैंधवी ताल २ ॥ दिललगा

वहेंदा यारनज विनकमला इस्कविच ग्रपना हेरफे

र ॥ मदके कीतीजीर ग्रसाउरी उथे हम दम जिथे

सैं॰रा॰
२५

नम आवी दिलवर चलफिर ॥ रागिनी सैंधवी ता-
भोदानी जरीवे जोवन दा सोईमें मोनैंडे वेषन कार
ण झंण कमला ॥ नेहलगा करन कीन जोदा सदा
रंगीले मिल गए पीतम प्यारे झंण कमला ॥ रागि
नी सैंधवी ताल ३ ॥ हरदम आंदा जांदा दम जव
ने करेंदा आदम ॥ खुडदी तादममें आनकर अद

मन चंचल नहीं यां भूलना अवरवन ॥ रागिनी मैं
धवी नाल २ ॥ हरदम रबा ध्यान करदे सीधे पैंडेयों
नाहीं विसरदे ॥ हस्ती मस्ती मैं भूलन चंचल हस सब
का वीरष दिल पर उरदे ॥ रागिनी मैं धवी नाल २
नैंडे विरह देमारे हरदम भरदे आहदे नारे ॥ अमनम
न हर्बुवांदा देवेना वन अंदी चंचल नैन जिनेंदे कारे

सैं॰ रा॰
२८

रागिनी सैंधवी नाल ३ ॥ मनदो डुबदे मैंडे दिलनूं खनदे वेदरदो महे खुबायार ॥ नाहक जिंदड़ी की स नावी वेंचल आशाकनु पलकलदो ॥ रागिनी सैंध वी नाल ३ ॥ निजारा राजरा आवे घलोजा जान किसेवेले दी राहन कैदियां वे ॥ दिल वसैंदा मस्ताक वेखणा दा मैंडे नाजक मावड़े दे वेंचल छदड़े जोदा ॥

6

रागिनी सैंधवी ताल ३ ॥ तुज बिन रैण नहीं कटदी
पल पल श्रोंखि उघटदी ॥ नजर मिला वेवल वटवे
ट कदी ॥ रागिनी सैंधवी ताल ३ ॥ वेषणान जींद भ
टकदी के हिरकरांयीं माहीडा ॥ जायक हो वेवल दे
नाल कोई याद नमाडी श्रान श्रान षटकदी ॥ रागि
नी सैंधवी ताल ३ ॥ दमके दम मह मान श्रादम देवी

सै॰ रा॰
२८

ब दम जान मीयां दमके ॥ क्या दम का भरोसा हैव

कोलै सो हाद मैं ऊछहे हरे कद मैं ऊछ है बेवल कीसी

जिंदगी परमान ॥ [illegible] रागिनी सैंधवी नाल ३ ॥

कीवी विरनेपै गुमान घड़ी जांदी एक पल वीव जान॰

गुजरगई गुजरगई गुजरान नेंदे बेवल क्या खेड़ा क्या

मैं दोन ॥ कोई शोरी नूं नो मिल दा नाहीं आह्रे म्हा खेड़ा

वाग वहार माहीडा ॥ रागिनी सैंधवी ताल २ ॥ मा
हीडा वाल मयांएगावे मईये साडी जानी नहीं नेह लगाए
ही सार ॥ कयोसेरी ने मिलदा नाही आये मखेडा वाग
वहार ॥ वेपरवाही ना करना नवींदे गरीवा नें देनो
आगे की होएगा ॥ रागिनी सैंधवी ताल २ ॥ ला
म लगाई वे लाल लडके लटीयांउ की समझ समझ

सैं॰ रा॰
२८

शोरी छुटदा नाहीं विरहदाद लाई ॥ रागिनी सैंथ
वी नाल ३ ॥ जानीदा मिलणा वेपारेदा मिलणा वे
मीयो मैन दम गनीमत हो जांदा ॥ आजांदे जुरवम्ब
ल जांदे शोरीने हलणा सब कांदा ॥ रागिनी सैंथ
वी नाल २ ॥ गुजारा दमदा दमदे नाल किसी नवे
हो जांवे गुजारा ॥ अमरदा की मरदा शोरी नवी ना

8

कीं करदा सोच विचारा ॥ रागिनी सैंथवी नाल ३
मिरजा खेलावे मोयां नैनोलीनी मैंडी जोखवरां ॥ भ
लाहो यार व नैन आमिली नैनोली मैंडी जोर वीजवरां
रागिनी सैंथवी नाल ३ ॥ मैनो चाकर चाकरांदा
जी रहणा रावण राजीका ममेरा ॥ गोरी हो राम
हम मेरा मैं कीकरां नेरी दौलत कुछ पाकर ॥ रागि

सैं॰रा॰
२५

नी सैंधवी नाल ८ ॥ होनैणा वालेसीयो संगावला
ई ॥ शोरीसैनोरुकी विरहदीयाग ॥ रागिनी सैंध
वी नाल २ ॥ कैंगाकुफ्का यारवो मीयां नकसीर साडी
माफ करी राजी रखणा सैन ॥ खुसरंग शोरीयार
साडाहोवे नाहकदी गलां सिरपर नधरी ॥ ॥
रागिनी सैंधवी नाल २ ॥ शोजदीदे जादै नैना सह

१

र चलोंदे नीर नजरदे शजरदे पारा वार सीयांदे ॥ नादे
तुफान कमान मवादी घटक मटक सोरी दिल लेजांदा
मरकार ॥ रागिनी सैंधवी ताल २ ॥ याशमानी या
रवे नाजाना कर मोहीमें ननीदा कोनस मालन वा
ला ॥ श्रसोरी टपागा दिल वेला जायार ॥ रागि
नी सैंधवी ताल ३ ॥ सोणावे गल लगाजा फोलण

मैं॰ रा॰ ३॰

10

याद गुमानी ॥ नज परसदा रंग नैं पती अवमल कीती
इन वल वेखनैं ते दरस बिना वेगादी मिजमानी ॥
रागिनी मैंधवी ताल ३ ॥ मकर हजारीयां वे मेनोर
वडा फेदी ॥ याद वागान मिले महबूब साडडा करमें की
ती लख हजारीयां वे मेनो रब ॥ रागिनी मैंधवी ताल ३
वैजा मैडा पार करीवे मांडा सांईयावे ॥ गहरी वे नदी वा

१॰

रीयालवे अराण सोणा आनपडी मऊ यारीयांवे ॥ रा

गिनी मैंपवी नाल २ ॥ नैडी आन भोडीवे मैनेरी मा

ही वाले यारमैन ॥ जेंव सीयालेदी हीरसियाली हमद

म दिलवरदा नीयां मान्नुने ॥ रागिनी मैंपवी नाल २

कौन खेडा दरगा जडेवेखो सश्यो हालनी ॥ असी

आईनांडेवेखेण कारण अदारंगदी गलो मानले ॥

सैं·रा·
३१

रागिनी सैंधवी नाल २ ॥ श्रोखी माडी खटक दीवे
घटकी फोलगाटे नाल ॥ यारांडख देने ना देनि जारे
सजन नाल माडी खटक दीवे ॥ खखगाऊदा शोरी
भूलदावी नाहीं श्राईयां मैं नावन हजारयों होर भट
कदी ॥ रागिनी सैंधवी नाल २ ॥ मैनैन श्रोखेदी
वेसांई मैडा वालीवे ॥ घोलत्र माई जिंद सदके कीनी

नेज निजारां मैं नाकदी साई मैडावा ।। रागिनी सैंधवी
नाल २ ।। थारां वाला नारणा जी पीर मेरा ।। देवी घरा
द मैं रीवे मसकल करी असान आमरा रवनेरा ।। रा
गिनी सैंधवी नाल ३ ।। मिलजा ढोला वैन हानी
यो नैंन लीनी साडी जोरानी रववरां ।। भला ऊडयो
रवनैन्न आवां दिल मिला आशरी आयोनी ।। रागिनी

सैं॰ रा॰
३२

सैंधवी ताल ३ ॥ भला वेदरदी यारवे । यारदा की क
रिए गला शोरी अजब नरव्हदार सम वलावे भ ॥
रागिनी सैंधवी ताल ३ ॥ वेसोरण नैनुलेवो वलाईयां
जीवे मेरा मीयां हावे दोस्त सो उशमन पैमाल शोरी
फकीरां दा साया ॥ रागिणी सैंधवी ताल ३ ॥ श्री
पीयारे मिल जारहे दियां ख्वाकचावण नेरेवे मीयां॰

१२

शोरी मीयो रहंदे हर दम वेवोक नैंडे मिलनदा प्यारा

रागिनी मैंथवी नाल ३ ॥ जाउ जाउ कहंदे मैं नहीं

जानदी । अपने नैनांदे जाउ जानदी शोरी मन्नाक

मन मन मानदी ॥ रागिनी मैंथवी नाल ३ ॥ आवे

न जानन शमानी उमैनो नैडी वेदिहो रहियावे ॥

नेहा लगा कर जिंदन रसैं दियां इननी अरज मेरी मान

मैं॰वा॰
३३

ले गुमानीआ । गले लगानै नू जी नरसो दियो उननी ग्र
रज मेरी मानले गुमानीआ ॥ रागिनी मैं थवी ना॰ २

थिगाना जोर नहीं चलदा नावे जानी यार दे प्रारो । म
न शोरी उरमान चावेदे मिल रहंदे एक दिन आपी

आन मिल जानावे ॥ रागिनी मैं थवी नाल २ ॥

भला जटी जोर जोर मै वारी हो दीयो मन पर चैं हियो

१३

वैनैनी । केवल उथे जिथे महबूबां दा शोणा आदि
यां शोणा टपेदे शोरीदे शोर ॥ रागिनी मैंथवी ना ३
जटी मेवे खलाजा मानू कदी आनके वेहिर रांकेदी
शोरी बहि महोबत पाक ॥ रागिनी मैंथवी नाल ३ ।
या नजारा जटियां दा जोरवेनि जारा खिनवेखे क
लन पड़दी दमदा रजारा ॥ रागिनी मैंथवी ना ३ ॥

सैं· रा·
३४

भोंदा वे मर हूब पियारा वे आया कर हेंदा नेड़ा मुतला
क पाक । दिल लगा रहेंदा यारन दाना मीयों दिल
विच रहेंदा शोरी मर हूवेंदा जम काभा· । रागि
नी सैंथवी नाल ।। विरहे यायार मोड़ावे शोणी
सजदे मिरजा जानवे । लाखपरीयों मस्का करहे
दी मिलनन्दू शोरी देनाल उमरा फाढा प्यारवे ।।

14

१४

रागिनी सैंधवी नाल ८ ॥ फ्रंफियावे जेगल वहार
की करो झगा नजरन न नहीं ध्रांदाग्रमानी उदिल वर·
वेले न्हीर गई थि शोरि रोजेने दिठि उसदि वहारि·
रागिनी सैंधवी नाल ३ ॥ घारिवे नैणादे नाल
मैनो ढगियांवे । अक्क लगा वागि कुटदा विना
ही वे मियां जाहर कि नाई न ख गिवियो ॥ रागिनी

सैं॰ रा॰
३५

सैंधवी नाल ३ ॥ झटके नैन मियां सोना । दिद नि
जोरेदा मेला ठेला शोरी भूल गइयां सब खटके ॥
रागिनी सैंधवी नाल ३ ॥ नजरां वाले नेज नेज रमझ
नजारेदी रामजो । वेख नजारयां दिल भूला भूला
जोदा शोरी मैनो करदीयां परहेज ॥ रागिनी सैंधवी
नाल ३ ॥ नैणा जोरीदा चोरी दावे गमानोडा । यभी

नाही भांवे मान् पर्वत दि सदावे गमानीडा मे नो म्बव

न मोडीदी चोरी दावे ॥ रागिनी सैंधवी ताल ३ ॥ राज

वालम राज़ वदृगा मांडेडेवे । कवकी फिरैदी वारी

वटडीतकैंदी होवे शोक रंगनें क्याकीति ॥ रागिनी

सैंधवी ताल ३ ॥ गलो आनके म्बनावी वेप्यारेदे मि

लनदी ॥ रनिदवददे हादवसां दीयो उरवदाह गमामी

वे ॥ रागिनी सैंधवी नाल ३ ॥ अगीदे खोमरड्यो
सोवलाड़ खोहै वाट मैं । सोहणी सूरत रसभरी अखी
यां सबसखीयां दे वाट मैं । रागिनी सैंधवी नाल ४ ॥
प्यारी लागी वो तिहारी अखीयां वो । अनियारी का
री कजरारी ब्रजमोहन हम लाखीयां वो कमल जरे
गामीन खंजन से केली पलोटन पाखीयां वो ॥ हरि

दयाल सरदार अति पालन दासनके प्रण राषीयो-
मैरेपन गडी लालनकी ध्यान । नीवीन कनक भेग
वलनकी पैंडी वैडीवांन । मोरमुकट अलवेलो फैरें
पीतांबर फहरांन । हरिदयाल प्रभु षोन्नम प्रभुकी
मूर मोही मुस कांन ॥ रागिनी सैंधवी ताल ३
मनमोही मोही वेणीरे वाल डेने । सुरंग पेचावारी

सैं॰ रा॰
३८

अजब बेथा मेरा मोहण वीरे दी अजब बहार नेंदी अज
ब बहार ॥ रागिनी सैंधवी ताल ३ ॥ सैंडी जान सा
न आमिलवे । जोन नाल हजारे दा साथ वंजे मीये र
खले गरीबों दा मान सान आ ॥ रागिनी सैंधवी ता॰ ३
सांई सांई वेलीवे मीयां नैंडी जिंदड़ी दा ॥ जिथेन कद
म धरी उथे ननी कवकीमे डाढी डाढी नैंडे दरसन

१८

मेरा मीयां लैंदी बलाई ।। रागिनी सैंधवी ताल १ ।।

मैनो नैनू चाहदी फिरियाद आउंीयाद आउंीयावे ।

होनिजारा मेरी जान नैऊ भलाल गदान भूलदा ।।

नजर गुजर बनलाक देमेरे सांईयां उठकर मिलवो

रागिनी सैंधवी ताल २ ।। पनरहीलीका सोहै न

रम जिनवा । नन सकुवार मेरे मनहीं लभावै अरेद

मैं॰ गा॰
३८

रस लालची भपनैनवा ॥ गमिनी सैंधवी नाल ॥

बोलदा कौंनहीं वेफोला जागदा कौंनहीं वेफो

ला। नेगा शबद स्तनके वेकरारना आईवे फोला

नैंडे स्हवनदीमे भईद्धटी वोग्गीमेडा मनडा नैंडे नाल

लो भोग्गी ॥ दीलदी छडी नहीं बोलदा वेफोला ॥

ननवेहक मन जामगी वकेम कपीके नैन। पेजो

गावरमाने नहीं खैंलदावे फोला ॥ रागिनी सैंधवी

नाल २ ॥ भला जाने वाले मै नो नैंड़ीलेउगी वला

ई मान् दरसवे खोजा ॥ कवकी मैं टापी वारी नक

टी तेरे जमालन मेरा मीयनै णीन् गरही गरही

लगाजा । रागिनी सैंधवी नाल ८ ॥ घोसो लागो

जी महारो मनडो वालम राज । कोई गुनहारे सोमों

मैं॰रा॰
३५

बोलोकौनराजिदरहुसरहे कौनकाज ॥ रागिनी मैंघवी नाल ३ ॥ मनमोहेली यारे रवावेमे कुकदी डोल्ह आगण उथे सजना विसार नेणनाल ॥ दिल दी विथ्या मैकासे कहूं शोकरंग मानदा नाही वेनो जानदा विहाल आशाकदा जिय्येस ॥ रागिनी मैंघवी नाल ३ ॥ नूमैंडे नेडे आजासोवल प्यारा साडे आगन

१९

१५

फेरा पासो ॥ तुज विना मैन होवन भोदा सोवली सू
रत वेषामी मेडा मोहन प्यारा न दरस देखा मीह मेडे ने
डे ॥ रागिनी सैंधवी ताल ३ ॥ परीमे कैसे कहेरी भरी
मेरा मनडा सोवल डाली ए जायमेके ॥ सोहणी सूरत
माधुरी मूरत साडे दिलमे रहे समायमें ॥ रागिनी
सैंधवी ताल ३ ॥ बांकडाजी हमारो राज छेलडा भल

मैं॰गा॰
४॰

डागी खेडा नीकडा मोडा गाबकयार ॥ कुदके गईयो
भ्रमी चोलड चनी सांवले दे रंगार नीणी मनि साडे
नाल करदानी प्यारवोक ॥ रागिनी मैंथवी नाल ३
मेरा ग्रमानी डाक वीनो मखे वेष लामी दरस देख
लामी ॥ एवार मिलेनो मैं लाखे वारी सोतीनगावे
हीलगामी दरसां दे नाल पामी ॥ रागिनी मैंथवी

२॰

नाल २ ॥ यादकरेंदी रहंदीवे ग्राज्ञानी मैंन करहीयो
मूरे वाले समझन् उरदीवे ॥ सोरी उठदा दिल विच
विरहदा थेवा मैं नोमर दीवे याद ॥ रागिनी सैंथवी
नाल १ ॥ फकीरी ग्राजरम रहणा वेवे फकीरी वे
मेरा नेथाणा महबूबांदा मीयो ॥ दिदनि जारेदा
मेला ठेला शोरी नेंबीनो मायल ख़ूबांदा ॥ रागि

सैं.रा.
५१

नी सैंथवी नाल २ ॥ बोलत्र मोदीयां जोंदीयां मीयां

ड़ण मैनो नोड़े पीन जरो रवे ग्रमानी जोंदीयां ॥ रा

लन सवैं त्रुगलदी मोंनैना मैंनवे महेवलवे रवसा

इयांवेग्रुमानी ॥ रागिनी सैंथवी नाल २ ॥ मिल

कर जाणावे जाणा दिलोंदीठे परवाह रावोंहांसोणा

कपियासा माडे ख्याल शोरी दिल रवोणा ॥ रागि

2

नी सैंधवी ताल ३ ।। जपदीयो नेरा नाम साइयो वे-
नाने वी ईंदावारी वे मानवी देरावे कियो श्रन एन्क
रवे ऊंकरी म्राईयो ।। रागिनी सैंधवी ताल ३ ।। नै
न लगा श्रव कैसे ब्रूटन वडा उव देनरी दैया गइयो
जव लागै नव लगा नन जानै श्रव लागी डरवेदेन सनै
या ।। रागिनी सैंधवी ताल ३ ।। नजारा सोक्वे दाज

सैं-रा-
४२

टीयांदा यारवे । गिरवे माडी मानले समज माईयां
शोरी फेर सटके जोटीयां ॥ रागिनी सैंधवी ना- ३
बिलोचणीयांवे काजी रावणा न्हवे । मैंडी नैंडी
दोस्ती भला जाने नवी यरम्हवे ॥ रागिनी सैंधवी
नाल ३ ॥ मैंकी जानैं नोडी रालोंकी कर उकोया
र मोडडे नजजेहरा मान औंर नदी मरा फूंद फिरस

२५

२२

व आईयलो भलोवे । मैंडा यारनहीं यामनदा पा
रा मैंडडी गलोमैं कीकरां । आपन आवे वारी ना
लिवे भेजे वे मीयां रहें फिरी सबनलां नलोवे ॥
रागिनी सैंधवी ताल ३ ॥ टाली ले वियो बाबा
वोहावेमे जान । वोहवे वो हो चीरे वाले वोहवे
नवोहवे॥ नामें ब्याही नामे मेरी नामे अवीरी ठा

सैं॰ पा॰
४३

सोवेदा छीलेवी ॥ रागिनी सैंधवी नाल २ ॥ जदो
तैंडा वेखणा दुशमन होया ॥ जिदा ओ खेलगी मोडी
जवतै महोवन नाखेलदा नही मैन इस्कदा पेखणा
रागिनी सैंधवी नाल २ ॥ जीथे मोडा रांझण वस
दा वे मैं फूफदी फिरेंदी कोई वना देवे ॥ वेरी मैं डस
दी मीयां रांझण मिलनो मे वारीयां ॥ रागिनी सैंध

वी नाल ३ ॥ छडदे साड्डी वोह मैंनो अपनै वरजावो
भिरजा मैंनोडर गइयां झुण वंदिर वोचि मनकरउे
डा वेखण लोग लग्गा झुण वंदिया झुणानो जामी
झुण साडी घर आमिकेओ ॥ रागिनी सैंथवी ना· ८
मैनो चाकर वाहरा रहण राजी का मन मेरा ॥ श्री
री हाथ दम मेरा मैं कर छाड् उछ नेरी दौलत पार

मैं॰ गा॰
४४

करमैं नोचा ॥ गाफिनी मैंथवी नाल ३ ॥ आमरावै
मैंन्त दमदावे महरम यारदा जीवैंन्हे जमजम शो
वीन जगा विच नहीं नमाजा रनी भलामि ॥ गाफिनी
मैंथवी नाल ३ ॥ जानिकी करदा मेडागावर ॥ वे
खगान मस्ताक नैंडे शोरी रावले मोणी माडी प्रव
क ॥ गाफिनी मैंथवी नाल ॥ याद करदी वेया

२४

करदी यांजावो मैन करही यां शणा शणावेदरदे वा
ला शोरीउठदा दिल विच विरहदा दमामा मैंनो म
रदी फिरयाद करदी ॥ रागिनी सैंधवी नाल १ ॥
मानन छेड मीयां तैंडी कान पईमैंडे दिलवरमैडे।
तैंडे इसकदे कारन वदनामी मैंलीनी पाक नजर
नैन किन सिखलाइयांवे आपना आपनिवेरवे

सैं॰ रा॰
७५

रागिनी सैंधवी नाल ३ ॥ लगादा बागा बहार नैङा

महरवडा मैडी जानदे ॥ सुरख गुलावी नरगिस नैणा

सोवल यारदे ॥ रागिनी सैंधवी नाल ८ ॥ ज्ञार मे

बरोदी शोभा आई बहार सजणादे मुख देषणा ॥

गल फले रंग विरंगादे फलेदे भजन फेंवादे फले

दीवीसा णी बसंत बहार ॥ रागिनी सैंधवी ना॰ ।

जानिवे फकीरांदावे मीयां मन रखणा राजी भोरा
खूव सौदा खूवे नीद प्यारा दिल विच बादशाह शोरी
शाह शरीदा ॥ रागिनी सैंधवी ताल ३ ॥ फकीरी
करणीवे राजी रहणा हरदम दम सोणा ॥ भली
बुरी सब सैंहदे सिर पर इस्क रंग वरदे नाल रंग रे
गणावे ॥ दिशानी यारवे मीयां मैन महर धनदा भ

मैं॰ रा॰
४६

लीयांवे मीयां ॥ भलावे मै छुड़दी नाग मनेरा डंग
देविडेव महेरहीर वादी महरावानी यावे तोडा ॥
रागिनी मैंयवी नाल २ ॥ ग्रान मिलामी मैंडे सो
नैनवे यार ॥ जिस दिन मौला मेड़ावे काजी वीहे
सी मैंडा मीयां पकरकरां फिरयादवे मैंडे यार ॥
रागिनी मैंयवी नाल २ ॥ मैंनो मरदीवे यादकर

y6

२६

दी सोणा सैनो वे दरदां दे नाउ वदी ॥ सोरी उठदी दि
ल विच लहरां इस्कदी विड़ा भरदी ॥ रागिनी सैंथ
वी नाल ३ ॥ कमला वाला वे मेरा वे किन विर मा
या होहे हां वे लोका ॥ जा एक्कोटी मैं अपने रोऊन्
जो आनके मिलामी ॥ रागिनी सैंथवी नाल ३ ॥
मैन् तेंडी आस भोदी वे मैनेरी माहें वालेयार ॥

सैं· रा·
४७

जेगा शियाले यार जेंगा शियालेदी हीर सियानी हम

दम दिलबर दिलबर दानि यारमैनूते- रागिनी सैंथ

वी नाल २ ॥ चिनलगा करकी साल पाया हावे लो

कौं ॥ यारमेरा सोनहीं आया किनइनो बिल माया

हाँवेयाणा मैनो भूली भूली सोणावेपी ॥ रागिनी

सैंथवी नाल २ ॥ नपरंग जोवदावे मांडा दिल दया

27

लीलाते जनि जोरैवदी दीयांने शोरीयार मैनूवसे

कीनामैडा ॥ रागिनी मैंथवी नाल २ ॥ मैंनूप्यारी

नही लगदावे वेसी वाले मैंडायार ॥ नेदमहरदे व

ही दिल वरसा वला ॥ रागिनी मैंथवी नाल २ ॥ सा

डे अटके नैण हारी ॥ लक्खनदा सनल फनल नेही

विसर कठिन पीरकारी ॥ रागिनी मैंथवी नाल २ ॥

सं. रा.
४८

हरिजनके चरनकी जो करे बंदगी ॥ जगतजवाल प्रबल जाल नपत उर कराल का कोह मोह भ्रम विषाद कटे गंदगी ॥ मनमरजंजाल ख्याल वाल सब न खेवरहे काटननहीं वार का मखलीन खंदगी ॥ सजन प्रनकूल मूल प्रेंजस भए हरि प्रसन्न राज त्याग जावे चट फैल फंदगी ॥ भक्तनको खासदा

२८

स करन हरन सबे विलास जमकी नहीं त्रास वा

स घटे मंदगी ॥ लछमन दास तोहिसे त्यावे विश्वास

त्रास भक्त मुक्त पावे गावे प्रेमंदगी ॥ रागिनी मैंथकी

ताल ३ ॥ केसर कौनकी अननीकी ॥ होडपरी ल

लना मैलाले चौंपकची ग्रनजीकी । दोवबदोलना

के आगे कौन ललित कौनफीकी ॥ बनर विहारी

सैं॰रा॰
४९

बिलगिजिन मानौं यारनी ग्रथक ललाकी ॥ रागिनी

सैं ताल ३ ॥ वेकहा जानैं पीर पराई । हेदरस्यामक

मल दललोचन हरि हल धरके भाई । मखमुरली

शिर मोर पखौवा बन बन धेन चराई । जेजमुना ज

ल रंगा है ब्रजके गई नकराई ॥ वे मूले हैं देखि कुबरी

हम सब गई भुलाई । सूरज बात्रक हेदम ईहै हेर

२५

तरहे हेराई ॥ रागिनी सैंधवी काफी ताल ३॥ मे
नेदे फकीरांदे दानेनीतेसो । दाने असाडे मेननन देंदी
असोये फकीरनि मारोनी । रोना नी लेंदी तफ को
णी लेंदी लडदी पजोर पियारोनी । मारड भौन फ
कीर रवांदा जेगल नेड नैनेनी ॥ रागिनी सैंधवी
ताल ३ ॥ तन दिरनादी मनन्नमन यान रानो नम

भै॰रा॰
५॰

ने खबबनाया नादर नादर गौर चक्कर संदर परम भ
र बनाया परसन आके कहीयो सनम। भौजनेह थे
रव मनमैं दरजमे हिजर मजब नालो फरीयादके
दो सजदा। आमफालके फरीयादरमे मैं जाय द
जब आवैतेज यहा गाना होहोके वेगम॥ रागिनी
मैंथवी अर्थ सहित लिखारा॥ नन भेद नन मेदर

३०

३०

मैं रहव ज्ञान ध्यानपर् आहे आहे जाने नन दर् न

न थरवैंदे नानादर दर । नारे नारे जाजिन जिन न

न नेनें नारेना नानोर नोरवर हरहर हर हर् नारे

नारे नारे नारे नारे नारे नारे नेरे झटे नर थेया यारे ।

नन दर नन दर वैंदे नारे झठे थेथे थारे थारे । मिथ्या

जगा जेंजारे नजडारे मनवारे नर नारायण निन निन

सैं॰ रा॰
५१

ररर नर हर गिरिवर धर ध्यान छेद समै गान धर धर

रागिनी सैंधवी नाल ३ ॥ वेणी वेणी वाजेने देरी जमु

ना नीरवे । सम स्वरन बिधतीन तान लेन गंभीरवे॰

मन धुन बिकल भई ब्रज वनिता स्थन रहीहै सबी

रवे ॥ हृपरंग भ्रमर सब सकर लीनी मुरली बजा

ई सखी बलवीरवे ॥ रागिनी सैंधवी नाल २ ॥

३१

३९

कैसे बने गोपहू ब्रजको बसबो। सुंदरस्याम नाम
नंद नंदन रोकत मगनहीं देन निकसबो। भजन भर
भरनना उरन काहू सौं मेरो मरन लोगनकों हसबो॰
जानकी दास हार यातैं मोनी सीखे स्याम उरझा
ननथसबो। रागिनी सैंधवी एकताल ॥ कैसे के
बने भरवी गोपनी याकों। भरनन देन लेन हेगारा

मैं॰ रा॰
५२

रवहो नकैं कांपे कनी यांकैं । वादचाट मगरोक
न डोरे पेसोफ्फोट नेदरनी यांकैं ॥ जगल सखी य
म माझ्री मरन मैंन प्रनन प्रनी पंकैं । रागिनी
मैंथवी पकनाल ॥ नेह लगा माडावे रख नाथ दे
वरागदा । नैन्न करुना निथ कहैंदे नाम जपदा नैं
डावे ॥ आठ पहर नैंडे याद विचरहैंदे प्रेमरंगदी

लाज रखीवे मोन भरोसा एक शरणादा । रागिनी मैं थवी नाल १ ॥ नहीं करनावे उनीयांदी आसा ॥ उनीयांदी आसा ओसका पाणी पीया चाहे सो जाए पीयासा । जानकी दास आस कर उसकी जिसकी माया जगत प्रकाशा । रागिनी मैं थवी नाल २ ॥ गुण औगुण मेरो न मनन हारो । दीन दयाल लाल दसार

सैं॰रा॰
५३

थके पतित पावन मैं है विरद तिहारो । गीध व्याध ग
ज गनिका नारी गौतम नार अजा मिल तारो । आप
शरण वरण यह जश सुन जानकी दास अधीन न
मारो । रागिनी सैंधवी ताल ८ ॥ चोट छरीवे नैणं
दी यारदे । जिस तन लगी सोई तन जानैं हरदम आ
य पुकारे । बिन वेषे मान कल नंही पउंदी पलजी

३३

व हावै करारवै ॥ जा गाकी दास निमाणौं नू रखले
देशां वल अपनैं दिदारवै । रागिनी सैंधवी नाल ३
आज वधाइयो माई अवध नगरमें ॥ रानी कौसल्या
सुत जायो मंगल चार होत घर घर में । अति आनंद
भई अरवनीना कंचन थार रोचन लीएकरमें जा
नकी दासकी आस भई पूरी गावत उगार उगारमें

सैं॰ रा॰
५४

रागिनी सैंधवी ताल ११ ॥ इगनलागीगैलो मोरे सां
वरे सलूनी सुंदर मूरत वाकी चितवनी तीर छोनैन
वारे । लछन दास नलफ नलफ नहि बिछुरत घरी
प लछिन प्यारे । रागिनी सैंधवी ताल ८ ॥ लागयो
मन बिपन बिलासीसैं । सुड मुसकयान जात कुं
जनमैं डारी नेह डोर गलफांसीसैं । सुंदर स्याम मोर

३४

नी मूरत कही यतहै गोकुल वासीसें। जानकी दा

स रसिक ब्रज मोहन कीनी विना मोलकी दासीसें।

याविनी मैंपवी पकगाल ॥ नमोस्तुते व्रषभान दु

लारी ॥ महिमा अगा निगम निगम का वरनैं अवि

ल लोक पक ब्रह्म मुरारी। अति उदार त्रिभुवनके

दाता मोहनी मूरत रसिक अपारी। ग्वाल खुशाल

सैं· रा·
५५

सकल वन आप नाम लेत श्रीराधा प्यारी ॥ रागिनी

सैंधवी एकताल ॥ जै श्रीराधा प्रान पीयारी ॥ राजा

महाराज त्रिभुवनकेहो वृंदावन कुंज विहारी ॥ से

वक पर नित प्रसन्न रहतहो देत सिद्धनो निद्धउप

री । व्याल त्रिशाल निधान ज्ञानके ध्यान भगतउप

कारी । रागिनी सैंधवी एकताल ॥ इस्क लगा नैं

३५

ड़े नाल अनो वेहैला । नैनन भरी मोहन दिदीया

नी ख्याल खुशाल । रागिनी मैंथवी एकताल ॥

हटनहीं कीजे मानलीजे नोहदीली प्यारी । वचन

अधीन मदन मोहन पियायह श्रवनन सुन लीजे

पीयारी अनमेके वारी मिल मोहन सुखदीजे । मि

लो खुशाल स्यामनन भावन अधर सुधारस लीजे.

सैं॰ रा॰
५६

रागिनी सैंधवी पकनाल ॥ मोररीचहे ओर वोल
न लागे । कारी घटा दामिनि दमकावन नै सोय
पवन झकोरे । पीया करहत पपीहा कोयल झक
नहै वरजोर ॥ उलहे गन वित प्रेम पीनके निरष
न वेद किशोर । रागिनी सैंधवी पकनाल ॥ ने
ह कामनल गरहावम काकवहोहै मेरायार वस

36

का। ख्याल खुशाल मेरे नैनन मैं देखन के मोल
ह वरसका। रागिनी मैंयवी ताल ३ ॥ नेह
कियातोल जानीनी वाले। नैन मिलाकर सीने
लगाले। ख्याल खुशाल दिखा वनि मानै वेसी
वजा कर जीव जीवाले ॥ रागिनी मैंयवी ताल २
देखन जर भरवो मेरे प्यारे। कायल है तेरे नैना के

सैं-रा-
५८

मारे । लाग रहो गले हमारे दिल वर ख्याल ख़

शालौंसे होनाज़दारे ॥ रागिनी सैंधवी नाल ३ ॥

जपदीयां तेरा नाम साईयांवे । तोंनै विछैंदा वारी

वे झड़केवी दैंदावे सियां पुन पुन करदे यादवीआ

ईयांवे ॥ रागिनी सैंधवी नाल १ ॥ नजारा ज

टीयांदा यारवे । शिरव तोंडी मानले समझ साई

३१

३०

ये शोरी फिरमकदे मारी ॥ रागिनी सैंधवी ना- ३

मीयें नैन किन सिख लाइयां विरहदी चोरा चो

री गलांवे मीयां चोरी चोरी अंदा छिप छिप जा

दा मानदा नांही गलां शोरी ॥ रागिनी सैंधवी ता

ल ८ ॥ छैला जोर जोर करदा मांडे नाल दिल

भरीयां दिलवर माडे नालवे ॥ हम दम करदि

सैं-रा
५८

ल बर कोई किसीदा किस दीवे ॥ रागिनी सैंधवी
नाल २ ॥ झम झम झमके वालानी मानकरैं
दा लटके दड़ा । पैंड़ी वैंड़ी जलफैं चेंव्हर वाला
वीरा जरीद मोने हरि गल मोनी यांदी माला ल
टके दड़ा ॥ रागिनी सैंधवी नाल २ ॥ इस्क
लगा कर मारणा आशनां को जन अपना जानके

३८

निवीञ्ञा दानानुवे किन सिवे लाइयां शोरीनू
यह्ही जीवे कर अयनी ॥ रागिनी सैंधवी पी- ३
यार ग्रलावे मैं नेरीयां नेरी मांडे सायवांवे । पार
धन देवे डेरेनू श्रायावे मीयां मकर वाटानीमैं ने
री नेरीवे ॥ रागिनी सैंधवी नाल ३ ॥ प्यारे
नू जी वांदा वेहो वेदिलदा महरम नहीं ग्रला ॥

मैं॰ रा॰
५९

ऐसा राम खोना जोरी नहीं वेहर दमकरी एन इन
इवाह ॥ रागिनी मैंथवी ताल धी३॥ कोईल्यावो नी
मेडे रांझणनं इक्कदी वात पई विच झेले ॥ हीर
नी माणीदा सांवला सजण मैनं आन मिलावो
नी ॥ रागिनी मैंथवी ताल ३ ॥ मवल रहोजी
महारो राजरंगीली सेजो ॥ तमारे डेरे आइलो सा

31

हू वाजोवन भरीलौं साहवो राज । रागिनी सैंधवी
ताल ३ ॥ आइयो बलम राज मोरे डेरेवे । मैनो ने
नू देवी दुवाइयो वारीजोंदे सोसो फेरे रहणा मोरे
डेरे ॥ रागिनी सैंधवी ताल ३ ॥ गगरी मोरी
कोन्ह फोर डारीरे ॥ रसीया छैल छबीलौ नंदको
है यह वडभगरीरे ॥ रागिनी सैंधवी तिताला ॥ ३ ॥

सैं-रा
६

विजरी सीचम की देखवी यह पीरकी ॥ ब्राई च
रा नैननमें नाम दार वरस रही थम थमके ॥ रागि
नी सैंथवी नाल २ ॥ नाहक जीनर साया आगी
मेरावो । आपन आवै वारी वेना लिख भेजै सीयां
सोवली स्मन देखला जा आगीमेरा ॥ रागिनी सैं
थवी नाल ३ ॥ वदना सीकजरादे होवे ॥ पक

४०

जेरा मैरे मैंकेसे आवां जल जल मरे गुइयो ननदड़े

ढानी ॥ रागिनी सैंधवी ताल ८ ॥ तैंडी याद लगी

है मैंड प्यारे बेनका । मैंकों कमेन समझेउ आवै

मइयो गलेल गजे ॥ रागिनी सैंधवी ताल ३ ॥ मै

नो माहीदी कारण लटीयां मेरा रावलाबो आवो

वी कोई मेडले आवो हीरा ना माणीदा कुटीया ॥

सैं॰ रा॰
६१

रागिनी सैंधवी नाल ३ ॥ हीरेन् कोई आनके मि
ला मीलो कोई । पारवा कोई वो आनके मिलावै
मेरा मीयार रोकेदा ग्रमांनी रंगाभी नालो कोई । रा
गिनी सैंधवी नाल ३ ॥ बनातेरा सिहरा रोप रोप
ल्याई सेहरा रोप ल्याइरे । हाथ्यन में हदी पायन में
हेदीं मे हेदी रंग लायो ॥ रागिनी सैंधवी नाल ५ ।

छट्कारहेदा दिलन् यारा जबलग नहीं मिलदा

मेरा प्यारा । इस्क मुहोबत नाल उवाम गजाजल

फैं नाल छुटकारहेदा ॥ रागिनी भैथवी नाल ३

नाइ जम कलाई झगा छेद रुठीवो पीवन अपना

हो मारुडा । संगामयको भरा वेगाडा सोतन रा

ने माने कहीयो करवे हड़ा छेवापी । रागिनी

मैं· रा·
६२

सैंधवी नाल २ ॥ फेर नैणा दी फोलन जा रो दा

एक वेदा उजे गरजी नैणा ध्यान पडे वसनेरी ॥

रागिनी सैंधवी नाल ३ ॥ याद लगा रहेंदी मोडी

खवदी कदम । वोक वरम करे कोई नहीं दीठ

ना कासों करे फिरीया कौंनसे हैंदा मोडी दाद ।

रागिनी सैंधवी नाल ३ ॥ सोइदीआ सावो खण

रहणा नरकी सरन सुनक्या मन गहना। वोकव
रस कहे सुझे रामवे इनी यांद रोगसे कछु नही स
हना। रागिनी सैंधवी नाल ३ ॥ सोइयांने मोड़रे
वेलीवो। आरन जोवन राते महवूबां पीरांदे सदां
रंग श्रोर फीरो दीयांनवेलीयां। रागिनी सैंधवी
काफी ॥ लोटन श्रेगनमैं ललाम वले नेरजी

के पार खहलरज अंगभरे । इंड विड छवि देख महा
प्रभु संगानमु हरिसौं प्रकरण धरे । ग्वाल बाल सब
श्रेनि खिलौना आपन आपन अंग धरे । लेत नहीं
संगान सखि तारे हनन सेम जीय उरन डरे । है
म चाट उरलेत जसोधा प्यार नवहन प्रभु गोदधरे ।
लोटी धन करनल हरीयो लटकत लपट झपट ह

ति होत खरे । रोय रोय हेम देत छिनक छिन लो
ग गोकुलके सुदिन भरे । सूरदास बलि जात ज
सोमति आय जोगीया शिर हेदयरे ॥ रागिनी भैं
यवी ताल ३ ॥ वारी वारी जावो असी प्यारेनू मा
तावो । होहो होहोवा वेसर जेहर पायल विछुवा
अतर गुलाब वहावो । रागिनी भैंयवी ताल ४ ॥

मैं॰रा॰
६४

मन करो काहू सेरा प्रीत डरवे के फंद परोरो । कम
लके भितर भवर मराती ब्यार जाम गई बीत । जी
व हीये पै पानन काहे बरी प्रीत कीरीत । सोना
टासी विलासी सोवरो कब मिलहो मोहन मीत
रागिनी मैंधवी माल ३ ॥ प्रलवेल डगवेके सर
भी नामैं जोटीयां सामसना बगान्हू । गाडदे सोनी

४४

उसोनेदा गजरा मोल करेनो शावणा ॥ रागिनी

मैंथवी नाल ३ ॥ नैनमाहीं देनारणे वो भला सानु

मारणे । कि करो किथे जावां जानो मेरी सइयो

किस विध करह गुजारने । रागिनी मैंथवी ना॰ ३

ऊंडा नोनेडा वे कमलीदे नाल । राह्व चलेंदे नैन्नदें

देदवाईयां सखोणी वसे नैंडा खैंडा मैडा वोनड

सैं॰ रा॰
६५

फवेवेहाल । रागिनी सैंधवी ताल ३ ।। लाजस

नेह परो झगरोरी लाज कहे यह नेह कहा है नेह क

हे यह लाज जरोरी । झगरत झगरत सब निशबी

ती निपटो नहीं आयो फजरोरी । चंद सखी यह लाज

लटहे आखर नेह वसो गरोरी । रागिनी सैंधवी॰

काफी ।। नेद लाला जान दगोवे वेसी बनाय इजान

४७

सैन चलाय । विनदेखे साव कल नहीं पउदी जानकी

दास हरि प्रेमपगी । रागिनी सैंधवी काफी । पिया

वे साडे दिलांदा एही सभाव । औरहूप जग विच न

हीं भांवदा राम हूप देखसादा चाव । ल- लागी लगा

न छूटे नहीं सजनी करो कोई कोट उपाव जानकी

दास वन स्याम मिलनदी पर हनन रहोके जाय ॥

सैं-रा
६६

रागिनी सैंधवी ताल ३ ॥ लागोजी स्यामा स्याम वि

लासी सोमन । भोर भए निसबीत गई सबर विकर

किरण प्रकासी । पंछी जागे बोलन लागे हरसन

भए अभिनासी सैं । जग लछु बीले छब परवल

गई चेद साखी सीदा सीसैं ॥ रागिनी सैंधवी काफी-

घूघट को पट खोल देनो ॐ राम मिलैगो । सबघट

4.6

४८

रमना राम रंमै याकहूं क वचन मत बोलरे । धनजो

वनको गर्व न कीजे झूठा पच रंग चोलरे । सुन्न मैदि

रमै दीपक बालले आसासै मन डोलरे । जोगजुगत

सुरंग महल पीया पायो अन मोलरे । कहे कवीर

आनंद भए है वाजत अन हद ढोलरे ॥ रागिनी

काफी ॥ तोरे मावपरनागगा उरजवही सरकाय

मैं॰रा॰
६०

जावे महरमयार। उरजन स्वरजन गोकुल नग
री इन नैननमें लाजरे गो॥ रागिनी सैंधवी ता॰ ८
मन मोहना मेरो मन हर लीनो रे मन हर लीनो मेरो
चित हर लीनो। आपनो जाप करम गढ वैरेव स
नहरे समने भरहौं आपीनों॥ रागिनी सैंधवी का
येक ताल ॥ मन मोहन का मुख देखन हौं मेरन

४७

यननमें छब छाय रही । नन छीन भयो मनहि

न भई मन हेरत आपहेराय रही । अब शोच कीये

कहां होत सखी जब प्रेम फंदे विच आपरही ॥ सु

खसे अब राज वहर किया जब जोन में जोन समा

य रही ॥ रागिनी सैंधवी काफी ॥ कलकथार

सेरे मथुर वह ॥ सेवीलाची सेवी नीसजन परी

भै० रा०
६८

कही हीन सरेम । जाया रमयाने हंसारा ननीपार
ची हानी सरे । ग्रमरत फले सफलित बहली देही
कना पसरे । रागिनी भैरवी ताल दा० ॥ दीज दान
गोरी करत स्याम ऊना रारी । या मारग नित आ
वो जावो वेवन ऊदह यारी । दान हमारो देत गवा
लन जात चली कर चोरी । कैसो दान होनहै दधि

४८

कोनन ऊन सनौरी । दान दिये विन ज्ञानन पैहो

वेदराय की थोरी । काहूको गर बढ्यौ वन ग्वालि

न जोवनकी मद जोरी । हमनाम्फो ता नंदराय

कौ हम वृषभानकी थोरी । सषी गैल वलो ज्ञा

ला लमन कर वनीयां भोरी । याब्रजमें सन व

हन बावरी ऐसे ज्ञान कहोरी । देहो ब्रकाय श्र

सैं॰ गा॰
६५

वे सब दिनकी वावन वासव सोरी । छोटे गान
वान वडी वोलाव होत करो जिन थोरी । जोकहे
कंसराय सन पावै जान परे वरजोरी । ग्वारि ग्वा
र संभरीन वोलैडारहु मटकी फोरी । वचन ऊचे
क हेदजय उरपेकंस वापरो कोरी । यह सुनिस
ऊव ग्वाल ग्वालनी सन सावले मोखेन कर

४५

जोरी । सुंदर स्याम विहंस करलीनो बांय श्रीम
की डोरी । यह जो बरिन सुनै श्रीर सुमरै ताकौ
भाग बडोरी । कृसनदास हरि लीला गावैले सब
सिंधु हलोरी ॥ रागिनी सैंधवी काफी ॥ लगी
स्याम तन पर सुहावन । मानहु बरखो जमुना
जल ऊपर सुभग सलील सर सरी जग पावन

सै·रा
८.

मवली परे नयके कोराने ऊपट जस मनहै सील
गीहै उवावन मानन नाहीं नवहु कनीयाने यवनी
लोट पगाहु मकी वज्ञावन । कील कीला यनोव
न गामे वावन वारीज लोवन येव वहावन । उड
गान वेडु गान वनी आई देहो ज्ञननी मोहे प्रान
खिलावन ॥ मनि खेमन प्रति बिंब लावावन

50

५८

नवहीं वेष आरी उठ धावन ॥ हरि प्रसादउर

वस उराम पद ग्रहन कमल अच शोचन सावन

रागिनी भैंथवी ताल ३ ॥ कोजाने मिलना कब

होही । याते हिल मिल हरि भजलीजेकोजेगर

अनुमानन कोई ॥ नर तन पाय विचार हृदै मन

कृष्ण नेह मिलाव जोय ॥ रागिनी भैंथवी ता॰ ३

सै-रा-
७२

आलीरी अनरोजे झलकै ॥ मैडुक मडल मनोर
थ महल पर गोपद रन छवलि छबलकै । लट
कन लटकि रहे श्रवरन परनाकी हल नही पवि
व हलकै । जुगल सखी पेसे अभडी मिलन कों
निस दिन रहन होप विचललकै । आनि सपको
न कनक कुडल की लगी लगी लोलकपोलन

५२

झलकै । देषत बनत बरनन नहीं आवत नैन मन ह

रन परत नहीं पलकै ॥ रागिनी सैंधवी ताल १ ॥

आवंदरे री ईस सांवरे सो कौन बोले । हमरी औरसे

औरकी हमसे झूटी बात लगा बनाबोले । औरन

कोरीन कछु अन जानी छाछबरा बर मोखन

बोले । और सखीयन सों हंस हंस बोले कपटी क

सैं-रा
७२

पंकी गोठन बोलै ॥ सूरस्याम राये मरवे मोरै मन
भूले कहूं गजर भोलै ॥ रागिनी सैंथवी काफी ॥
गोपाल पीयारे नैने बलावे कीयारे । खडोवो पीया
सी तैंडी अखडी योन जीव जीवावन दरसदीयावे ॥
उमर दराज गरीबांदी दोस्ती है दिल महरम सवा व
लीयारे । आनंद घन ब्रज जीवन जानी कर वानी

मरुव वेषजी धारे । रागिनी सैंधवी काफी ॥ सु
नयरी सखी आज विलम रहे कहूं कान्हा । हमकें
कहत तुम पलंग बिछावो उनकी बात हममा
ना । आवन दे पीया अपनी बार कहूं तिन ढठगाठ
गजोंना । सोले सिंगार बनीसो आभरन श्रेग
सजे मन लोना । हेसत खेलत ब्रजकी सखीय

मैं·गा·
५८

घनसौं सुही येतो करि हैं बखांना । सुंदर स्याम क
मल दल लोचन नंद महर जु को छौंना । मोर मु
कट पीतांबर सोहत कुंडल झलकत कोना । गो
बैरे मुख पर तिलक बिराजै जासौं लग्यो मेरो ज्ञा
ना । बैसी बजावत गावत नीके मोहे हमारे प्रा
ना । सूरदास स्वामी तेरे दरस कुं चरन कमल

५८

53

लगे ध्याना ॥ रागिनी सैंधवी काफी ॥ मेरा मे
रावे गोरी दा जानीवे ॥ पलकां दे नाल वहारो ग
लीयां मेरजरां ऊण दीमैं विछाउ कलीयां ॥ नेह
लगा कर छुप मैं गलीयां वे आवेगा साजन मोड़े
रंग रलीयां वे वोसयांनी गोरी दा जा ॥ रागिनी
सैंधवी नाल ३ ॥ ठगो ठगो मन मेरा जीयरा । रा

सैं॰रा॰
७४

नदेहा मानवे थान नसाउगवे इक मवेउावे घला

य जाहि परा ॥ रागिनी सैंधवी नाल २ ॥ बोल

सनाय जावे सड्यो सान्ह भोंदे भोंदे । सहर पुनवी

व वेलावी भोंदे सगा गोरी सरमोंदे जोंदे ॥ रागिनी

सैंधवी नाल २ ॥ मोडी जिंदडी नूं कलनाही पैंदी

नैंडडे वेषण देसैन्ह नोडे महाल भया कसानूं । का

दर जाने मबाए ग्रना महमद इस्कदा जेउ ग्रगा
है वेदरदांदे दिलनूं ॥ रागिनी सैंधवी नाल ३ ॥
होजरीदे जाह नैणां । सैन वलीदे नीरन जरदे ग्र
जरदे पारावार नैणां । नैदा नैफांन कवांन भौनी
अटके अटक षट्क दिल लेजांदा शोरी सर कार
नैणां । रागिनी सैंधवी निनाल ३ ॥ मोही मोही

मैं॰रा॰
७५

मोही नेरी चाल वेड पटे बारे । हावन लगी बारी वेस
रमन मानन ज्यों भ्रमीत्यो पालरे ॥ रागिनी सैंधवी
थी॰३॥ श्रीबैला मोंनन छेड वेकेही बान पड मन
टील वर मेरे । इस्कों दे कारन बदनामी लीनी पा
कन जरनेनन किन सिखलाईयो अपनी वेरहो ॥
रागिनी सैंधवी नाल ३ ॥ मैंनें डियां वेनेणा वा

55

ले यार ॥ मोती गइयो जिंदनेरी लाखकेरी पांवे यार

रागिनी सैंधवी नाल ३ ॥ रमानी चिरे वाले यार

मै तेरी पांवे लागा गइयो सेट बिरह दीत । चीरे वा

लेन् ओनके मिलामी शोरी बारबार जिंद लाख फे

रीयां ॥ रागिनी सैंधवी नाल ३ ॥ याजरी महला

क मै तेरी कदी नसांवल करी फेरा । कदीन ओग

सैं रा
७६

मिली रव सांइयां कदीन कवराउ ओगन फेरा ॥ रा

गिनी सैंधवी नाल २ ॥ जपदी यां नेरा नाम जानीवे

वैन देह मैन ध्यान नसाराव । मीयां प्रन प्रन कदू

कदीयां आईयां ॥ रागिनी सैंधवी नाल २ ॥ सांरा

वलां दीयावे नैणां वारे मीयां ॥ शोरी मान लगारा

ईयां सांरा विरहदी । महल जावे साडा डरदेवे नसीक

रम करी रवसांइयां । करम करी नसी फलकरीवो
शोरीन शानके मिलायजा ॥ रागिनी सैंधवी ना ३
मैनो जाणा दीवी नाहीयां मोणा नैंडजा रवेडा किसम ग्र
ण लाया माघी अपना नेडा । नेअपनेंमैं अपनें रवेडे
दामनरंगा किसनभलेल गदा विरहदा उलफेडा ॥
रागिनी सैंधवी नाल २ ॥ नसी आजा साडीजान

मैं. रा.
८८

मीयांवे ॥ वांकेनैणां दीरमजां माही आवे कीहोया
माड़े नाल मीयांवे प्रेम(?) लगी तैंडे नाल वे वांके नै
णां दीर ॥ रागिनी सैंधवी नाल ३ ॥ करदीवे या
र करदी आरावे मैनक रहीयां बुहेनं दरद वाले
या गोरी उददा दिल विच पेंघां विरहुदा मैनो मर
दी ॥ रागिनी सैंधवी नाल ३ ॥ रविंपलाज क

58

हागीजीमेरो । आदि जन्म कीनारन नेंही याेनेंनेंस

वीगी भवानी ॥ रागिनी सैंधवी ताल २ ॥ मलक

मौला रानीवे रंकण जानी यारवे भलीवे मीयां । नौ

वहार होई जीवानीने मांडडेवे खरव वसे मलतान

भलावे ॥ रागिनी सैंधवी ताल ३ ॥ माहीदेनाल

वले सानें मांडी जिंद मोहीवे मांडीवे कटदांवेमैम

मैं॰रा॰
७८

लीवे । मैंली मैंडी थान नैनल वदनानीवे धन द
स्नरेगे स्याम वारीम ॥ रागिनी मैंधवी नाल २ ॥
विलोवो मांडी जानवे कहो मैंडी जानवे मैंनो
हीवे मोडे यार । आमिली नो जीवा मोडा प्यार
नाहीं नाहीं नो फिरयादि वाणी मैंडे आणवे ॥ रा
गिनी मैंधवी तिनाल ॥ इश्क लगा करवे परवा

५४

ह ह्रोंदे नाहींयावे । दिल वि वरवना शोंदा शोरीव
वीयां रावीयां पाक मह्रो वनवे ॥ रागिनी सैंधवी
तिताल ॥ भूल देवी विसेहींदें नैणामी पावे ना
हीयां । वेद जह्रे मुखवड़ावाग वह्रावदे मीयां श्रो
ती उसदे उकदे नाहीयां खेल देवे मीयां ॥ रागिनी
सैंधवी तिताल ॥ नैनन जोर दीवे मंजा दिल ठगा

सैं· रा·
७५

लीनावे । नैनन जारे हृदि दीयांन शोरी यारमै हू

बसकीनावे ॥ रागिनी सैंधवी तिताला ॥ मला

वे दरदी यार करदा क्यौं दिलवर माडडे नालज्यों

भामी गोपाल । विन दिठे मानू कल न पडेंदी मो

हन मदन गोपाल ॥ रागिनी सैंधवी ताल ३ ॥

माडी वालावे कदी तुसां बलवेदव जरा मैनूं मन

59

छेड मीयांवे । नरनर विनवे मैभीते आइयो मीयां

मोणा करवाकर ऊेटा शोरी मीयांवे ॥ रागिनी मैंघ

वी ताल ३ ॥ नजारा ऊंगादा करदावे परीयो जेहा

यो जरीयां नाल नैन लडेदे । चेइजहा श्रक्को भली

यो दिल विच वसैंदीयां इस्कांदे लहरो विच नरमैंदे

रागिनी मैंघवी तिताल ॥ ४ ऊेटा साज्ञ आमिली

सै॰ गा॰ ८.

60

सोगा जिंदजाणी । नैडे कारन वारी सब कुछ
छुड्या विनविषे इस्कवङानी ।। रागिनी सैंधवी
ताल ३ ।। सुथलागावड़ी नेरे आवनको । छायार
हे हुम जाय विदेसवा आयगाइ उत्तन सावनकी
रागिनी सैंधवी ताल ३ ।। नरवाइयो रोज़ावे न
बीव दिलदा मोजावेयार् । वेघाण गए मट आप

६

वे खणेना कोइ मेरा सनेहा वे यार आशकानूं

माशूक मिलीया फिर जार आवनके होवे यार ॥

रागिनी सैंधवी नाल ३ ॥ लागा लगामीवे लड़के

वे जरीकी समजाई । तिरछी भौं नैन नकमारी

इश्कदी सांग चलाई ॥ रागिनी सैंधवी·धी·तिता·

फोलन मद साजीयो मोडी घोलीवे उमराके शार

सैं॰रा॰
८१

भीनी मोडीचोली ॥ सह हरी वदले आनगावे
नाजनी दीदम बसाके संदली पेचीइमावे अमरी
दीटे ॥ रागिनी सैंधवी ताल ३ ॥ तोडी यादव
हेदीहा वेरहेदावे वला अमानी । नेरी सोंहवे जा
लम यारवे इस्कदा होमेनहा संदावे भला अ
मानी तोडी ॥ रागिनी सैंधवी ताल काफी ॥

61

ललित लल नन नरे बिव मस्तकावै । निरषत हू

दावन की सोभा नवल द्रुमन फल फूल लखा

वै । बोलत पंछी रंग रंग के कैजाति कैज विशा

ल दैखावै । वन जमु मिल श्रवनी सखि राजत

द्रुत रित राज लषत मनचावै । गावत संगस

खी मयूरे सरबीन मृदंगा कान्ह वन जावै यह

न

भाव यह भावकेल विलोकन देपन निस दिन
दिन ख्याल खुशाल सोहावै ॥ रागिनी मैंधवी ता
न ३ ॥ श्रीराधे माव इंड उजारी । छायरही छ
वि हे दावनमै कुंज निकुंजन ललित प्रगटारी । को
वरने कवि निज भाव महिमा पावन भेदन वेद
विचारी । त्रिभुवन नायकके जीवन धन मोह

नी सकल विल विस्व उजियारी । वसहो रहे व
रा चर जाके सोउष भोन कुमार डुलारी । खुाल
खुशाल सकल सुखदाता सूरत मोहनी नैननिहा
री । रागिनी सैंधवी ताल ३ ॥ विपिन विहार
करत पीया प्यारी । कुंज कुंज छविपुंज विलो
कित फूलरही जित तित फुलवारी । नवल वेस

सै॰ रा॰
८३

नवनेह उलझ रहेहि नरस विलस विलास प्रण
री । मत्त मसकात कदम नर ठाडे स्प राम गल
वहायां हारी ।। अत उन मन नयन रस वरषन श्रे
ग श्रेग राजत सुकुमारी ।। व्याल विशाल वि
लोकन चहूं दिस मोहनी मरन मदन मरारी ।।
रागनी सैंधवी थी॰ त्रिताग ।। सुनीश्री वृंदावन

63

६३

वासी। यह विनती सेवक अपनैकी प्रभु सर्वज्ञ

सकल गुण रासी। दरस लालसा ललित देखन

की अंतर जामी माया हुलासी। अति उदार निर्द्व

लोक उजागर त्रिभुवन नायक विपिन विलासी

सब वरनै गुण सकल तुम्हारो सेस सारदा जिन

कीरासी। वेगहीहोहु प्रसन्न मनोहर रसिक ख

धमाल हिरदेके निवासी ॥ रागिनी सैंधवी काफी॰

मुरली मोहन अधर धरे वृंदावन चंद गाम करे । बो

ले सब हरे हरे गावत सखी रंग भरे । मधुर मृदंग मु

रली नाचन मन मगन मगन सब बंधान ॥ बाइस म

दन मुरछना उनताल काल श्रमान प्रमान ॥ रागि

नी सैंधवी नाल ८ ॥ रजनी विरह वियोगी राधा

करलीनें पखारेंगी वजावन । हरिक्रान्ति हीनना

सोरथ पति विनना श्रीवेंथुही नैनहीं श्रावन ॥

हाहा लिखि मदन कागा लीखी कोयल लिखि

पन्नग मकनही भरमावन ॥ रागिनी सैंथवीना

ल ३ ॥ उथोहरिसों कहियो संदेस । नंदराय इगा

सजल रहतहैं जसमत अधिक कलेस । गोपी ।

सें॰ गा॰
८५

ग्वाल सबहूं ब्याकुल तज्यो चाहत यह देश ॥ ज
बमथ आवत कंज भवन की ओर पच्छ को भेश ॥
सुरपत कोप कियो ब्रज उपर नव पर यल्हो न
गेश । सोनो गुण समझ समझ नहीं विसरत है
वि प्रसाद परमेश ॥ रागिनी मेघवी ताल ५ ॥
पैंजनीयां पग पाय मनोहर । चलत स्याम घन

65

८५

राजन राजन निरखे विनोद मगन मोहेसर । ग्र
हमन मदिन जसोदा रनियां पाछे फिरे गहे खेश
लोकर । मान्ह्येन वन क्रांडिवक्क हिन प्रेम पल
की पय श्रवन पयोधर । कुंडल लोलकपोल वि
राजन लटकन ललित लटैया भ्रवपर । हरदा
स श्रव लोकनको स्वाद्वे किलकन ईसन गोपा

भै.बा.
८६

लयाकेउर ॥ रागनी भैरवी काफी ॥ भजहु

बहुत भाव होय राम कृस्न नामकौ । राम लि

यो औतार अयोध्या पुरी माहांई । मथुरा कृस्नकौ

जन्म गोकुल रहस बनाई । राम कछुक दिनके

बीते हतो ताडका जाय । कृस्न पोतनाकौ बध

कीनौं थन भावही लगाय । रामजनक पुरजा

66

८६

य सहजहीं सिव धनु तोर्‌यो । कृस्न गेंद पाता
ल नाग धरके मन मोर्‌यो । राम जीत परसुराम
कौं सीय ब्याहि बजाय । कृस्न रुकमणी ब्याह
ले आए न्रप सिसुपाल लजाय । राम देवन का
ज पिता के वचन सिधार्‌यो कृस्न तो छक बक
बनावने आदिक संघार्‌यो । राम वराणा के राए

नैनते अहिल्यानारी । कृस आपजवरीसो रीजे
भई सावीनमें प्यारी । राम निषादही नाव प्रेम
अनमे सावेदीनी । कृस अहीरन वाल कुटनम
वलीनी । रामवसे पंचवटीमें लक्षमन सीयसमे
न । कृस जगनकों भार उतारयो भेटेजल कर
वेन ॥ मारे रामजी खर हावनक ।

त्रिसिरा खरदहोत खोय । हनो कृसनजी जरासंध

बैरी सबे बिन बचाय । राम किये बहु सखा भा

ल बंदर सम दाई । कृसनो बृंदावन गोप गोपीन

रिझाई । रामकृपा हनुमान परहुगयि बलक हो

न जाई । कृस अर्जुन रथपर बैठो भारथ दियो

जीताई । सागर बांध्यो राम जामसे कटक उता

सै·रा·
८८

ह्यो । कृस्न गोवर्द्धन आदि ईद्द लो ब्रजरी उवा

र्यो । राम रावण हो मारके लंक वभीषण पाय ।

कृस्न कंस कर उग्रसैन बैठाय । राम प्रनजज सी

य सहित जय निज श्ररणगायार्यो । कृस्न मथुरातें

चले द्वारका जाय सैवार्यो । राम कृस्न श्रौतार

कौ विरला पावै वेद । भीषम कौ वल पकवाम है

६८

68

नाम उपासनदेव ॥ रागिनी भैरवी तिताल ॥

पजानीऊ तोरे वसमें में आईरे । हो हो हो आपको

जाय कदम पर वैठे अवनो तेरी सब ही वन आईरे ॥ टि॰ ता ३

कौन वातकों कीजे परेखो ना हरिजानन पोलइ

मोरे कहा माने डाव लीजे । वसुदेव जी देव जल

के दीपक वंदीजन विरमाए । नंद नंदन गोपीजन

सैं॰ गा॰
८६

वल भनाइ र कान्ह कहाए । नाहिंन जोरे वेद का
साखे अरु नाहीं वनमाला । अब सनीयत मूपनै
मूपन सुन्दर स्याम तमाला । अब नाहिन घर व
नको नातो व सन एक ही संग । सुरदास मिट
गई सगाई वा मुरली के संग ॥ रागिनी सैंपवी ना
ल ३ ॥ तेरे नामको अधार तेरे । भक्तन को

६१

पक्ष कीनी आन खंभ फारा । हरना कुसकु मार

प्रह्लादको उबारा । मेरी मेरी करत फिरै रैन दिन

बिचारा । राम नामसों टेक और पंथका पसारा ।

गेंद कारन कूदपरे काली नाग नाथ्या इन्हीं देत नो

ठकेसको पछाड़ा । द्रोपदीकी लाज करी आवे

चीरवाढ़ा । भीलनीके बेर चुप कीनो निस्तारा ।

भै. रा.
५.

दुष्टीयों को मारके संतनको उबारा। लंकागढ छे
रे राज छिनकमें बिगारा। सूरदास सूरत लगी
रामजी राखवारा। मोर मुकुट सीस धरे नंदकाडला
रा। रागिनी भैरवी ताल ३ ।। भजमन त्रिभुव
न नाथ मुरारी। भूलो फिरत अपार जगतमें ह
रि सनेह सुख लखि न बिसारी। जाके चरन शार

नकी महिमा गावत चवदे भवन मझारी । तेरीच
रन शरन कौंन आवै त्याग ऊ मत मन समनत विचा
री । शिव सनकादिक और ब्रह्मादिक नारद सारद
पावैन पारी । ऐसे प्रभुही विसार करा है हो खुशा
ल प्रिय कुंज विहारी ॥ रागिनी सैंधवी ताल ३ ॥
एक ब्रह्म सकल जग छायो । देवत सब कोईभी

सं॰ रा॰
५१

न्हन नांही वेद विधाता पार न पायो । जाकी लीला
अपरं पारी सोई व्रज राज कुमार कहायो । रूप मो
हनी नाम कन्हाई व्रज सकल लोकन में गायो । दी
नदयाल महा सुख दाता भक्त हेत आकर प्रगटायो
निसदिन ध्यान हुलास करत है जाको जानन ध्यान
लगायो ॥ रागिनी सैंधवी ताल ( ) ॥ कौन ले गायो

री दधकी मथनीयां । कूफवली गोपी ग्वार संगा

के नेजनीयां । जाय लाग्यो नंद ग्रह जसोदाजीकी

कनीयां । कोमल वदन चरन कमल बाजे पैंजनीयां

कट किंकनील मेनीक नाकमें नथनीयां । सर्वेजी

न जान लाग्यो: पीत वसन तनीयां । रूप देख भू

ल गयो मांगीदे मथनीयां ॥ रागिनी सैंधवी ना॰ २ ।

मैं॰रा॰
५२

ऊंडवीयो वार वार तरसे विन देखे नाल म वोका। हा
हारी मोकोया विरहा पीड़न आय औंतका। दिन न
हीं चैन सखी पको पल उठन इस्क औरदा हेदमेका।
इस्क राम हरि परम विन मिटन न चौंपवमेका ॥

रागिनी भैरवी ताल ८ ॥ नेरै नैनाह्णी सरूप निरा
म नैन गावै। भक्त नव मस्यास रवन्दर =

देह धार आवै । जोगी मुनि ज्ञानी ध्यानी सुपने नहीं

पावै । नंदघर नीप करके थंथके नचावै । गोपी

जन प्रेम आतुर मंगलीए डोले । मुरलीनें नादसु

नि ग्रहन जबन डोले । सुन्दर शास्त्र उचारन करत

है विचारी । परमानंद प्रेमकथा सबन सौं न्यारी

रागिनी मैं थवी नाल ३ ॥ बसजोन करीपेसे

सै०ना०
१३

को नंदके । मानहुस्याम भवेगाउ मीस सिव दन
विलोकी हंसी मदके । गोकुल की स्वथ नेक न
ही दयसे उगा गोकुलके चंदके । वीरन थोरे पेर न
नकौ ननकौन संभार पठे बंदके । जेउ मेत्र क
छुन लगे कछु नंही होत दीपवंथके । उगाल
सावीन कवीन पवीन पवी प्रकरे फंदके ॥ ॥

गागिनी मैं यवी नाल ३ ॥ मोनकी सीय हरीन निरा

लीहै । कि जाने अजन वल संहरी की नंद लाल

वि हारीहै । किजाने समसनी वक्तीजे पतिकेकाज

लाज नजहारीहै । प्रेम मगान जब भई पीयासों ज

गी भरी भस्म भई पीय प्यारीहै । रंगाकी गाज वे

गे जाने का जानेकोउ वेद अनारीहै । जगाल

सैं-रा-
२४

ज्ञानन बालककी वेदन कहा जानैं कोउ बांझ
बिचारीहै ॥ रागिनी सैंधवी काफी ॥ भजले रा
म सवेरा होमन । जनमन बछन घटनतन छि
न छिन निस दिन होत अवेरा होमन । अजहुं न
चेतन अंध भयो मूढ आयाम होत अंधेरा । य
नपार बारका मन पैहै होइये ऊच जवडे राहो ॥

74

नव कहा करी हैं पीतम प्यारे जब जमदूत हीं है नेरे

रा। गावै गुदर जब प्रान चलो फिर रमन चली

ऊभ्ल नेरा। रागिनी सैंधवी नाल ॥ जाके रा

मन लागो प्रेन रहो। वेद पुराण शास्त्र पढ पढ

जोग जगत सब जेनर हीं जाके। जबतें कहो स

मजाय सत गुरु म्हल गयो सब मेन रहो। पांव प

मनाय

सैं॰ रा
९५

चीस तिनकों मारे तब छरँ बैठो सतेचहो । गावै गु
रु गुरु गोविंद बलि हारी साथ संगत कर तिंव न
रहो ॥ रागिनी सैंपवी ताल ३ ॥ मनमस्त भया
तब को बोले । बटनाया जब चफाइहैत राजु भूरा
भया तबको बोले । हेसा पायो मानसरोवर मो
ती तज केकर कोले ॥ मेरा साई है नहुँ माही

७५

वाहूय नेणांको ढोले । इधर उधर काहे भटकत

मन वां कमल भजन धन मोले । सूरसागर निन

भरोई रहत है लाल नलैया मेरेको डोले ॥ रागि

नी सैंधवी ताल ७ ॥ ॐजन मथ निर नन व्रघधा

नकी डलारी । व्रजवन ननकीयो साज सेवा

लिय कमल राज हिल मिल सबनावन गावन ए ह

मैं. रा.
५६

मीठगा थारी । भूषण बहु भांत किये सीस मुकु
ट तिलक दियो उपमा छवि कौन करे रवि स
सि किन न्यारी । बांसुरी की सुनन बोल चवदे
भवन गयो डोल ब्रज मोहेश शेस सारद गयो
ध्यान हारी । गोकुलाके धनहै भाग जन्म हुल
लियो लाग गावन शुद्ध वेद च्यार कहन वारी वारी

७६

रागिनी सैंधवी काफी ॥ भजले सीताराम अव
सेरो दाव वन्यो है । लख चौरासी भ्रम भ्रम आयो
कवहूं न पायो विश्राम । मात पिता दारा सुत वं
धु कोई न आवै तेरे काम ॥ चरन दास चरनन को
चेरो गाढो जी सावेगो तेरो काम ॥ रागिनी सैंध
वी ताल ३ ॥ रामचंद्र भज वेलायक भज वेलाय

सै॰ रा॰
९७

क सब सुख दायक। अभय करन भव तरन पो

त छिया जग जग साखी वेद के वायक। चिंतन

चरन सकल फल करन व्यापक सबही पापन

सायक संतन की रक्षा के कारन निस दिन लि

ए रहत कर सायक॥ गोतम बर तिरा जथा

ह तारन रावण विभीक्षन कपी जो सहायक

सेवा सुलभ सेह सम मानत ककरुणा सिंधु अयोध्या
नायक । शिव सनकादिक बैंन धरसारद सेस वि
मल जश गायक । जानकी रवन भक्त वछल ह
रि अग्रदास उर आनंद दायक ॥ रागिनी सैंधवी
ताल ३ ॥ कहो लग हरीकी मैंकके बडाई । सो
नेसेजलानरिरवि मारी उडे संभार वरन लपटाई

भैं-रा
९८

झलिम कठोर हिरदे अति मेरो कोमल वरन क
मल विषिराई । मेना साहित करत प्रभु प्रस्तुति
प्रेम मगन नैनन जलाई । नेहतो सो प्रभु बहो
निरखि भाव गद गद केड बचननहीं आई । ज
गल दास भाव कहन प्रकारे भजन गोपाल प्रि
या भाव दाई ॥ रागिनी भैंरवी ताल ३ ॥ कैसे

के विलोडे गाडे ख्योरी मथनीयां । छोटे छोटे चर

न छोटि भजन नीयां । वदन पेछोटे पडी शोभा

अधिक बनीयां । हाथन हरिके कड़्वा सोहे पाय

न पेंजनीयां । रूपके खचर सेदर नाक मोनथ

नीयां । छेदक वनथावे हेलौ ठमक थरनीयां ।

देखोरी अनोखो मखी व्रजमें विकनीयां । खरर

सैं॰ वी॰
पा॰
९९

स वलगाई नेदजूकी रनीयां। वार फेर जसुसनि पी
वै हेरी पनियां ॥ रागिनी सेथवी काफोइमवी ॥
मानशे जानकने रोनारे वालमवा। परदेशीकी
पीत भ्रम कानाप नारे रोया करेजवा काटनोउवी
न आपना ॥ नदीया किनारे जनहरीया कोंविवा
इरे महाले गया चोर ढडेर वायों खड़ा जानको॰

चार जल बजाय नाल नहीं छूटी है रे ध्याइ खेसम
मर जायपार नहीं छूटी है जा ॥ रागिनी भैरवी
ताल ॥ वेसी तान मानसे बडे हेदावन मथुरा
मकरे । श्रवण सुनत सुरनर मुनि ध्यान टोरेथ
किन धुनि तीन लोक मोहलए सुरवे विलास आ
नंद भरे । सप्त सुरन तीन ग्राम इकीस मर्छना

मैं॰ रा॰
१००

उंनिर्पलागगउटयरे। कुलानंद ग्रानंदमै म्हन ध्रुन ब्रह्मादिक मनहरे॥ रागिनी मैंपवी नाल चं॥

भवसागरके भटक फेरनमें प्रभुजी तुमकुं भूल रहो। कामक्रोध मद लोभ मोहके झक झोर झक झोरनमें फूल रहो॥ वृथा कथा बक बाद बिरहकी ईनसों मिल मिल फूलरहो॥

८०

२०

निहारे चरणशरण बिन ब्रज नियसौंही इनउन हू

लरहो ॥ रागिनी सैंधवी ताल ३ ॥ लेलोरी भरि

लोचन लाहू । माबी मयानी एक मिथलापुरकी

घर घरसीख देत सबकाहू । नाफिर राम जनक

पुर ऐहैं नाहू मन गर अयोध्या जाहू । इह ये दरस

डरले भटे पतिको समझ फिर मन पछताहू । नाहि

नछुरी दारईहि औसर नार अरुष सब हीनानि बाहू
मनङ्ग कामना करि परि पूरण फिरि न होइ उरते
नरदाहू ॥ ब्रह्मा ईश सकल सब राजत राम
सीया कर विदित विवाहू ॥ हरखे गगान सुमर
न सुर वरखे सकल भवन भर रहा उछाहू ॥
सुख सागर रघु-वंश उजागर =

तिनहू देखे चक्रन चाहू । तुलसीदास बडभागी वा
हीको चित बन जात जानकी नाहू ॥ रागिनी मैं
रवी ताल ३ ॥ सदा चाहिमं माहिमं शारणं रामे-
निर्विकारं निजानंद निरवयी विमोहनं निश्चला
नेत निज अवयं यामे । अखिल अखिलेश अव्यक्त
व्यापिक वीरज सर्व गती सर्वरती सर्वपाले । दीन

सैं॰ ग॰
९२

पति दया पालकदेवन निष्किश काल काल का
ल ककही यन कराले । शरणी शरण देन शरण पाल
शरण दायके गुरुन गुरु सर्वज्ञ ईश ईशे ॥ सविदा
नेद मद रूप सेमय इरन कोशला नेद आनेद भे
शे ॥ देव देवादी जग उदित पावन विर दंके ते
राव कीनें जेही अथीनें ॥ रामकी नाम त

82

८२

अवध पति नाथकौं आपनौं जान मोही शरन ली

नौं ॥ रागिनी सैंधवी ताल ३ ॥ अलफ एक बड़

रंगी सांई हरघटमैं वाकी परछांई । जहां देखो

तहां रूप है न्यारा एसा है बड़ रंगी प्यारा ॥ बजह

न कहै तो कहा कहै कहे वेकी नहीं वात । सम्मर

समायो बुंदमें यह अचरज बडो देखात । वेविन

गुरभेदका इन पाया घरतीमे आकासलौं धाया

पहले पीत गुरुनैं करे प्रेम उगारमें पगान वथरे·

दोहा। विन गुन गुरु वह जनजो कोई लेतहै व

सन हेगाय। यह निजके नम जानीयो वोदोउ

औवतेजाय २ तेनव जोगानेगावन पैहैजबवे

रीयन डविया जइहै वहीतो मनमें कपट

की तटी जहीं सब खेल कियाहै माटी ॥ दोहा

जो मनकी मटि मय छुटै आने नेका वंधेनार ॥

बजहन साहब अबही मिलननेकन लागे वार ३

मेसावन होय ध्यानज्यों लागे आपही आप भरम

सब भाग अजपाजाप तेजपरे पाई छुटजाय ॥

दर्पणकी काई दोवजहन कहत सो जापकर बैठ

सं॰ रा॰
१०४

रहो ध्यान लगाय स्वरत निरत वह राखीये सु

या स्वासन जाय ४ जोम जगतमें औरवैनेहो

जवनोहै एकला कहै पेहो ॥ अवहीनोवा सेयो

नही छूटे दिन ऊपेर जिन पैंड़े लूटे कहनेकोंतो

गोचर औहैव अवेनीस ऊनही कीकारन नामिले

अवहीलो जगदीश ५ हेहद भरया भलहै तेरी

84

पको वातन मानैमेरी । अवलौंतो ऐसाहोयजाना ।
जैसे कोउ भला मदमाना । काहा भईथी उथनेरी
श्रोकहां गयाथा चेत ऐसी काया पायके ज्योंहरी मे
कीपनहेत ६ खेवा मिदका कहीहै त्यारे नद दे
खेनो दशो दवारे लनपरीहै अनहद का वाजा
परजानैहोय गईहै राजा दोहा सबे साजननमैव

मैं॰ग॰
१०५

जेग्रोपसे मवेहैं गगावजहनजा ऊसनपरे वठेहैं वा

केभाग ७ दालदया मनमें जो राषे प्रेमका रसकै

सेना चाखे विन मद पीपहोयमनवारा। निसवा

सर वाकरेनजारा होरा फूटे जगानमे प्रायकेकरी

पनान प्रमानदया पर्मना कोंडी पजवलौं घटमें

प्रान ८ जाल जोंक जवलौं नहीं प्रावै तिनतो वाहे

85

८५

कोउ मन भटकावै दोहा हिरदे लगे न प्रेमकी गांसी

कैसे मिले कहो अवनासी । रागजमें ऐसा खोला जै

सा ऊकमन सरसो बोला । सोमव सुनै रहनको रा

जान परत मथुरे कई घोरा लाज कों काजर नैनन नो

ऐसो नहीं और पोय वजहन कहन कैसे भला दूसमन

पीको होय ४ जेजर देख भूला रहीये सगरी वेस

सं॰ ग॰
१०६

प्रकाशयुत जङ्है ऐसमभरीका मदपीवचोखा । मिटत
इहै सबमनका धोखा । वहीमे कहाकहेग्रावाख्या
इहांकी घका आया ऊठीमाया देखके ऐसा गया भू
लाय । सीस नइजका सीखले लटका कांहेकं
फिरनहै इत उत भटका सोचनकरइ अब
हीहै सबे गाजिकूटी कोटमें करदे डेरा ॥

८६

दोहा लाख जतन का जतन है वजहन दीया वताय
जो साई कृपा करे तो सबे वात वनजाय। शीन शोर
तन मैं है जई का ग्रवही लात वीते वही का दिन भर लि
खा करत है पाटी सांझ भए ते देखो वत राटी दोहा सा
हसे कछु परवे नहीं चोरन से व्यवहार वजहन कै
से देखत भूल रहा संसार। सार सहरी साथ जब

हीय कठिन पेरे काढ़ने न कहीं पहो सो समझे थप
नै मनमाही होनावही जोर चाहै सांई । आसन मार
के बैठ रहो मनमे राखन धीरसाइके परनापतैं कर
दै सब पीर । ज्यादृ जरूरत इतना कीजे निस दि
न नाव हरि का लीजे मैंनो मनमें यही विचारत व
ऊ इहै तेरा निस्तारा होय बजरन जगत में आयके

जोमैंहोय कछु ज्ञान हरिको नाम सुमरन करे य
ली सोराखे ध्यान । जोनालि वन्न इकहोहै एता ये
म [illegible]गारका नाचेना हरा वहोके आगे औरहै बलना
सहज नही साहबका मिलना पीरनगरकों पौंचके
नवीन गरकों आयनोवे वनइन वटसीके ऐसहर
का गांव देखाय । जोज्ञा हरि वनानहै वही वही वही

सं॰ ग॰
१-८

सबही वही जेइ अपने मनमें यह बूझा हर हरमें ह
रवाको सझा । प्रेमकी नदी गहरी बडी बजो कोउ
उतरी पार आशक श्रोमा मकमें नव रहे कौंनवि
चार एन इस्कका पेंडा न्यारा वहां हुजेका नहीं ग
जारा सीस काटके हात जो धरे नव रख सनवो पी
के करे । गली सांकरी वहोत है श्रीवेरी हे सवगे

88

मरोकर ऊमन वजायके समलके थरीये पांव । गै
नगारुरने खेल विगाना देख पगान पीतम प्यारा श्री
र रवानन रहतहै रानी कैसा हारा जातहै वाजी ।।
रोस । वाजीमें कहो कहो रहा अगले रखाहै दांव व
रसेरी जीता चाहतहैं साहवका जपनाम । कफर
मान नल कापैडेका मुखलेचर पीयकेजइहै वादि

मैं॰रा॰
१॰५

नका जन्म मोचन कीजे हरिका नाम कबहू नाली
ने आगे । कहे लो नाम्हने अबहूं करहनहू चेन एक
दिन फिर एक्कनायगा चिरीया उग गई है खेत ॥
काग कोल नेरा है कहा श्रोज्यों छग देख्यो तीन श्र
न्हरा । मनाकीया साधनकी वानीने पर श्रवही ल
भवानज्ञानी दो॰ जो मनका हीना भवाव्हकी कौन है

८५

81

बात पहले तो सोचत नही पाछेको पछतात का

फकर्म उन वडाई कीना मानुष जन्म पेसाई दीआ

पछीपे औरतोई उचारा यहतो मनमे सोच गंवारा

वेश्का वदला पकैहे सोमै देउ वनाय हरि हेवनतो

यकालिये पहले आपहेराय । लाभ लोभको छोड

देखातैमे जोकहे पर सिखले वाते असल ठगीहे

सैं-रा-
११

पीयमे जीउतोरा चंद्रको जैसे चाहे चकोरा जोन थके
रंगसैं तन मन लेह रंगाय । पहलेही वोरमें देखीये
लोभकि ठरथौं जाय । सीमम ह्रोवत चहीये मनमें
वरमें रहे रहे चाहे वनमें गले परी जव प्रेमकी फां
सी कहांकी अजोध्या कहांकी कासी जाके हिर
दे लगत है वज हन प्रेमको वान छूट जानहै

१०

६

सवट टम शोभल जानहै जान । नूननहीं ज्यौंनाकौं

जगामें आपोही आपर माहे । सबमैंहिन चित सोह

नले यह वेना खोल जेहै तोरे ध्यानके नेना वजह

न कहन सोत्रझले यही तावेइहूझ एक दिन या

ही बूझनेहोय गइहै फिर सहज । वावही एकया

वैहै नेगानेहकी गलिकी पनफेरा डरजनथे सोकी

मै·ग·
१११

न बनाए समझाना मेरे समझाएमें जानाध्या
चतुरहैं हैंत श्रवजान दान कितनों उसमझावत
रहो पकड किये न काम। देहादीप सान पाएका
छुतें अपना चित न लगाए करपही सोमांहे अथ
कारी देखीए कायान होय तिहारी इहांके हारे
हारैंहैं श्रोइहांके जीते जीतवत हून कहूनसो मानले

91

साहबसे करपीत । पयारी हरषे जो करना यह सुब
रहीरहे वीच परना वनन वनन वनजै पमाकोई दि
नन मन सूरय जैसा ॥ दोहा । वजहन स्तुकर पैसे
करैहै साथनके इयो यार विरहाके मैदानमें पति
के साखन हार ॥ इति श्री वजहन साहबकृत यल
फवेसहागीम ॥ ॥ रागिनी सैंधवी ताल २ ॥

सै·रा·
११२

यान कहो पीया कहां तुम जायो । काहे कौं हमसे

छिपावत हो अब अंग नैन करी है लागे । ऐसो नि

ठुराई न चहो वजइन औरन नहीं कछु कहन होंआ

वे ॥ भीमपलासी ॥ लागाली औ शेर माप मोहे

कब घर आवे पीयर वाम ई देश बन बन वाडे वे २

करहु जोगनीया का भेष । रागिनी सैंधवी मल·

६२

पीयके मिल भई है लोगवाउ पतिंगावा अजहूं न आ

पंसंदेसवा । वरीपलछीन मोहे कलन पडत है वे

म दरस वादी जो मोहे उन बिन रहे संदेसवा । म॰

तिताल ॥ मैं कैसे जानूं रे काहू के मनकी । अपनी

अपनी औरनि भालो वाकी याहू जाने काहू के

मनकी ॥ रागिनी सैंधवी ताल ॥ किनटगी

सैं॰रा
११३

याने मोहि ठगो रे डारी ठगोरी ॥ जानत नाहीं पह
चानत नाहीं जोबनाउ मगासै बोले मुरली धुनकी
नीठोरी । मु॰ तिताल । होउ ब्रजके नैन हमारे मन
मोहन मुरली वालेसे । लोक कहै तुम लाज करौ
कौन लगा गई तब लाज कहाँ वे । सदारंगा पीयस
व गुणा छरे अनेक जतन करि हारौं ॥ मु॰ एकता॰

93

५३

ग्रानके मिलामीवे दोस्ले दिले यार सजन मितोंने

गे हाजर वेदी नतोमेंडा साइवेदा ॥ म० गिनताल।

मन वागेदा रुडे पीवावेवरा जोगीवे। नहीं नहीं

करे बुकेमे जासों रहम रहम गरे लावेरे ॥ म० ॥

प्रेखोयात काहूकीन भईरी यह प्रसिद्ध संसार

कहानी कहत प्रकार करीरी। करीये कहाग्र

रवीली वर जीतो ऊगाई नागरी दास लाल गिरि
धर कर मो मन बांध दई । म-काफी । मोरी गान
ग़ाम जी गावे रे नम विन मोक कलन परन है यर
श्रेगानान सौं हावे रे । कहा करो कछु वस नही मे
री वैरा दिरण नही भावे रे । रूप रसिक मो यों जा
य कहीयो वेरा दरस देखावे रे ।। म-। जपेजपारे

मनकाली अभेमवीनीसर्वांणी वानीअक्षरहेद

री सामा विमला विमला जगजननी भवी ॥

प्रेमानंदो भजोनमी भ्रलो नारेमम ॥ जपोरेज

पोरे नारा नाम शाभनाम विस विस पद भ्रल

भ्रल नारे नारे नारे ॥ म्ब॰ । नेवायार् नेरे नेन

मे आशाक कयारे हेफेवन वनमें । जेऑकस्तरी

मै·रा·
११५

म्रगामे बसतहै ग्रामक नेरे तनमै माया मैन भ्र
ल्यो फिरनहै मन ह्वके साधनमै कृपा निवासने
रा गुणगावै ज्यों म्र खडा दर्पणमै । खलनानी·
प्रभु विमखनको भाव कबहून देखावो राम
जाके संगते उरमन पाप उपजे सपनेहू दरस
देव लावे राम । खलनानी·धी· । सदा फकी

95

रांदी मानले तेरो मन माने सोकरे होवे दिवाने ।
हर विनको जग कामन आवे यहजि यनन मन
मानले । मलतानी । जिंद टगीवे मियां यारनदा
नाना लटगी । कीकरो वारीको समजावो यारे
दे नाल मैनो पगी । अवमोरे नियकी भटकना
ई । चमकी जोत निरंजनकी हीयमें मनकी अंधे

सै-रा-
११९

री सटक गई । सहज हप हमरी लागी और सव
लै फिर पटक गई । ऐसी दया जोर है कानस प
र फिर सवजीयकी घटक गई । मलमानी निला
रा ॥ हरिकौन भजे नरतनको पाय । जिनज्ञ
ानज्ञगन कीनीहै सहाय । जिन ग्राहते गज
लीनो छुडाय दीयो वसन द्रोपदीको वढाय दा

९६

रिद सदामाको दीयो बहाय जीहीं बल बिबेकी
बाई मिराबाई । जिन गिरत गिरत प्रह्लाद राखे
हरिना ऊशा मारो बिदद राखे । जिन ऊजैंय
नकी गागी राखे । झूठे शिवरी फल हितसो
चाखे । जिन गीधे गत दीनी अपार गोतमनी
यत्नारी तरणाधार । जिन दंडक बनको हरो भार

सै॰ गा॰
११८

सबसार शब्द की पसरसाबार । जिन बिरह की म
न दीनी भला यथा के बृजके बरुदीप उराय । जि
न काली दहसी नाग नाथ्य । कीए निरत फन मथ
र ज्ञाथ माथ्य । सुनना शान पीय पग के साथ्य । कसा
ने दगाय शरण नाथ्य म॰ । श्री राजीवनज्योंना ह
विज्ञानोरे । ऐसेही इन उन दिन खोए नमके से होवन

९४

रमया नोरे । कवले हैन मीत मोहन सौं का पीछे प

छता नोरे । जीवन धन सबही बन जैहै हरि के हात

बिका नोरे । मलतानी । मोहन जान दे मोहे जल

जानी । रोकत टोकत घाट घाट मोहे कैसे भरूं मैं

पानी । अचरा पकर झकझोरत हो नंद की करत

हो कानी । सूरदास यह ब्रज कैसे बसौं करत हो

सै·रा
११८

ध्यानकी धानी। म·तिताल ॥ मेरेमनरामजीको

चिंदगावैरे। सोवतजागत विहरत निसदिन हरि

बिन कछुनसोहावैरे। कहांकरैगो लोभ काम

क्रोध ज्ञान ध्यान कों जगावैरे। कुल रसिकके

चरण कमल परवार बलिजावैरे। म·। मैकरो

गी सनेद वधापहो पीयावरघ्राप। मंगलगावैसषीयो

सहेली हवे सकल मन भाए। तिन पत ख्याल ख

याल करौंगो स्याम सुंदर वर पाए हो। आए उमड

घुमड वरषन को हो वदरा धमक मचाए हो। बोलन

मोरम पीहा पीपी कोयल शब्द सुनाए हो। हरिया

ली झुम झुम हेंदावन ख्याल खुशाल लो भाए हो

मल्लाली। मेरी गिरधारी जीसो का हेलरी। वल

मै॰रा॰
११९

रीमैया मैंतोहे वनोउ मौंमे ऊगारी । मेरोरी गिरध
र श्रम ग्रनरीवैन मस कानखरी । नवनहनी गि
रि यर मेरो वारो कैमेके भज पकरी । सुन्दर वद
न नील पट ओढे वेवल चपल अरी । मेरोरी गि
रधर वन वन डोले हानली पलकरी । सूरदास
या मारगा व्रजमैं कहीकैमे निवरी ॥ इतिश्री

103

100

कृष्णानंद व्यासदेव राग सागरोद्भव संगीतरा
ग कल्पद्रुमे रागिनी सैंधवी काफी मुलतानी
संपूर्ण समाप्तम् ॥ शुभम् ॥ शुभम् ॥ शुभं